कीर्ति गाथा

जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के अवसर पर

जय वाङ्मय : ग्रन्थ-७

कीर्ति गाथा

प्रवाचक

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी

प्रधान सम्पादक

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान)

सम्पादक

मुनि नवरत्नमल

मुनि सुखलाल

साध्वी कल्पलता

श्रीचन्द रामपुरिया

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

अर्थ-सौजन्य :
जयाचार्य निर्वाण शताब्दी
समारोह समिति

प्रबन्ध-सम्पादक
श्रीचन्द रामपुरिया
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

प्रथम संस्करण : १९८१

मूल्य : साठ रुपये

मुद्रक :
एस० नारायण एंड संस,
७११७-१८, पहाडी धीरज,
दिल्ली-६

प्रकाशकीय

श्री जयाचार्य निर्माण शताब्दी समारोह के अवसर पर जैन विश्व भारती की ओर से जय-वाङ्मय का ७ वां ग्रंथ 'कीर्ति गाथा' जनता के हाथों में सौपते हुए हमे आपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

श्रीमज्जयाचार्य का जन्म-नाम जीतमलजी था। आपने अपनी कृतियों में अपना उपनाम 'जय' रखा, इसलिए आप जयाचार्य के नाम से प्रख्यात हुए। आप श्वेताम्बर तेरापथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य थे।

श्रीमज्जयाचार्य की जन्म-भूमि मारवाड़ का रोयट ग्राम था। आपका जन्म सं० १८६० की आश्विन शुक्ला १४ की रात्रि वेला में हुआ था। आप ओसवाल थे। गोत्र से गोलछा थे। आपके पिताश्री का नाम आईदानजी गोलछा और मातुश्री का नाम कल्लूजी था। आप तीन भाई थे। दो वडे भाइयो का नाम सरूपचन्दजी और भीमराजजी था।

आपके ज्येष्ठ भ्राता सरूपचन्दजी ने सं० १८६९ की पौष शु० ९ के दिन साधु-जीवन ग्रहण किया। आपने उसी वर्ष माघ कृ० ७ के दिन प्रव्रज्या ग्रहण की। दूसरे वड़े भाई भीमराजजी की दीक्षा आपके वाद फाल्गुन कृ० ११ के दिन सम्पन्न हुई और उसी दिन माता कल्लूजी ने दीक्षा ग्रहण की। इस तरह सं० १८६९ पौष शुक्ला ८ एवं फाल्गुन कृ० १२ की पौने दो माह की अवधि मे माता सहित तीनो भाई द्वितीय आचार्य श्री भारमलजी के शासन-काल मे दीक्षित हुए।

साधु-जीवन ग्रहण करने के समय जयाचार्य नौ वर्ष के थे। दीक्षा के बाद आप शिक्षा के लिए मुनि हेमराजजी को सौपे गए। वे ही आपके विद्या-गुरु रहे। आगे जाकर आप एक महान अध्यात्म-योगी, विश्रुत

इतिहास-सर्जक, विचक्षण साहित्य-स्रष्टा एवं सहज प्रतिभा-सम्पन्न कवि सिद्ध हुए।

सं० १९०८ माघ कृ० १४ के दिन तृतीय आचार्य ऋषिराय का छोटी रावलिया में देहान्त हुआ। आप चतुर्थ आचार्य हुए।

आचार्य ऋषिराय के देवलोक होने का समाचार माघ सु० ८ के दिन बीदासर पहुंचा, जहा युवाचार्य जीतमलजी विराज रहे थे। सं० १९०८ माघ सुदी १५ प्रातःकाल पुष्य नक्षत्र के समय आप पदासीन हुए और वड़े हर्ष के साथ पट्टोत्सव मनाया गया। आचार्य ऋषिराय ने ६७ साधुओं एवं १४३ साध्वियों की धरोहर छोड़ी।

आपने श्वेताम्वर तेरापन्थ धर्मसघ के चतुर्थ आचार्य पद को ३० वर्षो तक सुशोभित किया। आपका निर्वाण सं० १९३८ की भाद्र कृ० १२ के दिन जयपुर मे हुआ। सं० २०३८ भाद्र कृ० ११ के दिन आपको निर्वाण प्राप्त हुए १०० वर्ष पूरे हुए है।

श्रीमज्जयाचार्य ने अपने जीवन-काल मे लगभग ३½ लाख पद्य-प्रमाण साहित्य की रचना की। जैन वाङ्मय के पंचम अंग 'भगवई' का आपका राजस्थानी पद्यानुवाद 'भगवती-जोड़' राजस्थानी साहित्य का सवसे वडा ग्रन्थ माना जाता है। यह ५०१ विविध रागिनियों में गेय गीतिकाओं में निवद्ध है।

आपकी साहित्यिक रुचि वहुविध थी। तेरापन्थ धर्मसंघ के संस्थापक आदि आचार्य श्रीमद् भिक्षु के वाद आपकी साहित्य-साधना बेजोड़ है। आप महान् तत्त्वज्ञानी थे। जन्मजात कुशल इतिहास-लेखक थे। सजीव संस्मरणात्मक जीवन-चरित्र लिखने की आपकी प्रवीणता अनोखी थी। आप वड़े कुशल संघ-व्यवस्थापक और दूरदर्शी आचार्य थे। आपकी कृतियों का सौष्ठव, गाभीर्य एव संगीतमयता—ये सव मनोमुग्धकारी है।

प्रस्तुत ग्रंथ 'कीर्ति गाथा' मे श्री जयाचार्य रचित सात महत्त्वपूर्ण कृतियाँ समाविष्ट हैं, जिनमे सघ के प्रथम तीन आचार्य एवं अनेक मूर्धन्य साधु-साध्वियों के जीवन-वृत्तात गेय गीतिकाओं मे उपस्थित होते हैं। इन में तेरापन्थ संघ का उज्ज्वल इतिहास छिपा पड़ा है। उनमें अद्भुत तपस्याओं का वर्णन गुम्फित है। इस तरह यह कृति वहुत ही उपयोगी और संस्कार और चरित्र-निर्माण में सहायक है। परिशिष्ट में अन्य रचित कृतियो का समावेश है, जो मूल कृति की विशेप पूर्ति करती है।

श्री जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समारोह के उपलक्ष मे मित्र परिषद (कलकत्ता) ने जैन विश्व भारती प्रिंटिग प्रेस की स्थापना हेतु दो लाख रुपयो की राशि प्रदान करने की कृपा की है। उक्त मुद्रणालय जैन विश्व भारती को साहित्य-प्रकाशन के क्षेत्र मे द्रुतगति से बढ़ने में सहायक होगा। इस अवसर पर हम मित्र परिषद् के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन करते है।

श्री जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समारोह समिति के संयोजक श्री धर्मचन्दजी चोपडा एवं अन्य सदस्यों को भी हम उनके आर्थिक सौजन्य के लिए अनेक धन्यवाद ज्ञापित करते है।

लाडनूं (राज०)
१ सितम्बर, १९८१

—श्रीचन्द रामपुरिया
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती
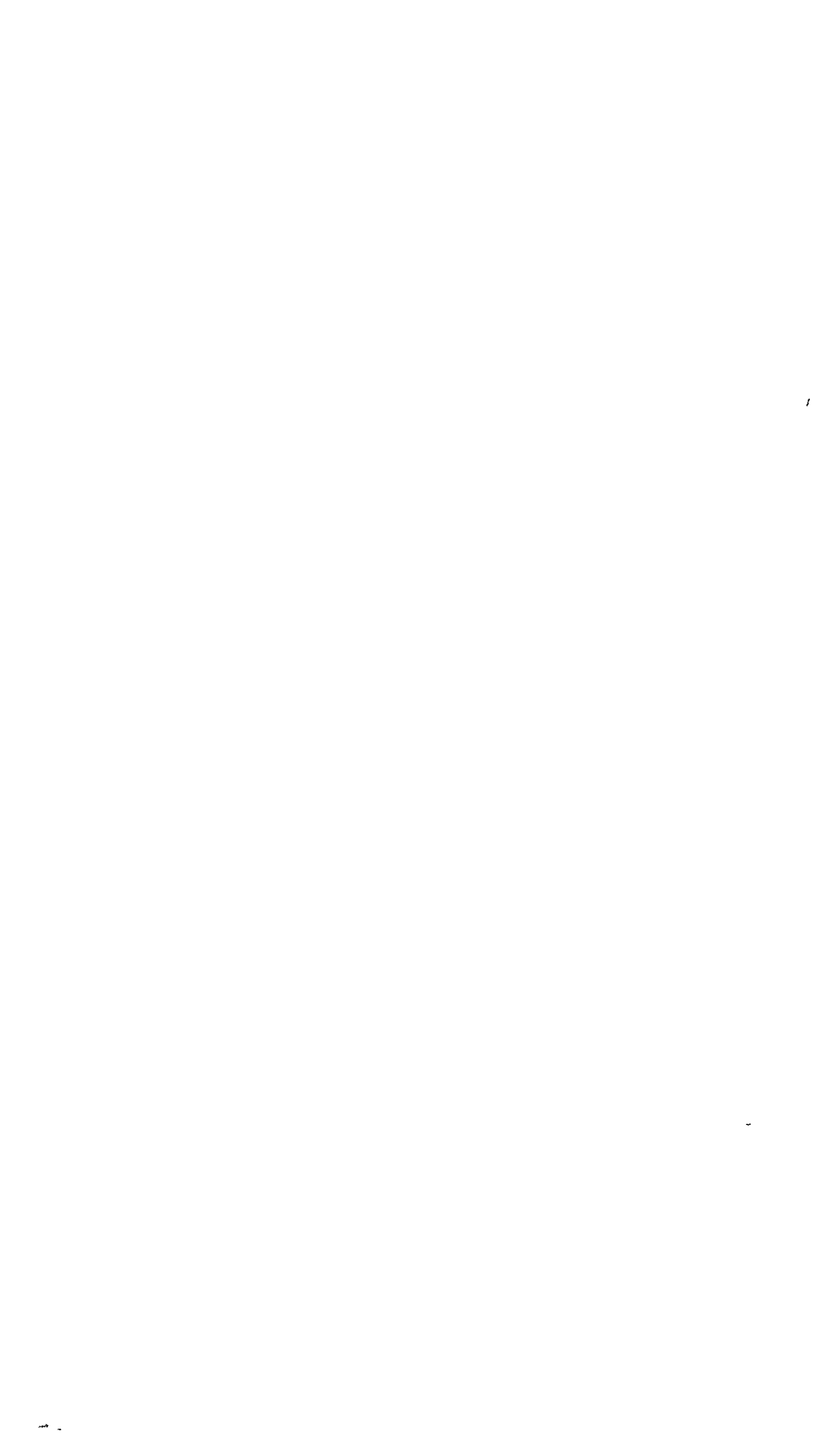
सम्पादकीय

जयाचार्य में मति, वुद्धि और प्रज्ञा की त्रिवेणी प्रवाहित थी। केवल मनन और केवल वुद्धि यथार्थता का स्पर्श करती है पर उसके पार तक नही पहुच पाती। पार-दर्शन का माध्यम है अन्तर्दृष्टि या प्रज्ञा। जयाचार्य ने अपनी प्रज्ञा से सत्य का अनुभव किया और उसे वाङ्मय में नियोजित किया। उनको अन्तर् भाषा है प्रज्ञा और वाहर की भाषा है राजस्थानी। उन्होने वहुत लिखा। सत्य को वहुत अभिव्यक्ति दी। कोई भी व्यक्ति जितना जानता है, उतना उसे अभिव्यक्त नही दे पाता। अनुभूति और अभिव्यक्ति—ये दो स्तर भिन्न-भिन्न है। जयाचार्य की अनुभूति प्रवल थी, इसलिए अभिव्यक्ति मे भी प्रवलता आ गई। अव तक उनकी वाणी वहुत कम प्रकाश मे आई थी। वह केवल हस्तलिपियो के भंडार मे सुरक्षित पड़ी थी। वह जन-जन तक पहुंच सके, ऐसी व्यवस्था नही हो सकी। हम उपादान और निमित्त—दोनों मे विश्वास करते है। उपादान होने पर भी यदि निमित्त न मिले तो क्रियान्विति नही हो सकती। जयाचार्य की निर्वाण शताव्दी एक निमित्त वना उनके साहित्य को जनता तक पहुचने का।

लगभग तीन दशको से हमारे धर्मसघ मे साहित्य की अजस्र धारा वही है। उसमे चार वड़े कार्य किए गए है—

१. आगम साहित्य का सपादन

२. तेरापंथ द्विशताव्दी का साहित्य

३. कालूगणी की शताव्दी का साहित्य

४. जयाचार्य का साहित्य

आचार्य श्री तुलसी के सुदीर्घ शासनकाल मे मेरुदड जैसे कार्य सम्पन्न हुए ओर हो रहे है। आचार्यश्री प्रेरणा के स्रोत है। वे नए-नए आयाम उद्घाटित करना चाहते है। ये सारे कार्य अधिकाशतया साधु-साध्वियो के

श्रम से सम्पन्न हुए है। किंचित् मात्रा मे गृहस्थ विद्वानो का भी योग रहा है। साधु-साध्वी समाज अध्ययननिष्ठ होने के साथ-साथ अनुशासननिष्ठ और श्रमनिष्ठ भी है। यही हमारे कार्य की सुविधा है। इस सुविधा के अभाव मे ये सारे श्रमसाध्य संपादन के कार्य अल्प अवधि मे सम्पन्न नही किये जा सकते थे।

जयाचार्य के साहित्य-सपादन का कार्य वहुत वड़ा है। उनके साहित्य की सूची काफी वड़ी है—

जयाचार्य वाङ्मय

चयनिका :

१. जय अनुशासन (हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती)

साधना :

२. आराधना

साहित्य :

३. उपदेशरत्नकथाकोष (अनुमानित दस खण्ड)

४ आख्यान-संग्रह (दो खण्ड)

५. संस्मरण

जीवन-वृत्त :

६. तेरापंथ के तीन आचार्य

इतिहास :

७. कीर्ति गाथा

८. अमर गाथा

विधि (Law) :

९. तेरापंथ : मर्यादा और व्यवस्था

आगम-भाष्य :

१० उत्तराध्ययन की जोड़

११. आचारांग को जोड़

१२. आचारांग को टब्बो

१३. ज्ञाता की जोड़

१४. भगवती की जोड़ (अनुमानित आठ खण्ड)

१५. आगम : प्रकीर्ण बिन्दु

तत्त्व-दर्शन :

१६. तत्त्व-चर्चा

१७. चर्चा-रत्नमाला

१८. भिक्खु कृत हुण्डी की जोड़ (भिक्खु कृत हुण्डी सहित)

१९. भ्रम-विध्वंसनम्

२०. प्रश्नोत्तर तत्त्ववोध (बृहत्)

२१. जिनाज्ञामुखमण्डन, कुमतिविहंडन

२२. संदेहविषौषधि, प्रश्नोत्तरसार्द्धशतक

२३. तत्त्व-चर्चापिटक

२४. भिक्षु ग्रंथ : आगम समन्वय

न्याय, व्याकरण, काव्य :

२५. न्याय, व्याकरण और काव्य

जयाचार्य के जीवन और साहित्य से सम्बद्ध ग्रन्थ :

२६. प्रज्ञापुरुष जयाचार्य

२७. जय-सुजश

२८. श्रद्धांजलि-संस्मरण

साहित्य-समीक्षा :

२९. जयाचार्य साहित्य मूल्यांकन

जयाचार्य स्मृति-ग्रन्थ :

३०. आगम-मंथन

साधना :

३१. मन का कायाकल्प

जीवन-वृत्त :

३२. चित्रावली

जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आचार्य भिक्षु और तेरापंथ से सम्बद्ध ग्रन्थ :

जीवन-वृत्त :

३३. आचार्य भिक्षु : जीवन-कथा

३४. आचार्य भिक्षु : धर्म-परिवार

इतिहास :

३५. शासन-समुद्र

तत्त्व-दर्शन :

३६. जय तत्त्व-बोध

आगम-मंथन, मूल्यांकन, श्रद्धांजलि-संस्मरण और प्रज्ञापुरुष जयाचार्य (जीवन-वृत्त)—ये चार ग्रंथ उनके साहित्य और जीवन से संवद्ध हैं। ये सव मिलकर ३६ ग्रंथ हो जाते हैं। इतना वड़ा कार्य वहुत थोड़े अर्से में संपादित और कुछ मात्रा में अनूदित होकर प्रस्तुत हो रहा है। यह श्रमनिष्ठा का एक निदर्शन है। जयाचार्य के ग्रन्थो के मूलपाठ शोधन मे सवसे अधिक श्रम आचार्यश्री ने किया है। नाना प्रकार की संघीय प्रवृत्तियों और साहित्यिक रचनाओं मे संलग्न एक आचार्य अपने पूर्वज आचार्य के साहित्य-संपादन मे इतने श्रम और शक्ति का नियोजन करे, यह कृतज्ञता और श्रद्धा का महान् निदर्शन है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि नवरत्नमल, मुनि सुखलाल, साध्वी कल्पलता, श्री श्रीचन्द रामपुरिया ने वहुत तन्मयता से काम किया है। मैं उनके प्रति प्रसन्नता प्रकट करता हूं तथा उन्हें साधुवाद देता हूं और आशा करता हूं कि भविष्य में इस शक्ति का अधिकतम उपयोग होता रहेगा।

अणुव्रत विहार, दिल्ली
१ अगस्त, १९८१

युवाचार्य महाप्रज्ञ

भूमिका

सर्वप्रथम जयाचार्य के चरणों में विनम्र प्रणाम ! यों परम्परा के प्रतिनिधिपुरुष होने के नाते उन्हें हजारो वार प्रमाण किया है, पर 'कीर्ति गाथा' पढ़ने के वाद उन्हे एक प्रबुद्ध-प्रणाम करने की इच्छा होती है। साधारणतया पद की उंचाई पर आरूढ व्यक्ति को धरातल पर जन्म लेने वाली घटनाओं का सम्यग्-ज्ञान, सम्यग्-दर्शन नही हो पाता। पर जयाचार्य के पास वह स्फटिक राडार-दृष्टि है, जो अपने परिसर मे घटने वाली सामान्य से सामान्य विशेषता को भी प्रतिविम्वित कर सकती है। यो हर नेता का पारखी होना वहुत जरूरी होता है। इस दृष्टि से कुछ विशिष्ट अनुयायियो का गुणगान अनिवार्य अपेक्षा वन जाती है, पर जयाचार्य ने 'कीर्ति गाथा' में न केवल कुछ गण्यमान्य संत-सतियों का ही उन्मुक्त स्तुति-गान किया है, अपितु सामान्य से सामान्य विशेषता को भी अपनी कलम की नोंक पर उठाया है। सारे जैन इतिहास में इस दृष्टि से जयाचार्य अकेले दिखाई देते है।

कुछ लोगों को कर्म मे वन्धन की गन्ध आती है, पर भगवान महावीर ने 'निर्जरा' शब्द के द्वारा कर्म को मुक्ति की राह वताई है। हो सकता है, कर्म में योग रूप कोई सूक्ष्म वन्धन रहा हो, पर इसमें कोई शक नही कि वन्धन का मुख्य कारक कषाय है। जयाचार्य में कषाय की अल्पता से ही इतनी विनम्रता प्रकट हो सकी कि छोटे-से-छोटे साधु-साध्वी को भी वे अपने श्रद्धा-जल से अभिषिक्त कर सके। निश्चय ही मुमुक्षा के विना यह कभी सम्भव नही हो पाता।

'कीर्ति गाथा' मे ३ आचार्य, ४ साध्वी प्रमुखा, ५६ सन्त तथा ५५ साध्वियो के स्तुति-गीत संकलित किए गये है। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक साधु-साध्वी, श्रावक तथा श्राविकाओं का भी प्रासंगिक उल्लेख हुआ है। मूल भाग के लेखक जयाचार्य स्वयं है तथा परिशिष्ट भाग में अन्य लोगों की रचनाओं को भी संकलित कर लिया गया है। इतिहास-सुरक्षा की दृष्टि से चरमोत्सव गीतिकाए, शासन-विलास, सतगुणमाला तथा आर्या-दर्शन आदि अनेक प्रकीर्ण रचनाएं भी इसमें संकलित कर ली गई है।

कुछ वर्ण्य आत्माओं को उनकी अवगाहना के अनुसार लम्वी काव्य-छाया प्राप्त हुई है, तो कुछ सामान्य-से-सामान्य विशेषता को भी समादृत किया गया है। यद्यपि तेरापंथ का इतिहास इनका मुख्य प्रतिपाद्य विषय रहा है, पर कथ्य और शिल्प की दृष्टि से भी इनमे से कुछ रचनाए काफी

सशक्त है। मैने जब कुछेक तपस्वी पुरुषों की जीवन-गाथाएं पढ़ी तो मुझे रोमांच हो आया। सचमुच उनकी गौरव-गाथा गाकर जयाचार्य ने अपने आचार्यत्व को सशक्त और सक्षम बनाया है।

सामान्य लोगों का घटनाओं के प्रति ध्यान नही जाने का कारण है संवेदनशीलता का अभाव। सामान्य आदमी उनकी महत्ता को नहीं पकड़ सकता। जयाचार्य एक ऐसे सूक्ष्मदर्शी व्यक्ति थे, जो सामान्य में भी असामान्य का दर्शन-स्पर्शन कर पाने में समर्थ थे। इसीलिए अपने वर्तमान की हर आहटको वे सुन पाये और उसे काव्यध्वनि दे पाये।

उद्बोधन-संदेश

जयाचार्य की दृष्टि में व्यक्ति प्रमुख नही रहा है। परम्परा प्रमुख रही है। यद्यपि परम्परा को प्रमुखता देने से व्यक्ति को प्रमुखता देनी ही पड़ती है, पर निकट व्यक्ति को प्रमुखता देने से परम्परा सूख जाती है। जब-जब परम्परा पर व्यक्ति सवार हो जाता है, तब-तब उसकी गति अवरुद्ध हो जाती है। जयाचार्य ने परम्परा को प्रवाहित रखने के लिए व्यक्तियों में प्रेरणा तो भरी, पर उन्होंने व्यक्ति को परम्परा पर सवार होने से हमेशा निराश किया। 'कीर्ति गाथा' में हम उनके इस रूप को बहुत अच्छी तरह से पढ़ सकते है।

'कीर्ति गाथा' की एक अपनी विशेषता और भी है, और वह यह कि इसमें न केवल जयाचार्य द्वारा रचित स्तुति-गीतों का संग्रह किया गया है, अपितु परिशिष्ट में अन्य साधु-साध्वियों द्वारा रचित स्तुति-गीतों को भी संकलित कर लिया गया है। इस परम्परा में श्रावकों की रचनाओ को संकलित कर एक नया अध्याय खोल दिया गया है। श्राविकाओ के नाम से किसी स्तुति के अभाव में एक कमी जरूर दिखती है, पर इस सत्य को स्वीकार करना पडेगा कि साक्षरता की दृष्टि से तेरापंथ का श्राविका समाज कुछ पीछे ही रहा है। यद्यपि युग की करवटों के साथ-साथ अब श्राविका-समाज भी आगे बढ़ रहा है तथा आचार्यश्री उसे इतिहास में उसका उचित स्थान देने के लिए सेजग- सचेष्ट प्रतीत होते है, फिर भी इस पक्ष को जगाने की अभी बहुत बड़ी आवश्यकता है।

'कीर्ति गाथा' की संयोजना से एक ओर इतिहास की सुरक्षा स्पष्ट झलक रही है, तो दूसरी ओर कलात्मक संरचना भी बहुत स्पष्ट झांक रही है।

वास्तव में तेरापंथ के श्रावक भी अत्यन्त जागरूक तथा संघ-सर्मपित लोग रहे है। तेरापंथ के इतिहास मे इसे एक अलग विवेचना से स्पष्ट किया गया है।

—मुनि सुखलाल

विषय-सूची

१

गणि गुण वर्णन

भिक्षु गणि गुण वर्णन

ढाल १

*भजो ऋषिराया हो, वंदो मन वच काया हो।
मणिधारी मुनिराया हो, दीपां उदरे जाया हो।
जिन जेम रटाया हो ॥ ध्रुपदं ॥

१ पांचमें आरे परगटचा, भिक्षु ऋषिराया हो।
चरण करण चित चातुरी, भवियण मन भाया हो ॥
२ मिथ्या तिमिर मेट नैं, दया दान दीपाया।
अखिल आचार अराधवा, हिवडे हुलसाया ॥
३ समता दमता उर धरता, शांत दांत सोभाया।
शील सुधा-रस साम ना, प्रणमू नित पाया ॥
४ आचार्य गुण आगला, गण-तिलक गुणाया।
धोरी ज्यूं जिन-मत धुरा, 'ब्रह्म'[1] तणा रस पाया ॥
५ सूरत मुद्रा सोहनी, श्याम वर्ण सुहाया।
याद आयां हीयो हूलसै, रोमांचित हुवै काया ॥
६ संवत अठारै एकाणूंवे, रामगढ माहि आया।
विद वैसाख त्रयोदशी, भिक्षु ना गुण गाया ॥

ढाल २

म्हारै आंगण तरु-कल्प फल्यो री ॥

१ भिक्षु भिन भिन भेद बताया, भारीमाल मिल्यो री ॥
२ 'ब्रह्मेश, 'अच्युत'[2] सुख कारण, निर्मल चरण धरचो री ॥
३ याद आया तन मन हुलसावै, नयणा अमिय भरचो री ॥

---

*लय : सोइ तेरापंथ पावै हो ए ''।

१. ब्रह्मचर्य ।

२. ब्रह्मेश (ब्रह्मेन्द्र) और अच्युत शब्द मे क्रमश आचार्य भिक्षु और भारीमालजी स्वामी के नाम का सकेत है । प्राचीन अनुश्रुति है कि स्वामी भीखणजी पांचवें देवलोक (ब्रह्म) के इन्द्र हुए तथा भारीमालजी स्वामी बारहवें अच्युत स्वर्ग मे गये ।

४ बुद्ध अनंत विचारणा ऊंडी, जिन मत प्रगट करचो री ॥
५ आप उजागर विड़द निभावण, सुमता रस थी भरचो री ॥
६ किंचित कहि नै बहुत निभायो, ए विडद वडा नो धरचो री ॥
७ [illegible] कारी बुध बल प्राक्रम, वारु गुण आदरचो री ॥
८ आप तणा गुण हूं किम विसरूं, तुम प्रसाद तरचो री ॥
९ '[illegible]'[1] मुनि महा जशवंतो, वारु जश विस्तरचो री ॥
१० 'अमीनंद'[2] तपसी तप दरियो, प्रत्यक्ष उद्योत करचो री ॥
११ 'भीम ऋषि'[3] पांडव भीम सरीखो, धर्मोद्यम मे जुड्यो री ॥
१२ आशा पूरण ना गुण गाया, मै हर्ष धरी गुण संभरचो री ॥
१३ संवत अठारै वर्ष अठाणुवे, विद बारस चैत्र धरचो री ॥

ढाल ३

*पूज्यजी [illegible] परपी, जिन मत रूडो झाल्यो जी ।
[illegible] तारी हो स्वामीजी, मार्ग तीखो चाल्योजी ॥

१ [illegible] थया भिक्षु स्वाम, जीव घणा रा थे सारचा जी काम ।
दान दया [illegible] रीत दिपाय, पंचमे आरे प्रगटचा मुनिराय ॥

२ [illegible] व्रत धीर, चरचावादी आप महा शूरवीर ।
[illegible] वड़ा जी वजीर, वाणी मीठी जाणै अमृत खीर ॥

३ [illegible] मेट्या जी 'माल'[4], पाखंड आप कियो जी 'पेमाल'[5] ।
[illegible] आवो जी मोय, हर्ष हीया में घणो मुज होय ॥

४ [illegible] भावे जोत, तुरत कियो आप अधिक उद्योत ।
[illegible] जाणं 'लूंन'[6], देखण बोलण री मन 'हूंस'[7] ॥

५ [illegible] अठाणुवे [illegible], स्वाम भिक्षु री रची गुणमाल ।
[illegible] जोड़, जपता थका पूगे मनरा जी कोड ॥

---

१. [illegible] 'जय जशकरण' नामक आचार्य ।
२. [illegible] मुनि अमीनंदजी (७५) ।
३. [illegible] मुनि भीमजी (६३) जो जयाचार्य के बड़े भाई थे ।
*[illegible] ।

४. [illegible]
५. [illegible]
६. अर्थ (मन)
७. प्रबल इच्छा ।

[illegible]

ढाल ४

*स्वामीजी अधिक थया उपगारी, आप प्रवल जश धारी रा प्रभुजी ।। ध्रुपद ।।

१ भिक्षु प्रगटचा भरत क्षेत्र में, उत्तम पुरुष अवतारी ।
भारीमाल सरीखा शिष्य भारी, सुवनीतां सिरदारी रा ।।

२ सावद्य निर्वद्य दान दया हद, न्याय छाण्यां तंत सारी ।
जिनवर गणधर सरीखी जोडी, भिक्षु भारीमाल नी भारी ।।

३ आप ओजागर विडद निभावण, बुद्धि बल यश अधिकारी ।
याद आयां तन मन हुलसावै, तुम गुण अधिक अपारी ।।

४ सूरत देखण प्रश्न पूछण रो, हूंस घणी मुझ भारी ।
धर ब्रह्मेंद्र अच्युत सुख साजण, तन मन मुद्रा प्यारी ।।

५ जशकरण मुनि महा जशवंतो, सुमति गुप्ति सुखकारी ।
आचार्य पद आप आराध्यो, भजन करो नरनारी ।।

६ भीम सरीखा शिष्य सुखकारी, अमीचंद तप धारी ।
भाव उद्योत भर माहे कीधो, उद्यमी अधिक अपारी ।।

७ 'कोदर'[१] 'हीर'[२] करी हद करणी, 'सतयुगी'[३] गण अधिकारी ।
'पीथल'[४] युग 'साम-राम'[५] 'जीवो'[६] मुनि, आदि थया शिष्य भारी ।।

८ संवत अठारै वर्ष अठाणूए, जेठ विद आठम बुधवारी ।
आशा पूरण रा गुण गाया, चूरू शहर मझारी ।।

ढाल ५

†१ धिन धिन भिक्षु मुनिराय, धर्म चलायो रे ।
शुद्ध दान दया दीपाय, जग जश छायो रे ।।

२ ज्यारी निर्मल बुद्ध वरनीत, तीर्थ स्वामी ।
म्हारे तन मन लागी प्रीत, अंतर्यामी ।।

---

*लय : भरतजी भूप भया छै वैरागी…।

१. आचार्य रायचंदजी के शिष्य महान् तपस्वी मुनि कोदरजी (८६)।

२. आचार्य भारीमालजी के शिष्य उग्र तपस्वी मुनि हीरजी (७६)।

३. आचार्य भिक्षु के परम विनीत शिष्य मुनि खेतसीजी, जिनका उपनाम 'सतजुगी' था।

४. आचार्य भारीमालजी के शिष्य घोर तपस्वी मुनि पीथलजी (७२)।

५. आचार्य भिक्षु के शिष्य युगलजन्मा मुनि श्री सामजी (२१) और रामजी (२३)।

६. आचार्य भिक्षु के विनीत शिष्य मुनि जीवोजी।

†लय : सुणो सीमन्दर स्वाम ………।

३ तुम गुण आया याद, हीयो हुलसावै ।
स्वामी देखण री अभिलाष, मन उम्हावै ।।

४ था सू वात करण री हूंस, मुझ मन भारी ।
थारी सुदर वाणी विशाल, लागै प्यारी ।।

५ तुम चरण कमल नी सेव, धिन ज्यां कीधी ।
तुम सीख अमोलक सार, धारे लीधी ।।

६ मुज मन मे मोटी हूस, किस दिन फलियै ।
जद होवे हर्ष अपार, शुभदिन वलियै ।।

७ आशा पूरण स्वाम, विडद तुम छाजै ।
सुर तरु चिंतामणि जेम, भय भ्रम भाजै ।।

८ अठाणूवे संवत अठार, रची गुण माला ।
मुज मन ना मनोरथ फल्या, ब्रह्मेश रसाला ।।

ढाल ६

भजन करो भिक्षु नों ।।ध्रुपदं।।

१ प्राणी रे नित्य भजन भिक्षु नों कीजे, नर भव नो लाहो लीजै लाल ।
२ ऋषि भारीमाल सुखकारी, महा उत्तम पुरुष उपगारी ।।
३ स्वामी दान दया हद छांणी, करी जिन आज्ञा अगवाणी ।।
४ महा नीतनिपुण वच साचा, लघु वृद्ध जतन में जाचा ।।
५ करुणा सागर स्वामी, उपगारी अंतर्यामी ।।
६ मनोहर मुद्रा प्यारी, थारी सूरत री बलिहारी ।।
७ तुम भजन करूं निश दिन में, स्वामी आप वस्या मुज मन में ।।
८ तुम नामे संकट टलियै, सुख संपति सुदर मिलियै ।।
९ मणिधारी आप उजागर, सुखकारी गुण रा सागर ।।
१० म्हे हूंस करी गुण रटिया, तुम नामे उपद्रव मिटिया ।।
११ कोइ भूत प्रेत दुखदाई, तुज भजन थकी टल जाई ।।
१२ जाप जपू नित्य तेरो, मन वंछित पूर्ण मेरो ।।
१३ संवत अठारै निनाणू, भाद्रवा विद चोथ पिछाणूं ।।

ढाल ७

*संत सुखकारी रे ।।ध्रुपद।।

१ पंचमें आरे परगट्या, गुणधारी रे ।
दान दया न्याय छाण नैं, मेट्या घणा रा साल ।।
२ उपगारी गुण आगला, जिनवर गण धर जेम ।
समरण कीधा स्वाम नो, पांमै तन मन प्रेम ।।
३ विडदधारी जन वालहा, सुमति गुप्त व्रत धार ।
गुण ओलख समरण करै, सुख पामै श्रीकार ।।
४ दुष्ट देत्य व्यंतर वडा, भूत प्रेत विकराल ।
समरण करतां स्वाम नो, दूर टलै ततकाल ।।
५ 'अधिक व्याध'[1] 'अरियण'[2]मिटै, सुख संपति सयोग ।।
जाप जपंता आपरो, ओर टलै अप-योग ।।
६ नित्य प्रति समरण आपरो, आशा पूर्ण आप ।
मत्राक्षर सम नाम ए, मिटियै सर्व संताप ।।
७ संवत अठारै निन्नाणूवे, भाद्रव विद चोथ बुधवार ।
गुण गाया भिक्षु भारीमाल ना, बीदासर शहर मझार ।।

ढाल ८

† हा ए समरण स्वाम नो ए, कै अंतर्यामि नो ए, भिक्षु भारीमाल ।।ध्रुपद।।

१ शासण नायक भिक्षु भारीमाल जी, स्वामजी किया थे तो घणा नै निहाल।
शुद्ध दान दया हद न्याय देखाविया हे ।।
२ आप उजागर अधिक वजीर जी०, वाणी थारी अमृत खीर ।
गण प्रतिपालक स्वाम सुहाविया ।।
३ धीरजवंता सुर गिरि जेम, खिम्या ना गुण कहिणी नावै केम ।
उपसर्ग सहिवा शूर सीह सारिखा ।।
४ तीजे पाट थाप्या ऋषिराय, आगुंच थे तो दीयो जताय ।
आतो भारी रे भिक्षु नी निर्मल पारखा ।।
५ ऊंडी थारी बुद्ध अंनूप, चरचा करवा अति घणी चूप ।
करुणा सागरनो जग जश छावियो ।।

---

*लय : आज आनंदा रे ·······।
१. उग्र व्याधि
२. शत्रुजन ।
† लय : वामा नन्दन पास जिणंद जी ·····।

६ पचम काले जिनवर जेम, पेखत पामै तन मन प्रम।
समरण करत हिये हर्षावियो ॥

७ जाप जप्यां थी पांमै अहलाद, नित्यप्रति आवो मुझ याद।
तुज समरण थी भय भ्रम सहू टलै ॥

८ भूत प्रेत दुष्ट जाये सर्वनाश, समरण कीधा रंग विलास।
सतगुरु भजन थी वंछित फलै ॥

९ म्हे तो न देख्या भिक्षु स्वामी रा थाट, देख्या थारा निर्मल दोय पाट।
भारीमाल ऋषिराय वडो विडद पाविया ॥

१० निन्नाणुवे संवत अठार, भाद्रव विद छठ शनिवार।
शहर विदासर में गुण गाविया ॥

ढाल ६

*स्वामी भिखनजी सुखकारी रे।
त्यारो जाप जपो नरनारी रे, उत्तम ज्ञान क्रिया गुणधारी रे ॥ध्रुपदं॥

१ भिक्षु प्रगट्या भर्त क्षेत्र में, उत्तम पुरुष अवतारी।
शिष्य भारीमाल सरीखा भारी, सुवनितां सिणगारी रे ॥

२ सावद्य निर्वद्य दान दया हद, न्याय छाण्या तंत सारी।
उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अनोपम, ज्यारी हूं वलिहारी ॥

३ गोतम वीर तणी जिम जोडी, सखरी भांत सुहाणी।
तिम भिक्षु ने भारीमाल री, जुगती जोड जणाणी ॥

४ समरण कीधां बाधै संपति, पामै सुख भरपूरं।
जय ब्रह्मेन्द्र अच्युत सुख कारण, दुर्गति होवै दूरं ॥

५ अमीचंद तपसी गुण आगर, तप करनै तन तायो।
भाव उद्योत भरत में कीधो, जिन मग कलश चढायो ॥
(तपसी अमीचंद सुखकारी ॥)

६ चौविहार दश तांई कीधा, वलि तप विविध प्रकारं।
मुद्रा सौम्य निश्चल चित समरण, सुख संपति दातारं ॥

७ कोदर ऋषि करणी हद कीधी, छठम छठम अठम धारचो।
संथारो दिन सात तणी भल, आतम काज सुधारचो ॥
(तपसी कोदर ऋषि सुखकारी ॥)

---

*लय : सासु सुसरा चंद नृप..........।

८ विचारणा ऊंडी वडभागी, वचन सूर वेरागी।
याद आयां तन मन हुलसावै, तपसी त्रिया त्यागी॥
९ पांडव भीम जिसो ऋषि भीम थयो, गुण सागर ऋषि भारी।
उपगारी उद्यमी मुनिवर नैं, याद करै नर नारी॥
(स्वामी भीम ऋषि सुखकारी॥)

१० प्रीत निभावण भीम सरीखा, जग में थोड़ा जीवा।
शुद्ध मन सेती समरण करतां, खुलै ज्ञान घट दीवा॥
११ 'कल्लुजी'[1] री उत्तम करणी, प्रवर सुयश हद पायो।
तीन पुत्र ले आप तरया, जिन मारग कलश चढायो॥
१२ मास खमण पट वार किया तप, धारयो विविध प्रकारं।
समरण करतां संकट भांजै, पामं लाभ अपारं॥
१३ संवत उगणीसे रटिया, विद चेत तीज दिल खोली।
समरण स म्हे सुख पायो, वर हर्ष थयो वाजोली॥

ढाल १०

१ पंचम आरे प्रगटया, हो जी स्वामी, भिक्षु ऋषि भारीमाल रे।
अधिक उजागर छो जी, मुनिराज सुमता सागर छो जी॥
ऋषि राज गुण ना गागर छो जी॥

२ वर्द्धमान गोयम जिसी, जुगती जोडी जाण।
भर्म भय भंजन, जन मन रंजन॥
अरि ना 'गंजन'[2]॥

३ गण में संत सुहामणा, अमीचंद ऋषि भीम।
गुण भारी घणा, महा रलियामणा॥
संत सुहामणा॥

४ कोदर तप भारी कियो, पटमासी धर खंत।
छठ छठ पारणो, भविजन तारणो॥
जगत उद्धारणो॥

५ कल्लु हद करणी करी, विगट तप दिल धार।
श्रमणी सोभती, मोटी सती॥
वारु गुणवती॥

---

१. साध्वी कल्लुजी (७४), जो मुनि सरूपचंदजी, भीमजी तथा जयाचार्य की माता थी।
२. पराजित करने वाले।

६ संवत उगणोसे समे, आठम सुदि आपाढ।
श्रीजीद्वारे सही, आनंद गह गही ॥
हद कीरत लही ॥

ढाल ११

*गावत मैं तो पूज्य तणा गुण भारी।
ज्यांरी सूरत री वलिहारी, ज्यांरी करणी री वलिहारी ॥ ध्रुपदं ॥

१ भर्त क्षेत्र में भिक्षु प्रगटचा, भारीमाल ऋपि भारी।
सुधर्म वीर तणी वर जोड़ी, उत्तम पुरुष उपगारी ॥
२ सावद्य निर्वद्य दान दया हद, न्याय छाण्या तंत सारी।
जिन आगन्या में धर्म ओलखायो, तो अधर्म आगन्या वारी ॥
३ उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अनोपम, भिक्षु नी अति भारी।
सरल विनीत निगर्व गुणे करी, भारीमाल अधिकारी ॥
४ भविजन तारण श्री जिन जैसा, आप थया अवतारी।
पुन्य प्रमाणे मिल्या शिष्य सुगुणा, खेतसीजी हितकारी ॥
५ सतयुगी नाम अपर सत युग सा, विनयवान महा भारी।
भिक्षु नी कठिन शीख पिण सुण नै, अमिय समान आहारी ॥
६ जगत-उद्धारण विघ्न-विदारण, अमृत वाण उदारी।
'धारण ब्रह्म सहस्रार अच्युत'[1] सुख, कारण तारणहारी ॥
७ विघ्न हरण सुख करण नाम सू, आनंद हूवो अपारी।
उगणीसै वीए पोह सुदि पंचम, 'पयवर'[2] गाम मझारी ॥

ढाल १२

†स्वाम सुहामणा रे ॥ ध्रुपदं ॥

१ पूज्य भीखनजी परगटचा रे, शिष्य भारीमाल सुखकार रे।
(दोनू) गुरु चेला गिरवा घणा रे, जोडी वीर गोयम ज्यू सार रे स्वा० ॥

*लय : आवत मेरी गलियन में गिरधारी ......।

१. ब्रह्म—ब्रह्मेन्द्र—स्वामी भीखणजी। (देखें ढा. २ गा. २)
सहस्रार—प्राचीन अनुश्रुति के अनुसार मुनि श्री खेतसीजी आठवें सहस्रार नामक देवलोक मे गये। अतः यहां सहस्रार शब्द मे उनके नाम का संकेत है।
अच्युत—भारमलजी स्वामी। (देखें ढाल २ गा. २)

२. दूधोड़।

†लय : मालण मोगरो।

२ (स्वामी) प्रभु वच आणा शिर धारी, दिया भिन्न-भिन्न भेद वताय।
हृद दान दया न्याय छाणनै, दीया जीव घणा समझाय॥
३ उत्पत्तिया वुद्धि भिक्षु तणी, भद्रीक घणा भारीमाल रे।
गुण याद आया मन हुल्लसै, चाल्या सत्पुरुषां री चाल॥
४ मुनि सुखदाई मिल्या संत सत्यां भणी, थे तो खेतसो जी गुण खान।
श्रमण प्रतिपालक संत सत्या भणी, स्वामी प्रत्यक्ष जनक समान॥
५ विविध विनय सतयुगी तणै, तन मन करै साधां री सेव।
चित्त प्रसन्न कियो सतगुरु तणो, अलगो करिनै अहमेव॥
६ हूं तो नित्य प्रति भजन करूं सदा, सुख संपति मिलियै सार।
दुख दारिद्र दूरा टलै, कांइ जपता जय-जय कार॥
७ संवत उगणीसै तीये वर्ष में, विद चवदश 'मास कुमार'[1]।
स्वामी मुज मन आशा पूरणा, रटचा श्रीजीद्वारा मझार॥

ढाल १३

१ *शासण शिरोमणि शोभता, गुणधारी रे, कांइ भिक्षु स्वाम सुहाय, महासुखकारी रे।
भवि पंकज विकसायवा गुणधारी रे, काइ दिनकर सम मुनिराय, महा सुखकारी रे॥
२ 'वज्री'[2] 'असुर'[3] विदारवा, सुरेंद्र भिक्षु स्वाम।
'समय-वज्र'[4] कर ग्रही करी, पाडी पाखंड 'माम'[5]॥
३ व्रत अव्रत न्याय छाणिया, पय जल जेम मराल।
उत्पत्तिया वुद्धि वल करी, दियो पाखंड रो गर्व गाल॥
४ 'आकीर्ण वाजी'[6] जिसा, भारीमाल सुवनीत।
'जुग-नृप पद'[7] वत्तीसे दियो, निरखी निर्मल नीत॥
५ साठे अठंतरै समे, भिक्षु भारीमाल परलोक।
तीजे पट ऋषिरायजी, पूरण ज्यांरो पोख॥

---

१. आश्विन महीना।
*लय : तुर्रा री राग में छै।
२. इन्द्र।
३. दैत्य, राक्षस।
४. सिद्धान्त रूप वज्र (शास्त्र)।
५ गर्व।
६. जातिमान घोड़ा।
७. युवराज (युवाचार्य) पद।

६ 'टोकरजी-हरनाथजी'[१], भिक्षु कीध प्रशंस।
'साम-राम'[२], 'कंचन ऋषि'[३], 'सतयुगी'[४] गुणी अवतंस।।
७ उगणीसै तीये समे, 'उदिष्ट-मास कुमार'[५]।
श्रीजीद्वारे गुण गाविया, आनंद हुओ अपार।।

ढाल १४

*भिक्खु ऋषि वंदो रे, सुगुरु शिरोमणि सार।।ध्रुपदं।।
१ उत्पत्तिया बुद्धि आपरी रे, अधिक अनोपम ताम।
वज्री असुर विदारणे रे, तिम पाखंड पेलण[६] स्वाम।।
२ आख्यो वीर सिद्धांत में, भिक्खु भगोती मांय।
नाम गुणागर निर्मलो, स्वामी गण-वच्छल सुखदाय।।
३ चितामणि सुरतरु समा, आशा पूरण आप।
गुणनिधि ना समरण थकी, टलिये सोग संताप।।
४ वरचरणकरण गुणधरणकू, शिव-वधू[७] वरण सोभाय।
तारण तिरण महाराज छै, सुद्ध समरण थी सुख पाय।।
५ भिक्षु नें भारीमाल नी, जोड भली सुखकार।
गोयम वीर तणी परे, स्वामी शासण ना सिणगार।।
६ धीर गंभीर मेरू दधि, साहसीक शिरताज।
संशय तिमिर मिटायवा, दीपै ज्यूं दिनराज।।
७ चातक घन पिउ पतिव्रता, गोप्यां जेम गोविंद।
मुज मन समरण में सदा, जेम चकोरा चंद।।
८ समचे वोल सिद्धांत में, खोल्या बुद्धि प्रमाण।
सावद्य निर्वद्य जुवा जुवा, स्वामी दान दया न्याय छाण।।
९ पुन्य प्रवल महाराज ना, जिम चक्री नर इंद।
जिण आणा आगे करी, स्वामी मेटया घणा रा फंद।।

---

१. आचार्य भिक्षु के परम सेवाभावी संत टोकरजी (४) और हरनाथजी (५)
२. युगल जन्मा मुनि सामजी (२१) और रामजी (२३)
३. मुनि हेमराजजी (३६)
४. मुनि खेतसीजी (२२)
५. श्राद्ध मास—आसोज

*लय : राजा राणी रंग थी ...... ।

६. पराजित करने के लिए
७. मुक्ति रूप स्त्री।

१० गुण सागर गिरवा मुनि, अधिक उजागर आप।
नागर नीत निपुण करी, स्वामी धर्मजागरचित्तस्थाप॥

११ दुष्ट देत्य व्यंतर तणा, भूत प्रेत भयंकार।
उपद्रव न्हासै नाम थी, स्वामी सुख संपति दातार॥

१२ धन तेरस उगणीसै तीये, आशा पूरण स्वाम।
गुणगायां परमानंदप्रगट्यो, स्वामी श्रीजीद्वारे शुभठाम॥

ढाल १५

१ *भिक्षु थे तो वालपणे बुद्धिवंता, खेल खेलंता रा ज्ञानी गुरुजी।
खेल खेलंता हो, स्वामी प्यारा जी॥

२ भिक्षु थे तो भेष धारचां नैं परहरिया, गुण रा दरिया सत गुरु जी।
गुण ना दरिया हो, प्रभु प्यारा॥

३ स्वाम आप दान दया न्याय छाण्या, नव तत्व जाण्या॥
४ स्वामी आप व्रत में धर्म ओलखायो, जग जश छायो॥
५ स्वामी थारां दृष्टांत सरस सुहाया, मुज मन भाया॥
६ स्वामी थांरी उत्पतिया बुद्धि भारी, शिव ने तारी॥
७ स्वामी आप पंच महाव्रत धारी, असल आचारी॥
८ स्वामी हुं तो ध्यान धरूं निश दिन मे, वश रह्या मन मे॥
९ स्वामी थांरा पुन्य प्रवल अति तीखा, शिष्य मिल्या नीका॥
१० स्वामी थांरै भारीमाल शिष्य भारी, महा सुखकारी॥
११ स्वामी थे तो सरल भद्रीक सोहंता, महा यशवंता॥
१२ स्वामी थांरी वीर गोयम सी जोड़ी, धर्म का धोरी॥
१३ स्वामी थे तो साठे, अठंतरे सारो, कियो संथारो॥
१४ स्वामी म्हे तो हर्ष धरी गुण रटिया, उपद्रव मिटिया॥
१५ स्वामी म्हे तो उगणीसै तीये गुणगाया, हर्ष सवाया॥
१६ स्वामी पोह सुदि सातम सारो, मंगल वारो॥
१७ स्वामी हूं तो शहर केकडी में आयो, गुण जश गायो॥

*लय : प्रभु थारे गल मोतिन की माला ए......।

ढाल १६

दूहा

१ संवत सतरै त्यासिये, आषाढी सुनम मास।
चोथो पायो मूल नो, जनम्या भिक्षु स्वाम ॥

*स्वामी शरण तिहारे हो, शरण तिहारे हो रे।
परम पूज्य भिक्षु ने भारीमाल, आयो शरण तिहारे हो ॥ध्रुव॥

२ वर्द्धमान गोयम सी जोडी, भिक्षु भारीमाल।
श्रमण शिरोमणी गण सुखकारी, तोना आगली चाल ॥

३ विरुद निभावण आप उजागर, मेटण भव संताप।
जे नर तन मन सूं तुम ध्यावै, आशा-पूरण आप ॥

४ उत्पत्तिया बुद्धि ऊंडी विचारण, आप तणी स्वामीनाथ।
सिंधु अथग जल पार लहे कुण, जिम तुम हृदय री बात ॥

५ समरण आप तणो सुखकर सम, चिंतामणि तुम नाम।
जगत-उद्धारक पारस प्रत्यक्ष, तुं मुज पूरण काम ॥

६ संवत अठारै साठे, अंतरे, आप गया परलोग।
आधार भजन तणो मुज मोटो, नेह थी सगला थोक ॥

७ सुपने ही संभाषण करता, शीतल होवै मन्न।
प्रत्यक्ष तो कहिवो किम्यूं रे, चित होय अधिक प्रसन्न ॥

८ उगणीसै साते पोह सुदि नवमी, गुण गाया धर अहलाद।
समरण आप तणो करता सुख, पायो परम समाध ॥

ढाल १७

१ †होजी म्हारे, भिक्षु ऋषि सूं लागी पूरण प्रीत जो,
जीवडो रे ललचाणो स्वामी जी सूं ओलगे रे लो ॥

२ होजी म्हारै स्वामी सरीखो कुण छै दुनिया माहि जो।
देखण रो मुज मनडो अधिको ऊमगे ॥

---

*लय : काय न मांगु ३ हो ए ।

†लय : हो जी कांइ धर्म जिणंद सूं ....।

३ होजी मोने विविध प्रश्न रा उत्तर अधिक अनोप जो।
देवै रे अति हर्ष धरी नै अति भला ॥
४ होजी म्हे तो पंचम आरे सांप्रत पारस सारिसो।
पायो रे वड भाग प्रमाणे पोरसो ॥
५ होजी थारी उत्पत्तिया बुद्धि आछी अधिक उदार जो।
विचारणा पिण आप तणी ऊंडी घणी ॥
६ हो जी आप मंजुल मधुर सुध वचन महा सार जो।
वारू रे अति परम अर्थ सुध वागरो ॥
७ होजी हूं तो सुपने सूरत पेख्यां परमानंद जो।
आवै रे अति हर्ष बैण सुणियां थकां ॥
८ हो जी मन उल्लसै प्रत्यक्ष कद पेखू दीदार जो।
मन रा रे मनोरथ सफला कव हूवै ॥
९ हो जी म्हे तो हर्ष धरी नै समरचा भिक्षु स्वाम जो।
उगणीसै साते विद चेत चतुरदशी ॥
१० हो जी हूं तो जोवनेर में पायो परमानंद जो।
रटियां रे स्वामी सहू उपद्रव मिट गयो ॥[1]

ढाल १८

*जग जश छायो रा स्वामजी, मुज प्राण वल्लभ महाराज।
जन गुण गायो रा स्वामजी० ॥ध्रुपदं॥

१ भय भंजन भिक्षू भला रे मुनि, भारीमाल ऋषि सार।
पंचम आरे परगटचा रे मुनि, उत्तम पुरुष गुणधार ॥
२ सतरैसें वंयासिये जन्मिया रे मुनि, भिक्षु सिह स्वपन्न।
संवत अठारै चोके समे रे, काइ भारीमाल उत्पन्न ॥
३ साठे, अठंतरा, वर्ष मे रे मुनि, अनशन अधिक उदार।
उजागर गुण आगला रे, काइ जन वच्छल सुखकार ॥
४ पूरण प्रीत निभायवा रे मुनि, परम विरुद पहिछाण।
हिवडा भितर वस रहचा रे काइ, जाण रहा जगभाण ॥

१. इस पद्य से प्रतीत होता है कि जयाचार्य ने यह गीतिका किसी देवादि कृत उपसर्ग होने से बनाई और उस समय आचार्य भिक्षु का स्मरण किया, जिससे उपद्रव दूर हो गया। १८ वी ढाल भी उक्त उद्देश्य से बनाई गई, ऐसा उसके अन्तिम पद्य मे ज्ञात होता है।

*लय : हद तप ठाणे रा हीरजी ए......।

५ आप तणी मुज आशता रे मुनि, आशा पूरण आप।
व्यान समरण नित्य स्वाम नो रे काइ, आप तणी शिर छाप॥
६ कृपा निधि करुणागरु रे मुनि, गुरु चेला गुणवंत।
ऊंडी तुज आलोचना रे काइ, मेटण मन की 'खंत'[१]॥
७ उगणीसै साते समे रे मुनि, जोवनेर जयानंद।
चेत सुदि एकम दिने रे मुनि, दूर थया 'दुख धंद'[२]॥

ढाल १८

१ *स्वाम भिक्षु सुखकारी हो, सिणगारी शासण ना सही।
शिष्य भारीमाल सुवनीत॥
शुद्ध वीर गोयम सी जोड़ी हो, मन मोडी वांदू स्वामजी।
परम आप सूं प्रीत॥
२ शुद्ध दान दया दीपाया, सुख पाया सरधी समगती।
हुलसाया हिवडे हेम॥
च्यार तीर्थ हर्षाया, मन भाया चाह्या चित मझे।
काइ पायां तन मन प्रेम॥
३ झाडण कर्म जंजीरा हो, सूरवीरा भिक्षु जिन जिसा।
'षट पीहरा'[३] खङ्ग सुक्षांति॥
पूज्य अमोलक हीरा काइ, सूत्र वचन हद सोधिया।
भाजण भविजन भ्रांति॥
४ पुन्य प्रवल अति तीखा, शिष्य नीका भारीमालजी।
कांइ सरल स्वाम सुखदाय॥
साठे वर्ष अठंतरे, गुरु चेला कारज सारिया।
श्रमण सुरतरु सुहाय॥
५ मुज भाग्य दशा अति भारी, सुखकारी समरचां स्वामजी।
काई आशा पूरण आप॥
उगणीसै वर्स आठै, मृगसर सुदि आठम ओपती।
कांइ जय जश करण सुजाप॥

---

१. अभिलाषा।
२. उपद्रव।
*लय : कुर्कट ना मुख सामो।
३. छहकाय के प्राणियों के रक्षक।

ढाल २०

१ *भीखन जी इण भरत में, जगत उद्धारक जिहाज ।
भारीमाल शिष्य झलकता, प्रगट्या भवदधि पाज ।।

२ जोडी वीर गोयम जिसी, वडा पुरुष विरुद धारी ।
जीव घणां समजावियां, उत्तम पुरुष अवतारी ।।

३ जिण शासण शिर सोभता, सखरा गण सिणगार ।
गण शुद्ध करण महा गुणी, विमल दृष्टि सुविचार ।।

४ वारण सारण विध करी, निर्मल गण नै करंता ।
ऊंडी अधिक आलोचना, वचनामृत वर्षता ।।

५ अधिक आधार आप रो, आशा पूरण आप ।
समरण आप तणो सदा, जपू आपरो जाप ।।

६ आप तणा प्रताप सू, सफल मनोरथ सुसरिया ।
ऐसा भिक्षू ओपता, इण आरे अवतरिया ।।

७ उत्पतिया वुद्धि आपरी, अधिक अनोपम एन ।
सरस वचन तुम साभल्यां, चित में पामूं चेन ।।

८ शीख समापण स्वामजी, भारी बुद्ध भरपूर ।
वच्छलकर मुज वालहा, सतवादी महा शूर ।।

९ पवर मनोरथ माहरा, ते पूरया तहतीक ।
अल्प वचन गुण-आगरू, रूडा अति रमणीक ।।

१० मनसोवो महा मुनि तणो, कहा कहूं मुनि करणी ।
प्रवर नीत पुन्य पोरसो, तिमिर-हरण जिम तरणी।।

११ श्रमण शिरोमणि शोभता, भिक्षु ने भारीमाल ।
तीजे पट ऋषिरायजी, मुज नै कियो निहाल ।।

१२ महिमागर मोटा मुनि, जय जश करण सुजाण ।
प्रत्यक्ष आरे पांचमें, भिक्षु सांपृत भाण ।।

१३ संवत उगणीसै आठे समे, जेष्ठ कृष्ण चोथ जाण ।
पट मंगल पद पांमियो, वीदासर सुविहाण ।।[1]

---

*लय : प्रभवो मन मांहि ... ।

१. जयाचार्य सं० १९०८ माघ शुक्ला १५ को पदासीन हुए । फिर साधुओं के निवेदन एवं विशेष आग्रह पर जेठ वदि ४ को वीदासर मे दूसरी वार पट्टोत्सव मनाया गया, ऐसा इस पद्य से प्रमाणित होता है ।

ढाल २१

*भजो भिक्षु हितकारी हो ।।ध्रुपदं।।

१ सवत अठारै सोले समे, मास आषाढ उदारी हो ।
पूनम तिथि संयम लियो, स्वाम भिक्षु सुखकारी हो ।।
भारीमाल आदि लारी हो ।।

२ दिया परीषह पूज्य नै, पाखंडियां तिण वारी ।
अडिग रह्या मोटा मुनि, लोकोत्तर दृष्टि धारी ।।
न्याय छाण्या तंतसारी ।।

३ अडतीस सहंस रे आसरै, 'ग्रंथ'[1] किया गुणकारी ।
इकसौ च्यार आसरै, दीक्षा दीधी उदारी ।।
गण में सुविचारी ।।

४ वंकचूलिया में वारता, उदय पूजा अधिकारी ।
संवत अठारै तेपना पछै, आय मिली इहवारी ।।
सांभलजो विस्तारी ।।

५ द्वादश मुनि आगे हूंता, तेपना पहिला धारी ।
हेम चरण लियो तेपने, तेरमा मुनि भारी ।।
वृद्धि तास अनुसारी ।।

६ स्वमुख संथारो कियो, भिक्षु स्वास विचारी ।
संत इकवीस सुहामणा, अज्जा सत्तावीस धारी ।।
पहुंता परलोक मझारी, भजो भिक्षु ऋषि भारी ।।

७ उगणीसै ग्यारे समे, फाल्गुन सुदि तेरस धारी ।
भिक्षु भज्या उज्जेण में, ठाणा गुणंतर सारी ।।
संत सती सुखकारी, भजो भिक्षु गच्छधारी ।
नाम रट्या निस्तारी, शिवसुख ना दातारी ।।

ढाल २२

‡स्वाम के वच प्यारे ।।
म्है तो देख्यो न गणपति एहवो, स्वामी जिन जेहवो ।।ध्रुपदं।।
१ ए तो भिक्षु भरत मे परगटिया, गुण राम नाम ज्यूं रटिया ।।

*लय : सोही तेरापंथ पावै हो······ ।
१. श्लोक सख्या ।
‡लय : ज्यां रे सोहै केसरिया······ ।

२ दान दया तत्व वताया, आप न्याय अपूरव ल्याया ।।
३ बुद्धि उत्पतिया अनुसारी, वांधी दृढ मर्याद उदारी ।।
४ आपस मांहि चला नही करणा, लिखत वत्तीसे गुणसठे निरणा ।।
५ एक गणपति आण में रहिणो, गुणसठे लिखत मांहि वहिणो।
६ दोष देखै तो तुरत दाखीजै, घणा दिवस धारी न राखीजै ।।
७ घणा दिनां पछै कहै जेह, कह्यो दोष तणो धणी तेह ।।
८ लिखत पच्चासे गुणसठे वातं, वलि रास माहि अखियातं ।।
९ क्षेत्र काचो वतायो किण नैं सीधा, वलि कपडादिक मोटो दीधा ।
१० इत्यादिक कारण पड्या ताय, ओ तो कषाय नैं वश आय ।।
११ जद गुरुवादिक ना जाण, अवगुण वोलण रा पचखाण।।
१२ एक एक रे आगले वदण रा, त्याग जिल्लो वांधण रा ।।
१३ क्षेत्र 'तंतू'[1] रो नाम जतायो, इत्यादिक में अपर वहु आयो ।।
१४ इत्यादिक मांहि आक्षेप, तिण रा नाम कहूं संक्षेप ।।
१५ किण ही रो न कियो सिंघाड़ो, जब 'दुमनो'[2] न होणो लिगारो ।।
१६ किणही मुनि नै छोटां लारे म्हेलै, जद क्रोध मान में न खेलै ।।
१७ किण नै दीक्षा री आज्ञा नही देवै, जद रीस हिये नही 'वेवै'[3] ।।
१८ किण ही साधु रो कुरव वधायो, देखी क्रोध करै किण न्यायो ।।
१९ किण ही नैं दीक्षा देइ नै आण्यो, तिण नै लेइ 'अवर पेठाण्यो'[4]।।
२० किणही नै पात्र पाना नही दीधं, जद क्रोध न करणो सीधं ।।
२१ भूख लाग्यां मांग्यो आहारं, पाती उपरंत न दियो लिगारं ।।
२२ इम हीज तृषा करी तन पीडं, पांती उपरंत नाप्यो नीरं ।।
२३ द्रव्य क्षेत्र काल भाव देखी, किण नै पाती उपरांत देवै विसेखी ।।
२४ किण नै वखाण नाहि भुलायो, तो क्रोध करै किण न्यायो ।।
२५ मेलै कंठ मिलावण काजे, किण नै छोटा वड़ा पे समाजे ।।
२६ किण ही रे ओषध नही कीधो, किण नै ओषध मंगाय दीधो ।।
२७ पच पाणी तथा उन्हो आहारं, देखी क्रोध न करणो लिगारं ।।
२८ मोटी पदवी किण ही नै आपै, तो स्थिर चित आतम थापै ।।
२९ इत्यादिक मे तो वोल अनेकं, ते तो बुद्धिवंत दिल संपेखं ।।
३० त्यां कारणे द्वेष न धरणा, अंश अवगुण नही उच्चरणा ।।
३१ ए त्याग कराया जाणं, वले जिल्लो वांधण रा पचखाणं ।।

---

१. वस्त्र ।
२. दुःखी ।
३. मन मे रोष महसूस न करे ।
४. अन्य मुनि को सौंप दिया ।

३२ वले गुरु आदिक रे पास, रहै आपरै मतलव तास ॥
३३ पछै आहारादिक रो ताम, थोडा घणां तणो लेइ नाम ॥
३४ तथा कपडादिक रो नाम ले जाण, अवगुण वोलण रा पच्चखाण ॥
३५ पच्चासा रा लिखत में ए वात, स्वामी छानी न राखी अंशमात ॥
३६ ए त्याग पालै सुवनीत, नही वोलै वचन विपरीत ॥
३७ अवनीत अवगुणगारो, त्याग भांग तो न डरै लिगारो ॥
३८ छेडव्या सामो माडे सींगो, होय वेठो वावा रो धींगो ॥
३९ अवगुणवाद रो मोटो अकाजो, ओ तो वोलतो नाणै लाजो ॥
४० मर्याद लोपै महापापी, तिण दुर्गति सन्मुख आतमा थापी ॥
४१ इहभव 'फिट फिट'[1] होवै, ओ तो न्याति जाति नैं 'विगोवै'[2] ॥
४२ परभव में घणो पिछतासी, नरकादिक मांहि 'झीका खासी'[3] ॥
४३ इम साभल नै नरनारो, मर्यादा म लोपो लिगारो ॥
४४ उगणीसै तेरे चेत मास, विद वारस करी जोड हुल्लास ॥
४५ आ तो गणपति जय करि जोड, म्हारे स्वामी री कुण करै होड ॥
४६ शहर पीपाड माहै सुमेला, ठाणा इक सौ इकवीस हुवा भेला ॥

ढाल २३

*म्हारै तो मन में स्वामी वसिया, अहो निशि ध्याऊं ध्यान जी म्हारै० ।
लीजै नित्य प्रति नाम जी, म्हारै० समरूं आठू याम जी ॥ ध्रुपदं ॥

१ भरत क्षेत्र मे भिक्षु परगटिया, शिष्य वड़ा भारीमालजी ।
वीर गोयम सी जुगती जोडी, मेटचा घणा रा साल जी ॥
२ विविध मर्यादा संत सत्यां री, वांधी आप उदार ।
दोष देखै तो तुरत दाखणो, घणा दिवस न राखणो धार ॥
३ शेष काल चउमासे रहिणो, आचार्य नी आण ।
गणपति नामे दीक्षा देणी, वारू भिक्षु नी वाण ॥
४ टोला में पडत पाना लिखै तो, अथवा जाचै जाण ।
कर्म योगे टोला वारे निकलै, साथे लेजावण रा पचखाण ॥
५ गण थी टल क्षेत्रा मे न रहिणो, अवगुण वोलण रा त्याग ।
अनंत सिद्धांरी शाख करीनै, गुणसठे लिखत ए माग ॥

---

१. धिक्कार को प्राप्त ।
२. वदनाम करता है ।
३. दुःख से विलापात करेगा ।
*लय : म्हारे तो मन में लिछमण वसियो......

६ वारु स्वाम थांरी बुद्ध उतपत्ति, वारु निर्मल नीत ।।
अतिशय धारी आप उजागर, अहो निशि आवो चित ।।
७ संवत उगणीसै वर्ष चवदे, सुदि अष्टम कार्तिक मास ।
जय जश संपति करण जोड ए, वीदासर सुखवास ।।

ढाल २४

१ *मुणिंद मोरा, भिक्षू नै भारीमाल, वीर गोयम सी जोड़ो रे, स्वामी मोरा ।
अति भली रे, मोरा स्वाम ।
मुणिंद मोरा, चौथा आरा नी चाल, विविध मर्यादा बाधी रे, स्वामी मोरा ।
निरमली रे, मोरा स्वाम ।।
२ मुणिंद मोरा, आप मांहि तथा गण मे जाण, सुध संयम जाणो तो रे, स्वामी मोरा ।
रहिवो सही रे, मोरा स्वाम ।
मुणिंद मोरा, ठागा सूं रहिवा रा पचखाण, वलि अनंत सिद्धा री शाखे रे, स्वामी मोरा ।
सम रही रे, मोरा स्वाम ।।
३ मुणिंद मोरा अवगुण बोलण रा त्याग, गण मे अथवा बाहिर रे, स्वामी मोरा ।
बिहु तणै रे, मोरा स्वाम ।
मुणिंद मोरा, मुनिवर जे महाभाग, ए मर्याद आराधै रे, स्वामी मोरा ।
हित घणै रे, मोरा स्वाम ।।
४ मुणिंद मोरा, तीजे पट ऋषिराय, खेतसीजो सुखकारी रे, स्वामी मोरा ।
मुनि पिता रे, मोरा स्वाम ।
मुणिंद मोरा, समदम उदधि सुहाय, हेम हजारी भारी रे, स्वामी मोरा ।
गुण-रता रे, मोरा स्वाम ।।
५ मुणिंद मोरा, जयजश करण जिहाज, दीप गणी दीपक सा रे, स्वामी मोरा ।
महामुनी रे, मोरा स्वाम ।
मुणिंद मोरा, गणपति में सिरताज, विदेह क्षेत्र परगटिया रे, स्वामी मोरा ।
महाधुनी रे, मोरा स्वाम ।।
६ मुणिंद मोरा, अमियचंद अणगार, महा तपसी वैरागी रे, स्वामी मोरा ।
गुणनिलो रे, मोरा स्वाम ।
मुणिंद मोरा, जीत सहोदर सार, भीम जवर जयकारी रे, स्वामी मोरा ।
अति भलो रे, मोरा स्वाम ।।

*लय : साहिब मोरा ए......।

७ मुणिद मोरा, कोदर तपसी करूर, रामसुख ऋषि भलो रे, स्वामी मोरा।
राजतो रे, मोरा स्वाम।

मुणिद मोरा, शिवदायक शिव सूर, सतीदास सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
गाजतो रे, मोरा स्वाम॥

८ मुणिद मोरा, उभय पिथल वर्द्धमान, साम राम युग बंधव रे, स्वामी मोरा।
नेम सूं रे, मोरा स्वाम।

मुणिद मोरा, हीर वखत गुणखांन, थिरपाल फतैचंद जपियै रे, स्वामी मोरा।
पेम सूं रे, मोरा स्वाम॥

९ मुणिद मोरा, टोकर ने हरनाथ, अखैराम सुखराम रे, स्वामी मोरा।
ईश्वर रे, मोरा स्वाम।

मुणिद मोरा, राम संभू शिव साथ, जवान मोती जात्रा रे, स्वामी मोरा।
दमीश्वर रे, मोरा स्वाम॥

१० मुणिद मोरा, इत्यादिक वहु सत, वलि समणी सुखकारी रे, स्वामी मोरा।
दीपती रे, मोरा स्वाम।

मुणिद मोरा, कल्लू महा गुणवंत, तीन बंधव नी माता रे, स्वामी मोरा।
जीपती रे, मोरा स्वाम॥

११ मुणिद मोरा, गंगा नै सिणगार, जेतां दोलां जाणी रे, स्वामी मोरा।
महासती रे, मोरा स्वाम।

मुणिद मोरा, जोता महा जश धार, चंपा आदि सयाणी रे, स्वामी मोरा।
सोभती रे, मोरा स्वाम॥

१२ मुणिद मोरा, शासण महासुखकार, अमर सुरी अधिष्ठायक रे, स्वामी मोरा।
सहायका रे, मोरा स्वाम।

मुणिद मोरा, दवदंती जयवती सार, अनुकूल वलि इन्द्राणी रे, स्वामी मोरा।
दायका रे, मोरा स्वाम॥

१३ मुणिद मोरा, उगणीसै चवदे उदार, कार्तिक सुदि तिथि दशमी रे, स्वामी मोरा।
गाइयो रे, मोरा स्वाम।

मुणिद मोरा, जयजश संपति सार, वीदासर सुखसाता रे, स्वामी मोरा।
पाइयो रे, मोरा स्वाम॥

ढाल २५

*आप तणी वलिहारी[1] हो, हो जी स्वाम आप तणी वलिहारी हो।
हो जी पूज्य आप उजागर भारी हो ।। ध्रुपदं ।।

१ आगे आगे वीर जिसा जिन, तास आणा गिरधारी ।।
२ उतपत्तिया बुद्धि सू मर्यादा, आप वाधी सुखकारी ।।
३ दिवस घणा सूं दोष न कहणा, लिखत पच्चासा मझारी ।।
४ कर्म योगे कोइ गण सूं निकलियां, तिण नै गिणवो न तीर्थ मझारी ।।
५ अंश अवगुण नही बोलणा गण ना, गुणसठा लिखत मझारी ।।
६ आपस मे नही वांधणो जिल्लो, रास में वहु विस्तारी ।।
७ उगणीसै पनरे पूज्य प्रतापे, जय जश संपति सारी ।।

ढाल २६

‡स्वाम भजन सु सर न न न ।।ध्रुपदं।।

१ पंचम आरै भिक्षु प्रगटिया, भविकं उद्धार सुकर न न न न ।।
२ ध्यान तुम्हारो निश दिन ध्यावूं, आप वस्या मुझ मन ।।
३ विविध मर्याद वांधी आप वारु, साभल हर्षे सुजन ।।
४ गणपति नामे दीक्षा देणी, लिखत वत्तीसे सुवर्ण ।।
५ उगणीसै पनरे जय जश गणि, ध्यावत ध्यान सुघ ।।

ढाल २७

स्वाम समरण से सुख लहियै ।। ध्रुपदं ।।

१ आप भजन सू उपद्रव न्हासै, मंगल माल सुख चहियै ।।
२ आप तणी मर्याद सु पालै, तास आराधक कहियै ।।
३ टालोकर मर्याद उल्लंघै, चिहुं गति गोता खइयै ।।
४ गणि आराध्यै सो श्रमण आराध्यै, दशवैकालिक सधइयै ।।
५ उगणीसै पनरे आनंद गणि, जय जश संपति सहइयै ।।

*लय : आगे राम चलत हैं पीछै जनक दुलारी हो।

१. विशेषता।

‡लय : आवत मेरी गलियन······।

ढाल २८

१ *स्वाम भीखनजी महा सुखकारी, आप तणी वलिहारी हो स्वामी।
आप उजागर भारी हो स्वामी, स्वाम भीखनजी महा सुखकारी ॥
२ दान दया हद न्याय दीपाया, सावद्य निर्वद्य विचारी।
आगम अर्थ अनोपम आलोची, जिन आज्ञा सिर धारी ॥
३ उत्पत्तिया वुद्धि अधिक अनोपम, विविध मर्याद उदारी।
गणपति नामे दीक्षा देणी, वत्तीसा लिखत मझारी ॥
४ कर्म योग गण वाहिर निकलिया, अवगुण न वोलणा लिगारी।
उपधि साथ ले जावण ना त्याग छै, ए गुणसठा लिखत मझारी ॥
५ दिवस घणा सूं दोष न कहिणो, जिल्लो न वावणो लिगारी।
लिखत पच्चासे ए मर्यादा, स्वाम वांधी तंत सारी ॥
६ उगणीसै पनरे विद एकम, आसोज मास उच्चारी।
जय जश गणपति कहै कर जोडी, प्रणमूं हर्ष अपारी ॥

ढाल २६

भिक्षू भज लीजो साचै सेण ॥ध्रुपदं॥

१ आप उजागर समय वचन, कर अधिक जमायो एन ॥
२ श्री जिन आणा शिर पर धर नैं, खोल्या है भवि ना नेन ॥
३ उत्पतिया वुद्धि सूं मर्यादा, वारु अमृत वेन ॥
४ इक गणपति री आण में रहिणो, जुई जुई आण तजेन ॥
५ गणपति नामे दीक्षा देणी, निज निज छंद रूंधेन ॥
६ चरण देई नैं आण सूंपणो, छाडी कपट नैं 'फेन'[1] ॥
७ गुरु भाई अथवा चेला नैं, गणपति निज अभिप्रायेन ॥
८ पाट थापै तसु आण पालणी, लघु वृद्ध मान तजेन ॥
९ टालोकर सूं प्रीत न करणी, तीर्थ मे न गिणेन ॥
१० अश अवगुण नही वोलणा गणना, ए स्वामी ना वेन ॥
११ गण माहि अथवा गण थी टली ने, संत सत्यां ना जेन ॥
१२ अंश मात्र अवगुण नही वोलणा, लिखत पैताली सेन ॥
१३ उगणीसै पनरे स्वामी नैं, समरूं हू दिन रेन ॥
१४ कार्तिक कृष्ण चतुरदशी आनंद, जय जश संपति चेन ॥

*लय : थारो विरुद जोय रे...।
१. ढोंग।

ढाल ३०

*स्वाम भिक्खू भज ले भाई, स्वाम समरण है शिव साई ।।ध्रुपदं।।

१ आचारज जवर आप जाणी, बुद्धि उत्पत्तिया अति ठाणी ।
समय रस पेख वीर वाणी, प्रगट मग कियो जु पहिछाणी ।
अष्टादश सोले समय, सुदि पूनम आषाढ ।
संयम सार समांचरचो काइ, गुण गिरवो दिल गाढ ।।
पूज्य नै सुमति अधिक आई ।।

२ निमल रस समय तणो सोधी, विमल मति आप अधिक वोधी ।
'यमल युत'[1] से पाखंड जोवी, 'रमल'[2] दुर्गति नो पथ रोधी ।
दान दयादिक ऊपरे, ग्रंथ हजारां कीध ।
जीव घणा समझावियास कांई, देश देश परसीध ।।
पूज्य नी दिशाज अधिकाई ।।

३ शिष्य गणपति नामे करणा, वत्तीसा लिखत माहि निरणा ।
आण विन पगला नही भरणा, इमज गुणसठे उच्चरणा ।।
गण वाहिर अवनीतडा, तीरथ में न गिणाय ।
तसु वंदै ते पिण कह्याज कांइ, आज्ञा वाहिर ताय ।।
एह मर्यादा सखदाई ।।

४ मुनी गण मांहि जे स्याणा, तथा वाहिर जे अलखाणा ।
विहूं नै पिण गण ना जाणो, 'आंगुण'[3] वोलण रा पचखाणो ।।
साथ नही ले जावणो, ते पिण छै पचखाण ।
मन फाटै जिम नही वोलणो कांइ, ए स्वामी नी वाण ।।
लिखत पैंतालीसा मांही ।।

५ पाना लिखै जाचै गण मांहि, वाहिर ते ले जाणा नांही ।
क्षेत्रा मे पिण नही रैणो, लिखत गुणसठे ए वैणो ।।
उगणीसै पनरे समय, कार्तिक पूनम पेख ।
पेसठ ठाणा लाडणूं काई, जय जश हर्ष विशेप ।।
परम संपति गणपति पाइ ।।

---

*लय : लावणी ।

१. सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन या सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र ।
२. न्याययुक्त ।
३. अवगुण ।

ढाल ३१

*भिक्षु भजने रे ।। ध्रुपदं ।।

१ भिक्षु भरत में परगटचा काइ, भारीमाल सुखकार रे।
जोडी वीर गोयम जिसी काइ, सासण रा सिणगार रे ।।

२ दान दया दीपाविया, व्रत अव्रत ओलखाय ।
श्री जिन आणा सिर धरी, दिया भिन्न भिन्न भेद बताय ।।

३ समत अठारे बत्तीस में, गणपति नामे सीस ।
दीक्षा दे नैं आण सूंपणो, थुर मर्याद जगीस ।।

४ दोष देखै तो तुरत दाखणो, बहु दिन सू नहीं कैणो ।
संवत अठारे पच्चासे समे, ए भिक्षु ना वैणो ।।

५ कर्म योगे गण थी निकल, नहीं बोलणा अवर्णवाद ।
लिखिया पाना न ले जावणा, बत्तीस गुणसठे मर्याद ।।

६ ए मर्याद सुणी करी, हलुकर्मी हर्षाय ।
पंडित मरण आरे करै, गण सूं विमुख नहि थाय ।।

७ उगणीसें अठारे समे, लाडणूं शहर मझार ।
कृष्ण वीज श्रावण मझे, जय जश संपति सार ।।

ढाल ३२

‡ स्वामजी अधिक 'उजाग'[1] आप, 'धाम वर'[2] जिन आज्ञा नी स्थाप।
अधिक आराम करण हो आप, सुमति सुख कारण शीघ्र समाप ।।
'मुदित'[3] तुज प्रवल सुबुद्धि प्रताप ।। ध्रुपदं ।।

१ पंचम आरे परगटचा, भिक्षु भारीमाल ।
आण धर्म ओलखायनेज काइ, मेटचा घणा रा साल ।।

२ तीर्थं श्री वर्द्धमान रो, सखर दीपायो स्वाम ।
महा मुनिवर महिमा निलाज, अधिक थया अभिराम ।।

---

* लय : लेर्‌यो भीजो हो राज ... ।

१. ओजस्वी । २. तेजस्वी । ३. आनंदित ।

‡ लय : पलक तूं म कर जीव प्रमाद ।

३ सतयुगी हेम गुण-सागरू, तीजे पट ऋषिराय।
टोकरजी हरनाथजी, साम राम सुखदाय ॥
४ भीम अमीचंद मुनि भला, शासण वच्छल सार।
अति उपयोगी ओपता, उद्योत कियो इण आर ॥
५ रामसुख कोदर ऋषि, शिव शिवकरण सुजाण।
महा तपसी महिमागरुजी, अखंड स्वाम नी आण ॥
६ आप तणा प्रसाद थी, उद्धरया जीव अनेक।
तुझ मर्याद आराधियांज, पंडित आराधक पेख ॥
७ तुज गण शरणे जे मुनि, पंडित मरण कराय।
नरक तिर्यंच नां दुख टलैज, सुख शिव स्वर्ग सुपाय ॥
८ उत्तम छै मुझ आसता, पूरण तुज परतीत।
आप तणा समरण थकी ज, टलियै 'ईत'[१] अनीत ॥
९ उगणीसै अष्टादसे, विद नवमी आषाढ।
आशा पूरण तू सही ज, जय जश संपति लाड ॥

ढाल ३३

*स्वामी थारी वलिहारी हो वलिहारी हो, सुमति ना सागर,—
वारी हो नाथ गण गुल क्यारी। गुल क्यारी हो स्वामी चरण करण धर,—
भविक शरण, वर विघ्न हरण, थांरी वलिहारी हो शिव रमण वरण ॥ध्रुपदं॥

१ भिक्षू 'भाणज'[२] प्रगटया जी स्वामी, परम पूज्य हितकारी।
दान दया हद न्याय दीपाया, जिन आज्ञा शिर धारी हो ॥
२ आप उजागर गुण निला, थांरी वाण सुधा रस प्यारी।
उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अनोपम, शासण रा सिणगारी ॥
३ दोष देखै तो तुरत दाखणो, ए मर्यादा भारी।
दिवस घणा लग दाव राखै तो, ते छै जनम विगारी ॥
४ सवत अठारे वत्तीस में, गणि नामे शिष्य धारी।
दीक्षा देइ ने आण सूपणा, गुणसठा लिखत मझारी ॥

१. उपद्रव।
*लय : झामा सामा वाग लगा द्यूं ।
२. भानु।

५ जिल्लो पिण नही वांधणो, रास में वहु विस्तारी।
लिखत पैंतालीसे इम भाख्यो, जिल्लो टल्लो दुखकारी॥

६ कह्यो लिखत पच्चास गुणसठे, कर्म योग ह्वै गण वारी।
गण रा अश अवगुण वोलण रा, तसु पचखाण विचारी॥

७ श्रद्धा रा क्षेत्रां विषै जी, त्याग रहिण रा धारी।
लिखत गुणसठे ए मर्यादा, आप वांधी हितकारी॥

८ एक दोय तीन आदि दे, निकल्या जन्म विगारी।
च्यार तीर्थ में तास न गिणवा, गुणसठा लिखत मझारी॥

९ इत्यादिक जे वहु मर्यादा, आप वांधी हितकारी।
दिन २ मार्ग अधिक दीपतो, तुज गुण अधिक उदारी॥

१० आप तणो उपगारज मोटो, स्यू कहूं वारंवारी।
सुख नो कारण 'दुख नो दारण'[1], आप वडा उपगारी॥

११ शीख अमोलक विमल आप री, इहभव परभव सारी।
कर्म कटै अरि फंद मिटै, प्रगटै हर्ष अपारी॥

१२ दुख शरीरी वले माणसी, तास विदारणहारी।
एहवी शिक्षा विमल आपरी, हूं वांछू वारंवारी॥

१३ उगणीसै वावीसे द्वितीय, ज्येष्ठ शुक्ल सुखकारी।
तिथि तेरस भिक्षू गुण गाया, जय जश मंगलाचारी॥

ढाल ३४

*वारी हे भिक्षु जशधारी ॥ध्रुपदं॥

१ स्वाम भिक्खन सोभता, स्वामी सुखकारी प्रगटचा है पंच में आर।
श्री जिन आणा शिर धरी, स्वामी सु० सोध्या है समय उदार॥

२ दान दया दीपाविया, छाण्या हे भिन्न भिन्न न्याय।
सावद्य निरवद्य सोधिया, वारु हे रीत वताय॥

३ उत्पतिया बुद्धि आपरी, अधिकी हे सांप्रत काल।
अडतीस सहस रे आसरै, जोडचा हे ग्रन्थ विशाल॥

---

१. दुःख को मिटाने वाला।
*लय : वारी है लू वारी डोरी ए ।

४ आदिनाथ अरिहंत ज्यूं, थाप्या हे तीरथ च्यार।
लिखत मर्यादा महामुनि, बांधी हे विविध विचार ॥
५ इक गणपति नामे सही, करणा हे श्रमणी संत।
गणी अनुकेडे चालवो, अज्जा हे मुनि महन्त ॥
६ टालोकर अवनीतडा, नही गिणवा हे तीरथ मांहि।
तसु वंदै पूजै तिके, त्यां सरीखा हे गिणवा तांहि ॥
७ इत्यादिक अति ओपती, वांधी हे वर मर्याद।
अष्टादस साठे समे, पाम्या हे परम समाद ॥
८ हूं तुझ शरणे आवियो, आवै हे निशिदिन याद।
याद आया हियो हूलसै, पामू हे चित अहलाद ॥
९ उगणीसै अठवीस में, मृगसर हे सुदि पख बीज।
जय जश गणपति हित धरी, वंछै हे वंछित रीझ ॥

ढाल ३५

१ *भिक्षू प्रगटया हो स्वामी भरत मझार, जिन आज्ञा शिरधार।
सावद्य निरवद्य सोधिया ॥
दान दया ना हो वारु मेल्या न्याय, व्रत अव्रत ओलखाय।
जीव घणा प्रतिबोधिया ॥
२ लिखत बत्तीसे मुनि बाधी मर्याद, अज्जा संत अहलाद।
करणा इक गणपति नामे सही ॥
वलि मुनि आख्यो लिखत पैतालीसा मांहि, जिल्लो न बांधणो ताहि।
ओर साधु रो मन भांगणो नहीं ॥
३ मांहो मांहि मन भांगी नै ताम, आपरो करै आम।
महा अन्याई तिण नै कह्यो ॥
जिल्लो निषेध्यो हो स्वामी रास रे मांहि, जिल्लो बाधै ते ताहि।
उभय भवे अपयश लह्यो ॥
४ टालोकर ने निषेध्यो बहु ठाम, लिखत रास माहे स्वाम।
चिहुं तीरथ में गिणवो नही ॥
गण थी निकल अंश मात्र पिण जोय, हूंता अणहूंता सोय।
पचखाण अवगुण बोलण रा सही ॥

*लय : हिवे राणी नै हो समझावै पण्डिता......।

५ वर मर्यादा इत्यादिक बांधी ताम, अष्टादश साठे स्वाम।
परभव मांहि पधारिया ॥
जीव घणां रा सारचा आतम काम, तिरचा तिरे तिरसी ताम ॥
स्वाम प्रसादे सुखकारिया ॥
६ संवत उगणीसै हो अठवीसे जाण, मृगसर सुदि तीज पिछाण।
जय जश गणपति इम कहै ॥
हूं सुख पायो हो स्वामी आप प्रसाद, निश दिन आवो याद।
हर्ष संतोष अधिक लहै ॥

ढाल ३६

पूज्य भिक्षू प्यारे।

*ओ तो सांवरियो सुखकारी, भिक्षू यश धारी ॥ ध्रुपदं ॥

१ ए तो स्वाम भिक्षु सुखकारी, ज्यांरी भाग्य दिशा अति भारी।
२ या तो भेषधारचां नै छोड़ी, जाभी प्रीत मुक्ति सू जोडी ॥
३ स्वामी व्रत अव्रत ओलखाया, वारू भिन्न भिन्न भेद बताया ॥
४ धारी श्री जिन आण उदारं, न्याय मेल्या है विविध प्रकारं ॥
५ ज्यांरा लिखत खजाना भारी, बांधी दृढ मर्यादा सारी ॥
६ शिष्य करणा अभिरामं, एक आचार्य रे नामं ॥
७ कर्म जोग हुवै गण वारं, नही गिणवो तीर्थ मभारं ॥
८ ए धुर मर्यादा बांधी, अठारेसै बत्तीसे साधी ॥
९ कह्यो लिखत पैतालीसा माहि, जिल्लो बांधै महा दुखदाई ॥
१० गण माहि बारे पिण जाणं, अवगुण बोलण रा पचखाणं ॥
११ कदा दोष जाणै गण माहि, तो टोला मे रहिणो नांहि ॥
१२ एकलो होय संलेखना करणी, तिण नैं रीत इसी आदरणी ॥
१३ वेगो करणो आतम नो कल्याणो, आ तो स्वाम भिक्षु नी वाणो ॥
१४ रहवी श्रद्धा हुवै श्रीकारी, तिण नै राखणो टोला मभारी।।
१५ नही तो काढ देणो गण बारो, ओ तो अवनीत अवगुण गारो ॥
१६ न ले जावणा अवर नै लारो, ए तो स्वामी वचन सुखकारो ॥
१७ टालोकर नै क्षेत्रां में नही रैणो, गुणसठे लिखत ए वैणो ॥
१८ इत्यादिक विविध उदारी, बांधी दृढ़ मर्यादा भारी ॥
१९ ए मर्यादा शुद्ध पालै, ते तो दोनू भव उजवालै ॥

*लय : नंदजी के हर प्यारे....

२० ए मर्याद लोपै अवनीत, ते तो इण भव में होवै 'फजीत'[१] ॥
२१ परभव में दुख भारी, उत्कृष्ट अनंत संसारी ॥
२२ टालोकर नैं निषेध्यां मुरझावै, दाह वल्या रूख जेम थावै ॥
२३ तिण रे रोग अभ्यंतर भारी, तिण रो किम होसी निस्तारी ॥
२४ स्वाम मर्यादा अधिक दृढावो, जो जीव नैं सुख चावो ॥
२५ स्वाम भिक्षु नै पसायो, कर चरण चिंतामणि आयो ॥
२६ त्यांरी मर्यादा शुद्ध पालो, थे तो मान अहंकार नै गालो ॥
२७ ते मान अहंकार मेटीजै, निज अवगुण सभा मे जपीजै ॥
२८ मान राख्यां अधिक अपमानो, मान मेटचा सुयश असमानो ॥
२९ ए तो सीख विमल चित धारो, तिण सू वाधै तोल उदारो ॥
३० निंदो निज अवगुण शुद्ध रीतो, तिण सू वाधै गण में प्रतीतो ॥
३१ उगणीसै वर्ष अठवीसे, मृगसर सुद चोथ जगीशे ॥
३२ सुख पायो स्धाम पसायो, जोड़ी जय जश हर्ष सवायो ॥

ढाल ३७

मेरे तो आधार भिक्षु स्वाम रो भारी ॥मे० ॥
तू ही तारक, तू ही सारक, तू ही जन्म सुधारी ।
तू ही तिरण तू ही शरण, तू ही शासण सिणगारी ॥ध्रुपदं॥

१ तू ही पोत भव सिधु केरो, तू ही शिव मग ने तारी ।
आपरा वच याद आया, होवै हर्ष अपारी ॥
२ ऊंडी बुद्ध अनें आलोचन, आपरी अति भारी ।
आशापूरण चिता-चूरण, तू ही सुख दातारी ॥
३ मन वचन काय करिके, आसता अति थारी ।
जिनेन्द्र ना जे वचन जेहवा, आप ना हितकारी ॥
४ स्वप्ने सूर्त देख्यां हर्ष, सुण्या वचन उदारी ।
तो प्रगट नो किसू कहिवो, आप जवर उपगारी ॥
५ विविध शिक्षा समापि वारू, 'खलत'[२] मेटण सारी ।
वचन भाखो रीत राखो, ए छै अरज हमारी ॥
६ उगणीसै गुणतीस फाल्गुन, सुदि ग्यारस रविवारी ।
पुष्य नक्षत्रे पूज्य गायो, जय-जश जय जय कारी ॥

---

१. बदनाम । २. स्खलना ।

ढाल ३८

*भिक्षू म्हारै प्रगट्या जी भरत खेतर में, थांरो ध्यान धरूं अंतर मे ॥ध्रुपदं॥

१ देश देश ना लोक आपनों, समरण कर रह्या उर मे ॥
२ आप तणी बुध नी परशंसा, बहु लोक करै पुर पुर मे ॥
३ मन्त्राक्षर-सम नाम तुम्हारो, विघ्न मिटै घर घर में ॥
४ जबर उद्योत कियो जशधारी, एह पंचमें अर मे ॥
५ आप तणा गण में स्थिर पद सूं, वसियै वास अमर में ॥
६ आप तणा गणथी 'उपराठा'[1] उभय भवे दुख भर में ॥
७ साम्प्रत काले स्वाम गण पायो, आयो चिंतामणि कर में ॥
८ आपआच, रज महा उपगारी, कल्पवृक्ष जिम 'तर'[2] में ॥
९ दृढ मर्याद बांधी आप वारु, सतियां ने मुनिवर में ॥
१० उगणीसै गुणतीस वैसाखे, सुद छठ वीदासर में ॥
११ भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, जयजश सुख-मंदर में ॥

ढाल ३९

†स्वामी म्हारा सोभ रह्या मुनि जन में, दीपक चंद 'उडुगण'[3] में,
स्वामी म्हारा सोभ रह्या शासण में ॥ध्रुपदं॥

१ हाजरी में स्वामीनाथ हमेसा, हूं याद करूं जी छिनक छिन मे ॥
२ स्वाम तणो समरण सुखदायक, जाणक बेठो नंदन वन में ॥
३ ध्यान तुम्हारो निश दिन ध्याऊं, आप वसोजी म्हारा मन में ॥
४ तेज प्रताप सु अधिक आपरो, इंद्र 'फणेंद्र'[4] नरेंद्रन मे ॥
५ दर्शण कर भविक हुवै परसन्न, विकसित पंकज रवि ऊगन में ॥
६ जिनेन्द्र-चंद्र तणा वचना नैं, आप प्रगट किया भविजन में ॥

---

*लय लिछमण म्हारे आया जी रमके ·····।
१. विमुख ।
२. तरु (वृक्ष) ।
३. नक्षत्र मंडल ।
४. नागेन्द्र ।
†लय : लाडीजी रा माथा ने मेमंद सोहलो ए · · ।

ढाल ४०

*गुण आवा दो जी सुख पावा दो, वर ज्ञान क्रिया उल्लसावा दो।
म्हाने लागै लागै चरण सवायो, शासण दीपावा दो॥ ध्रुपदं॥

१ स्वाम भिक्षु कहै एम, संयम सुख पावा दो।
म्हारो लागै धर्म सू प्रेम, उत्तम गुण आवा दो॥

२ मत करो 'लचपच'[1] वात, सहु तो लेसूं अमोलक 'आथ'[2] उ० गु०।
वर भविक जीव समझावा दो॥

३ म्हे तो पेख्या सूत्र सिद्धांत, म्हारै मिट गई मन नी भ्रात।
वर दान दया दरसावा दो॥

४ वर दान शील तप भाव, शिव मग तणी नाव।
जिन आण भणी ओलखावा दो॥

५ असल देव अरिहंत, गुरु जाणो निर्ग्रंथ।
जिन माग भणी दीपावा दो॥

ढाल ४१

दोहा

१ विघ्न हरण मंगल करण, स्वाम भिक्षु नो नाम।
गुण ओलख समरण कियां, सरै अचिंत्या काम॥

महा सुखकारी हो, स्वामी जिन सारिखा।
महिमा थांरी भारी हो, उत्तम करी पारिखा॥
हो जी जशधारी हो॥ ध्रुपदं॥

२ स्वामी थांरी उत्पत्तिया बुद्धि अति भली, स्वामी थे तो निमल सिद्धांत ना न्याय।
स्वामी थे तो श्री जिन आणा शिरधरी, दीया थे तो भिन्न भिन्न भेद वताय॥

३ थे तो वच्छल तीर्थ च्यार नै, हू तो याद करू दिन रेण।
जिन जिम गुण तुझ संभरू, हू तो चित माहि पामूं चेन॥

४ थांरी सखर 'साकर'[3] जिम शीखडी, आ तो अमृत थी अधिकाय।
हूं तो जिन जिम गुण संभरू, हूं तो विघ्न विलय होय जाय॥

*लय : सुखपाल सिंहासन ल्यावो महिल में ...।

१. लचीली।
२. संपत्ति।
३. शक्कर (चीनी)।

५ थांरी अधिक हिये मुझ आसता, जाण रह्या जगदीश।
थे तो परम उपगारक माहरा, दायक सुख ना दमीश ॥
६ ओ तो शासण निर्मल श्री जिन तणो, ओ तो आप तणो उपगार ॥
'अजूणां'[1] पंचम आर में, ओ तो मोटो हे मुझ नैं आधार ॥
७ रह्या घर में पच्चीस वर्ष आसरै, आठ वर्ष आसरै द्रव्य लिंग।
थे तो वर्ष चमालीस आसरै, पाल्यो हे चरण सुचंग ॥
८ थे तो संवत अठारै सोले समे, धारचो चरण आषाढी पूनम ॥
थे तो वर्ष साठे अनसन करी, थे तो सखर सुधार्‌यो जनम ॥
९ दृढ मर्यादा वांधी सही, ए तो इक गणि नांमे शीष।
ए तो अंश अवगुण नही बोलणा, ए तो अवर ही अधिक जगीस ॥
१० म्हे तो परम पूज्य चित संभरचा, ए तो जय जश संपति सार ॥

ढाल ४२

*स्वामी तेरै समरण से, सदा मै देखै सुख।
सदा मै देखै सुख स्वामी तेरा समरण मैं, सदा मैं देखै सुख ॥ ध्रुपदं ॥
१ दान दया हद न्याय दीपाया जी, मेटी भवो भव भूख।
२ विविध मर्याद वाधी आप वारू जी, परम वयण छै 'पीयूष'[2] ॥
३ आप तणी वर आण आरावै जी, दूर हुवै भव दुख ॥
४ वे कर जोड़ी नित्य प्रति प्रणमू जी, जय जश संपति रूंख ॥

ढाल ४३

हलुकर्मी जाको ध्यान धरत है, देश देश में दीपाया ॥ ध्रुपद ॥
१ स्वामीजी थांहरा वयण महा सुखदाया, भिक्षु जी थांहरा वयण मुझ मन भाया ॥
२ श्री जिन आणा ज्या तो शिर पर धरनै २, जिन मग खूब जमाया ॥
३ विविध मर्याद वाधी आप वारू २, जिनवर नी छिव ल्याया ॥
४ आशापूरण रिखराय प्रसादे, जय जश संपति पाया ॥

---

१. अभी। २. अमृत।

लय : प्यारा तेरी पद-रज में सदा ए --।

ढाल ४४

*स्वामी थाने समरूं हूं दिन रेण ।।ध्रुपदं ।।

१ पंचमे आरे भिक्षु प्रगटिया, स्वामी थे तो छोड्या पाखंड फेन ।।
२ अतिशय धारी आप उजागर, स्वामी थाहरा अमृत सरीखा वेण ।।
३ दान दया वर न्याय वताया, स्वामी थे तो जवर दीपायो जैन ।।
४ विविध मर्यादा वाधी आप वारू, स्वामी थे तो अटल जमायो एन ।।
५ अधिक कृपा भविक पर करनै, स्वामी थे तो खोल्या अभ्यंतर नेण ।।
६ परम उपगार कियो मुझ उपर, स्वामी थे तो ज्ञान वतायो गैहन ।।
७ शासण निर्मल आप प्रसादे, चिहुं तीर्थ चित्त चैन ।।

ढाल ४५

†स्वाम थारी करणी री वलिहारी, वारी हो नाथ थांरी सूरत मुद्रा प्यारी ।
।। ध्रुपदं ।।

१ भिक्षु आप भरत मे प्रगट्या, भारीमाल शिष्य भारी ।
हू तो स्वाम थाने समरूं निश दिन, समरण वच्छल सुखकारी हो ।।
२ सावद्य निरवद्य सखर देखाया, श्री जिन आणा धारी ।
हूं तो स्वामी अति इचरज पामू, न्याय छाण्या तंत सारी ।।
३ दान दया हद तत्व वताया, दे दृष्टांत उदारी ।
सखर स्वाम थे तो आगम सोध्या, वुद्धि उत्पत्तिया भारी ।।
४ विविध मर्यादा मति श्रुत करिके, दीर्घ दृष्टि दिल धारी ।
वारू स्वाम थारी ऊंडो आलोचन, जवर दिशा अनुसारी ।।
५ दोष देखै तो तुरत दाखणो, घणा दिन न राखणो धारी ।
लिखत पच्चीसे वावने दाख्यो, वलि रास में वहु विस्तारी ।।
६ पैंतालीसे पच्चासे गुणसठा लिखत में, वले रास मे वहु विस्तारी ।
जिल्लो वांध्यो तिणनैं अधिक निषेध्यो, कह्यो उत्कृष्ट अनंत संसारी ।।
७ कर्म योगे टोला वाहिर निकलै तो, अवगुण न वोलणा लिगारी
हूंता अणहूंता अंश मात्र पिण, त्याग कराया तिण वारी ।।

इति श्री भिक्षु गुण वर्णनम्

---

*लय · कोइ कहै छाने णें कोइ कहै छुरके माई……।
†लय : लय . झिर मिर झिर मिर मेहो वर्षे · ""।

भारीमाल गणि गुण वर्णन

ढाल १

दोहा

१ भिक्षु भलै प्रगटिया, दुखम आरा मांय।
पडता नरक निगोद में, त्यानैं लीधा हाथ संभाय ॥

२ ज्यारे पाट मोटा मुनि, भारीमाल शोभाय।
सुखदाई भवि जीव नै, रवि शशि जेम दीपाय ॥

३ आ सम्यक्त्व श्रद्धा आया विना, घालो नहि गण मांहि।
इसो मार्ग दूजो दीसै नही, और मत में ताहि ॥

४ केइ जैनी वाजै लोक में, नहि ज्यारी परतीत।
हिंसा धर्म दृढावता, ते होसी घणा फजीत ॥

५ त्या ने पूज्य छिटकाय नै, हूवा समभावे 'निरदाव'[1]।
कर्म योग सूजी समी, त्यारे मुक्ति जावा री चाव ॥

६ आप मांहि तो गुण घणा, पूरा केम कहिवाय ॥
थोडा सा परगट करूं, ते सुणज्यो चित ल्याय ॥

*पूज्य जी महामुनिराई ॥
छव द्रव्य नव तत्व ओलख लीधा, परम ज्ञान पाई ॥ध्रुपदं ॥

७ स्वाम छत्तीस गुणां कर सोभ रह्या छै, चारित्र सुखदाई।
असल श्रद्धा प्रगट कीधी, इण दुखम काल मांहि ॥

८ गाम नगर पुर 'पाटण'[2] 'खेड़े'[3], नर नारी समजाई।
घट में ज्ञान घाल नै निरवद्य, उपदेश दो सुखदाई ॥

९ वाणी सुणवा चाहि घणी, भवियण रे मन भाई।
ज्यू पाणी री पपैया नै चावना, तिम वाणी सुखदाई ॥

---

१. निश्छल।
२. छोटा कस्बा।
*लय : पूर्व सुकृत पुन्य करी नै.........।
३. छोटा गांव।

१० ज्यूं इंद्र सोभै देवतां मांहे, ते देवता नैं सुखदाई।
तिम साधां मे सोभ रह्या छै, मुनिवर नैं मनभाई।।
११ कार्तिक सुदि पूनम रे रात्रि, चंद सोभै तारां मांहि।
तिम साधा में सोभ रह्या छै, वाल ब्रह्मचारी ताई।।
१२ साधसाधवी श्रावकश्राविकामें, वखाण देवो सुखदाई।
जाणै अवर गाज रह्यो छै, जिम अमृत रस पाई।
१३ आप रै मुख आगल केइ साधु, मोटा तपसी थांइ।
कर्म कटक ते दल काटण ने, तपसी मनभाई।।
१४ आकीर्ण जातवंत घोड़ा असली, 'पाखरियां'[१] सोभाई।।
ते धणी रा हाथ में चावको देखी, डर आणै मन मांई।।
१५ तिम खेतसीजी हेमजी स्वामी, रायचंद आदि मुनिराई।
गुरु वचना मे लीन रह्या, नित्य करै शुद्ध 'वनिताई'[२]।।
१६ केइ सियाले न ओढै पछेवडी, चउमासे तप ठाई।
केइ उन्हाले आतापना लेवै, ए तपसी मुनिराई।।
१७ केइ तप करण ने शूरा, केइ सरल सभावी थाई।
केइ वखाण वाणी देई नै, भविजीवा नै समजाई।।
१८ केइ खिम्या करने 'पाखंडी'[३] जीपै, केइ वखाण देवै ताहि।
इसडा साधु देख पाखडी, करै चरचा ठाई।।
१९ केइ पाखंड छोड नै साधु होवै, कोई श्रावक थाई।
केइ सरल आचार देखी नै, प्रतीत धारी थाई।।
२० मोने संसार सू वारे काढ्यो, दियो चारित्र सुखदाई।
पंच महाव्रत पूरा देइ नै, इम घाल्यो ज्ञान माहि।।
२१ पूज्य प्रसादे गुण गाया म्हे, तोही गुण पूरा नाई।
गुण वहुत बुद्धि अल्प सी, कह्या कठा लग जाई।।
२२ संवत अठारै वर्ष तिमतरे, आसोज विद इग्यारस थाई।
वार मंगल सिरियारी मे, जोडी चित्त लगाई।।

ढाल २

दोहा

१ भेषधारी भागल हुवा, पंचम आरा मांय।
त्या ने पूज्य भिक्खन छोडनै, जिनमत दियो जमाय।।

---

१. कवच, शस्त्र आदि से सज्ज होने पर।
२. विनीतता।
३. शास्त्र विरुद्ध आचरण करने वाले।

२ त्यां रे पाट मन भाविया, भारीमाल ऋषिराय।
सुखकारी भवि जीव नैं, नरनारी नैं घणा सुहाय॥

३ गामां नगरां विचरै, सुखे करता फिरै उपगार।
ते धर्म दीपावै जिनराज नो, करता उग्र विहार॥

४ नर नारी प्रतिबोधवै, शिवगति जावा काम।
त्यांरा थोड़ा सा गुण प्रगट करूं, ते सुणो राख चित ठाम॥

५ *पूज्य भारीमाल सुजाण, खेतसीजी गुणखान, आछी लाल।
शीतल निजर सुहावणी जी॥

६ स्वामी हेमजी जाणें हेम, वरतैं कुशल नें खेम।
बुद्धिवान रायचंदजी वखाणिया ए॥

७ ए च्यारू सोभ रह्या सत्यवंत, त्यांरी श्रद्धा आचार शुद्धतंत।
महियल मुनिवर मालता॥

८ ज्यूं मेरु तणा गज दंत च्यार, ते सोभै सगला में सार।
ज्यूं ए च्यारू मुनिवर शोभता॥

९ ज्यूं मेटै अंधारो मिथ्यात, ते लोकां में घणो साक्षात।
ते अंधारो मेटि उजालो कियो॥

१० भेषधार्‌यां रो आगे तो फंद, जद विचरता वीर जिणंद।
चोथा आरा में हूंतो घणो॥

११ आगे 'तिरासियो निह्नव'[1] ताम, तिण तीन शाख प्ररूपी ठाम-ठाम।
एक बोल सू ऊंधो पड्यो॥

१२ जीव-अजीव कह्या भगवंत, तिरासियो झूठ बोलंत।
जीव-अजीव पिण को नही॥

१३ तेहना साथी 'केडायत'[2] छै ताय, इण दुखम काल रे मांय।
वीर वचन उत्थापियो॥

१४ धर्म अधर्म जिनराय, ठाम ठाम सूत्रां रे मांय।
मिश्र मूल दीसै नही॥

१५ अणहूंतो ऊंधो मेल्यो न्याय, कहै धर्म पाप दोय थाय।
इम करै मिश्र री स्थापना॥

१६ ए बोलै एकंत 'मुसावाय'[3], त्यां नें खबर पडै नही कांय।
त्यां रा बोल्यां री समज त्यामें नही॥

---

*लय : हंस हंस बांधे कर्म.........।
१. रोहगुप्त।
२. अनुयायी।
३. मिथ्या वचन।

१७ आचार त्यांरो नही शुद्ध, वले श्रद्धा घणी विरुद्ध।
ते पिण साधु वाजे लोक मे ॥

१८ कोइ धर्म कहै छै तास, ते करसी नरक में वास।
केइ मिश्र कहै छै तेह मे ॥

१९ केइ काचो पाणी पायां कहै धर्म, ते यूंहीज वकै वांधै कर्म।
केइ पुन्य कहै छै तेह में ॥

२० ए सर्व भेषधारचा ने छोड, पूज्य समकित रो झाल्यो 'गोढ'[1]।
पाखंड पंथ सर्व छोडियो ॥

२१ पाखंडी डवोवै भवि जीव, त्यांनें पूज्य ज्ञान वतायो अतीव।
त्यांनें धर्म वतायो निर्मलो ॥

२२ इम भव जीवा नें समजाय, आणै मार्ग ठाय।
त्या ने तार्या संसार सू डूवता ॥

२३ किण ने देवो श्रावक ना व्रत वार, किण ने देवो महाव्रत सार।
किण ने ही सुलभवोधी करो ॥

२४ पूज्य तणा गुण सार, त्यारो कहिता नावै पार।
ए गुण गाया महाराज ना ॥

२५ किया पूज्य तणा गुण ग्राम, कर्म काटण रे काम।
सिरियारी में हूं हर्ष थी ॥

२६ संवत अठारे तिमंतरे जाण, आसोज सुद सातम पिछाण।
वार शुक्र अति दीपतो ॥

ढाल ३

दोहा

१ जिन मत साचो जगत मे, प्रसिद्ध लोक मझार।
वले दुखम आरे प्रगटचा, भिक्षु ऋषि ज्ञान भंडार।

२ त्यां रे पाटे सोभता, भारीमाल मुनिराय।
ते भार चलावै टोला तणो, त्यां रा गुण पूरा कह्या न जाय॥

३ त्या रे मुख आगल सोभै रह्या, खेतसीजी स्वामी सुवनीत।
वले हेम गुणाकर पूर छै, ते प्रसिद्ध लोक वदीत ॥

---

१. मू।

४ वले साधां में सुहामणा, ए रायचंद अणगार।
यां च्यारां में तो गुण छै घणा, त्यां रो कहूं थोडो विस्तार॥

*भविक जन भारीमाल गुण गावो रे॥ध्रुपदं॥

५ भारीमाल जी में गुण छै भारी, त्यां नै ओपमा अधिकी आई।
जिम सर में कमल सोभै छैं, तिम सोभै साधां मांई रे॥
६ जिम फौजा में सोभै हस्ती, मंदिर सोभै दीवो।
जिम साधा मे सोभै स्वामी, त्यां रो निर्मल ज्ञान अतीवो॥
७ साधु-सभा मे सोभै स्वामी, जिम तारा में चन्दो।
वले इंद्र सोभै देवता मे, तिम साधां में मुणिंदो॥
८ सुवनीत साध त्यांरा मुख आगल, बडा वड़ा शुद्ध साधो।
ते जिण मारग दीपाय रह्या छै, त्यां सुध मारग लाधो॥

भविक जन साधु ना गुण गावै॥ध्रुपदं॥

९ खेतसोजो सुवनीत संत छै, तिरै अवर नें तारै।
शुद्ध सुमता धारी ममता मारी, निज पर कारज सारै॥
१० ते पूज्य तणा वनीत छै पूरा, सतयुग नाम धरायो।
ते जीवादिक नव तत्व वतावै, साधा नैं सुखदायो॥
११ हेम मुनि सुवनीत भला ते, प्रसिद्ध लोक वदीता।
त्यां क्षान्ति तणो गेहणो सुध पहिरयो, पाखंडियां नै जीता॥
१२ तें क्षमता करता पाखंड डरता, केइ लडता पाखंड पापी।
जव हेम क्षमा सूं प्रेम लगावै, त्या रे दिल में सुमता व्यापी॥
१३ चोथा साध सोहै सुखदायक, रायचन्दजी भारी।
वखाण वाणी मे सावधान छै, करता पर उपगारी॥
१४ हेतु दृष्टांत न्याय शुद्ध कहता, वहता जिन मारग में स्वामी।
ते पूज्य तणा कह्या में चालै, त्या यशवंत सोभा पामी॥
१५ ए च्यार मुनि सोहै गणनायक, त्यारो बुद्धि घणी छै भारी।
तिरै निज घणां नै तारै, त्यां री जाऊं हू वलिहारी॥
१६ सोभै गज दंता मेरू गिरी ना, जिम ए च्यारुं स्वामी।
ए सुमता दमता खमता करता, ते मुक्ति जावण रा कामी॥
१७ मुनि मतिवंता रा ए गुण गाया, वैसाख विद थावर वारो॥
संवत अठारे वर्ष तिहंतरे, गोगूदा शहर मझारो॥

*लय—सासु सुसरा चन्द नृप ए ।

ढाल ४

दोहा

१ स्वाम भिक्षु रे पाटवी, भारीमाल सोभंत।
दिन दिन दीसै दीपता, आचार्य गुणवंत ।।
२ च्यारुं तीर्थ विच बैठ नें, दियै धर्म उपदेश।
सुण सुण ने भवि जीव ने, मन में हर्ष विशेष ।।
३ त्यां रो नाम अने गुण निर्मला, सुणिया मगन हो जाय।
जे सेवा भगती करै, त्यारा पातिक दूर पुलाय ।।
४ त्यां रा दर्शण री मन मे घणी, कही कठा लग जाय।
थोडी सी परगट करूं, ते सुणजो चित्त लाय ।।

*मुनिश्वर म्हारे तुम सू प्रीत।
मन वचन काया करी जी, तुम दर्शण वास्या मुज चित्त ।।
५ करषणी चित्त मेह मे रे, ज्यू तुम दर्शण ध्यान।
मोर पाणी मे मन वसे जी, जिम दर्शण तुम जाण ।।
६ हंस तणै मन वासियो, मानसरोवर सुखदाय।
तिम तुज दर्शण माहरे, ध्यान धरू हर्षाय ।।
७ जिम चकोर मन वाछतो, शीतल चन्द सुहाय।
इम हिज दर्शण इच्छतो, मन मे अधिक उम्हाय ।।
८ जिम सूर्य उग्या थका, पंकज अति विकसाय।
इण विध मुनिश्वर माहरे, तुम दर्शण री मन मांय ।।
९ मीन पामै रति जल विषै, कोयल मन वसंत।
निर्धन रे मन धन वस्यो, ज्यू मुज मन भारीमाल वसंत ।।
१० पतिव्रता पिउ सांभल्यां, मन मे हर्षित थाय।
ज्यू तुम नाम सुण्या थका, रोम राय विकसाय ।।
११ त्यारा दर्शण री घणी चावना, म्हारे मन वस्या भारीमाल।
गहर गंभीर धीरा घणा, त्यारी सुन्दर सोभत चाल ।।
१२ अहो निश जाप जपता थकां, जे मुनिश्वर तुम नाम।
नाम सुणी मन हुल्लसै, पामै सुख अभिराम ।।
१३ छिन जे वेला पुल घडी, सो दिन हर्ष समेत।
भारीमाल गुरु देखिया, तृप्त न हूवै नेत ।।

*लय : कपूर हुवै अति ऊजलो ए ....।

१४ भारीमाल मुनि दीयै, सुणी ए वाण विशाल।
गाज तणी पर गाजता, अमृत जेम रसाल ॥
१५ तुम नें सेवक अति घणा, दर्शन करै नयण निहाल।
वाणी सुणी हर्षे घणा, त्यांरा टूटै कर्मां रा जाल ॥
१६ गामां नगरां ने विषै, वाट जोवै ठाम ठाम।
भारीमाल गुरु सोभता, कद आवै इण गाम ॥
१७ हिवै मया कर मुझ ऊपरे, ए विनती सुण प्रत्यख।
स्वामी दर्शन दीजै वेग सू, ए अरज करै तुज शिख[1] ॥
१८ ए विनती कीधी पूज्य सू, देवगढ शहर मझार।
संवत अठारै पिचंतरे, चेत सुदी तेरस गुरुवार ॥

ढाल ५

१ *पूज्य भारीमाल भजो भवि प्रेम सूं, सरल घणा सुवनीत हो भविकजन।
गुरु भिक्षु आगे गणधर जिसा, पूरण पाली प्रीत हो भ० पू० ॥
२ निर अहंकारी मुनि हियै निर्मला, शील सिणगार सुगंध।
सत्यवादी मुनि वचने शूरमा, चित्त जिम शीतल चंद ॥
३ समता दमता खमता सागरू, वलि बाल ब्रह्मचार।
सूरत मुद्रा सुंदर सोभती, पेखत पांमै प्यार ॥
४ असल आचारी उपगारी मुनि, अमृत वाण 'अमाम'[2]।
जगत उदासी ऋषि जूना जती, नमण करूं शिर नाम ॥
५ शील आचार अखंड आराधिया, सुगुरु समाधि उवज्झाय।
गोत्र तीर्थकर बंधै तेह नैं, एहवा गुण भारीमाल रे मांय हो०॥
६ संवत अठारै वर्ष एकाणूवे, वैसाख सुदि एकम सार हो।
पूज्य भारीमाल तणा गुण गाविया, रामगढ शहर मझार हो ॥

ढाल ६

†भजलै तूं पूज्य भारीमाल ए ॥ध्रुपदं॥
१ भिक्षु पट भारीमाल ए, ज्यां मे असल साधु नी चाल।
ज्या किया घणां जीवां नै निहाल।

१. शिष्य। २. श्रेष्ठ।
*लय : पूज्य जी पधारो हो नगरी...। †लय : कृपया दीन अनाथ......।

२ सोम प्रकृति चित शांत, सुवनीत घणा जशवंत ।
वचन दृढ विरुद विशाल ॥
३ उत्तराध्ययन रा छत्तीस,अध्येन, उभा थकां गुणै सम श्रेण ।
वार अनेक दयाल ॥
४ अवसर ना जाण आप, याद आयांइ मिटै संताप ।
तन मन होवै खुसाल ॥
५ अठाणूवे वर्ष अठार, गाया भारीमाल गुण धार ।
मुज उपगारी संभाल ॥

इति श्री भारीमाल गणि गुण वर्णनम्

रायचंद गणि गुण वर्णन

ढाल १

दोहा

१ श्री पूज्य तणा मुख आगले, रायचंदजी स्वाम।
ते करै छै धर्म प्ररूपणा, त्यां रो यश फेल्यो ठाम-ठाम ॥
२ नगर गोगुदा पाखती, वडी रावलिया गाम।
त्या रो पिता चतरोसाह जाणजो, माता कुसालांजी नाम ॥

*भवियण भजलै रे, सतगुरू सीखड़ली ।
एती मीठी नही दूध साकर 'सूखडली'[1] ॥ध्रुपदं ॥

३ श्री पूज्य तणी वाणी साभल नैं, जाण्यो संसार नें खारो।
अनुमत लेइ नैं संयम लीधो, तिण रो वहु विस्तारो ॥
४ सयम लेइ ने वहु सीख्या, सूत्र सिद्धांत विचारो।
भण गुण 'पडपक'[2] हुवा मुनीश्वर, यश पाम्यो श्रीकारो ॥
५ ग्राम नगर पुर पाटण विचरचा, थया बाल ब्रह्मचारो ।
करै नर नारी यश महिमा त्यारी, कहै धन्य यारो अवतारो ॥
६ स्वामी साधुपणो लीधो तिण काले, माता संयम लीधो लारो ।
पछै संलेखना संथारो कर नैं, त्यां री माता उतरी भव पारो॥
७ महीयल विचरै धर्म देशना देवै, पाप कियो परिहारो।
शुद्ध संयम पालै ने दोषण टालै, थया कर्म काटण नै त्यांरो ॥
८ साध-साधवी, श्रावक-श्राविका, सगला रा हितकारो।
सुध सुमता धारी ममता मारी, आप तरे पर तारो ॥
९ ए रायचंदजी स्वामी रा गुण गाया, वर्ष तिमंतरे संवत अठारो।
जेठ सुदि आठम वार शनीश्चर, वडी रावलियां गाम मझारो ॥

---

*लय : चौरासी में भमता रे भमता ....।
१. मिठाई
२. निपुण।

ढाल २

*शरण तिहारे ३ हो, परम पूज्य सेवग नी अरदास।
आयो शरण तिहारे हो ।।ध्रुपदं ।।

१ परम दयाल गोवाल कृपानिधि, गणवच्छल गणनाथ।
भाग्यवली सुखदाई स्वाम नी, इचरज कारी वात ।।

२ तीजे पाट भिक्षु रे प्रतपो, शरणागत सुखकार ।
वीर जिनंद तणी पर हिवडां, कर रह्या जगत उद्धार ।।

३ मो सू उपगार कियो उत्कृष्टो, वस रह्या हीया मांय ।
आप समान वल्लभ कुण दूजो, दर्शण री अति चाय ।।

४ शीतल चंद सारिखा मोनें, 'वाल्हा'[1] लागै वैण ।
वल्लभ सूरत आपरी म्हारै, आप जिसो कुण सेण ।।

५ अंतर्यामी नै ओलखी म्हे, वाधी आप सू प्रीत ।
स्वामी रे सेवग घणा, मो सूं राखी चाहिजै रीत ।।

६ धर्माचार्य माहरा, थारी सुन्दर सोभती काय।
जीभ में अमृत झर रह्यो, थारा गुण पूरा कह्या न जाय ।।

७ कोड जीभ कर तुम गावू, तो पिण कह्या न जाय।
एसो उपगार कियो आप मो सू, रायचंद मुनिराय ।।

८ परम गरीवनिवाज पूज्य स्यू, अरज करूं जोडी हाथ।
सुप्रसन्न सुनिजर राखो, आप अनाथां रा नाथ।

९ मुज उपगारी पूज्य ना, गुण गाया धर अभिलाख।
संवत उगणीसै एके, विद चवदस वैसाख ।।

ढाल ३

[1]स्वाम सुणो जी मोरी वीनती ।।ध्रुपदं।।

१ परम पूज्य सू वीनती, कर जोडी करूं आण हुलास।
अभिलाषा दर्शन तणी, मन लागो जी स्वामी आपरै पास।।

२ गहरा सायर सारिखा, मेरु जेहवाजी आप धीर गभीर।
शीतल चंदन सारिखा, परिषह सहिवा जी साहसीक वडवीर।।

---

*लय : विमल प्रभू सेवग की अरदास ...   [1]लय . वीर सुणो मोरी वीनती ....

१. प्रिय ।

३ गण वच्छल गिरवा गुणी, जशवंता जी खिम्यावंता जोय।
नित्यप्रति समरण स्वाम नो, चित चाहवै जी कद दर्शण होय ॥
४ वल्लभ वाण महाराज नी, पूज्य मुख नी जी मीठी लागै वात।
जीभ मे अमृत झर रह्यो, सुण मन हर्षे जी जाणै पीधी 'निवात'[1]॥
५ सूरत हस्तमुखी भली, देखण नें जी म्हारा तरसै नेण।
नाम सुण्यां मन उल्लसै, अमृत सरीखा जी थांरा वाल्हा बैण॥
६ स्वप्नेइ दर्शण कियां, मन पांमै जी स्वामी परम संतोष।
तो देखण रो कहिवो किसूं, च्यारूं तीर्थं नैं जी थांरो पूरण पोष॥
७ 'कारण'[2] सुणकर स्वाम नो, करडी लागी जी ते'जाणै जगन्नाथ।
अन्नकी रुची बहु उड गई, बात करंता जी स्वामी हीयो भर जात॥
८ अंतर्यामी ने ओलख्या पछै, 'नवली'[3] बाधी जी स्वामी आप सू प्रीत।
स्वामी रे सेवग घणा, चाहिजै जी म्हां सू राखी प्रीत ॥
९ शरणे आवै वडां तणै, ते पिण हो करै तेहनी प्रीतपाल।
'विरुद'[4] पोतारो मेटैं नही, इणहीज रीते शरणे आयो दयाल ॥
१० गण सुखदाई स्वामी जी, आनंद करी जी ज्या सू लागो मन।
दर्शण चित परसन करै, हूं तो जाणू जी सोही दिहाडो धन्न ॥
११ 'हूंस'[5] धरी हूं आवियो, तुम चरण जी हू तो आपरो दास।
'चिटपटी'[6] लागी चित्त मझे, पूज्य पूरो जी सेवग नी आश ॥
१२ चातक घन, पिउ पतिव्रता, इण हीज रीते ध्यावू ऋषिराय।
सुप्रसन्न सुनिजर मागू सदा, वस रह्या जी म्हारा हीया मांय ॥
१३ पोहसुदि एकम उगणीसै तीए, सागानेरे जी रटिया रायचंद।
परम पूज्य ना प्रताप थी, आज हुवो जी म्हारे परम आनंद ॥

ढाल ४

*परम गुरु पूज्य ने नित्य वंदो रे ॥ध्रुपदं॥

१ भिक्षु भारीमाल ऋषराया रे, गुण उत्तम उत्तम पाया रे।
पंचम आरे प्रगटाया ॥
२ ऋषिराय वड़ा ब्रह्मचारी, भल सूरत मुद्रा प्यारी।
स्वामी शासण रा सिणगारी ॥

---

१. मिश्री।
२. अस्वस्थता।
३. नयी।
४. कर्त्तव्य।
५. उत्कंठा।
६. उत्सुकता।
*लय : नेमीनाथ अनाथा नो नाथो।

३ वचनामृत कोमल वरसै, निकलंक पूज्य गुण निरखै।
भवि पंकज तम मन हरखै ॥
४ गिरवा गुणधारी गंभीरा, स्वामी सुर गिरि जेम सधीरा।
हीये निर्मल अमोलक हीरा ॥
५ स्वामी च्यार तीर्थ सुखकारी, गणस्थंभ गणधार भारी।
नयणा नंदन पूज्य उदारी ॥
६ लघु वृद्ध यत्न अधिकारी, ज्यांरी सूरत री वलिहारी।
स्वाम मुझ आतम निस्तारी ॥
७ मुझ ने दियो संयम भारो, भाव लाय थकी काढचो वारो।
ओ तो पूज्य तणो उपगारो ॥
८ गुण पूज्य तणां याद आवै रे, तन मन 'रलियायत'[१] थावै।
म्हारे तुझ विन दाय न आवै ॥
९ स्वामी वडा उजागर आपो, तुम आण धारचा कटै पापो।
म्हारा मेटचा भव ना संतापो।
१० आप याद आयांइ हुल्लासो, म्हारी मेटी भव भव नी 'त्रासो'[२]।
स्वामी हू छू तुम्हारो दासो ॥
११ आपरो शरणो नित्य चाहू, तुम चरणारविंद ध्यावू।
तुम नाम समरण थकी सुख पावू ॥
१२ आप रा दर्शण कीधा, वचनामृत प्याला पीधा।
म्हारा वंछित कार्य सिद्धा ॥
१३ स्वाति वूद जेम सुविसेखो, आप सू चित्त 'मेखोन्मेखो'[३]।
हूं तो मांगू सुनिजर एको ॥
१४ उगणोसै पांचे माघ मासो, तेरस गुण गाया तासो।
आज पायो परम हुल्लासो ॥

ढाल ५

*संत सुहामणा

जश धारक महा गुण जहाज, स्वाम सुहामणा रे।
ए तो प्रत्यक्ष भवदधि पाज, रूडो परम पूज्य ऋपिराज ॥

१ रूडा रायचंद ऋपिराया रे, भिक्षु रे तीजे पाट सोभाया रे।
दिशावान स्वामी सुखदाया रे, संत सुहामणा ॥

---

१. प्रफुल्लित।
२ पीड़ा।
३. ऐकमेक।

२ सत्तावने चरण शुद्ध धार्यो, उगणीसे आठे पार उतार्यो।
'विरुवो'[1] 'वांक'[2] आतम नो वार्यो ॥

३ अठंतरे पूज्य पद पायो, जिन शासण नै दीपायो।
ज्यां रो जग मांहे जश छायो ॥

४ म्हारे आप सू प्रीत सवायो, चरण दायक महा मुनि रायो।
तुझ गुण पूरा कह्या न जायो ॥

५ गुणंतरे चरण आप आप्यो, इक्यासीये सिंघाडो समाप्यो।
त्रेणूवे युवराज सुथाप्यो ॥

६ पूरचा विविध प्रकार ना लाडो, चित चंद सरीखो 'सुताढो'[3]।
गिरि मेरू सरीखो तू गाढो ॥

७ उगणीसै आठे आषाढ आया, विद वीज पूज्य गुण गाया।
जोवनेर परम सुख पाया ॥

ढाल ६

*भजन करो ऋषिराय नो रे, ए तो हस्त मुखी हृद वेश रे।
राय ऋपि नित्य समरियै रे ॥ ध्रुपदं ॥

१ भिक्षु भारीमाल गणपति भला रे, रूडा तोजे पट ऋपिराय रे।
अधिक उजागर ओपता रे, देख्या चित्त रलियायत थाय रे ॥

२ सुरत मुद्रा सोहनी, वचनामृत वारु वखाण।
प्रवल पुन्य ना पोरसा, ज्यांरी जाझी कीरत जाण ॥

३ गुण रा सागरू, झीणी रहस्य समय ना जाण।
भाग्यवली भारी घणा, ओ तो परम दयाल पिछाण ॥

४ सत्तावनें 'राय' सयम लियो, पट अठंतरे सुख साज।
उगणीसै आठै समे, स्वामी सारचा आतम काज ॥

५ प्रथम दीक्षित निज कर थकी, कियो 'जय वर' ने ऋपिराज।
संवत अठारे गुणंतरे, ओ तो प्रत्यक्ष भवोदधि पाज ॥

६ इक्यासीये संत सूपी करी, कीधो 'टोलाधर'[4] भवोदधि पाज।
त्राणूवे वर्ष विचार ने, स्वामी आप्यो पद युवराज ॥

---

१. वुरा।
२. वक्रता।
३. ठंडा (शीतल)।

*लय . हंसा नदीय......।
४. सिंघाड़वध।

७ म्हां सूं उपकार कियो इसो, ते तो पूरो केम कहिवाय।
श्रमण सत्यां री सपदा, आतो दिन दिन अधिकी थाय ।।
८ स्त्री भरतार जोडे दीक्षा, वले पुत्र माता नी जोड।
माय ने वले पुत्रिका, दीक्षा जुगल वंधव धर कोड ।।
९ चरण कुंवारी कन्यका, भारीमाल वरतारे एक।
राय ऋषि रे दश थई, ए तो स्वाम प्रसादे पेख ।।
१० भिक्षु भारीमाल वरतार में, तप षट मासी हूवो नांय।
राय ऋषि वरतार में, 'अष्ट षट मासी'[1] अधिकाय ।।
११ अनोपचंद जय-वार मे, 'षट सप्त मासी च्यार'[2]।
भगिनी तास सुहामणी, आ तो चंपा अकनकुवार ।।
१२ दीक्षा राय वरतार मे, आ तो वुद्धिवंती वहु जाण।
स्यांणी सुगणी सोभती, आतो पुन्यवंती पहिछाण ।।
१३ चंपक फूल नी ओपमा, आ तो मनोहर चंपक माल।
शील सुगंध सुहामणी, वारु वच दृढ अधिक विशाल ।।
१४ गुण गाया गिरवा तणा, उगणीसै चवदे फाल्गुन मास।
सुदि पक्ष सातम शनि दिने, जोडी वीदासर जश वास ।।
१५ संत चम्मालीस सोभता, ए तो श्रमणी एक सो आठ।
एक सो वावन ओपता, जय गणपति सपति थाट ।।

ढाल ७

१ *वांदो भवि जीवा ! तुम्हे पूज्य रायचंद नें, गुण गिरवा गंभीर हो ।।भविकजन।।
गणवच्छल गणतिलक समा गुणी, विरुद निभावण वीर हो ।।
२ समता दमता खमता सागरु, वलि वाल ब्रह्मचार।
हस्तमुखी हद सूरत सोभती, पेखत पामै प्यार ।।

---

१. आठ छह मासियाँ करने वालो के नाम :—
१. मुनि पीथलजी (५६)
२. ,, वर्धमानजी (६७)
३-४ ,, हीरजी (७६) ने दो वार छहमासी की।
५. ,, शिवजी (७८)
६. ,, दीपजी (८६)
७. ,, कोदरजी (८९)
८. ,, मोतीजी छोटा (९६)
२. तीन छहमासी, एक सवा सात मासी।
*लय : पूज्य जी पधारो नगरी।

७ द्वंद मिटण फटण फंद, रटण 'चंद रायो'[1]।
अतिशय 'अदीठ'[2] 'नीठ'[3], दर्श स्पर्श पायो ॥
८ चरण ज्ञान ध्यान ऋद्धि, तो पसाय पायो।
अवर वात कहूं काहि, रंक कीध रायो ॥
९ एक अरज करूं स्वाम, मानज्यो ऋपिरायो।
सुप्रसन्न सुनिजर मागू, अवर नाहि चायो ॥

ढाल ९

*धिन धिन पूज्य रायचद नै जी ॥ध्रुपदं॥

१ 'गटण'[4] गुरु ज्ञान गिरवा घणा जी, मिटण 'मद'[5] 'मदन'[6] मोह अंध।
कटण कर्म जाल 'करुणाकुला'[7] जी, रटण ऋषि हृदय रायचंद ॥
२ 'दखिल'—दुख दाटण अघ दली जी, 'रखिल'—ऋषि वाल ब्रह्मचार।
'अखिल'—आचार आराधवा जी, सकल गण स्वाम शृंगार ॥[8]
३ तरण जन यान गण सुरतरू जी, चरण गुण खान चित्त शांति।
शरण मुनि स्थान अघहरण कू जी, करण करुणागर क्रांति ॥
४ सुगुरु कुल वास महा सूरमा जी, प्रवल वुद्ध आप प्रवीन।
धीर सीमात चित्त धारियो जी, कायर होय जावै दोन ॥

ढाल १०

†वाल ब्रह्मचारी जी ॥ध्रुपदं॥

१ संवत अठारै सत्तावने ब्रह्मचारी जी, कांई चैत्री पूनम जाण। वाल ब्रह्मचारी।
चारित्र लीधो चूंप सू ब्र०, ज्या चित्त दीधो निर्वाण वा० ॥
२ सूत्र सिद्धांत भण्या गुण्या, थया पंडित प्रवल प्रताप।
भीक्षु भारीमाल गुरु भेटिया, थां रो अधिक नाम आताप ॥
३ भारीमाल पट थापिया, थे सुगुरु तणा सुवनीत।
अवसर ना वहु जाण छो, उपगार करण वहु नीत ॥

---

१. रायचंदजी।
२. अदृष्ट।
३. मुश्किल से।
*लय : वीर वखाणी राणी चेलाणा ए.......
४. ग्रहण।
५. अहंकार।
† लय : आज आणदा रे ......।
६. कामदेव।
७. करुणामय।
८. इस पद मे आचार्य रायचंदजी को 'दखिल', 'रखिल' और 'अखिल' तीन गुणो से युक्त वताया गया है। तीनों शब्दो के अर्थ पद मे दिये हुए हैं।

४ पुन्य प्रवल छै आपरा, कांइ दिन दिन अति उद्योत।
साध साध्वी शोभता, दिन दिन जिन मत जोत ॥
५ उदे उदे पूजा घणी, कांइ पाखंड री बहु हाण।
देश प्रदेशां विचरता, तुम साध साध्वी जाण ॥

ढाल ११

*अहो पूज्य परम गुरु प्यारा ॥ध्रुपदं॥

१ भिक्षु पट भारीमाल भलकै, रायचंद पुन्य प्रवल झलकै।
सुधारस जेम कमल मुलकै ॥
२ मित्था तिमिर मेटण रवि स्वामी. चतुर विध तीर्थ ना यामी।
देश षट मांही कीरति पांमी ॥
३ ओजागर चरण करण छाजै, श्रमण वीच शशिहर जिम राजै।
पाखंड्यां में मृगपति जिम गाजै ॥
४ स्वामी उपगार करण आछा, लघु वृद्ध यत्न करण जाचा।
वदै वचनामृत वर वाचा ॥
५ ज्ञान तप साज शरण सोवै, इंद्र नरिद्र का मन मोवै।
दीठा विकसायमान होवै ॥
६ आचार आराधन अति दृष्टि, शिक्षा शीघ्र ग्रहण अधिक पुष्टि।
कृपानिध नीत निपुण वृष्टि ॥
७ सिद्धांत नी रहस्य बुद्ध वारू, वचन कला रूप चतुर चारू।
ज्ञान शरणागति तुम सारू ॥
८ स्वामी तुज साझ चरण पलियै, ज्ञान ध्यान रंगरत्ता रहियै।
भवोदधि दुख दूर टलियै ॥
९ हूं तो कहूं हस्त वेहूं जोडी, दीजै तप ज्ञान मुक्ति डोरी।
सुणीजै महाराज अरज मोरी ॥
१० भमत भव भ्रमण किया फेरा, फरस्या चरण रज वृंद तेरा।
हिवै दुख मेटीजै मेरा ॥
११ कुगुरु संग चिहु गति में भटक्यो, नरकादिक माहि घणो 'चटक्यो'[1]।
अवे तुज चरण अटक्यो ॥

इति श्रीमज्जयाचार्य विरचित रायचंद गणी गुण वर्णन

---

*लय : अहो हरि सांवरिया तथा सो हनुमंत वीर" ...।

१. मार को प्राप्त हुआ।

ढाल १२

*भजलै तू पूज रायचंद ए ।।ध्रुपदं।।

१ भीक्खू पाट भारीमाल ए, ऋषराय तीजे पट न्हाल ए ।
महिमागर मोटो मुनिंद ए ।।
रटलै तूं पूज रायचंद ए ।।ध्रुपदं।।

२ ग्यार वरस तणे उनमान, सुखे संजम धारयो स्वाम ।
निरमल नयणानंद ।।

३ प्रवल बुद्धि गुण पूर, स्वामी उपगारी महासूर ।
फेरण मिथ्या फंद ।।

४ स्वाम भीक्खू साठे संथार, भारीमाल पाट गण भार ।
मुख आगे ऋपराय मुनिंद ।।

५ अठंतरे अणसण आवियो, भारीमाल ने कलश चढावियो ।
धूर सू सेव करी तज धंध ।।

६ भारीमाल तणै भाल, ऋपराय पाट सुरसाल ।
पाम्यां परमानंद ।।

७ संजम दियो घणा नै श्रीकार, वलि श्रावक ना व्रत वार ।
गणधार गुणा रा समंद ।।

८ नित्य याद करै नर नार, हस्तमुखी पूज हितकार ।
गुणी नित्य प्रती जस गावद ।।

९ सुपनो तुम सुरत संभार, आवै मुझ हरप अपार ।
किण विध जाय कथिद ।।

१० पूरण वाधी म्हे आपस् पीत, रूडी राखता मुझ मन रीत ।
हिये हरप हुलसंद ।।

११ चट देई उतरतो चोमास, म्हारै हूतो दर्शण रो हुलास ।
पूज पेख्यां हुंतो परमानंद ।।

१२ वारू एकावन वास, वर संजम सखर विमास ।
जश कर रह्या वहुजन वृंद ।।

---

*लय : जाण छे राय तूं ... ... ।

१३ मुझ परम उपगारी सिर मोड, माहरे आप जिसो कुण ओर।
धुन आपरो ध्यान ध्यावंद ॥

१४ धुर थी चरण दे अंत सीम, निरमल पीत निभावी सुनीम।
कीरत जीत कथिद ॥

१५ उगणीसे आठे फागुण मास, सुदि बीज रच्या गुण रास।
सैहर लाडणू सोहंद ॥

२

चरमोत्सव गीतिकाएं

ढाल १

१ *स्वाम भिक्षू परगट्या, जग मांहि कीरति थई।
श्री जिन आणा शिरधरी, वर न्याय वतका कही।
कही रे स्वाम साचा अद्‌भुत वाचा कही ॥

२ आगूंच उत्तराध्ययन मे, इण आर पंचम मही।
जिन विना शिव पंथ होसी, संत तंत सही।
सही रे स्वाम साचा ॥

३ संवत् अठारै तेपना पछै, सूत्र संघ वृद्धि हुई।
बंकचूलिया मे वारता, तू जोय प्रत्यक्ष ही।
प्रत्यक्ष ही रे स्वाम साचा ॥

४ द्वादश मुनि आगे हुता, त्यां पछै वृद्धीज थई।
हेम चरण सुवृद्धि कारण, प्रत्यक्ष वयण मिल ही।
मिल ही रे स्वाम साचा ॥

५ स्वाम पारस सारिखा, चिंतामणी कर लही।
भवदधि पोत उद्योत करवा, स्वाम सूरज सही।
सही रे स्वाम साचा ॥

६ स्वाम भिक्षू समरिया, उगणीसै चवदा मही।
वीदासर चउमास में जय, सुजश कीरति थुई[1]।
थुई रे स्वाम साचा अद्‌भुत वाचा कही[2] ॥

ढाल २

१ [3]पूज्य भीखनजी महा उपगारी, शासण रा सिणगारी।
ऋषिराय तणी वलिहारी, महाराज वड़ा जशधारी ॥
२ दान दया हद न्याय दीपाया, जिन आणा शिर धारी ॥
३ विविध मर्याद वाधी आप वारु, उत्पत्तिया बुद्धि भारी ॥
४ गणपति आणा माहि विचरणो, समय तणो तंत सारी ॥

---

*लय . पांच मोर की मु दरी ।

१ कही ।

२. यद्यपि इस गीतिका मे चरमोत्सव दिन-भाद्रव शुक्ला १३ का उल्लेख नही है किन्तु उसी उपलक्ष में बनाई, ऐसा प्रतीत होता है ।

३ अनुमानतया यह गीतिका भी चरमोत्सव के उपलक्ष मे बनाई गई है ।

५ गणपति इच्छा सूं पट थापै, तसु करणो अंगीकारी ॥
६ लघु वृद्ध री तो नियम नही छै, गणि थापै ते अधिकारी ॥
७ अवर संत नै ताण न करणी, दुमन न ह्वेणो लिगारी ॥
८ कर्म योग कोइ गण थी निकलै, तिण नै गिणवो चिहुं तीर्थ वारी ॥
९ पोथी पाना न लेजावणा साथे, अवगुण न वोलणा लिगारी ॥
१० इत्यादिक मर्याद अनोपम, स्वाम वांधी सुखकारी ॥
११ उगणीसै पनरे भादु विद पनरस, लाडणू शहर मझारी ॥
१२ जय जश गणपति अरज करै, समरण सहचारी ॥

ढाल ३

*श्रमण सिरोमण सोभता जी, भिक्खू सखर सुजाण ॥ ध्रुपदं ॥
१ पंचमे आरे प्रगटयाजी काई, भविजन भाग्य प्रमाण ।
आदनाथ अरिहंत ज्यू जी कांई, भिक्षु भरत में भांण जी कांई ॥
२ दांन दयादिक ऊपरे, दिया विविध दृष्टन्त ।
हलुकर्मी जन सुण हिये, तुरत ग्रहै 'मग'[1] 'संत'[2] ॥
३ दूध दही गोरस तणो, सार माखण पहिछांण ।
भिक्षु अमृत वायका, समय सार जिन आंण ॥
४ अधिक ओजागर ओपता, सासण सिरमणि मोड़ ॥
सांप्रत काले पेखियै, अवर न एहनी जोड़ ॥
५ उगणीसै सोले समे, भाद्रव शुक्ल पक्ष जांण ।
भिक्षु गणि गुण गावतां, हुवो आनंद हरप किल्याण ॥

ढाल ४

१ †संवत अठारै सतरो जी, स्वामीजी गुणवंत ।
संवत थयो अति सुथरो[3] जी, स्वामीजी गुणवंत ।
जन्म भाव चारित्रो जी, स्वामीजी गुणवंत ।
स्वाम भाण जिण मत रो जी, स्वामीजी गुणवंत ।
भिक्षु भारीमाल प्रमुख मुनि, कियो धर्म उद्योत ॥ सं० ॥
२ दान दया दीपाई, जिन आणा ओलखाई ।
समकित शिव पद साई, वारू रहस्य वताई ।
चरण-देशव्रत दे वहु जन नै, घण घट घाली जोत ॥

---

*लय . म्हारै सासूजी रै पाच पुत्र · · ।
१. मार्ग (मोक्ष का मार्ग)
२. सज्जन पुरुप ।

†लय—माता सुत नै भाखै ·· ····· ··।
३. श्रेष्ठ ।

३ भिक्षू गुण भंडारो, उत्तम पुरुष अवतारो।
विविध मर्याद उदारो, बांधी महा सुखकारो।
इक गणी नामें दीक्षा देणी, लिखत वत्तीसा मांय॥
४ इंद्री पाच अखंडित, परम पूज्य महा पंडित।
मुनिवर गुण-मणि मंडित[1], सिंह केसरी तंडित[2]।
सतरा सू साठा लग स्वामी, वहु जन तारचा ताहि॥
५ चरम चौमास सिरीयारी, आप कियो सुविचारी।
अंत समय अवधारी, अणसण लियो उदारी।
साधु साध्वी आवै साहमा, जावो इम पभणंत[3]॥
६ चरम वयण तंत सारी, मिलिया महा सुखकारी।
हरख्या लोक अपारी, चित्त पाया चमतकारी।
सात पोहर नो आयो अणसण, सुदि भाद्रवे तेरस तंत॥
७ चरम कल्याण पिछाणो, इह भव आश्री जाणो।
आज दिवस ते माणो, महोत्सव आज मंडाणो।
उगणीसै सतरे जयजश गणि, सुदि भाद्रव महासुखकार॥

ढाल ५

*जेह सुगुण नरनार, तेहने मन वसियो।
भिक्षु गुण रसियो ॥ध्रुपदं॥

१ भाद्रव शुक्ल तिथि तेरसी रे, सूरिजन, मृत्यु महोत्सव महाराज।
संवत अठारै साठे समे रे, सूरिजन, पंडित मरण सकाज।
स्वामी गुण रसियो॥

२ †मन वस्यो मेरे स्वाम भिक्षु, पोहर सप्त पिछाणियै।
'वे वदी वाणी मिलि आणी'[4], जवर जयजश जाणियै॥

३ इहा संत आवै जावो साहमा, महा सत्या आवै वली।
इक दोय मुहूर्त मांहि आया, हूओ हर्ष सुरंगरली॥

---

१. शोभित।
२. जोशभरी आवाज युक्त।
३. कहा।
*लय—प्राणी गुण रसियो ...।
†लय—पूज्य मोटा ...।

४ कही हुई दो वातें (साधु तथा साध्वियां आ रही है) मिल गई।

४ आ तो रंगरली हुई भारी, छेहड़े मिलिया तीर्थ च्यारी।
नर नारी वोल्या तिह वारं, ऊपनो दीसै अवधि उदारं ॥
५ इम आगूंच वात प्रकासी, दीसै ज्ञान सू वात विमासी।
जग मांहि वहु जन जाणी, निश्चय तो जाणै केवलनाणी ॥
६ *केवलनाणी भाखियो रे, सूरिजन, तें हिज धर्म मुतंत।
धारचो भिक्षू चित्त धरी रे, परिहरियो कुपंथ ॥
७ †कुपंथ छोडो धरचो सुमग्ग, अष्टादश सतरे समे।
जिन आण, दान, सुदया-निर्णय, जीव तारचा भरत में ॥
८ पट भारीमाल विशाल थापी, पद आराधक पाविया।
वर आज के दिन वर्ष साठे, परभव आप सिधाविया ॥
९ इह अर्थ महोत्सव अधिक उत्तम, स्वाम भिक्षु नों भलो।
उगणीसै ठारे स्वाम दिन ए, नमो भिक्षु गुण निलो ॥

ढाल ६

+महाराजा फूल क्यारी लगी[1]

महाराजा गुल क्यारी[2] लगी ॥गु०॥

१ संवत अठारै साठे समे स्वामीजी, भाद्रव शुक्ल पक्ष सार हो।
तेरस अणसण सीझियो, स्वा० सिद्धि योग मंगलवार हो।
२ भिक्षू आपरै संथारे, छिव भारी लगी।
भिक्षू स्वाम रा अणसण री, छिव भारी लगी ॥
३ साहमा जावो संत आवै अछै, साधवियां आंवत हो।
चरम वचन इम ऊचरचा, मिलियो तंतो तंत हो ॥
४ च्यार तीर्थ भेला हुवा, स्वाम तणै संथार हो।
सात पोहर नो आवियो, अणसण जय जय कार हो ॥
५ आप ओजागर[3] ओपता, आप तणों आधार।
पूर्ण आपरी आसता, स्मरण संपत्ति सार हो ,।

*लय—प्राणी गुण रसियो।
+लय—कांठोडा तो वाजा वाजिया
†लय—पूज मोटा

१. फूलो की क्यारी (वगीचे मे थोड़े थोड़े अन्तर से बनाये गये विभाग)
२. गुलाब की क्यारी।
३. ओजस्वी।

६ उपगारी गुण आगला, याद करू दिन रैन हो।
हर्ष अधिक हिये हुल्लसै, चित में पामू चैन हो।
७ भारीमाल पट सोभता, तीजे पट ऋषिराय हो।
जय जश संपति साहिवी, आप तणैं सुपसाय हो।
८ उगणीसै अष्टादसे, भाद्रवा शुक्ल पक्ष सार हो।
महोत्सव मनहर लाडणू,पूज्य भवोदधि पार हो।महाराजा गुल०।

ढाल ७

१ *मरुधर कंटाल्या मझे रे, भिक्षु प्रगट्या भाण।
सतरे सै तंयासी रे, मृगपति सुपने माण॥
मृगपति सुपने माण, माता सुत जाइयो।
सज्जन पाम्या आणंद, परम सुख पावियो॥
परणी सुंदर नार, तरूण चढती कला।
उत्पत्तिया अधिकाय, सुगुण वृद्धि आगला॥
२ अष्टादश आठे समे रे, द्रव्ये संयम धार।
पनरे मार्ग ओलख्यो जी, वारू कियो विचार॥
वारू कियो विचार, सतरे सर्व जाणियै।
भावे चारित्र लीध, 'उलट'[1] अति आणियै॥
सावद्य निर्वद्य सोध, आगम अवलोक नै।
शिरधारी जिन आण, परम वच पोख नै॥
३ अष्टादश वतीस मे रे, धुर वलि गुणसठे अंत।
मर्यादा वाधी जवर, संत सती गुणवंत॥
संत सती गुणवत, चेला गणपति तणा।
दीक्षा दे अभिराम, गणी नै सूपणा॥
आचार्य निज पाट, सूपै जिन मुनि भणी।
रहिवो छै तसु संग, तजी 'खाच'[2] अन्य तणी॥

*लय—काली गुदला वादल गाजिया… ।
१. उमंग ।
२. आग्रह ।

४ संवत अठारे पच्चासए रे, दोष देख्यां तत्काल।
कहिवो आचार्य भणी, अथवा घणी निहाल॥
अथवा घणी निहाल, चरण गण मझे।
श्रद्धो रहिजो मांहि, कपट दूरो तजे॥
कपट थकी रह्यां माहि, सिद्धां री आण छै।
'पंच पदां'री' आण, वले पचखाण छै॥

५ गण थी वाहिर निकली रे, अवगुण ना पच्चखाण।
उपगरण ले जाणां नही रे, ए पिण त्याग सुजाण॥
ए पिण त्याग सुजाण, वलि पैंतालीस मे।
गण माहे तथा वार, निकलनैं संयम 'वमै[2]'॥
गण ना अवर्णवाद, अंश मात्र पिण सही।
वोलण रा पचखाण, पिठी मंस[3]' जिन कही॥

६ भारीमाल पट थापिया रे, वर्ष वत्तीसे आप।
साठे भाद्रव शुक्ल पक्ष, स्थिरचित अणशन थाप॥
स्थिरचित अणशन थाप, संत वर 'व्यावचे[4]'।
साह्मो जावो सुजाण, संत आवै अछै॥
वलि श्रमणी आवंत, चरम वच भाविया।
मिलियो तंतो तंत, श्रमण सती आविया॥

७ सात पोहर नो आवियो, संथारो श्रीकार।
तेरस रे दिन सीझियो, पक्को उतारचो पार॥
पक्को उतारचो पार, महोत्सव दिन आज रो।
देश देश दीपंत, सुयश महाराज रो॥
उगणीसै उगणीस, भाद्रव सुदि त्रयोदशी।
जय-जश संपति सार, सुगण जन मन वसी॥

ढाल ८

१ *स्वाम भिक्षू प्यारे, जग नीको शासण शिर टीको, स्वामी हद प्यारे।
भिक्षू प्रगटचा भरत मझारो, या तो आय लियो अवतारो॥ ध्रुपदं॥

---

१. अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि।
२. छोड़ दे तो।
३. परोक्ष मे दोप वोलने वाला।
४. सेवा मे।

* लय—प्यारे मोहै केसरिया साड़ी ......

२ सतरेसै तंयासिये सारो, मरुधर देश मझारो ।।
३ ओसवंश अभिरामो, तंत जाति संकलेचा तामो ।।
४ अनुक्रमे सुंदर इक परणी, वारु उत्पत्तिया वृद्धि वरणी ।।
५ वर्ष पणवीस आसरै वरिया, द्रव्य गुरु रुघनाथ जी धरिया ।।
६ राजनगर चौमासा मांह्यो, वर्ष पनरे ज्ञान हृद पायो ।।
७ वहु वाच्या सूत्र सिद्धांतो, जद ओलखियो प्रभु पंथो ।।
८ पछे द्रव्य गुरु नै कहै आई, शुद्ध श्रद्धा धारो सुखदाई ।।
९ वलि आदरो शुद्ध आचारो, तो थांरे म्हारे रहै ए प्यारो ।।
१० दोय वर्ष आसरै पेखी, खप कीधी अधिक विसेखी ।।
११ त्या रै हिये न बेठी लिगारो, वगडी थी कियो विहारो ।।
१२ तेरे जणां सू प्रसीद्धो, नवि दीक्षा लेवा मन कीधो ।।
१३ शहर जोधाणे तामो, यांरो तेरापथी दियो नामो ।।
१४ ए तो पंथ अनेरो न मानै, प्रभु तेरापंथ सत्य जानै ।।
१५ सतरै वर्ष चरण नवो धारयो, या तो खरे मते सुविचारयो ।।
१६ पछै जीव घणा समझाया, च्यार तीर्थ थाट जमाया ।।
१७ उत्पत्तिया बुद्धि अनुसारो, आसरै 'ग्रंथ'[1] अड़तीस हजारो ।।
१८ भारीमाल पट थाप्यो, त्यारो प्रगट सुयश जग व्याप्यो ।।
१९ घणा देशां में धर्म दीपायो, चरम चोमासो सिरीयारी ठायो ।।
२० कांयक दस्त रो कारण जणायो, तो पिण गोचरी शहर में जायो ।।
२१ कियो संवत्सरी रो उपवासो, छठ पारणो न 'जरयो'[2] तासो ।।
२२ सातम आठम नवमी तायो, अल्प आहार लियो मुनिरायो ।।
२३ दशम चाली 'चोखा'[3] उन्मानो, आसरै दश मोठ पिछानो ।।
२४ शिष्य कर जोडी अर्ज करता, पिण स्वामी 'त्रटके'[4] से त्याग वरंता ।
२५ तिथि एकादशी तासो, कियो अमल आगारे उपवासो ।।
२६ वारस वेलो कियो इण रीतो, त्यांरै अनशन धारण नीतो ।।
२७ सामली हाठ सू उठी आया, पक्की हाठे पक्का मुनिराया ।।
२८ सुखे सूता रायऋषि वोलै, पुद्‌गल हीणा पड्या वच तोलै ।।
२९ भारीमाल सु आदि वोलाया, ए तो 'चटके'[5] से उभा आया ।।
३० अरिहंत सिद्धा नै नमुत्थुणं आमो, कियो तीखे वचने तामो ।।
३१ घणा नर नारी निसुणै तिवारो, पचख्या जावजीव तीनू आहारो ।।

१. पद सख्या ।
२. हजम नही हुआ ।
३. चावल ।
४. तुरत ।
५. तत्काल ।

३२ बारस 'बेला'[1] में कियो संथारो, 'छेहलो चोघडियो[2]' श्रीकारो ॥
३३ लोक चमत्कार अति पाया, घणा त्याग वैराग्य वधाया ॥
३४ तेरस दिन जाझो पोहर आयो, 'आपे[3]' उदक पीयो मुनिरायो ॥
३५ दिन पोहर दोढ चढयो उन्मानो, स्वामी किण विध बोलै वानो ॥
३६ साधु आवै साहमा जावो भावै, वले साधविया पिण आवै ॥
३७ केतो कह्यो अटकल उन्मानो, के कह्यो बुद्धि प्रमाणो ॥
३८ के अवधि उपनो जाणी, ते तो जाणै केवलनाणी ॥
३९ लोकां जाण्यो साधा में योग वसिया, मुहूर्त साधु आया दोय तसिया ॥
४० साधु विकसित वंदै विख्यातो, स्वामी मस्तक दीधो हाथो ॥
४१ दोय मुहूर्त आसरै विख्यातं, आयो साधविया रो साथं ॥
४२ लोका जाण्यो अवधि उपन्नो, चिह्न तीर्थ करै धन्य धन्नो ॥
४३ साधु आया तिके गुण गावै, भांत भांत परिणाम चढावै ॥
४४ आप कहो तो बैठा करा सारं, जद भरियो कांय हुंकारं ॥
४५ बैठा कर मुनि लारे बैठा, परिणाम स्वामी रा सैंठा ॥
४६ सुखे समाधे दीसत जांणं, स्वामी चट दे छोडया प्राणं ॥
४७ सात पोहर आसरै संथारो, सिरियारी शहर मझारो ॥
४८ वर्ष साठे नैं संवत अठारो, भाद्र सुदि तेरस मंगलवारो ॥
४९ पंडित मरण किल्याण पिछाणो, तिण कारण महोत्सव जाणो ॥
५० तेरे खंडी मंडी करि तामो, इण मे धर्म तणो नहिं कामो ॥
५१ उगणीसै वीसे धर कोडो, कीधी महोत्सव धुर दिन जोड़ो ॥

ढाल ९

*शासण शिर सेहरा भिक्षु स्वामी रे ॥ध्रुपदं॥

१ सतरेसै तंयासिये स्वामी रे, सुदि आसाढ जन्म सुनामी रे।
संकलेचा जाति गुण धामी ॥

२ परणी इक 'रमण'[4] प्रसिद्धो, अष्टादश आठे गृह तज दीधो।
द्रव्य चरण अंगीकृत कीधो ॥

३ पछै आगम न्याय पिछाणी, वारु दान दया हृद छाणी।
भावे दीक्षा सतरोत्तरे जाणी ॥

---

१. दो दिन का उपवास।
२. अन्तिम चार घटी-९६ मिनट।
३. स्वत।
*लय : नमीनाथ अनाथा रा नाथो रे...... ।
४. रमणी-स्त्री

४ जिन शासन जबर जमायो, प्रभु आण धर्म ओलखायो।
चिहूं तीर्थ जग यश छायो ॥

५ अड़तीस सहस्र उन्मानो, सूत्र शाख 'ग्रंथ'[१] सुप्रमाणो।
भरत मांहि भिक्षु गणि भानो ॥

६ पट भारीमाल मुनि प्यारो, थाप्या वर्ष वत्तीस विचारो।
जिन शासण रो शृङ्गारो ॥

७ कर्मयोग हुवै गण वारो, तिण नै गिणवो नहि अणगारो।
धिग् धिग् धिग् तास जमारो ॥

८ लिख्या पत्र लेजावणा नाहि, अवगुण न वोलणा काई।
एहवा त्याग लिखत रे मांही ॥

९ वर्ष गुणसठे तांइ विचारी, वांधी विविध मर्यादा भारी।
चरम चौमासो कियो सिरियारी ॥

१० संवत्सरी तणो उपवासो, पंचमी पारणो कियो तासो।
नही जरियां स्वाम सुविमासो ॥

११ सातम आठम नवमी सुसारो, स्वामी लियो अल्प सो आहारो।
इम संलेखणा अधिकारो ॥

१२ दशम आसरै चोखा चालीसो, आसरै दश मोठ जगीसो।
तत्क्षण त्याग किया मुनीसो ॥

१३ एकादशी 'अमल'[२] आगारो, उपवास कियो सुविचारो।
तिथि वारस वेलो उदारो ॥

१४ सामली हाट सूं सुविचारो, पक्की हाट आवी गुण धारो।
स्वामी पक्कोई करै संथारो ॥

१५ अरिहंत सिद्धा नै तामो, तीखे वचन नमुत्थुणं सुनामो।
संथारो पचख्यो भिक्षु स्वामो ॥

१६ नर नार्यां रा वृंद हगामो, करै नमस्कार गुण ग्रामो।
हिवे तेरस रो दिन तामो ॥

१७ चरम वचन वोलै मुनिरायो, साधु आवै साहमा जावो ताह्यो।
वलि साधवियां पिण आयो ॥

१८ एक मुहूर्त आसरै धारी, दोय संत आया गुण धारी।
प्रणमै पद 'पंकज'[३] भारी ॥

---

१. श्लोक सख्या।
२. अफीम।
३. चरण कमल।

१९ स्वामी मस्तक दीधो हाथं, करसूं 'सानी'[1] करी नै विख्यात ।
पूछी नेत्र तणी सुख सातं ।।

२० गुणग्राम गावै जोडी हाथं, आसरै दोय मुहूर्त ख्यातं ।
आयो त्रिण साधवियां रो साथं ।।

२१ मांढी सींवी दर्जी पूगो जाणं, तिण अवसर मांहि अचाणं ।
स्वामी तत्क्षण छोड्या प्राणं ।।

२२ सात पोहर रो आयो संथारो, संवत अठारै साठे विचारो ।
भाद्रवा सुदि तेरस सारो ।।

२३ चरम कल्याण महोत्सव आजो, स्वाम भिक्षु तणो शुभ साजो ।
जय आनंद हर्ष समाजो रे ।।

२४ उगणीसै वर्ष इकवीसो, चरम कल्याण दिवस मुनीशो ।
जोडी जय जश करण जगीसो ।।

२५ शहर जोधाणा मे सुख पायो, हूओ धर्म उद्योत सवायो ।
'महिमंडल'[2] जय जश छायो ।।

ढाल १०

*जशधर पूज प्रगटिया लाल, स्वामजी ।।ध्रुपदं ।।

१ शहर कंटालियो जाणी लाल स्वामजी, अवतरिया भिक्षु आणी जी ।
२ स्वामी ओसवंश अधिकारी, संकलेचा जाति उदारी ।।
३ जनम्या सवत सतरै सै, वंयासिये वर्ष विशेषै ।।
४ इक सुंदर परण सुहाई, आठे द्रव्य दीक्षा आई जी ।।
५ द्रव्य गुरु रूघनाथजी धरिया, वर्ष पनरे नयन उघड़िया ।।
६ सोलेसै आषाढ वरिया, मुनि भाव चरण उच्चरिया ।।
७ मुनि तेरापंथ संचरिया, तिण सूं नाम तेरापंथी धरिया ।।
८ वरदान दया दीपाया, जिन आज्ञा धर्म वताया ।।
९ वलि लिखत मर्यादा वांधी, आ तो विविध प्रकारे सांधी ।।
१० गुरु नामे दीक्षा देणी, वत्तीसा लिखत में रैणी ।।
११ गण वाहिर निकलियां कोई, तिण नैं साधु न गिणवो सोई ।।
१२ नहि गिणवो तीर्थ माही, वत्तीसे लिखत फरमाई जी ।।

---

१. इशारा ।
२. पृथ्वीतल ।

*लय : सुख पाल सिंहासन ...

१३ अवगुण वोलण रा पचखाणो, पच्चासे गुणसठे वाणो ॥
१४ इत्यादिक वहु मर्यादो, आप वांधी धर अहलादो ॥
१५ वर्ष साठे शहर सिरियारी, चरम चउमासो धारी ॥
१६ साहमली दूकान सू आवी, ऊच्चेश्वर अनशन भावी ॥
१७ मुनि आवै साहमो जावो, श्रमणी आवै सम भावो ॥
१८ ए चरम वचन तंत सारो, आप वोल्या अधिक उदारो ॥
१९ पाली सू वे मुनिराया, थोडी वेला सू आया ॥
२० कर वंदन नामी माथो, मुनि मस्तक दीधो हाथो ॥
२१ साता पूछै कर सेती, गणि भिक्षु घणा 'सचेती'[१] ॥
२२ अज्जा पिण तीन आनंदे, आवी ते मुनि नै वंदै ॥
२३ वच फलियो हर्ष्या लोगो, कहै अवधि दीसै प्रयोगो ॥
२४ वुद्धि अकल तास अधिकाई, तेह थी ए वात वताई ॥
२५ तथा अवधि उपनो जाणी, जाणै ते केवल नाणी ॥
२६ इम सात पोहर संथारो, मुनि पाम्या भवजल पारो ॥
२७ भाद्रव सुदि तेरस भाली, मंगल सिद्ध योग विशाली ॥
२८ चिहु तीर्थ नै समझाया, जिन मारग थाट जमाया ॥
२९ एहवा भिक्षू मुनिराया, तसु स्मरण महा सुखदाया ॥
३० पट भारीमाल गुण भारी, ऋषिराय वड़ा ब्रह्मचारी ॥
३१ गण संपति तास पसायो, जय जश सुख हर्ष सवायो ॥
३२ उगणीसै वर्ष वावीसे, भाद्रव सुदि वारस दिवसे ॥
३३ भिक्षु नो चरम कल्याणो, कीधी तसु जोड़ पिछाणो ॥
३४ तेरस दिन महोत्सव जाणो, ए वर्षोवर्ष पिछाणो ॥

ढाल ११

१ *अष्टादश सोलै समें, जशधारी हे, कांई आषाढी पूनम सार।
भिक्षु भारी हे ।
संयम शुद्ध समाचरचो, काइ छांड दियो भेष धार ॥
२ दान दयादिक ऊपरे, वारु ग्रंथ विचार ।
अड़तीस सहस्र आसरै, जोडचो महा जयकार ॥

१. सावधान ।
*लय : मुसरोजी जायज्यो डूगरा रे.... ..

३ शिष्य शिष्यणी करणा सही, आचार्य रे नाम।
वांधी मर्यादा भली, वर्श वत्तीसे ताम॥

४ गण वाहिर निकलै अवनीतड़ा, तेहनै गण ना जाण। सुभव्यप्राणी रे।
अवगुण अंश न वोलणा, गुणसठे पच्चासे आण॥

५ क्षेत्रां में रहिणो नही, पुस्तक पानां जाण।
लिख्या नही ले जावणा, लिखत गुणसठे माण॥

६ टालोकर छै तेहनै नही, गिणवा तीर्थ माहि।
वंदै पूजै जेहने, ते पिण आज्ञा में नाही॥

७ लिखत वत्तीसे गुणसठे, ए मर्यादा सार।
हलुकर्मी हर्षे सुणी, मूर्ख दे मुंह विगाड़॥

८ दृढ मर्यादा वांधी घणी, थाप्या तीर्थ च्यार।
चरम चउमासो स्वामजी, सिरियारी सुखकार॥

९ पांचू इंद्रियां परवरी, थाणे थपिया नांहि।
किंचित कारण दस्तनो, श्रावण मासज मांहि॥

१० करै शहर में गोचरी, दिशा पुर वाहर जाय।
अधिक असाता तनु नही, हिवे मास भाद्रवा मांय॥

११ पर्यूषण में परवरा, त्रिहुं टक वखाण तास।
संवत्सरी नो स्वामजी, आप कियो उपवास॥

१२ पूज्य कियो छठ पारणो, वमन हुवो तिण वार।
सातम आठम नवमी इं, लीयो अल्प सो आहार॥

१३ दशम तिथी दयालजी, आसरै चोखा चालीश।
वलि दश मोठ रै आसरै, लीधा स्वाम जगीश॥

१४ उपवास कियो एकादशी जी, अमल तणे आगार।
वारस दिन वेलो कियो, इम तन तोली सार॥

१५ सामली हाठ सू ऊठ नै, चलिया चलिया आय।
पक्की हाट पक्का मुनि, दियो पक्को संथारो ठाय॥

१६ नमोत्थुणं 'पोते'[1] गुण्यो, तीखे वचने ताम।
तीन आहार त्यागन किया, वहुजन सुणता ताम॥

१७ वहुजन वृंदज आवता, गावत अति गुण ग्राम।
नीचो शीश नमावता, कहै धन्य धन्य भिक्षू स्वाम॥

---

१. अपने आप।

१८ प्रथम करी आलोवणा, शीख अमोलक सार।
खमत खामणा खांति सूं, पूज्य किया धर प्यार।।
१९ तेरस दिन तीखे मने, ध्याय रह्या शुभ ध्यान।
दिन चढियो तिण अवसरे, दोय पोहर उन्मान।।
२० साधू आवै छै इहां, साह्मा जावो सार।
साधवियां आवै अछै, चरम वचन चमत्कार।।
२१ हर्ष धरी नै वांदतां जी, पूज्य पाय विख्यात।
साधू आया जाण नै, मुनि मस्तक दीधो हाथ।।
२२ हाथ थकी सानी करी, साता पूछी चीन।
दोय मुहूर्त रे आसरै, आवी साधवियां तीन।।
२३ वंदै शीष नमावती, गावै गुण धर ध्यान।
लोक कहै स्वामी भणी, उपनो अवधिज ज्ञान।।
२४ केतो कह्यो अकल थकी, के कह्यो बुद्धि प्रमाण।
के को अवधि समुप्पनो, ते जाणै सर्वनाण।।
२५ तेरे खंडी त्यारी करी, जाणक देव विमाण।
बेठा बेठा स्वामजी, काइ चट कै छोड्या प्राण।।
२६ अठारेसैं साठे समे, सुदि भाद्रव तेरस ताहि।
मंगलवारे महामुनि, पहुंता परभव माहि।।
२७ आदिनाथ जिम अवतरया, पंचम काल मझार।
सूत्र देख शुद्ध मग लियो, ज्यांरी हूं वलिहार।।
२८ आप उजागर ओपतां, आप तणो आधार।
तुज वचनांरी आसता, तन मन सेती प्यार।।
२९ स्वपने सूरत स्वाम नी, देख्यां ही आनंद।
प्रत्यक्ष नो कहिवो किसो, जाण रह्या जिन चंद।।
३० ब्रह्मव्रत व्रतां मझे, 'कल्पे ब्रह्म' कहाय।
मोटा छै तिम जाणजो, भिक्षु मुनिवर माय।।
३१ ऊंडी तुज आलोचना, प्रवल वुद्धि अधिकार।
महंतपणो भारी घणो, वर तुज प्रीत अपार।।
३२ आशा पूरण गावियो, उगणीसैं तेवीस।
भाद्रव शुक्ल तेरस भली, जयजश करण जगीस।।

१. सौधर्म आदि १२ देवलोको में पांचवां देवलोक।

ढाल १२

*भविक जन सांभलो रे ।। ध्रुपदं ।।

१ सतरे सै तंयासिये, भिक्षू जन्म उदार।
अष्टादश आठे समे रे, द्रव्य दीक्षा अवधार ।।

२ पनरै में प्रतिबूझिया, सतरे भावे संत ।
तेरे जणां सूं नीकल्या, नाम दियो तेरापंथ ।।

३ श्री जिन आगम सोधनै, जिन आज्ञा में धर्म ।
दान दया दीपाय नै, भांज्या भवि मन भर्म ।।

४ बत्तीसे बांधी भली, मर्यादा अभिराम ।
शिष्य शिष्यणी करणा सहू, एक गणपति नै नाम ।।

५ जिलो टलो नही बाधणो, गण मे अथवा बार ।
टल अवगुण न बोलणा, लिखत पेतालीसे सार ।।

६ लिखत पचासा में वली, गणथी निकल जाण ।
अंश अवगुण बोलण तणां, जावजीव पचखाण ।।

७ वलि टोला थी नीकली, एक निशा उपरंत ।
क्षेत्रां में रहिणो नही, लिखत गुणसठे मंत ।।

८ दोष देख्यां तुरत दाखणो, वहु दिन थी कहै धार ।
तेहिज दोष तणो धणी, वलि 'रास'[1] विषै विस्तार ।।

९ इत्यादिक बांधी भली, मर्यादा अभिराम ।
चरम चउमासे आविया, सिरियारी मे स्वाम ।।

१० कांइक असाता दस्त री, दिशां जाय पुर बार ।
वलि गोचरी शहर मे, श्रावण मास मझार ।।

११ पूनम रे दिन पूज जी, उठ्या गोचरी आप ।
भाद्रव करी आलोवणा, सखरी सीख समाप ।।

१२ चोथ भक्त सुदि पंचमी, स्वामी कियो सुखकार ।
पूज्य कियो छठ पारणो, उलटी थई तिवार ।।

१३ संलेखणा सखरी हिवे, सातम आठम दिन्न ।
आहार अल्प सो आचर्‌यो, तो लेइ इहविध तन्न ।।

१४ नवमी त्याग करां तरां, अर्ज खेतसी कीध ।
मन राखो सुविनीत नो, आहार अल्प सो लीध ।।

---

*लय : राज ग्रही नगरी भली...।

१. अविनीत रास (बड़ा रास) ।

१५ अर्ज अधिक दशमी दिने, वड शिष्य कीधी जाण ।
दश मोठ चालीस चावल आसरै, उपरंत किया पचखाण ।।
१६ उपवास कियो एकादशी, अमल आगारे ताय ।
वारस दिन बेलो कियो, इण विध तन नैं ताय ।।
१७ साहमली हाठ सू ऊठ नै, चलिया चलिया आय ।
पक्की हाठे पक्का मुनि, दियो पक्को संथारो ठाय ।।
१८ नमोत्थुणं सिद्ध अरिहंत नै, तीखे वच गुण ताम ।
वहु जन सुणतां पचखियो, संथारो भिक्षू स्वाम ।।
१९ चमत्कार पाया घणो, आवै वहुजन वृंद ।
जाणक मेलो मंडियो, वंदै धर आनंद ।।
२० तेरस दिन चढियो तदा, सवा पोहर उन्मान ।
आपेइ पाणी पियो, सेवै संत सुजाण ।।
२१ तन वेदन दीसै नही, वलि मन अधिक प्रसन्न ।
हिवे दोढ पोहर रे आसरै, दिन चढियो बोलै वचन्न ।।
२२ कहै साधु आवै अछै, सांहमा जावो सोय ।
साधवियां आवै वली, चरम वचन ए होय ।।
२३ केंतो कियो अटकल थकी, के कह्यो बुद्धि प्रमाण ।
अथवा अवधि ऊपनो, ते जाणै सर्व नाण ।।
२४ जन जाण्यो मन स्वामी तणो, मुनिवर माहि वसंत ।
इतरे एक मुहूर्त आसरै, तिसिया आया बे संत ।।
२५ प्रणमै पग स्वामी तणा, स्वाम दियो सिर हाथ ।
इतरे दोय मुहूर्त आसरै, आयो साधविया नों साथ ।।
२६ मुनि आव्या ते गुण करै, चरण नमावै शीष ।
जन कहै अवधि समुप्पनो, साचो विसवावीस ।।
२७ मुनि जाण्यो स्वामी भणी, सूता हुई वहु वार ।
कहो तो म्हे बेठा करा, जद कांयक भरियो हुंकार ।।
२८ बेठा कर स्वामी भणी, बेठा साधू लार ।
वर गुण-ग्रामज गांवता, देता शरणां च्यार ।।
२९ तेरे खंडी त्यारी करी, जाणक देवविमान ।
पोहर दोढ रे आसरै, रह्यो दिवस पाछलो जाण ।।
३० दरजी माडी सीव नैं, घाली पाग मे जाण ।
सुखे दीसंता स्वामजी, चटदे छोडचा प्राण ।।

३१ संवत अठारे साठे समे, सुदि भाद्रवे मंगलवार ।
सात पोहर रे आसरै, सिरियारी संथार ॥
३२ स्वाम भिक्षू सारिखा, भरत क्षेत्र रे माय ।
हुवा नैं होसी वली, हिवड़ा को न दिखाय ॥
३३ यशधारी था स्वामजी, गुण गावै नर नार ।
जन्म सुधारे यश लियो, नाम सदा जयकार ॥
३४ अनशन महोत्सव दीपतो, आज दिवस इक धार ।
सुख सपति मंगल सदा, आनंद हर्ष अपार ॥
३५ उगणीसै चौवीस में, सुदि भाद्रव तेरस सिद्धि ।
जोड़ करी महोत्सव दिने, जय जश हर्ष समृद्धि ॥

ढाल १३

*सुगण जन सांभलो रे ॥ध्रुपदं॥

१ सतरेसै तंयासिये, पंचांग लेखे पहिछाण ।
शुक्ल पक्ष आषाढ मे, भिक्षु जन्म कल्याण ॥
२ कंटालिये वल्लु घरे, दीपांदे सुखकार ।
सीह स्वप्ने सुत जन्मियो, भिक्षू नाम उदार ॥
३ ओसवंश वीसावली, सकलेचा सुविवेक ।
अनुक्रमे मोटा हुवा, परणी सुंदर एक ॥
४ उत्पत्तिया वुद्धि अति घणी, गच्छवास्यां पे जात ।
पाछे पोत्यावंध कनैं, पछै मिल्या रघुनाथ ॥
५ रमण सहित ब्रह्म आदर्यो, ज्यां लग चरण न आय ।
तिहां लगे करणी सही, एकांतर सुखदाय ॥
६ पड़्यो वियोग त्रिया तणो, वर्ष पचीस उन्मान ।
द्रव्य गुरु धार्‌या रुघनाथ जी, भावे चरण म जान ॥
७ समय वांच नैं जाणियो, असल नही आचार ।
पिण परम प्रीत द्रव्य गुरु थकी, तिण सूं नही हुवै न्यार ॥
८ इण अवसर द्रव्य गुरु सुण्या, समाचार तिण वार ।
भिक्षु नैं कहै इह विधे, जावो देश मेवाड ॥
९ राजनगर भाया तणैं, शंक पडी मन मांय ।
वंदणा छोडी छै तिणे, थे समझावो जाय ॥

*लय—करेलवा नी" " "

१० भिक्षु विहार कियो तदा, ठाणे पंच विमास।
अष्टादश पनरोत्तरे, राज नगर चउमास ॥
११ भाया कहै भिक्षू भणी, दोष तणी वहु थाप।
स्थानक 'थापिता'[1] आदि दे, प्रगट विचारो आप ॥
१२ द्रव्य गुरु नों वच राखवा, पगे लगाया आप।
इण अवसर भिक्षू भणी, चढियो जवरो 'ताप'[2] ॥
१३ जव भिक्षू मन जाणियो, आयु आवै इण वार।
तो दुर्गति मांहे पडूं, वचन उथाप्या सार ॥
१४ द्रव्य गुरु काम आवै कदि, मिटियां वेदन मोय।
शुद्ध मारग लेणो सही, परभव साहमो जोय ॥
१५ तुरत ताव जद ऊतरचो, भाया नै कहैवाय।
थे साचा झूठा अम्हे, श्रावक हर्ष्या ताय ॥
१६ हिवे चउमासो ऊतरचां, आया द्रव्य गुरु पाय।
सूत्र न्याय वताविया, पिण नही मानी वाय ॥
१७ दोय वर्ष के आसरै, वहु खप कीधी ताम।
कितलायक समझायवा, वलि द्रव्य गुरु नैं आम ॥
१८ द्रव्य गुरु तो मान्यो नही, भिक्षु आदि विचार।
तेरे संत थी नीकल्या, मुक्ति साहमी दृष्टि धार ॥
१९ अष्टादश सोलै समे, सुदि पूनम आषाढ।
भावे चारित्र आदरचो, गुण गिरवो दिल गाढ ॥
२० भारीमाल आदे करी, सत अज्जा सुविनीत।
श्रावक नैं फुन श्राविक, भिक्षु जगत 'वदीत'[3] ॥
२१ जीव घणा समझाविया, दान दया दीपाय।
साठे सिरियारी मझे, चरम चउमासे आय ॥
२२ खमतखामणा 'खंत'[4] सूं, स्वाम किया सुखदाय।
आलोवण आछी करी, 'निशल्य'[5] थया मुनिराय ॥
२३ कीधी अंत संलेखणा, भाद्रव सुदि सार।
वारस वेला नै विषे, स्वय मुख कियो संथार ॥
२४ सामली हाट सू ऊठ नै, चलिया चलिया आय।
पक्की हाट पक्का मुनि, दियो पक्को संथारो ठाय ॥

---

१. साधुओं के निमित्त स्थापित किये हुए।
२. बुखार।
३. विख्यात।
४. गौर।
५. अत्यत सरल।

२५ तेरस दिन मुख उच्चरै, संत अज्जा आवंत।
साहमा जावो इह विधे, चरम वचन पभणंत ॥
२६ केतो कह्यो अटकल थकी, के वुद्धि थी आख्यात।
के कोइ अवधिज ऊपनो, ते जाणै जगन्नाथ ॥
२७ एक मुहूर्त रे आसरै, साधु आया दोय।
लोक मांहोमांहि इक भणै, अवधि ऊपनो सोय।
२८ पद पंकज प्रणम्या थकां, मस्तक दीधो हाथ।
सावचेत स्वामी इसा, इचरज वाली वात ॥
२९ कर नी बे अंगुली करी, पूछी चक्षु नी सुख सात।
दोय मुहूर्त आसरै, आयो साधवियां रो साथ ॥
३० तेरे खंडी त्यारी करी, जाणक देव विमाण।
बाह्य सुख बैठा थका, चट दे छोड्या प्राण ॥
३१ साठे भाद्रव तेरसी, सुदि पक्ष मंगलवार।
सप्त पोहर रे आसरै, सखर स्वाम संथार ॥
३२ जशधारी था स्वामजी, जश फेल्यो संसार।
जन्म सुधारचो आपरो, भजन करो नर नार ॥
३३ उगणीसै पणवीस में, सुदि भाद्रव वारस सार।
गुण गाया भिक्षू तणा, जय जश हर्ष अपार ॥

दोहा

१ संवत सतरै तंयासिये, पंचांग लेखे पिछाण।
सुदि आषाढ कंटालिये, भिक्षु जनम्या भाण ॥

ढाल १४

२ *जनम्या भिक्षू भानु सा, जाति संकलेचा सार।
अनुक्रमे मोटा हुवा, परण्या इक नार ॥

दोहा

३ एक नार परण्यां पछै, अठदश आठे सार।
द्रव्य गुरु रुघनाथ पे, द्रव्ये दीक्षा धार ॥

*लय—प्रभवो मन मे चिंतवै··।

यतनी

४ द्रव्य चरण धरचां पछै जेह, वर्ष पनरे समकित सुलेह।
ओलखी शुद्धश्रद्धा आचार, मन पाम्यां हर्ष अपार ।।

दोहा

५ द्रव्य गुरु नैं समझायवा, किया अनेक उपाय।
पिण ते तो समज्या नही, ताम दिया छिटकाय ।।
६ सतरे संयम आदरचो, तेरे जणा थी तिवार।
संवत अठारे साठा लगे, विचरचा गुणधार ।।

दोहा

७ वर समकित वर देशव्रत, चरण रत्न फुन चंग।
वहुजन भणी पमाविया, आणी अधिक उमंग ।।

यतनी

८ वलि वाधी वहु मर्याद, शिष्य शिष्यणी परम समाध।
करणा आचार्य रे नाम, दीक्षा देइ सूपणा ताम ।।
९ गण वाहिर कोइ निकलै गण अवर्णवाद।
अंशमात्र नही वोलणा, करणो नही विषवाद ।।
१० †टालोकर जे गण तणा, नही गिणवा तीर्थ माय।
वंदै पूजै तसु तिके, आज्ञा वार कहाय ।।

दोहा

११ संत सती इक ग्राम मे, एक रात्रि उपरंत।
रहिवूं नही आज्ञा विना, ए मर्याद सुतंत ।।

यतनी

१२ इत्यादिक वहू मर्याद, स्वामी वांधी धरअहलाद।
वर्ष साठ तांई सुविचार, स्वामी कियो घणो उपकार।।

---

*लय : प्रभवो मन में चिंतवै ·· ·····।

†लय : राजग्रही नगरी ·····।

दोहा

१३ चरम चउमासो स्वामजी, सिरियारी में सार।
भारीमाल मुनि आदि दे, सप्त ऋषि सुखकार।।
१४ *कांयक कारण दस्त नो, ऊपजियो तनु मांय।
पिण करै शहर में गोचरी, दिशा गाम वारे जाय।।

यतनी

१५ पर्यू पण में त्रिहुं टक वखाण, वांचै भारीमाल गुणखान।
आवै नर नारयां ना वृंद, तिके सुणसुणनै पांमै आनंद।।

दोहा

१६ आलोवण आछी करी, खमतखामणा सार।
स्वमत में अन्य मत तणा, जुवा जुवा नाम उच्चार।।
१७ †संवत्सरी नो स्वामजी, आप कियो उपवास।
पज्य कियो छठ पारणो, वमन हुवो तव तास।।

यतनी

१८ सातम आठम नवमी ताय, लियो अल्पआहार मुनिराय।
दशम रे दिन 'चोखा'[1] चालीस, आसरै दश मोठ जगीस।।

दोहा

१९ अमल आगार एकादशी, इम वारस वेलो ठाय।
इम तन नै तोलै मुनि, अनशन नी मन मांय।।
२० *अर्ज करै ऋषिरायजी, पुद्गल पडिया हीण।
सांभल सिंह जिम स्वामजी, उठ्या आप अदीन।।

यतनी

२१ उठ्या सामली हाटसूं आप, पक्की हाट आया स्थिर स्थाप।
शिष्यां शयन कियो सुविचार, तिहां आप सूता गुण धार।।

---

*लय : प्रभवो मन में चिंतवै। †लय : राजग्रही नगरी ......।
१. चावल।

दोहा

२२ -कहै वोलावो भारीमाल नैं, वलि खेतसीजी मुनि आदि ।
सुणतां तत्क्षण आविया, वहुजन वृंद समाधि ॥
२३ साध श्रावक नैं श्राविका, सांभलता सुविचार ।
नमोत्थुणं गुण स्वामजी, कियो ऊच्चै स्वर संथार ॥
२४ *संथारो सुण स्वाम नो, आवै नर नारचा ना वृंद ।
वाजार मांहि अमावता, आणी अधिक आनंद ॥

यतनी

२५ हिवे तेरस रे दिन स्वाम, पोहर दिवस 'जाजो'[1] चढचो आम ।
पीधो आपेइ उदक उदार, संत सेवा माहि सुखकार ॥

दोहा

२६ दोढ पोहर रे आसरै, दिवस चढचो तिणवार ।
मुनि फुन जन सुणतां थका, वोलै कवण प्रकार ॥

ढाल अंतर

२७ †आवै संत सुजाण, मुनि साहमा जावो ।
वलि अज्जा आवत, वदै वच समभावो ॥
समभावोजी चित्त हुलसावो, वर स्वाम भिक्षु ना गुण गावो ।
एतो धिन-धिन भिक्षु स्वाम, जप्यां संपति पावो ॥
२८ नरनारी इम वदै, स्वाम चित मुनि माहि ।
मुहूर्त आसरे गयां, संत वे सुखदाई ॥
सुखदाई जी आया त्याही, प्रणमै भिक्षु पद हर्षाई ।
ए तो धिन धिन भिक्षु स्वाम, परम संपति पाई ॥
२९ पूछै मुनि नी स्वाम, सेन करी सुखसाता ।
मस्तक दीधो हाथ, ताम मुनि हर्षाता ॥
हर्षाताजी गुण रंग राता, वर स्वाम तणा अति गुण गाता ।
एतो धिन धिन भिक्षु स्वाम, अधिक जन हुलसाता ॥

---

*लय : राज ग्रही नगरी ... ... ।
†लय : धिन धिन भिक्षु स्वाम ... ।

१. अधिक ।

३० बे मुहूर्त आसरै गया, तीन अज्जा आई।
प्रणमै भिक्षू पाय, हिये अति हुलसाई॥
हुलसाई जी इचरज पाई, जन वदै अवधि ऊपनो आई।
ए तो धिनधिन भिक्षु स्वाम, कीर्ति जग में छाई॥
३१ *के तो अटकल सू कह्यो, के कह्यो बुद्धि प्रमाण।
के कोई अवधिज ऊपनो, ते जाणै सर्व नाण॥
३२ मुनि जाण्यो स्वामी भणी, सूतां हुई वहु वार।
पूछ्यो म्हे वेठां करा, भरियो कांय हुंकार॥
३३ तव वेठा कर स्वाम नैं, पूठै वेठा संत।
सुखे समाधे दीसता, वहु वेदन न दीसंत॥
३४ दरजी मडी सीव नै, तेरे खंडी त्यार।
कांधी तत्क्षण स्वामजी, पहुंता परलोक मझार॥
३५ रह्यो दोढ पोहर दिन आसरै, तव अनशन सीझ्यो सार।
सात पोहर नो आवियो, संथारो सुखकार॥
३६ साधु तन वोसिराय नै, अलगा वेठा जाय।
विरह पड्यो स्वामीनाथ रो, सम भाव रह्या सुख थाय॥
३७ 'दाग दियो'[1] मुनि तन भणी, अति उत्सव अधिकार।
रोकड़ पांच सै आसरै, नही धर्म पुन्य लिगार॥
३८ स्वाम भिक्षू सारिखा, भरत क्षेत्र रे मांय।
हुआ नै होसी वले, आज न को देखाय॥
३९ जश-कर्मी था जीवडा, जश गावै नर नार।
साठे भाद्रव सुदि तेरसो, कर गया खेवो पार॥
४० उगणीसै षट वीस मे, सुदि भाद्रव वारस जाण।
जोडी शहर विदासरे, जय जश हर्ष कल्याण॥

ढाल १५

†संवत सतरैसै तयासिये रे, जन्म कंटाल्यो जाण रे।
मुनींद्र था सू मन लागो॥ ध्रुपदं॥
१ आठे द्रव्य दीक्षा ग्रही रे, दी० पनरे कीध पिछाण रे मु०।
मन लागो रे मुनि मांहरो रे, मु० याद करू दिन रेण रे मु०॥

*लय : राज ग्रही नगरी ....।
†लय : भमण कहै कुवर भणी।

१. दाह संस्कार किया।

२ अष्टादश सतरोत्तरे, केलवा शहर मझार।
भावे चारित्र आदरयो, जिन आज्ञा शिरधार॥

३ व्रत अव्रत ओलखाविया, सावद्य निर्वद्य सोध।
दान दया दीपाविया, जीव घणा प्रतिवोध॥

४ शिष्य शिष्यणी करणा सही, इक गणपति नै नाम।
दीक्षा देइ आण सूपणो, इत्यादिक अभिराम॥

५ विविध मर्यादा वांधी करी, स्थाप्या तीरथ च्यार।
चरम चउमासे आविया, सिरियारी शहर मझार॥

६ कायक कारण ऊपनो, दस्त तणो तिण वार।
पिण गोचरी उठै शहर में, दिशा जाय पुर बार॥

७ श्रावण सुदि पूनम दिने, ऊठया गोचरी आप।
सर्व पर्यूषण भाद्रवे, शीख दियै स्थिर स्थाप॥

८ आलोवण आछी करी, खमत खामणा सोय।
जुवा जुवा नाम लेई करी, करता मुनि अवलोय॥

९ पंचम रे दिन परवरो, संवत्सरी नों उपवास।
पूज कियो छठ पारणो, उलटो पडियो तास॥

१० सप्तम अष्टम नवमी दिने, लीधो अल्प सो आहार।
दशम चालीश चोखा आसरै, आसरै दश मोठ विचार॥

११ उपवास कियो ग्यारस दिने, अमल तणे आगार।
वारस इम बेलो कियो, इम तन तोली तिवार॥

१२ स्हामली हाट सू ऊठनै, चलिया चलिया आय।
पक्की हाट पक्का मुनिवर, देवै पक्को संथारो ठाय॥

१३ नमुत्थुणं गुणियो मुनी, उच्चै स्वर अभिराम।
मुनि जन वृंद सुणतां थका, संथारो पचख्यो भिक्षूस्वाम॥

१४ वारस निशि भारीमाल नै, स्वाम वदै वर वाण।
नर नारया रा वृंद मे, दीजै वारु वखाण॥

१५ तेरस दिन वहु आवता, नर नारया रा थाट।
वंदै करै खमत खामणा, होय रह्यो गहगाट॥

१६ दिन चढयो पोहर रे आसरै, पूज्य पोतेहिज पेख।
उदक पीधो निज हाथ सू, सावचेत इसा सुविसेख॥

१७ दिन चढयो दोढ पोहर आसरै, चरम वचन चमत्कार।
स्हामा जावो संत आवै अछै, वले आवै साधवियांवार॥

१८ लोकां जाण्यो स्वामी तणो, जीव वस्यो साधा में सोग।
इतले मुहूर्त एक आसरै, तिरिया आया मुनि ठाय ।।

१९ वेणीराम जी खुसाल जी, प्रणमैं भिक्षु ना पाय।
माथे हाथ दीधो मुनि, साता पूछी कर सूं साय ।।

२० गुण गावै मुख सूं घणां, साधु आंसा सूंलीन।
इतले वे मुहूर्त आसरै, आवी साधवियां तीन ।।

२१ चमत्कार पाया घणो, बहु लोक वदै इम वाय।
अवधि स्वामीजी नैं ऊपनो रे, दीधी आंगुल बताय ।।

२२ के तो कह्यो अटकल थकी, के कह्यो वृद्धि सूं वान।
के कोइ अवधि समुप्पनो, ते जाणै जगन्नाथ ।।

२३ तेरे खंडी त्यारी करी, जाणक देव विमाण।
स्वाम साधां रे आधार सूं, बैठा अधिक सुजाण ।।

२४ दरजी माडी सीवी करी, सूई घाली पाग में जाण।
इतरे स्वाम बैठा थकां, नट दे छोड्या प्राण ।।

२५ संवत अठारै साठे समे, सुदि भाद्रव तेरस मंगलवार।
सात पोहर रे आसरै, आयो प्रवर संथार ।।

२६ स्वाम भिक्षु सारिखा, इण भरत क्षेत्र रे मांय।
हूवा नैं होसी वली, पिण आज तो को न दिखाय।

२७ सोध्या तो पावै नहीं, भिक्षू सरीखा साथ।
करडो काम पडेला चरचा तणो, जब आवेला थांनै याद ।।

२८ सिरियारी नैं स्वामजी, चावी करी ठाम ठाम।
जन्म सुधारे जश लियो, ज्यांरा लीजै नित्य प्रति नाम ।।

२९ उगणीसै अठावीस मे, सुदि भाद्रव बारस सार।
जयपुर शहरे युक्ति सूं, जोडी जय जशकरण उदार ।।

ढाल १६

*स्वाम सुखकारी जी, परम उपकारी जी।
होजी ए तो भिक्षु गुण भंडार, जबर जश धारी जी ।।
शासण सिणगारी जी ।। ध्रुपदं ।।

---

*लय : पायल वाली पदमणी ए ... ।

१ सतरै सै तंयासिये काइ, आपाढ सुद पख मूल।
भिक्षु जनम्यां कटालिये काइ, सीह स्वप्न अनुकूल ॥
२ रमण एक परण्या सही कांइ, आठे संवत अठार।
द्रव्य दीक्षा वगड़ी मझे काइ, लीधी छै तिण वार ॥
३ पनरे वर्ष प्रतिवोधिया कांइ, सतरे पंचाग लेख।
आषाड सुद पुनम दिने काइ, भाय चरण सपेख ॥
४ सावद्य निर्वद्य सोधिया, जिन आज्ञा सिर धार।
दान दया ओलखाय नै, तारचा वहु नर नार ॥
५ सवत अठारे वत्तीस में, पैतालीसे पेख।
पच्चासे वावने गुणसठे, वाधी मर्याद विसेख ॥
६ शिष्य शिष्यणी करणा सही, इक गणपति के नाम।
दीक्षा दे आण सूपणो, कने न राखणो ताम ॥
७ इक वे आदिज नीकलै, कर्म योग गण वार।
तसु तीर्थ मे गणवू नही, निदक जन्म विगाड ॥
८ वादै पूजै तेहनै, ते पिण आज्ञा वार।
इत्यादिक मर्याद ही, वाधी अधिक उदार ॥
९ चरम चउमासो स्वाम जी, सिरियारी में कीध।
पंचम संवत्सरी तणो, चोथ भक्त सुप्रसीध ॥
१० पूज्य कियो छठ पारणो, वमन हुवो तेह वार।
सप्तम अठम नवमी दिने, लियो अल्प सो आहार ॥
११ दशम रे दिन आचरचा, आसरै मोठ दश जाण।
चालीस चावल रे आसरै, तुरत किया पचखाण ॥
१२ उपवास कियो एकादशी, अमल तणे आगार।
इम वारस बेलो, वेला मे संथार ॥
१३ सामली हाट सू ऊठ नै, चलिया चलिया आय।
पक्की हाट पक्का मुनि, दियो पक्को संथारो ठाय ॥
१४ तेरस रे दिन स्वामजी, आप ही पीधो पाण।
चढचो दोढ पोहर दिन आसरे, वोल्या अमृत वाण ॥
१५ साहमा जावो आवै मुनी, वले साधविया आय।
साध श्रावक सुणता थकां, वोल्या एहवी वाय ॥
१६ के कहचो अटकल थकी, के कहचो वुद्धि प्रमाण।
के अवधिज्ञान ऊपनो, ते जाणै सर्व नाण ॥

१७ एक मुहूर्त रे आसरै, आया साधु दोय।
वेणीरामजी कुसालजी, पद प्रणमै अवलोय॥
१८ स्वाम भिक्ष तिण अवसरे, मस्तक दीधो हाथ।
अंगुली थी सानी करी, पूछी चक्षु सुखसात॥
१९ गुण गावै मुनि आया तिके, सखरी रीत सुचीन।
इतरे दोय मुहूर्त रे आसरै, आई साधवियां तीन॥
२० लुल लुल नै लटका करै, सत सती सुजगीश।
जन कहै अवधिज ऊपनो, साचो विस्वावीस॥
२१ मुनि जाण्यो स्वामी भणी, सूतां हुई वहु वार।
कहै बेठा करा आपनैं जव, भरियो कांय हुंकार॥
२२ तव बेठा कीधा मुनि, ध्यान आसण श्रीकार।
जाणक जिनजी विराजिया, नहिं जाणी असाता जिवार॥
२३ तेरे खंडी त्यारी करी, जाणकदेव विमाण।
वाहच पणे सुखे दीसता, चट दे छोडचा प्राण॥
२४ रहचो दोढ पोहर दिन आसरै, सुदि भाद्रव तेरस सार।
'भौमवार'[1] साठे वर्ष, सप्त पोहर संथार॥
२५ सोध्यां तो लाधै नही, भिक्षु सरीखा साध।
काम पडचां झीणी चरचा तणो, जव आवेला याद॥
२६ स्वामी भिक्षू सारिखा, भरतक्षेत्र रे मांय।
हुवा न होसी वलि, पिण आज तो को न दिखाय॥
२७ भारीमाल पट स्थापिया, पहिलाइज सुख स्हाज॥
वर्ष वत्तीसे आपियो, वारु पद युवराज॥
२८ उगणीसै सेंतीस में, सुदि भाद्रव तेरस दिन्न।
ए जोड करी वीदासरे, जय जश गणि सुजन्न॥

---

१. मगलवार।

३

संतगुण माला

ढाल १

दोहा

१ गुणमाला साधा तणी, ते सांभलजो नर नार।
भाव सहित आराधिए, ज्यू पांमो भव पार॥
२ भारमलजी स्वामी रा टोला मझे, साध मोटा मुनिराय।
ज्यांरा जूआ जूआ गुण वर्णवू, ते सुणज्यो चित ल्याय॥

*सुणजो गुण माला साधा तणी रे लाल, ज्यू पामो भव पार रे।भविकजन॥
कर्म कटै संकट मिटै रे, त्यारो नाम लिया निस्तार रे। भविकजन॥
॥ ध्रुपदं॥

३ भारमलजी[1] स्वामी सोभता रे, करै घणो उपगार रे।
जिण मार्ग दीपावता रे लाल, त्यानै वादो वारूवार रे॥
४ सेन्यापती सेन्या माहे सोभतो, तीन खंड में वासुदेव जाण।
चक्रव्रत छ ,खंड माहे सोभतो, ज्यू साधा माहे वखाण॥
५ जिम इंद्र सोभै देवता मझे, जिम साधा माहे सोभै स्वाम।
एहवा उत्तम पुरुप भरत क्षेत्र मे, त्यारो लीजै नित्य प्रति नाम॥
६ जिम सूर्य उगे थकी, भरत क्षेत्र मे करै उद्योत।
तु शव्द थकी जाणज्यो, करै वीजा क्षेत्र माहे जोत॥
७ इम सूर्य नी ओपमा, स्वामी भारमलजी नै जाण।
सील आचार वुधे करी, जीवादिक नव तत्व वखाण॥
८ काति सुद पूनम दिने, सोभै चंद्रमा ताम।
जिम साधा माहे दीपता, भारीमालजी स्वाम॥
९ पाच महाव्रत पालता, पालै पाच आचार।
टालै च्यार कषाय नै, पालै सील तणी नववार॥
१० खेतसीजी[2] स्वामी अति दीपता, ते तो गुण रत्नां री खान।
भरतक्षेत्र मे रूडो रीत सू, चिंतामणि रत्न समान॥
११ ते च्यार तीर्थ नै सीखावता, वोल थोकड़ा ग्यांन विचार।
आप तरै ओरा नै समजावता, त्यानै वाद्यां जै जै कार॥

---

*लय : धीज करै सीता सती रे · · · ·।
(१) इस ढ़ाल मे २० सन्तो का गुण-वर्णन है। उनके नाम के ऊपर क्रमाक लगाया हुआ है।

१२ ते सतावीस गुणां करी दीपता, पाखंडिया रा मरदणहार।
च्यार तीर्थ नै सीखावता, चरचावादी तुरत तीयार॥

१३ विनयवत घणा सतगुरु तणा, लज्जा नें दयावंत।
पंच इंद्रयां नै वस करी, जगवंत वचन महंत॥

१४ भव जीवां नै वतावता, जीवादिक नव तत्व सार।
पाखंडिया नै हठावता, दीपावै जिण धर्म श्रीकार॥

१५ हेमजी[1] स्वामी रूडी प्रीत सू, ते सतगुरु ना गुवनीत।
घणा जीवा नै समजावता, ने चार्नै गाथा री रीत॥

१६ ते वखाण वाणी देवै आछी तरे, समजावै नर नार।
जिन मार्ग नै दीपावता, त्यांनें वांद्या हुवै खेवो पार॥

१७ ते गांमा नगरां विचरता, करै घणो उपगार।
विनो नरमाइ करै त्या कनै, सूत्र री रेस वार॥

१८ कितरायक नै दिक्षा दीयै, देवै श्रावक ना व्रत वार।
किणनेइ सुलभ-बोधी करै, ऐसा हेम स्वामी अणगार॥

१९ रायचंदजी[1] स्वामी नै जांणजो, ते वखाण वाणी देवै श्रीकार।
भव जीवा नै समजावता, त्यानै वांद्या खेवो पार॥

२० ते दया पाले छ काय री, वाल ब्रह्मचारी सुध मांन।
विनयवंत घणां सतगुरु तणा, एहवा रायचंदजी स्वामी बुधवान॥

२१ दशविध जती धर्म सहीत छै, सील पालै नव वाड।
पांच महाव्रत रूपियो कोट 'सैंठो'[1] कियो, पछै करै कर्मां सू राड॥

२२ जीवोजी[1] स्वामी मुनि मोटका, त्यांमें विनय तणो गुण जांण।
ते ब्रह्मचारी छै थेट रा, त्यानै वांदो चतुर सुजांण॥

२३ जोधराजजी[1] स्वामी नै पिछांणजो, त्यांमें तपस्या तणो गुण जाण।
जिन मार्ग में दीपता, एहवा जोधोजी स्वामी गुण खाण॥

२४ भगजी[1] स्वामी अति सोभता, त्यामें लिखणा रो गुण होय।
साध साध्विया ने लिख दीयै, त्यांनै वांदो सहु कोय॥

२५ जवांनजी[1] स्वामी 'जोरावर'[2] घणा, वांचण नें घणा सावधांन।
पाखंडिया नै हठावता, चतुर अवसर ना जांण॥

२६ संत गुलावजी[1] गण मझै, पालै गुरु नी आण।
हेतु दृष्टात देवै भला, वांचै सरस वखाण॥

---

१. मजबूत। २. जबरदस्त।

२७ मोजीरामजी[१०] स्वामी मुनीश्वरु, ते तो संजम पालै चित लाय।
गांमां नगरां विचरै गूंजता, टालै च्यार कषाय ॥
२८ पीथोजी[११] स्वामी सोभता, त्यारा तपस्या ऊपर परिणांम।
तपस्या करै अति आकरी, त्यांनै वांदो चतुर सुजांण ॥
२९ वगतोजी[१२] स्वामी विनयवंत छै, त्यारा तपस्या ऊपर परिणाम।
त्यांरी तपस्या रो लेखो सुणता थका, धिन-धिन कहै वगतोजी स्वाम ॥
३० संतोजी[१३] स्वामी सोभता, त्यांरी रूडी छै निर्मल रीत।
आहार पांणी री गवेपणा आछी तरै, पकी छै ज्यांरी प्रतीत ॥
३१ ईसरजी[१४] स्वामी घणा ओपता, ते संजम पालै रूडी रीत।
जिन मार्ग नै जमावता, ते सतगुरु ना सुवनीत ॥
३२ गुमानजी[१५] स्वामी सीखावै भाया भणी, चोखो पालै संजम सार।
वले व्यावच करै साधां तणी, त्यांरोइ खेवो पार ॥
३३ स्वामी सरूपचंदजी[१६] सोभता, त्यां संजम लीयो जैपुर मांय।
ते पंडत हुआ छै परवडा, त्या नै वांदो पाचू अंग नमाय ॥
३४ भीमजी[१७] स्वामी भात भात री, चरचा मे घणा सावधान।
वले दांन देवै साधा भणी, त्यारै लघु भाई जीतमल[१८] जाण ॥
३५ रामोजी[१९] साधु रूडा रंग सूं, आचार पालै रूडी रीत।
ते व्यावच करै विध विध घणी, सतगुरू ना सुवनीत ॥
३६ विरधीचंदजी[२०,१] वखाणियै, ते चोखो पालै संजम भार।
विनो करै सुध साधा तणो, त्यानै वादो वारूं वार ॥
३७ आ गुणमाला गुणवंत नी, जैणा सू गुणज्यो नर नार।
उघाडै मूढै गुणजो मती, जपता जै जै कार ॥
३८ समत अठारै एकोतरे, फागुण विद तेरस वुधवार।
आ गुणमाला साधा तणी, जोड कीधी कटाल्या मझार ॥

ढाल २

पंडित-मरण (१)

दोहा

१ सासण नायक समरियै, गणधर गोतम स्वाम।
माथे हाथ देइ करी, सारचा घणा रा काम ॥

१. मुनि वर्धमानजी (विरधोजी) (६७)।

२ भीक्खू भारीमाल री वार में, संजम आराध्यो विस्तार।
'पच्चीस साध'[1] पिछांण ज्यो, आराजियां अणगार॥

३ केइ कीया संथारा सोभता, सहु पंडित मरण पिछाण।
प्रथम साधां नैं वरणवूं, ते सुणज्यो चतुर सुजाण॥

*नित हूंतो करूं साधुजी नैं वंदना ॥ध्रुपद॥

४ फतेचंदजी[1] वरलु सैहर में, संथारो कियो उगणीस रो।
थिरपालजी[2] खेरवा सैहर में, संथारो वरस वतीस रो।

५ 'हरनाथजी'[3] स्वामी बगड़ी मझै, टोकरजी[4] ढुंढाड़ देशो[2]।
नगजी[5] पहुंता पुर सैहर में, नेमजी[6] नैणवे कहेसो॥

६ वृद्धमानजी[7] लू रा कारण थकी, मारग मे कियो संथारो।
संवत अठारै पचावनै, ढुंढार देश मझारो॥

७ जोगीदासजी[8] पीसांगण सैहर में, गुणसठे धर्म रा रागो।
बालपणे चलता रह्या, कर च्यारूं आहार ना त्यागो॥

८ भिक्षु[9] ऋख सरियारी सैहर में, साठे वरस संथारो।
आयो मात पोहर रे आसरै, जिण सासण रा सिणगारो॥

९ उदैरामजी[10] आंबिल तप आदर्यो, आठसो इगतालीस आंबिल जाणी।
साठा रे वर्ष चलता रह्या, चेलावास में आणी॥

१० अखैरामजी[11] स्वामी वरस इगसठे, चल्या कटाल्ये चोला मांह्यो।
सुखरामजी[12] बासठे पीसांगण मझै, अणसण पचीस दिनां रो पायो॥

११ जीवणजी[13] जेतारण मे जुगत सूं, गुणचालीस दिन अणसण धारी।
संवत अठारै नैं बासठे, भारीमाल रो प्रथम शिष्य भारी॥

१२ सुखजी[14] स्वामी संथारो देवगढ मझे, दस दिन अणसण दीपायो।
संवत अठारै ने चोसठे, देशोदेश मिलायो॥

---

*लय : राम सोहि लेवै सीता" .....

१. इस गीतिका मे पंडित मरण प्राप्त करने वाले २५ साधुओं के नाम हैं पर एक मुनि शिवजी (१६) का और होना चाहिए क्योंकि वे आचार्य भिक्षु के समय दिवंगत हो गये थे। आगे की ढाल ४ गा. ८ में शिवजी का नामोल्लेख होने से लगता है कि यहां उनका नाम छूट गया है।

२. यहां हरनाथ जी के स्थान पर टोकरजी और टोकरजी के स्थान पर हरनाथजी होना चाहिए क्योंकि हरनाथजी का स्वर्गवास ढुंढाड़ देश में और टोकरजी का बगड़ी में हुआ, ऐसा ख्यात आदि में उल्लेख है। जयाचार्य ने इस गीतिका में दिवंगत साधुओं की तालिका दिवंगत वर्ष के क्रम से दी है। इससे भी उक्त कथन की पुष्टि होती है क्योंकि मुनि टोकरजी का स्वर्गवास संवत् १८३८ और हरनाथजी का सं० १८४६-४८ के बीच का है।

(१) इस ढाल मे २५ सन्तों का गुण-वर्णन है। उनके नाम के आगे क्रमांक लगाया गया है।

१३ डूगरसी[15] 'पैंसठे'[1] अणसण कियो, संथारो दश दिन रो सीधो।
आमेट सैहर मे जाणजो, वालपणे प्रसीधो॥

१४ भोपजी[16] तपसी भारी हुवो, पाली सैहर में संथारो।
संवत अठारै छासठे, सामजी[17] चोथ भगत मझारो॥

१५ ताराचंदजी[18] झालरापाटण मझै, अणसण गुणचालीस दिन रो आयो।
राम[19] संथारो इंदरगढ़ मे कियो, 'गुणंतरे दोनू मुनिरायो'[2]॥

१६ वेणीरामजी[20] स्वामी चाकसु मझे, पहुता परभव जांणी।
अणचिंतव्या चलता रह्या, सितरे वरष पिछाणी॥

१७ नांनजी[21] स्वामी वर्ष इकोतरे, सिरियारी चल्या चोला मांह्यो।
धर्म ध्यान मांहे जे चलै, ते निश्चेइ सुध गति जायो॥

१८ वगतरामजी[22] धाकड़ी गांम में, एक सौ एक दिन तप ताजो।
वले संथारो दिन इकवीस नो, तीमतरे चढायो छाजो॥

१९ जोधजी[23] तपसी जोरावर करी, अणसण अड़तीस दिन नो पूरो।
पिचंतरे वर्ष गाम कोचले, हुवो साचेलो सूरो॥

२० लघु पीथल[24] नगर उजीण मे, अणसण पनरै दिन नो पायो।
संवत अठारै अठंतरे, जीत रो डंको वजायो॥

२१ भारीमाल[25] मोटा मुनि, अणसण राजनगर माहे नीको।
संवत अठारै अठतरे, जिण मारग जग टीको॥

२२ ए गुण गाया 'गिरवा'[3] तणा, सैहर पीपाड़ मझारो।
संवत अठारै गुण्यासीये, भाद्रव विद एकम ने शनिवारो॥

ढाल ३

पंडित मरण (२)

दोहा

१ आरज्यां आछी तरै, संथारो करि सार।
पिंडत मरण करी भलो, उतर गई भव पार॥

---

१. यहा १८६८ होना चाहिए। (ख्यात)

२. दोनों संतों का स्वर्गवास सं० १८७० मे हुआ। मुनि ताराचंदजी (४२) का तो 'वेणीराम-चोढालिया' से उक्त संवत् प्रमाणित होता है और मुनि रामजी का ख्यात आदि मे स्पष्ट उल्लेख है।

३. गुणीजन।

*समरो मन हरखे मोटी सती ॥ध्रुपदं॥

२ कुसांलाजी[1] मटूजी[2] सुजाणाजी[3] साची, देउजी[4] पिंडत मरणं राची।
ए च्यारूं आरज्या हुई चतुरमती ॥

३ गुमानाजी[5] कसुवाजी[6] जीउजी[7] जांणो, तीनूं संथारो करी छोड़्या प्राणो।
आ पाम्या हुसी गुरु अमर पती।

४ मैणांजी[8] संथारो खेरवे कीधो, साठा रे वर्ष सुजश लीधो।
भिक्षु गुरू पाया मतिवंती ॥

५ रंगूजी[9] संजम रंग राच रही, सदाजी[10] फूलांजी[11] अमरांजी[12] कही।
संथारो कर पूरी मन रवंती ॥

६ हीरांजी[13] सथारो चेलावास कीधो, भारीमाल पेंना कारज सीधो।
सतरै दिन आगूंन पोंहती ॥

७ 'इकतालीसदिन'[1] रो संथारो तेजूजी[14] नैं आयो, नगाजी[15] संथारो देवगढ़ ठायो।
वंधव साज दीयो कीधी भगती ॥

८ पंनाजी[16] संथारो गुमांनजी[17] भारी, दोय मारा किया पाणी आगारी।
राजनगर संथारो कियो गुणवंती।

९ खेमांजी[18] सथारो कियो खंत करी, रूपाजी[19] संथारो कर पूरी रली।
खेतसीजी स्वामी री लघु 'वेन'[2] हूंती।

१० सरूपाजी[20] संथारो कंटाल्ये कीधो, वनांजी[21] रो कुसल पूरे सीधो।
उदांजी[22] संथारो आमेट पहुंती ॥

११ हस्तूजी री भगनी किस्तूराजी[23] कही, नगर उजेण संथारो ठई।
कारज सुधार्‌या भल कुलवंती ॥

१२ कुसालांजी[24] नें संथारो आउवे आयो, घणो साज दीयो 'सुत नें भायो'।
'खेतसी स्वामी री वड़ी बेन हूंती'[4] ॥

१३ नवराजी[25] संथारो खेजरले कीधो, कुसालांजी[26] रो माधोपुर सीधो।
पाली में संजम लियो कर खंती ॥

---

*लय : पायो मनुष्य जमारो ......

१. शासन विलास, ढा० २ गा० १८ मे ४२ दिन के अनशन का उल्लेख है।

२. वहिन।

३. साध्वी कुसालाजी के पुत्र मुनि-रायचंदजी (ऋषिराय) एवं भाई-मुनि खेतसीजी (२२)।

४. साध्वी कुसालाजी मुनि खेतसीजी की छोटी वहिन थी, ऐसा सतजुगी चरित ढा-१ गा० ६ मे उल्लेख है।

(१) इस ढाल मे ३८ साध्वियो का गुण-वर्णन है। उनके नाम के आगे क्रमांक लगाया गया है।

१४ जसोदांजी[27] डाहीजी[28] दोनू संथारो, नोरांजी[29] पीसांगण उतरी पारो।
आसूजी[30] संथारो 'लावे' दीपंती ॥
१५ कुसालांजी[31] कुनणांजी[32] संथारो सूरी, दोलांजी[33] वालांजी[34] संजम पूरी।
उमेदांजी[35] संथारो कियो सतवंती ॥
१६ खुसालांजी[36] फत्तूजी[37] वोरावड़ वाली, संजम ले तप कर देह गाली।
दोन्यू संथारो कर सुर गति पहुती ॥
१७ गीगाजी[38] रो चेलावास संथारो, भिक्षु भारीमाल स्वामीजी री वारो।
ए सरव आरज्जिया हुई अड़ती ॥
१८ संमत अठारै गुण्यास्ये लीजै, भाद्रव सुद सातम सनी कहीजै।
सैहर पीपाड जोड करी जुगती ॥

ढाल ४

दोहा

१ पंचम आरे प्रगटचा, भिक्षु भारीमाल ऋषराय।
ज्यांरा वरतारा मझै, हुवा संत घणा सुखदाय ॥
२ ज्या संजम पाल्यो निर्मलो, पहुंता परलोक मझार।
ज्यां जिन मार्ग उजवालियो, ज्या रो जाप जपो नरनार ॥

३ *जिन मारग में पिता-पुत्र नी जोड कै, स्वामी थिरपालजी[1] फतेचद[2] भलाजी।
संथारा कर पूरचा मन ना कोड कै, इकतीसा वत्तीसा वर्स में जी ॥
४ पूज भीखनजी[3] सासण ना सिणगार, धर्म-आचार्य मोटका।
पर भव पहुंता साठे कर संथार, जीव घणा समजाय नै ॥
५ जिन मार्ग में सुख दायक सुविनीत, स्वामी हरनाथजी[4] हुवा।
भिक्षू सेती पूरण पाली प्रीत, तन मन सू सेवा करी ॥
६ टोकरजी[5] स्वामी तीखा घणा तमाम, भिक्षु आप परसंसिया।
संजम पाली सारचा आतम काम, त्यांरो भजन करो भवियण सदा ॥
७ जिन मार्ग में पूज भीखनजी रै पाट, भारीमाल[6] भारी घणा।
तप जप कर नैं संच्या पुन्य रा ठाट, गुण याद आयां मन हूलसे ॥
८ अखैरामजी[7] छतीस तेला कीध, चोला में चलता रह्या।
अखै दीवाली जीत नगारो दीध, वहु वर्सा संजम पाल नैं ॥

---

*लय—जिन मारग में धुर सु आदि ....
(१) इस ढाल मे ४० मुनियो का गुण-वर्णन है। उनके नाम के आगे क्रमांक लगाया गया है।

९ देव मूरत सम संत वड़ा सुखराम[8], ज्यारी सुमति गुप्ति निर्मल घणी ।
संथारो कर सारचा आतम काम, भजन किया भय दुख मिटै ॥

१० जिन मार्ग में शिवजी[9] स्वामी श्रीकार, भिक्षु गुरु भल पामिया ।
परभव पोहता छेहड़े कर संथार, संजम तप अराध ने ॥

११ नगजी[10] स्वामी नोत निपुण गुणवांन, अधिकी करणी आदरी ।
अणसण कर नै पाम्यां परम किल्याण, पूज भिक्षु रा प्रताप सूं ॥

१२ जिन मार्ग मे जुगल भाया नी जोड, साम[11] राम[12] संत महागुणी ।
साताकारी सुविनीता सिर मोड, सरल भद्रीक सुहामणा ॥

१३ स्वांमी खेतसी[13] विनै खम्या गुण खान, गण प्रतिपालक सतजुगी ।
संत सत्या नै प्रत्यक्ष जनक समांन, सांप्रत काले दोहिलो ॥

१४ स्वामी नानजी[14] भीक्षु स्वाम प्रताप, जन्म सुधारचो आप रो ।
सजम तप सू काटचा संचित पाप, चोला मे चलता रह्या ॥

१५ स्वामी नेमजी[15] निर्मल पाल्या नेम, ज्यारी करणी रो कहिवां किसूं ।
भजन किया सू इह भव परभव खेम, जिन मार्ग उजवालियो ॥

१६ वेणीरामजी[16] गण मे हुवा वजीर, उपगारी उद्यमी घणां ।
जाप जप्यां सू भाजै भव दुख भीड़, ज्या जिन मार्ग कियो दीपतो ॥

१७ जिन मार्ग मे सत वडा वर्धमान[17], मार्ग मे लू रा कारण थकी ।
सथारो कर पाया सुख प्रधान, समत अठारै पचावनै ॥

१८ छोटा सुखजी[18] पाल्यो संजम भार, भिक्षु गुरु पाया भला ।
अणसण कर नै कर दियो खेवो पार, उत्तम ऋप गुण आगला ॥

१९ उदैरामजी[19] धारचो तप उदार, 'आमल-वर्द्धमान' उमंग सू ।
अकताली ओली चढिया हरप अपार, जाप जपो नित्य तेहनो ॥

२० ताराचंदजी[20] डूगरसी[21] तंत सार, पिता पुत्र दोनू संत भला ।
जन्म सुधारचो उत्तम कर संथार, याद आयां मन हूलसे ॥

२१ जिन मार्ग मे जीवो[22] मुनि जिहाज, सरल भद्रीक सुहामणो ।
पंचम आरे प्रत्यक्ष भवोदधि पाज, सेव करी स्वामी तणी ॥

२२ जिन मार्ग मे जोगीदासजी[23] सत, वालक वय में संजम लियो ।
सुखदाई सुवनीत घणा जशवंत, अवतरचा भिक्षु ना प्रताप सू ॥

२३ जोध[24] सरीखो महा तपसी जोधराज, भाग्य जोग भिक्षु गुरु मिल्या ।
विचित्र प्रकारे तप कर सारचा काज, अणसण अड़तीस दिवस नो ॥

२४ जिन मार्ग मे भारी तपसी भोप[25], संथारो कर जन्म सुधारियो ।
विविध तपे कर कीधो कर्मा सू कोप, शिप भिक्षु ना सुहामणा ॥

२५ जिन मार्ग में जीवणजी[२६] स्वामी सुखदाय, भारीमाल गुरु भेटिया।
अणसण कर नै पहुंता परभव मांय, पनरै पक्ष मे कीवी फतै ।।

२६ जिन मारग में संत वडा पृथ्वीराज[२७] [१], पट मासी तप कियो 'खंत'[२] सू।
वर्सोवर्स भारी तपस्या समाज, भारीमाल रा प्रताप थी ।।

२७ वखतरामजी[२८] वैरागी सुविनीत, एक सौ एक किया भला।
इकवीस दिन नो अणसण आयो वदीत, जिन मार्ग जस छावियो ।।

२८ भीम[२९] सरीखो भीम ऋषीश्वर सार, पंचम आरे परगटियो।
चरचावादी भय भ्रम भाजण हार, जश कीर्त्त जग मे घणी ।।

२९ जिन मार्ग में तपसो लघु वर्धमान[३०], एक सौ च्यार पाणी तणा।
आछ आगारे तप खट मासी प्रधान, भारीमाल गुर भेटिया ।।

३० जिन मार्ग में लघु पीथल[३१] अणगार, तप दोय मास नो दीपतो।
पनरा दिन नो सथारो श्रीकार, जिन मारग उजवालियो ।।

३१ जिन मार्ग में भेटचा गुरु भारीमाल, भागचंद[३२] तपसी भलो।
विविध प्रकारे मेटचा तप कर 'साल'[३] जन्म सुधारी जश लियो ।।

३२ अमीचंदजी[३३] 'कालूरांम'[४] विमास, विविध अभीग्रह आदरचो।
पंचम काल मे कीधो भारी उजास, एहनो गुण किम वीसरै ।।

३३ हीर[३४] अमोलक पटमासी दोय वार, भारीमाल प्रससियो।
च्यारमासवली तपकीधो विचित्र प्रकार, जाप जपो भवियण सदा ।।

३४ दीप सरीखो दीप[३५] वडो तप धार के, पटमासी तपस्या करी जी।
परभव पहुंता वारु कर संथार के, ए शिप भला भारीमाल रा जी ।।

३५ कोदर[३६] कीधी करणी अधिक 'करूड'[५], ऋप रायचंद रा वारे थया।
पट मासी तप छठ-छठ अठम 'पडूर'[६], संथारो दिन सात नो ।।

३६ वाघावास नो मोती[३७] ऋप गुण धाम, छ मासी कीधी 'चूप'[७] सू।
संजम पाली सारचा आत्म काम, ऋप राय तणा प्रताप थी ।।

३७ पूजा ऋष नो भाई पूनमचंद[३८], मास तेरे चारित्र पालियो।
अणसण कर नै पायो परम आणद, गुरु मिलिया पुज रायचंद ऋपी ।।

३८ किसनचंदजी[३९] वासी दिल्ली रा जाण, दिल्ली थी सजम लियो।
अणसण कर पाया परम किल्याण, जन्म सुधारचो जश लियो ।।

---

१. मुनि पीथलजी वडा (५६)।

२. इच्छा।

३. दुख।

४. मुनि अमीचंदजी का दूसरा नाम कालूरामजी था (गुण व. ढा.-३ गा. १)

५. कठोर। ६. उज्ज्वल। ७. उत्साह।

३९ रामसुखजी[40] चोविहार उगणीस, ऋपराय तणा प्रताप थी।
उदक आगारे तेसठ अडसठ पैतालीस, तप कर कार्य सुधारियो ॥

४० जिन मार्ग में भिक्षु नें भारीमाल, ऋप रायचंद तीजे पाट तपै।
ज्यांरा वरतारा में ए शिप थया सुविसाल, भजन करो भवियण सदा ॥

४१ हेम मुनि आदि विचरै सांप्रत काल, ऋपराय तणी आणा मझै।
त्यां संत सत्यां नो जाप जपो गुण माल, ए गुण गाया गुणवंत ना ॥

४२ संमत अठारै वर्स अठाणूंवे न्हाल, जेठ विद चवदस तिथ भली।
ए हर्ष धरी म्हे रची संत गुणमाल[1], प्रगट चूरु सैहर में ॥

४३ नित्य प्रति जपता भाजै भय दुख भर्म, सुख संपति पामै घणो।
उत्तम पुरप ना जाप जप्या कटै कर्म, सका कोइ मति आण जो ॥

४४ भगजी[1] लीधो सजम भिक्षु पास, ऋपराय तणै वारे चल्या।
संजम तप कर पाया परम हुलास, वहु वर्पे संजम पालियो ॥

४५ मोजीरांमजी[2] सैहर गोघूदा रा जांण, भारीमाल गुरु भेटिया।
कंठ कला धर वहु सूत्र मूहढै पिछाण, ऋपराय तणै वारे चल्या ॥

४६ ईशरदासजी[3] सैहर गोघ्दा रा सोय, जावजीव एकंतर आदर्‌या।
सोम प्रकृति वर संथारे परलोय, भारीमाल गुरु भेटिया ॥

४७ माणकचंदजी[4] भारीमाल सुपसाय, चौमासी करी चूप सूं।
वहु वर्सा लग संजम पाली ताय, जन्म सुधार्‌यो आप रो ॥

४८ रत्न[5] सरीखो रत्न ऋपी गुण सार, हेम ऋपी संजम दियो।
छाड त्रिया धन छीहंतरे चरण धार, ऋपराय तणै वारे चल्या ॥

४९ उदियापुर मे थयो उदैचंद अणगार, इक्यासीये संजम लियो।
जावजीव लग छठ छठ तप श्रीकार, ऋपराय सुगुरु भल पामिया ॥

५० सैहर केलवा रो नाथू[7] संत सुजांण, ऋपराय पास संजम लियो जी।
दशम भक्त वहू किया सूर पणो आण, वेदन में मुनि दिढ रह्यो ॥

५१ सैहर पादू रो शंभू[8] संत वहु जाण, सुर प्रत्यक्ष निजरा देखतो।
वर्स निनाणूवे परभव कियो पयाण, वल्लभ तीर्थ च्यार नैं ॥

५२ मालव देशे जेतो[9] ऋप चरण धार, छतीस चालीस दिन तप कियो।
उगणीसै तीए जयपुर सैहर मझार, ऋपराय पास कार्य सारिया ॥

---

१. जयाचार्य ने इस गीतिका मे स० १८९८ जेठ वदि १४ तक दिवगत होने वाले ४० साधुओं का वर्णन किया है। ख्यात मे दो नाम और मिलते है—१. मुनि गुलावजी (५३) २. मुनि अमीचंदजी (८०)।

५३ चालीस संत नी आगे कीधी जोड, संमत अठारै, अठाणूवे।
अठाणूवा पाछे संत पूरचा मन कोड, तिण कारण जोड पाछे करी ।।
५४ उगणीसै चोके जेपुर सैहर मझार, गुण गाया नव संतां तणा।
नव नी नीकी ओल अनोपम सार, काती विद वारस आणंद थयो ।।

ढाल ५

१ *भिक्षु[1] भारीमाल[2] ऋषराया[3], सतजुगी[4] हेम[5] सुखदाया।
सासण सिणगार सुहाया रे, गुण गाया महा पुरसां तणा ।।
२ थिरपाल[6] फतेचंदजी[7] सागी, विहुं वाप वेटा वेरागी।
हरनाथ[8] टोकर[9] गुण रागी, वड़भागी स्वाम प्रसंसिया ।।
३ अखेराम[10] मुनि सुखराम[11], शिवजी[12] नगजी[13] अभिराम।
स्वांम[14] रांम[15] युगल गुण धाम, विश्राम भूमि मुनि परगटचा ।।
४ जीवे[16] मुनि शिव[17] हद कीधी, मुनि नेम सोभ हद लीधी।
वेणीराम[18] नाम प्रसीधी, वर्धमान[19] वड़ा वेरागिया ।।
५ सुखजी[20] उदैराम[21] विख्यात, ताराचंद[22] डूंगर[23] सुत तात।
मुनि जोगीदास[24] गुणजात, वय वालक महा वेरागियो ।।
६ मुनि जोध[25] भोप[26] तप जोरं, जीवणजी[27] मुनि महा घोरं।
तपसा करी कठण कठोरं, वली वखतराम[28] तपस्वी वडो।
७ वर्धमान[29] पीथल[30] षट मासं, तप कर तोड़ी कर्म पासं।
नाथू[31] ऋष संत हुलासं, जिन सासण ने उजवालियो ।।
८ ऋष सरूप[32] जी तनो भाई, भल भीम[33] कीरत जन गाई।
लघु पीथल[34] घणो सुखदाई, वले भागचंद[35] तपसी भलो ।।
९ अमीचंद[36] तपेश्वर थुणियो, चोथे धनो ऋष सुणियो।
इक कर्म काटण तंत भणियो, उद्योत कियो इण काल में ।।
१० हीर[37] दीप[38] कोदर[39] ने मोती[40], चिउं मुनि षटमासी सुहोती।
पूनमचंद[41] किशनचंद[42] जोती, चोविहार उगणीस रामसुख[43] किया।
११ भगजी[44] इश्वर[45] ऋप जवानं[46], मोजीराम[47] सुदर वखानं।
रत्न[48] मांणक[49] महा गुण खानं, उदैचंद[50] तपस्वी मोटको ।।
१२ शंभू[51] जेत[52] गेनजी[53] जांणी, प्रतापजी[54] संत पिछाणी।
तप चरण आत्म वस आणी, पर भव मांहे मुनि पांगरचा ।।
१३ उगणीसै सात सुहाया, ईखु तीज सुख पाया।
वहु विघन हरण मुनिराया, गण गाया डीडवांणा मझे ।।

*लय : आबु गढ़ तीर्थ ताजा ···· ।

ढाल ६

दोहा

१ भेषधारी भूला घणा, इण दुखम काल मझार।
त्या नैं पूज्य भीखनजी परहरी, काढ्यो मारग सार ॥

२ मिथ्या तिमिरज मेटवा, भिक्षु ऋषि जिम भाण।
प्राक्रम धारी परगटया, खिम्या करण गुण खान ॥

३ साध साध्वी श्रावक श्राविका, स्थिर कर जिन मत थाप।
साठे सथारो करी, पहुंता सुधगति आप ॥

४ पाट दीयो भारीमाल नैं, ते पिण गुण गंभीर।
प्रवल पुण्य गुण परगटया, धर्माचार्य सुधीर ॥

५ त्यारै मुख आगल महिमानिला, सुवनीत साध शोभंत।
वले बुधवंत वहु सावव्यां, त्यारै माहोमांहि हेत अत्यंत ॥

*भजन कर भजन कर भजन भिक्षु तणो ॥ध्रुपदं॥

६ स्वाम भिक्षु तणा साध अरु साधवी, सुवनीत अरु हेत दिन दिन सवायो।
मिथ्यात मिटाय जिन मत जमावता, त्या नै देख पाखंड अति कंपायो ॥

७ पाखंड मत मे विखेरो पडियो घणो, केइ पदवी भणी करत 'कजीया'[1]।
वले वाद विवाद कर जुआ-जुआ वीखरया, लोकीकलोकोत्तर नाही 'लजीया'[2] ॥

८ माहो माहि फंट पडियो त्यारा मत मझे, एक एक री आज्ञा में नाहि ऐसा।
पिण भिक्षु भारीमाल रै संत भल परगटया, सतयुगो हेम ऋषिराय जैसा ॥

९ सतयुगी स्वाम साक्षात सतयुग जिसा, हेमाचल सारिखा हेम जाणो।
गण माहे स्थंभ सम संत दोनू गुणी, पाखंड 'पेमाल'[3] करता पिछाणो ॥

१० सागर जेम गंभीर गिरवा घणा, पर पीड जाणै ने प्रवीण पूरा।
अतिशयवंत शोभै ज्यू हाथीया, खिम्या करवा भणी खेत सूरा ॥

११ परम सुवनीत मुरजी देखे पूज्य नी, सतयुगी हेम कहै स्वाम सुणीजै।
पदवी निज आपियै स्थिर कर स्थापियै, ब्रह्मचारी भणी पाट दीजै ॥

१२ सतयुगी हेम नो वचन सुण स्वाम जी, जाण सुवनीत मन हर्ष थायो।
पाट दीयो रायचंदजी स्वाम नैं, जगत मे जेहनो यश छायो ॥

---

*लय : आवियो रावण लोक डरावण'''।

१. झगडा।
२. लज्जा।
३. परास्त।

१३ पुन्य तीखा घणा ब्रह्मचारी तणा, संत दोनूं वड़ा सुक्ख कारी ।
और सुविनीत साधु मुख आगले, प्रवल स्थिर वृद्ध गुण ग्यान भारी ।।
१४ भगवंत महावीर रै पाट तीजे भला, जंवू स्वामी गुणवंत जाचा ।
ज्यूं भिक्षु रे तीसर पाट जंवू जिसा, पुन्यवान गुणखान शोभंत साचा ।।
१५ सुघड चातुर पणो अधिक स्वामी तणो, भल 'सूत्र संग्रहवानै'[1] वृद्ध भारी ।
तीसरे पाट जंवू जिम प्रतपो, एह आशीश जाणो हमारी ।।
१६ विनय विवेक विचार नी वारता, वले अवसर तणा जाण शुद्ध गण चलावै।
उद्यमवंत उपगार करवा भणी, सत्यवंत स्वामी जिन मत जमावै ।।
१७ आचार्य आराधवा स्वाम शूरा घणा, 'आदेज'[2] वचन सुण 'इष्ट'[3] लागै ।
'गिलाण'[4] तपसी लघु दीर्घ साधा तणी, त्यांरी सार संभाल में गुवाल सागै ।।
१८ ए गुण गाविया संत गिरवा तणा, संवत अठारै वर्ष गुण्यासै ।
आषाढ विद एकम वार मंगल भलो, निश दिन गुण गावता कर्म न्हासै ।।

ढाल ७

*भिक्षु श्रमण सत्यां नित्य वंदो ।।ध्रुपदं।।

१ भिक्षु भारीमाल गुण धारा, जोड़ी वीर गोयम जिम सारा ।
साठे अठंतरे संथारा रे, मुनि प्यारा ।।
२ सुविनीत सतयुगी सुहाया, साम राम युगल चित्त ध्याया ।
होवै आनन्द हर्ष सवाया ।।
३ तपसी अमीचंद रसाल, वर भीम भजो सुविशाल ।
जपता हुवै मंगल माल ।।
४ कोदर हद करणी कीधी, विनय व्यावच तपस्या सीधी ।
शंभू संत भज्या ऋद्धि वृद्धि ।।
५ संत तीनू बंधव री माता, सरूप भीम जीत सुखदाता ।
तसु समरण थी हुवै साता ।।
६ तन मन सू भजन करीजै, चित्त मे नित्य ध्यान धरीजै ।
शिव सुदर वेग वरीजै ।।
७ उगणीशे तीये तहतीको, मृगसर सुदि वारस रवि नीको ।
समरण जग मंगल टीको ।।

---

१. सूत्र, अर्थ आदि ग्रहण करने मे ।
२. रुचिकर ।
३. प्रिय ।
४. ग्लान (रोगी) ।

*लय : राणी कहै सुण रे सूड़ा ए......।

ढाल ८

*अ०भी०रा०शि० को०उदारी हो, धर्ममूर्ति धुन धारी हो ।
विघ्नहरण वृद्धिकारी हो, सुखसंपति दातारी हो ।।
भजो मुनि गुणां रा भंडारी हो ।।

१ भिक्षु भारीमाल ऋषिरायजी, खेतसीजी सुखकारी हो ।
हेम हजारी आदि दे, सकल संत सुविचारी हो ।
प्रणमूं हर्ष अपारी हो ।।

२ दीपगणी दीपक जिसा, जयजश करण उदारी हो ।
धर्म-प्रभावक महाधुनी, ज्ञान गुणां रा भंडारी हो ।
नित प्रणमैं नरनारी हो ।।

३ सखर सुधारस सारसी, वाणी सरस विशाली हो ।
शीतल चंद सुहावणो, निमल विमल गुण न्हाली हो ।
अमीचंद अघ टाली हो ।।

४ उष्ण शीत वर्षा ऋतु समैं, वर करणी विस्तारी हो ।
तप जप कर तन तावियो[1] ध्यान अभिग्रह धारी हो ।
सुणतां इचरजकारी हो ।।

५ सन्त धनो आगे सुण्यो, ए प्रगटयो इण आरी हो ।
प्रत्यक्ष उद्योत कियो भलो, जाणैं जिन जयकारी हो ।
ज्यांरी हूं वलिहारी हो ।।

६ धोरी जिन-शासन धुरा, अहोनिशि मे अधिकारी हो ।
परम दृष्टि में परखियो, जवर विचारण थांरी हो ।
प्रगटयो ऋषि तू भारी हो ।।

७ वृद्ध सहोदर जीत नो, जशधारी जयकारी हो ।
लघु सहोदर सरूप नो, भीम गुणा रो भंडारी हो ।
सखर सुजश संसारी हो ।।

८ समरण थी सुख संपजै, जाप जप्यां जश भारी हो ।
मनवंछित मनोरथ फलै, भजन करो नर नारी हो ।
वारु बुद्धि विस्तारी हो ।।

९ रामसुख रलियामणो, तेसठ उदक आगारी हो ।
अडसठ पैतालिस भला, वलि उगणीश चौविहारी हो ।
वड़ तपसी तप धारी हो ।।

---

*लय : सोही तेरापंथ पावै.........।

१. तपाया ।

१० मन दृढ वच दृढ महामुनि, शील दृढ सुविचारी हो।
परम विनीत पिछाणियो, श्रद्धा दृढ सुधारी हो।
समरण सुख दातारी हो ॥

११ शिव वासी लावा तणो, तप गुण राशी उदारी हो।
'आश्वासी'[1] निज आतमा, पटमासी लग धारी हो।
शीतकाल मझारी हो।
सह्यो शीत अपारी हो ॥

१२ उष्ण शिला तथा रेत नीं, आतापन अधिकारी हो।
तप वर्णन चौमासा तणो, सुणतां इचरजकारी हो।
गुण निपन्न नाम भारी हो॥

१३ कोदर तप करडो कियो, षटमासी लग धारी हो।
व्यावच्चियो मुनि वाल हो, छठ छठ अठम उदारी हो।
जावजीव जयकारी हो ॥

१४ शीत उष्ण बहु तप कियो, सुगुरु थकी इकतारी हो।
परम प्रीत पाली मुनि, जाझी कीरत ज्यांरी हो।
समरण सुख दातारी हो ॥

१५ विघ्न मिटै अरियण हटै, प्रगटै सुख भारी हो।
'दलरूपदोहग'[2] दारिद्र दटै, नाम रटै नर नारी हो।
एहवो भजन उदारी हो ॥

१६ कर्म निर्जरा कारणे, जाप जपो नर नारी हो।
निर्वद्य कारज निर्मलो, शिवसुख नो सहचारी हो।
सावद्य आणा वारी हो ॥

१७ भीम अमीचंद मुनि भला, कोदर शिव वृद्धिकारी हो।
रामसुख रलियामणो, समण पंच सिरदारी हो।
जाप परम जश धारी हो ॥

१८ शिवमंगल सुख साहिवी, संपत सरस सुधारी हो।
अधिक आनंद सुजश भलो, होवै हर्ष अपारी हो।
एहवो भजन उदारी हो ॥

---

१. आश्वस्त की।
२. दलिक रूप पाप पक।

१९ उदधि अग्नि अरि विष तणो, 'सकल विघ्न परिहारी हो'[1]।
सत्यशील प्रभावे जिन कह्यो, दशम अङ्ग मझारी हो।
तिम भजन तंत गारी हो।
परम मंत्र राम धारी हो॥

२० 'तस्कर तास न पराभवै'[2], चरचा में जयकारी हो।
'भूत रोग आपद हरै'[3] अघ दल रूप परिहारी हो।
समरण महा सुखकारी हो॥

२१ चंदपन्नती सूत्र नी, गाथा द्वितीय विचारी हो।
तिमहिज भजन ए ऋषि तणो, अधिष्ठायक[4] अधिकारी हो।
स्थिर दृढ आगता धारी हो॥

२२ दवदंती सूरी दीपती, जयवंती जशधारी हो।
इन्द्राणी सूरी आदि दे, स्हाज करण सुखकारी हो।
पुन्यवंती प्यारी हो॥

२३ गुणठाणे चोथे गुणी, समण सत्यां हितकारी हो।
अ०सि०आ०उ०सा०नै सदा, प्रणमै वारंवारी हो।
तास विचारण भारी हो॥

२४ सिणगारांजी मोटी सती, हरखूजी सुखकारी हो।
माता तास सुहामणी, अणसण चरण उदारी हो।
आराध्यो हितकारी हो॥

२५ हिम्मतवान सती हुंती, व्यावच करण विचारी हो।
विघ्नहरण वच्छल करी, दिल संपति दातारी हो।
जय जश हर्ष अपारी हो॥

२६ श्री जिन शासन शोभतो, अधिष्ठायक अधिकारी हो।
अहोनिशि अवधि प्रजूंभती, वंछित पूरण हारी हो।
सुख संपति सहचारी हो॥

२७ जाण तिके नर जाणता, अवर न जाणै लिगारी हो।
धर्म उद्योत करण धुरा, निर्वद्य कारज सारी हो।
आणा तास मझारी हो॥

---

१. पाठान्तर—भूत प्रेत परिहारी हो
२. चोर डाकू आदि उन्हें परास्त नही कर सकते।
३. पाठान्तर-रोग विपद आपद हरै।
४. प्रधान।

२८ परम प्रीत सद्गुरु थकी, विडद वहै इकधारी हो।
पूरण आशा[1] आसता[2], म्हारा मन मझारी हो।
जवर दिशा जयकारी हो ॥

२९ अधिक विनय गुण आगलो, स्थिर दृढ आसता धारी हो।
तसु मिटवा जोग उपद्रव मिटै, ते अघदल रूप परिहारी हो।
निश्चय री वात न्यारी हो।
न टलै जे होणहारी हो, जिम जिन अतिशय उदारी हो ॥

३० उगणीशै तेरे समै, वस्त पंचमी सोमवारी हो।
पंच ऋषि नो परवडो[3], स्तवन रच्यो तंतसारी हो।
प्रसिद्ध शहर सिरयारी हो।
गणपति जय जश कारी हो ॥

३१ विघ्नहरण नी स्थापना, भिक्षुनगर मझारी हो।
महासुदि चवदश पुण्य दिने, कीधी हर्ष अपारी हो।
तास सीख वच धारी हो।
तीरथ च्यार मझारी हो, ठाणा एकाणू तिवारी हो।

—०—

१. विश्वास
२. श्रद्धा
३. श्रेष्ठ

४

शासन-विलास

भिक्षु शिष्य

ढाल १

दोहा

१ अरिहंत सिद्ध साधु अखिल, नमू हरष अति आण।
गणपति भिक्षू गण तणो, वारू करूं वखाण ॥
२ सतरैसै तयासीये, पंचाग लेख पिछाण।
आसाढ सुदि पख मूल मे, भिक्षू जन्म सुजाण ॥
३ अष्टादश आठे समय, द्रव्य दिक्षा अवधार।
पनरै मे प्रतिबूझिया, सतरै चरण उदार ॥
४ जीव घणा समझाय नै, साठे सुदि पखसार।
सीझ्यो भाद्रव तेतसी, सप्त पैहर संथार ॥
५ वडा संत थिरपालजी, फतेचंदजी फेर।
अन्य मुनि सहु छोटा तसुं, कहियै गुण निधि मेर ॥
६ *भिक्षु गण मे पिता पुत्र नी जोड कै, स्वामी थिरपाल[1] नै फतैचन्द[2] भलाजी।
भिक्षु साथे चरण लियो धर कोड कै, जैमलजी मां सू नीकल्या जी ॥

यतनी

७ फतैचंदजी वरलू जगीस, कीधा तप दिन प्रवर सैंतीस।
'ठंडी वाजरी नी घाट ताम"[1], आण दीधी थिरपालजी स्वाम ॥
८ फता ! पारणो करलै एह, मुनि आहार भोगवियो तेह।
तिण जोग सू कर गया काल, अष्टादश इकतीसे न्हाल ॥
९ खैरवा में स्वामी थिरपाल, पचख्या दिन चवदा विशाल।
पारणो कर छठ तप जाण, पछै दोय अठाई पिछाण ॥

---

*लय—जिनमार्ग में धुर सू आदि जिनंद कै ...।
कुछ प्रतियो मे इस गीतिका के प्रारम्भ मे निम्नोक्त एक गाथा और है जो वाद मे जोड़ी गई लगती है :—
जिन मार्ग मे भिक्षु साप्रत भाण कै, आठे द्रव्य दिक्षा ग्रही जी।
सतरे सजम साठे अणसण जाण कै, तसु शिष्य नी कहुं वारता जी ॥ १ ॥
१. पाठान्तर—ठंडी घाट वाजरा नी ताम।

१० दोय वेला करी सुजगीस, मुनि पचख दिया दिन वीस।
दोय तेला सोलै दिन हेर, दोय चोला नें नव दिन फेर ॥

११ दोय पंचोला आठ उदार, पछै पचख दियो संथार।
अणसण दिवस इग्यार नो आयो, संवत् अठारै बतीसे ताह्यो ॥

१२ पद आराधक गुण गेह, ज्यांरै दूधां बूठा मेह।
तपसी दोनूं अणगार, ज्यांरो नाम लियां निस्तार ॥

सोरठा

१३ वीरभाण[4] ने ताम, अवनीत जाणी गण थकी।
छोड्यो भिक्षु स्वाम, पछै 'इन्द्रवादी थयो'[1] ॥

१४ भिक्षु गण मैं टोकरजी[5] हरनाथ[6], अै संत दोनूं तेरा मांहिला।
अणसण करि नै आराधक पन 'आथ'[2], पूज्य भीखनजी प्रशंसिया ॥

१५ भारीमालजी[7] पूज भीखनजी रै पाट कै, परम भक्ता शिष्य पूज ना।
संवत् अठारै अठंतरे गहिगाट, राजनगर अणसण भलुं ॥

सोरठा

१६ तेरां मांहिलो ताम, लिखमो[8] छूटोगण थकी।
पांमी गण अभिराम, चारित्र रत्न गमावियो ॥

१७ लोहावट नां वडा संत सुखराम[9], चरण अठारै बावीस में।
वर्ष वासठे सैहर पीसागण तांम, अणसण दिन पणवीस नो ॥

वार्तिका

जाति रा श्री श्रीमाल, घणां वर्ष विचरचा सुखरांमजी १ नांनजी २ वैणीरामजी ३ डूंगरसीजी ४ पीसांगण चउमासो, सुखरांमजी चोला में संथारो पचख्यो पंचीस दिन रो संथारो आयो।

१८ अखैरामजी[10] लोहावट रा ताय, भेखधारचा नैं छोड नै।
भिक्षु गण में 'चरण लियो'[3] सुखदाय, पारख जाति पिछाणजो ॥

१९ संवत् अठारै वर्ष इसकठे सुजन, छतीस तेला ताजा किया।
सैहर कंटाल्ये अखै दीवाली दिन, चोला में चलता रह्या ॥

---

१. इन्द्रियों को सावद्य मानने लगे। ३. संवत १८२४ आसरै दीक्षा।
२. सपत्ति।

सोरठा

२० अमरो[११] 'अघ वस'[१] जाण, छूटो भिक्षु गण थकी।
'पडिवाई पहिछाण, अनंतगुणा छै अभव्यथी'[२]॥
२१ छूटो तिलोकचंद[१२], वासी चेलावास नो।
वर्ष छतीसे मंद, चंद्रभाण फटावियो॥
२२ छूटो मोजीराम[१३], चरण-रयणकरआवियां।
तुरत गमावै तांम, मोहकर्म वश जीवडो॥
२३ भिक्षु गण में शिवजी[१४] स्वामी सार, थली देश रा जाणियै।
समचित सेती लीधो संजम भार, जन्म सुधारचो आपरो॥

सोरठा

२४ छूटक चंद्रभाण[१५], तिलोक संग अवगुण वदी॥
गण मे आया जाण, फिर छूटा तसूं 'रास'[३] है॥
२५ चौविहार संथार, सतरै दिन तो काढिया।
लागी तृखा अपार, छूटो अणदो[१६] गण थकी॥
२६ पनजी[१७] छूटक पेख, संतोषचंद[१८] शिवराम[१९] नैं।
चंद्रभाणजी देख, विहुं फटाया नीकल्या॥
२७ भिक्षु गण मे नीत निपुण गुणवान, चारित्र धारचो चूंप सूं।
संथारो कर कार्य सारचा सुध्यान, नगजी[२०] स्वामी निर्मला॥
२८ भिक्षु गण में युगल भायां री जोड, सांम[२१] राम[२२] विहुं मुनि भला।
वर्ष अडतीसे चरण लियो धर कोड, परभव छासठै सत्तरे॥

वार्त्तिका

जाति श्रावगी बूंदी ना वासी सांम राम जोडलै जन्म्यां। थिरपालजी स्वामी फतैचंदजी स्वामी बूंदी मे चौमासो कीयो, त्यां कनै दोनू भाई समज्या केतलै काले मेड़ते आय भीखनजी स्वामी रा दर्शण करि पाछा 'हाडोती'[४] देश में आया पछै संसार सू मन भागो, साधुपणो लेवा कैलवे आया। पछै सामजी दिक्षा लीधी, पछै खेतसीजी स्वामी दिक्षा लीधी, पछै रांमजी स्वामी लीधी। संवत् १८६६ उपवास मै सामजी परभव पहुंचा।

---

१. अशुभ कर्म के योग से।
२. सम्यक्त्व से च्युत जीव अभव्य से अनत गुने है।
३. स्वामीजी द्वारा रचित 'अविनीत रास' मे उनका विस्तृत वर्णन है।
४. गाव बूंदी।

हिवै रामजी संवत् १८७० रै वर्ष इंद्रगढ चौमासे च्यार मास एकान्तर। काती सुध १० च्यार पौहर आसरै संथारो सीझ्यो। तिणहिज वर्ष भारमलजी स्वामी रो माधोपुर चौमासो, 'आर्य्या'[1] पिण त्यां भेला हुंतां। तिहां काती सुदि १० खुसालांजी पिण आउखौ पूरो कियो। रामजी स्वामी रो साथ हुओ।

२९ स्वाम खेतसी[33] ग्रह परण्या बे नार, अडतीसे संजम लियो।
उपाध्याय सम सुविनीता सिणगार, अणसण वर्षज असीये ॥

वार्त्तिका

श्रीजीदुवारे भोपोसाह, तेहनै पुत्र खेतसी, प्रकृति चोखी। एक परण्या, उवा चल्यां दूजी परण्या, ते पिण चल गई। सगपण घणा मिलता, पिण परणवा रा भाव नही। संसार में सोभा घणी। कपडा रो विणज, ग्राहक आवै तिण नैं कपडो वतावै पिण भ्राटकै नही, वाउकाय री दया घणी। कपडो मोल ले जाय नै पाछो आण सूपै तो पिण उरहो लेवै, उण सू झगड़ो करै नही तिण सू ग्राहक यारै हाटे घणां आवै। वाप रा विनीत घणा, दिक्षा रा भाव, पिण आज्ञा मांगणी आवै नही। पिता पिण मन में जाणै इण रा संजम लेवा रा भाव दीसै छै। तिहां भीखनजी स्वामी पधारचा, मैणाजी आदि सतिया पिण साथे। भोपासाह रा डील में कायक कारण ऊपनो, लोक साता पूछवा नै आया। इह समय रंगूजी संजम लीयै तिणरा दिक्षा रा मोच्छव मंडचा, ए वात भोपैसाह सुणी कहै—खेतसी नै वोलावो, तितरै खेतसीजी आया। भोपैसाह पूछचो-थांरा परिणाम दीक्षा लेवा रा छै? जद खेतसी वोल्या—म्हारा भाव तीखा छै। जद कह्यो भलाइं दिक्षा लै। इणराई दिक्षा रा महोच्छव भेला करो। पछै भीखणजी स्वामी दिक्षा दे कोठारीये पधारचा। लारै भोपोसाह काल कर गया।

सोरठा

३० वार-वार पडै संक, सम्भू[34] नैं छोडचो तदा।
तो पिण तज मन 'बंक'[2], सेव अधिक साधां तणी ॥
३१ संघजी[35] जेहनो नाम, वासी ते गुजरात नो।
सिरियारी में ताम, असुभ कर्म वस नीकल्यो ॥
३२ स्वाम नानजी[36] संजम लीधो सार, वर्ष इकतालीसे आसरै।
परभव पोहता एकोतरे अवधार, चोला में चलता रह्या ॥

१. साध्विया। २. वक्रता।

३३ सैहर रोयट ना वासी अधिक सधीर, भिक्षु पै संजम लियो।
वहु वर्षा लग पाल्यो गुणमणि हीर, नेम[37] संथारो नैणवे ॥
३४ वैणीरामजी[38] स्वामी अधिक वजीर, चमालीसे संजम लियो।
चरचावादी सूरवीर नें धीर, परभव चाकसु सत्तरे ॥

वार्त्तिका

सैहर वगडी रा वासी, चमालीसा रै वर्ष भिक्षु चौमासो पाली कीयो। खेतसीजी स्वामी नै वगडी करायो। तिहां वैणीरामजी नै सीखाय नै पका कीया, जद पाली आय दीक्षा लीधी। भणगुण नैं पका थया, वखाण वाणी री कला तीखी। विचरत-विचरत मालवे रतलांम आया, तीन दिन मे ६ जागां फरसी। मालवा में कोदरजी नै गुरु कराया। पछै उजेण में ढूढीया रा थानक में जाय चरचा कर त्यारा श्रावकां नै समझाय लीया। तिहां सत्तरे चौमासा में रामाजी नै दिक्षा दे विहार करि माधोपुर पधारचा। तिहां भारीमालजी साधा नै लेइ नै साहमा पधारचा, २१ साधु भेला थया। वैणीरामजी नै जयपुर चौमासो भलायो। वैणीरामजी चौमासा आडा दिन घणा जाण नै चासटु पधारचा तिहा अचिन्त्यो संवत् १८७० जेठ सुदि १० आउखो पूरो कीयो।

दूहा

३५ तिण अवसर कोटा तणां, दोलतरामजी देख।
तसु टोला ना साध चिहुं, आणी हरप विसेख ॥

सोरठा

३६ दोय रुपचंद देख, वारु ऋपि वर्धमान।
सुरतोजी संपेख, स्वाम गणे संजम लियो ॥
३७ रुपचंद[43] वहुमान, छूटो तेह प्रयोग थी।
प्रकृति अजोग पिछान, सूरतो[44] पिण छूटक थयो ॥
३८ वर्धमानजी[45] देश ढूढार मझार, लू रा कारण थी भलो।
मारग माहै संथारो सुखकार, संवत् अठारै पचावने ॥

दूहा

३९ लघु रुपचंदजी[46] स्वाम गण, वैणीराम जी 'पाहि'[1]।
अणसण रो वंधो कियो, माधोपुर रै मांहि ॥
४० पछै परिणाम कचा पडचा, वोल्यो एहवी वाय।
हुं थांरै नही काम को, रत्न कांकरो थाय ॥

१ पास।

४१ इम कहिनै अलगो थयो, काल केतलै ताहि।
इक चेलो कीधां पछै, आयो इंद्रगढ माहि ॥

४२ शिष्य तज कहै गृहस्थ भणी, तंत सूत्र मुझ तांम।
भिक्षु नैं वहिरावजो, मुझ गुरु भिक्खू स्वाम॥

४३ इम कहि साधुपणो ग्रही, दीयो संथारो ठाय।
पांच दिवस नैं आसरै, परभव पहुंतो जाय ॥

सोरठा

४४ मायाराम[33] गण मांहि, आया वेषधारचा थकी।
काल केतलै ताहि, निकल कालवादी थयो॥

४५ बोरावड वसनान, वगते[34] संजम आदरचो।
कर्म प्रभावे जान, गणथी बाहिर नीकल्यो॥

४६ भिक्षु गण मे छोटा सुखजी[35] सार, वासी टूंगच ग्राम नां।
वर्ष चोसठे दश दिन नो संथार, परभव सुरगढ हेम पैं॥

वार्तिका

सुखजी स्वामी जाति पींपाडा, ४७ दीक्षा, ६४ देवगढ चौमासे हेम १ सुखजी २ भागचदजी ३ दीपो ४। भादवा में अभिग्रह कीयो महा सुदि १५ पछै तीनू आहार ना त्याग, पछै शरीर कचो पडयो जाण नै पोसी पूनम पछै तीनू आहार ना त्याग। आसोज विद सू तपस्या मांडी—१४ दिन तो एकान्तर कीया, ३ बेला कीया, काती मे ६ बेला कीया, २ तेला, पछै च्यार पचख्या, उणहिज रात्रि च्यांरु आहार ना त्याग जावजीव कीया। १० दिन को संथारो आयो वैराग घणो बध्यो।

४७ वर्ष तेपने संजम भिक्षु पै सार, अधिक उजागर ओपता।
उगणीसै चोके अणसण महा सुखकार, हेम[36] हजारी गुणनिला॥

४८ उदैरामजी[37] चरण पचावने वास, आंबिल वर्धमान तप कियो।
वर इकताली ओली चढिया विमास, संथारो साठे भलो॥

सोरठा

४६ खुसाल[३८] संजम धार, पिण प्रकृति अजोग प्रतापथी।
नीकलियो गणवार, संवत् अठारै छासटे ॥

५० ओटो[३९] जाति सोनार, भिक्षू गण संजम लियो।
दुक्कर चरण अपार, तिण सूं वाहिर नीकल्यो ॥

५१ त्रिया छांड व्रतधार, नाथू[४०] पिण अति लोलपी।
नीकलियो गण वार, पिण श्रद्धा सन्मुख रह्यो ॥

५२ सत्तावने वर्ष रायचंदजी[४१] स्वाम, भिक्षु पास संजम लियो।
अधिक ओजागर पट्ट तीजै अभिराम, उगणीसै आठे परभव गया ॥

५३ तत ताराचंद[४२] डुंगरसी[४३] सुत न्हाल, सतावने संजम लियो।
ताराचंदजी अणसण दिन इकताल, डूंगरसी दिन सात नो ॥

वार्त्तिका

गंगापुर नां वासी, जाति ओस्तवाल, ताराचंदजी तात, पुत्र डुंगरसी तेहने परणीजण री त्यांरी थई। ते सगपण तोड़ माता भाई नै छोड़ पिता सहित संजम लीयो। हिवै डूगरसी कितलायक काल पछै संलेखणा माडी। संवत् १८६८ कार्तिक शुक्ल पक्षमें इम वोल्या—फागुण सुदि पूनम पछै सर्व विगै रा त्याग। हिवै फागुण मास थी लेई तपसा करी ते लिखियै छै—एकान्तर सात उपवास करि नै एक छठ कीयो, अठाई वले छ बेला, पाच तेला, एक पंचोलो, एक चोलो, छ कीया, दोय पंचोला, दोय चोला, दोय पंचोला कीया। दश पचख्या, दशा में तीजे दिन जेठ सुदि १ घणी हठ स्य संथारो धारयो। संवत् १८६८ जेठ सुदि ७ ने मंगलवार संथारो सीज्यो। दोय दिन तो पहिला तीजे दिन संथारो तिण मे सात दिन नीकल्या एवं सर्व नव दिन जाणवा।

५४ भिक्षु गण मे जीवो[४४] मुनि जिहाज, मधुर अल्प वच जेहना।
सखर संथारो सारचा आतम-काज, संवत् अठारै नेऊवे ॥

५५ वालक वय में त्रिया छांड व्रत धार, जोगीदासजी[४५] गुणनिलो।
पीसागण मे वर्ष गुणसठे सार, चौविहार संथारो कियो ॥

५६ जोधो[४६] मारु संजम भिक्षु पास, तपसी तप वहुलो कियो।
संवत् अठारै प्रवर पंचतरे वास, अणसण अडतीस दिवस नो ॥

वार्त्तिका

जोधोजी करेडा रा वासी, जाति मारु, संवत् १८५९ साम राम पै दिक्षा लीधी। पहिलै चौमासे तेरै, दूजे चौमासे ४२। पछै कही तै आछ आगारै जाणवी। उपवास, वेला, तप, पुर मे ७५ कीया। पूर्वे तपसा ४५, ४७, ३०, ३१, २६ दोय मास लगतो तेला, चोला, पांच प्रमुख मोकला कीधा। जोधो तपस्वी १ मोजीरामजी २ माणक ३ झारोल कनै कोचलै चौमासो कीयो। तिहा ३४ रो पारणो करी शरीर में कायक कारण ऊपनो, कारण रा जोग सूं चौमासा उपरंत रह्या, संथारो पचख्यो, खमतखामणा करी आलोई निंदी ३८ दिन रो अणसण सीझ्यो। संवत् १८७५ पोस विद अमावश्य परभव गया।

५७ भगजी[ऋ] ऋषि रे 'वे जोडा'[१] विहुं खंध, जोड़ो एक पांती तणो।
वीजो जोडो हस्त लिख्यो वहु संध, नीत इसी चल्या निनांणूंअे॥

वार्त्तिका

खैरवा रा वासी भगजी स्वामी वैद मूहता जाति। वडी वहिन री आज्ञा सू भीखनजी स्वामी दिक्षा दीनी आसरै काका वावा रा वेटा भाई त्यां घणा दिन तांइ झगड़ो राख्यो पिण भीखनजी स्वामी क्यू ही गिणत राखी नही।

भगो वैरागी दिक्षा लेवै, लोक कहै आज्ञा किणकी।
भगो वैरागी इम कहै, म्हारी वडी वहिनछै जिणकी॥
सतगुरु एहवो भाख्यो जी।
साभल नै भगा वैरागी संका मूल म राखो जी॥

पछै पोते लिखणो घणो कीयो, एक जोडो तो पोता रा नेश्राय को एक खांवै अनै समचा रा नेश्राय को दूजो जोडो दूजै खांधै, इम पोता रा नेश्राय को वोझ घणो तो पिण समचा रो जोडो तो लेता। एहवा नीत वाला, घणा वर्ष साधुपणो पाल्यो, संवत् १८ निनांणूंअे परलोक पहुंता।

५८ *भागचन्दजी[ऋ] संजम भिक्षु पास, तीन वार गण थी टली।
भारीमाल पै चरण एकोतरे वास, परभव वर्ष सत्ताणूंअे॥

१ चार पुस्तकें (एक पुस्तक का वजन लगभग अढ़ाई सेर था।)

५९ भिक्षु गण मे भारी तपस्वी भोप[५९], संजम भिक्षु पासे लियो।
विविध तपे करि कीधो कर्मा सू कोप, संथारो वर्ष छासठे॥

दोहा

६० भोप गुणसठे चरण वर, छासठे कृत संथार।
तपसा वीच करी तसु, ते सुणजो विस्तार॥
६१ साठे पीसांगण मझै, हेम ऋषि पै संच।
तेरै तप दिन थोकडो, फुन जाणीजै पंच॥
६२ द्वितीय चौमास कियो वली, पीसागणे जगीस।
भारीमाल रै साथ ही, तिहा तीस फुन वीस॥
६३ पाली वर्षज वासठे, तप दिन वर चालीस।
वले थोकडा वहु किया, तप सू चित्त निशि दीस॥
६४ मांढे ग्रामज तेसठे, एक मास अवधार।
वलि इकतीस किया मुनि, तप करवा अति प्यार॥
६५ लाहवे वर्षज चौसठे, साम राम ने भोप।
चिहुं मासे पारण सतर, कियो कर्म सूं कोप॥
६६ अभिग्रह एहवो आदरचो, पूज्य दर्शण लग जाण।
तीन आहार ना त्याग है, पूगो गुणतीसम दिन आण॥
६७ सिरियारी मे पैसठे, छासठ दिन इक साथ।
आछ आगारे पचखिया, सुजश अधिक संजात॥
६८ पूज्य तणा दर्शण करी, अज्जा संत खमाय।
आज्ञा संलेखणा तणी, पूज्य कनै ली ताय॥
६९ पाली वर्षज छासठे, हेम समीप उदार।
दिवस अठावन तप भलो, उदक तणै आगार॥
७० हेम करायो पारणो, दूजै दिन अल्प आहार।
पग पकडचा निशि पाछली, हेम तणा तिणवार॥
७१ कहै मुझ प्रते कराय दो, संथारो सुखकार।
लोक वहु भेला थया, जन मन करी विचार॥
७२ इसरदासजी नाहटो, नाडि तणो जे जाण।
तेह भणी वोलावियो, नाडि देख कहै वाण॥
७३ स्वाम संथार कराय दो, हेम कहै तिणवार।
सोहरो मास करावणो, पिण दोहरो संथार॥

७४ मोह चेला नो मत करो, वैद कहै इम वाय।
तीन दिवस उपरंत ही, ए नाडी छै नाय ॥

७५ तास कहिण थी हेम मुनि, पच्चखायो संथार।
अणसण आयो आसरै, पोहरज साढा च्यार ॥

७६ धर्म उद्योत हुओ घणो, मांडी खंड इकताल।
साढी तीन सौ आसरै, रोकड लागा न्हाल ॥

७७ भिक्षु नो ए भोप ऋषि, चरम शीस सुविचार।
सात वर्ष रै आसरे, संजम पाल्यो सार ॥

सोरठा

७८ भिक्षु छताज ताहि, अडतालीस मुनि थया।
अष्टवीस रह्या मांहि, गण थी वीसज नीकल्या ॥

छन्द धमैया

७९ थिर संत जनक थिरपाल[1] थुणीजै, फतैचंद[2] सुत कीध फतै।
वर टोकरजी[3] हरनाथ[4] विनीतज, दीर्घमाल[5] पट्ट दीर्घ कृतै।
वड सुखरामजी[6] अखैराम[7] वलि, शिवजी[8] शिव मग लीव सिरै।
सुद्ध भिक्षु स्वाम सीस गण सखरा, करियै स्तुति हरष करे जी।
करियै स्तवना हरष करे ॥

८० ऋषि नगजी[9] साम[10] खेतसी[11] रामज[12], भद्र नानजी[13] नेम[14] भला।
ज्यू वैणीरामजी[15] संत जोरावर, विरधमान[16] सुखजी[17] विमला।
समता दमता गुण हेम[18] सोभता, उदयराम[19] तपस्वी उच्च रे।
सुद्ध भिक्षु स्वाम सीस गण सखरा, करीयै स्तुति हरष करे।
करियै स्तवना हरष करे ॥

८१ तीखा ऋषि रायचंद[20] पट्ट तीजै, ताराचंदजी[21] तात तणो।
सुत डूंगरसी[22] ऋषि अति सुखदायक, हद जीवो[23] मुनि हरष घणो।
व्रत धारया जोगीदास[24] वाल वय, त्रिय छंडी भव सिंधु तिरै।
सुद्ध भिक्षु स्वाम सीस गण सखरा, करियै स्तुति हरष करे।
करियै स्तवना हरष करे ॥

८२ जश धारक जोधराज[25] तप जाभो, भगजी[26] भजियै भाव धरी।
मुनि भागचंद[27] टल पाछो मंडियो, सखर भोप[28] तप चरण सिरी ॥
अठवीस मुनि ए गण में आख्या, हुंसियारी वहु पाप हरै।
सुद्ध भिक्षु स्वाम सीस गण सखरा, करियै स्तुति हरष करे।
करियै स्तवना हरष करे ॥

कुंडलिया

८३ दीन वीरभाणज[1] थयुं, लिखमो[2] अमरो[3] मंद।
तिलोक[4] मोजीराम[5] फुन, चन्द्रभाण[6] कर फंद।
चन्द्रभाण कर फंद चंद्र, टल्यो आणदो[7] ने पनो[8]।
संतोपो[9] शिवराम[10] संभू[11], संघजी[12] गुण शुनो।
वे रूपचन्द[13]-[14]सुरतो[15]वली, मायाराम[16], मतिहीन।
वगतो[17] खुसाल[18] नीकल्यो, ओटो[19] नाथ[20] दीन॥

दोहा

ए वीस टल्या ते माहि थी, रूपचंद शिर आण।
पूज तणी धर चरण ले, इन्द्रगढे तज प्राण॥

८४ उगणीसै चउतीसे आसू मास, कृष्ण पक्ष छठ तिथि भली।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसाद, हुलास जोड करी जय जश गणो॥

सोरठा

८५ भिक्षु शिष्य नी जोड, वच विरुद्ध आयो हुवै।
सिद्ध साखे मन मोड, ते मुझ मिथ्यादुःकृतं॥

इति भिक्षु गणी वरतारे रा सत गुण वर्णन समाप्त।

भिक्षु आर्याएँ

ढाल २

दोहा

१ चरण लियो भिक्षू छतां, अज्जा तसु अधिकार।
केइक परभव गण मझै, केइक निकली वार ॥

२ इकवीसा रै आसरै, तीन जण्यां तिहवार।
एक साथ व्रत आदरया, पहिला कियो करार ॥

३ विरह पडै जो एक नो, तो दोयां नै देख।
रहिवू नहि करणी तदा, संलेखणा सुविसेख ॥

४ तीव्र बुद्धि स्वामी तणी, जवर भाग्य वर जोग।
नीत निपुण अति निरमली, प्रवल पुन्य सुप्रयोग ॥

५ चरण ग्रह्यं इक साथ त्रिहुं, कुशल खेम करतार।
कुसलांजी थापी वडी, भिक्षु वुद्धि भंडार ॥

*देव जिनेंद्र जिसा इण आरे, भिक्षु प्रगटया वुद्धि भारी।
तसु गण अज्जा सखर सकज्जा, वर लज्जा केशर क्यारी ॥ध्रुपदं॥

६ 'दीर्घपृष्ठ'[१] डसिया कुसलाजी, काल कियो गुदोच विखै।
पंडित मरण मटुजी[२] पाया, धिन जे चारित्र रत्न रखै ॥

सोरठा

७ काल केतलै ताम, अज्जा अपर थयां पछै।
अजवू[३] छूटी आम, प्रकृति अजोग प्रताप थी ॥

८ सतिय सयाणी सखरी वाणी, नाम सुजाणां[४] सोभंती।
भिक्षु गण में परभव पहुती, फुन देऊजी[५] दीपंती ॥

---

*लय : चेत चतुर नर कहै तुज सतगुरु ... । १. साप।

सोरठा

९ प्रकृति अजोग प्रताप, नेतू[६] गण थी नीकली।
प्रवल उदय तसु पाप, ते आराधक किम हुवै ॥

१० सतिय गुमानाजी[७] सुखदाई, वली कसूवा[८] गुणवंती।
संथारो करि ए विहुं सतिया, परभव पहुंती पुन्यवंती ॥
११ वहु सुत पोतो तज संजम भज, जीऊ[९] रीया तणी न्हाली।
परभव शहर पीपाड संथारो, तसु माडी खंड इकताली ॥

सोरठा

१२ फत्तू[१०] अखू[११] ताय, अजबू[१२] चंदू[१३] ए चिहु।
भेषधारयां थी आय, वर्ष तेतीसे स्वाम गण ॥
१३ वर्ष सैतीसे जेह, तुझ 'तंतु'[१] कल्पै तिको।
इम कहि कपडो देह, पूछ्या कहै अधिको न मुझ ॥
१४ अखैराम अणगार, मूक्या कपडो मापवा।
तस स्थानक तिह वार, माप्या अधिको नीकल्यो ॥
१५ इम तंतू अति राख, झूठ वोली वले जाण नै।
सुद्ध नही संजम साख, अविनय प्रकृति अजोग फुन ॥
१६ च्यारूं ते पहिछान, चैना[१४] भेली पंचमी।
झट पाचू नै जान, छोडी चंडावल मझै ॥

१७ पुर ना वासी छांडी प्रीतम, चरण लियो वर चित शांति।
सखर पढी साठे संथारो, वारु मैणा[१५] लजवन्ती ॥

सोरठा

१८ धनु[१६] केली[१७] धार, रत्तू[१८] नंदू[१९] चिहुं भणी।
मांढा ग्राम मझार, छांडी अजोग्य जाण नै ॥

१९ स्वाम खेतसी साथे दिक्षा, अड़तीसै वर्ष धर खंती।
परभव सिरियारी मे पहुंती, वडी रंगूजी[२०] 'बुद्धिवंती'[२] ॥
२० तलेसरा श्रीजीदुवारा ना, सती संदाजी[२१] सुखकारं।
सुत वहु तज व्रत धारया[३] 'फूला'[२२] अणसण, फुन अमरा[२३] त्रिहुं संथारं ॥

---

१. वस्त्र।
२. पोरवाल, नाथदुवारा ना वासी।
३. कटालीयै रा वासी सथारो लोटोती मे।

सोरठा

२१ रत्तू[२४] ग्रही चरित्त, छूटी प्रकृति अजोग थी।
पाली माहि पवित्त, पछै संथारो पचखियो ॥
२२ उपाय किया अनेक, भेषधारयां लेवा भणी ॥
तो पिण राखी टेक, त्या माहै तो नां गई।

२३ ढोलकवोल तणा ए वासी, तंत बयांली दिवस तणो।
सैहर केलवे वर संथारो, समणी तेजू[२५] सुजश घणो ॥

सोरठा

२४ वन्ना[२६] निकली वार, आचार्य नी आण शिर।
जैहनै दुक्करकार, तेहनै चारित्र दोहलो ॥

२५ वगतूजी[२७] वगडी रा वासी, हृद हीरांजी[२८] हीरकणी।
भारीमाल नी मुरजी अतिही, नाम[२९]"नगांजी"[१]कीर्ति घणी ॥
२६ ए त्रिहुं साथे चरण स्वाम कर, सतिय रंगूजी नै सूंपी।
वगतूजी अणसण कंटाल्यै, सती भद्र सम रस कूंपी ॥
२७ चेलावास हीराजी अणसण, वर्ष अठंतरे पुन्यवंती।
दिन इकवीस आसरै परभव, भारीमाल पहिला पहुंती ॥
२८ सती नगां सुरगढ़ संथारो, ए वैणीरामजी री भगनी।
भिक्षु पाछै ए त्रिहुं अज्जा, परभव पहुंती सुभ लगनी ॥
२९ सरूप भीम वर जय गणपति नी, भूआ भद्र नाम अजवू[३०]।
चरण चोमाले वर्ष अठयास्यै, अणसण तास ज्ञान गजवू ॥
३० सैहर सिरियारी ना वासी वर, सतिय पनांजी[३१] सुखकारी।
संथारो कर कार्य सारया, हृद भिक्षु गण हितकारी ॥

सोरठा

३१ कांकडोली री ताय, लाला[३२] चारित्र आदरी।
शीत वसे गृह आय, वर्ष वहु श्रावकपणुं ॥

३२ ग्राम तासोल तणी ग्रही चारित्र, राजनगर में जशवंती।
छैहड़े दोय मास करि अणसण, भद्र 'गुमाना'[३३] गुणवंती[२] ॥

---

२. जीवा मुनि की वड़ी मां।

१. वेणीरामजी री वहिन।

३३ जाति श्रावगी सैहर बूंदी नां, संजम धारयो सत्यवंती।
सैहर खेरवा मे संथारो, खेम करण खेमांज[34] हुंती ॥

सोरठा

३४ जसू[35] चरण ग्रही सार, छूटी जू परिसह थकी।
चोखा[36] निकली वार, ए विहुं कांकडोली तणी ॥

३५ वालवय वहु हठ सू आज्ञा, छांड पुत्र पिउ अघहरणी।
नव वर्ष दिक्षा, सत्तावने वर्ष, अणसण रूपा[37] हद करणी ॥

वार्त्तिका

ए रूपांजी तिका खेतसीजी स्वामी, खुसालाजी री वहिन, रायचन्दजी स्वामी री मासी। दिक्षा लेता खोडा मे पग घाल्यो, इकवीस दिन रे आसरै रह्यो, पछै पुन्य प्रमाणे खोडो टूट गयो, लोक चिमत्कार पाया। उदयपुर को राणो सुण्यो ते पिण गुण गावा लागो। घणो सुजश थयो आज्ञा लेई दीक्षा लीधी।

३६ छांड तीन सुत लीधो चारित्र, माधोपुर ना वसवांन।
सैहर कंटाल्ये सखर संथारो, सती[38] सरूपां[1] सुभ ध्यानं ॥
३७ वरजूजी[39], पादू रा वासी, भिक्षु नी मुरजी भारी।
गण में तोल वधायो तीखो, आयु ईडवे हुंसीयारी ॥
३८ सती विजांजी[40] रीयां तणां ए, छैहडै तपसा कीध घणी।
संथारो कंटाल्ये सखरो, सरल भद्र समणी सुगणी ॥
३९ वनांजी[41] पादू रा वासी, वर्ष सतसठे संथारो।
स्वाम भीखणजी हाथे इक दिन, ए 'त्रिहु'[2] दिक्षा अवधारो ॥

सौरठा

४० जाति कुंभारी जाण, वीरांजी[42] दिक्षा ग्रही।
प्रकृति अजोग पिछाण, तिण सू छोडी स्वामजी ॥

४१ जाति सोनार प्रकृति सुद्ध जेहनी, संजम वहु वर्षे पाली।
सैहर आमेट सखर संथारो, ऊदां[43] आतम उजवाली ॥

---

१. जाति अगरवाला। २. मेणांजी नै सूप्या।

४२ छपनै वर्ष श्रीजीदुवारा ना, हरष धरी दिक्षा लीधी।
वगडी में सथारो सुद्ध चित्त, सती झूमांजी[६४] हद कीधी ॥

४३ हस्तू[६५] अने कुसाला[६६] कस्तू[६७], जोता[६८] नोरां[६९] जशवन्ती।
सत्तावनें वर्ष सखरो संजम, पांचू सतिया पुन्यवंती ॥

४४ लखपती संसारिक लेखे कहियै, पिउ वे सुत प्रति तज दीधा।
सत्ताणुवे लाहवे संथारो, वड 'हस्तूजी'[१] कार्य सीधा ॥

४५ ऋषिराय तणी 'माता'[२] सुत पिउ तज, कीर्ति अति गण में जीकी।
सतसठे संथारो शहर आऊवे, नाम कुसलाजी नीकी ॥

४६ हस्तूजी नी ए लघु भगनी, पिउ पुत्र प्रति परहरिया।
सतंतरे उज्जैन संथारो, कहा कहूं 'कस्तू'[३] किरिया ॥

४७ सैहर लाहवा ना पिउ प्रते तज, जनवृंद हरषै वाण सुणी।
उगणीसै आठे संथारो, जोता जवरी भणी गुणी ॥

४८ सिरीयारी ना पुत्र पिउ तज, चारित्र लीधो चित्त आणी।
वोहित्तरे अणसण खेजड़ले, सती नोरांजी मुखदाणी ॥

४९ खुसालांजी[७०] नाथाजी[७१] विजांजी[७२], पाली नां गुणरस कूपी।
गुणसठे इक दिन दिक्षा भिक्षु, देई वरजूजी नैं सूपी ॥

५० 'लोडी'[४] खुसालांजी संथारो, भारीमाल पैं चउमासो।
कार्तिक सुदि दशमी तिथि वारूं, माधोपुर में सुखरासो ॥

५१ वड़ो साहिवी तजी नाथाजी, प्रकृति सौम्य अति सुखदाई।
सत्ताणूअे संथारो सखरो, गण मे अति कीरति पाई ॥

५२ विजांजी चौमासे वहु तप, छेहड़े दिवस वत्तीस कीयं।
अठम भक्त करी संथारो, वर्ष छयांस्ये सुजश लीयं ॥

वार्त्तिका

विजांजी छेहडै आसरै इण रीते तपसा कीधी ते लिखियै छै-पोस विद ७ वृहस्पतिवार तेलो कीयो। पारणे वेलो, वेलारै पारणे १०, पछै सात रो थोकड़ो पछै छ रा थोकड़ा तीन कीया। पारणो करी ५ कीया, पछै बेलो, पछै चोलो कीयो, पछै तेलो कीयो, पछै दोय वेला वले तेलो, पछै चोलो, पछै १५ कीया। पछै ३२ रो थोकड़ो वलि तेलो करी

१. पीपाड़ रा।
२. रावलियां रा।
३. पीपाड़ रा।
४. छोटी।

पारणो कीया विना सथारो पचख्यो। तीन दिन रो संथारो एवं ६ दिन नो अणसण वैसाख सुदि में लोटोती में। भारी तपसा कर आत्मा रा कार्य सारया। २७ वर्ष रे आसरै साधुपणो पाल्यो। शासण में वडी सोभा लीधी।

५३ *[13]'गोमाजी'[1] रोयट ना वासी, वर्ष गुणसठे लीध दिक्षा।
वर्ष नेउअे हद 'सथारो'[2], सतगुरु नी धारी शिक्षा॥

५४ सती जशोदा[14] डाही[15] नोजा[16], स्वाम छतां संजम सारो।
वर्ष कितैइक चरण पाल नै, अणसण करि पामी पारो॥

गीतक-छंद

५५ समणी प्रथम कुसला[1] मटुजी[2], सुजाणा[3] देऊ[4] सती।
अज्जा[5] गुमानां कसूवा[6] फुन, जीऊ[7] मैणा[8] अति रती॥
रंगू[9] सदा[10] फूलां[11] वली अमराज[12], तेजू[13] रंगरली।
वगतूजी[14] हीरां[15] नगा[16] अजबू[17], पनाजी[18] चित्त निर्मली॥

५६ फुन गुमाना[19] खेमाजी[20] रूपा[21], सरूपां[22] वरजू[23] विजा[24]।
वली वनां[25] ऊदा[26] सती झूमा[27], हस्तु[28] गणि आणां 'रजां'[3]॥
वर खुसाला[29] कस्तुजी[30] जोता[31], सती नोरांजी[32] सही।
इक वर्ष में ए पंच अज्जा, छाड पिउ चारित्र ग्रही॥

५७ लघु खुसाला[33] नाथा[34] विजा[35], गोमां जे गणि आणा[36] रही।
वर जशोदा[37] डाहीजी[38] नोजा[39], भिक्षु शिष्यणी चरम ही।
नव तीस अज्जा एह आखी, स्वाम गण में रंग रता।
धन्य-धन्य ज गणि आण साधै, लहै ते सुख सासता॥

कुंडलिया

५८ छूटी अजबू[1] नेतु फुन, फत्तू[3] अखू[4] धार।
वलि अजवू[5] चंदू[6] कही, चैना नाम विचार।
चैना नाम विचार, धनू[8] केली[9] पहिछाणी।
रत्तू[10] नंदू[11]-दत्तू[12] फुन, वना[13] ने लालां[14] जाणी।
जसु[15] चोखी[16] वीरांज[17] थइ, गण थकी अपूठी।
प्रकृति असुभ प्रभाव, सतरै ए अज्जा छूटी॥

---

१. सरूप भीम जय गणपति नी कंडू वै काकी।
२ ५ पोहर आसरै।
३. स्वीकृति।

दोहा

५९ गण में गुणचालीस रही, सतर टली गणवार।
छप्पन ए भिक्षु छतां, अज्जा थई निवार।।

६० उगणीसै चौतीसे आसु, विद पक्ष तेरस जोड करी।
भिक्षु भारीमाल ऋषिराय प्रसादे, जय जश संपति अति सखरी।।

६१ सैहर लाडणूं में चउमासो, मुनि बावीस तिहा जाणी।
छप्पन अज्जा प्रवर सुलज्जा, धर्म वृद्धि परषद स्याणी।।

सोरठा

६२ भिक्षु शिष्यणी जोय, तास जोड तेहनें विषै।
विरुद्ध आयो ह्वै कोय, ते मुझ मिथ्या दुःकृतं।।

इति भिक्षु गणी वरतारे रा सत्यां गुण वर्णन समाप्त।

भारीमाल-शिष्य

ढाल ३

दोहा

१ गणपति भिक्षु रै गुणी, पाटोधर पुन्यवान।
भारीमाल भद्रिक भला, तेरां माहिला जान।।

२ वासी मूहा ग्राम ना, लोढा जाति विचार।
दश वर्षा रै आसरै, द्रव्य दिक्षा अवधार।।

३ रीत हुंती चेलां तणी, भेषधारचा रै माहि।
तिण सू शिष्य भिक्षु तणा, भारीमाल थया ताहि।।

४ च्यार वर्ष रै आसरै, रह्याज भेष मझार।
पाछै भिक्षु साथ भल, सतरे चरण उदार।।

५ पद युवराज समापियो, वर्ष बतीसै ताम।
भिक्षु लिखत करी भलो, शिष्य शिष्यणी गणी नाम।।

६ संवत् अठार साठे समय, पद आचार्य पाय।
अठंतरे परभव गया, भारीमाल ऋषिराय।।

७ भारीमाल छता मुनि, चरण लियो गण माय।
केई रह्या केइ टल्या, तास नाम कहिवाय।।

*पूज्य[1] भारीमाल ना, वर शिष्य लडावो रे।
गुणी गुण गावो रे, गुणी गुण गावो रे।
जे थया आराधक नित्य, तसुं शीश नमावो रे।
गुणी गुण गावो रे, गुणी गुण गावो रे।।
शुद्ध तन मन सेती, गणि आणा चित्त भावो रे।
गुणी गुण गावो रे।।ध्रुपदं।।

---

१. कुछ प्रतियों मे इस गीतिका के प्रारम्भ मे निम्नोक्त एक गाथा और है जो वाद मे जोड़ी गई लगती है :—

भिक्षु साथ चरण व्रत धार्‌या, भारीमाल अणगारो रे।
सवत् अठार अठंतरे अणसण, तसु शिष्य नो विस्तारो रे।।

*लय : हींडै हालो रे·····।

८ वडी पादु रा चरण इकसठे, लोढा नाम जवानो[1] रे।
उगणीसै पांचे दूधोर में, परभव कियो पयानो रे॥

९ वर्ष इकसठे फागुण दिक्षा, चरण पनर पख पाली।
हृद संथारो कर जीवण[2] ऋषि, आतम प्रति उजवाली॥

वार्त्तिका

साचोर नों वासी, ओसवंश श्रीश्रीमाल लहुडै साजन, जीवणजी नाम, केतलै काले तेरापंथी साधु सुण्यां, जाण्यो गुरु देख ने करणा। पछै जोधपुर आया थानक में जैमलजी रा साधा सू चरचा कीधी, सरधा बैठी नहीं, ढीला जाण नै मन फाटो। पछै पाली आय श्रावका नै पूछ्यो—चोखा साधु वतावो। जद श्रावका कह्यो—पूज भीखणजी रा साधु हेमजी स्वामी पाली पधारसी ते थानै समझावसी। पछै आपाढ महिने हेमजी स्वामी पधारया। साधां रो सुध आचार देखी हरष्या, वैराग आयो, कहै दिक्षा लेसूं, मोने घर का आज्ञा देवै अनै आप दिक्षा देवो तो घर में रहिवा रा नेम छै। जाण-पणो सीख नै आपरे ग्राम आया, घर का नै कह्यो दिक्षा लेसूं। माता-पिता भाई कहै आज्ञा देवां नही। जव जीवणजी वोल्या रुपइया ले जासू, साधां री सेवा कर सूं। जव न्यातीला आज्ञा रो कागद लिख दियो। पछै पाली आय श्रावका नै कागद वंचायो। पछै खवर थयां वरलू सूं हेमराजजी स्वामी पाली आया, संवत् १८६१ फागुण सुदि ३ जीवणजी नै दिक्षा दीधी। पछै पीपाड भारीमाल रा दर्शण करी चोमासो जैतारण कीयो। जीवणजी पहिला १६ किया, तीन उपवास कीया, दोय दिन विचै आहार करि नै भाद्रवा सुदि आठम सू सात पचख्या ते भाद्रवा सुध पूनम संपूर्ण थयां। साधां कह्यो पारणो करो। जीवणजी वोल्या भाव नहीं, थोडो अजमो आण दो। जद साधां अचित अजमो आण दीयो, ते अजमो लेइ नै आसोज विद १ सू तेरस तांई तीन आहार ना त्याग कीया। चवदमै दिन संथारो पचख्यो १८ दिन रो संथारो, अणसण ३१ दिन रै आसरै आयो तिण में संथारो आसरै १८

दिन रो जाणवो। त्याग वैराग्य घणो वध्यो, धर्म का उद्योत घणो थयो। इम जीवणजी आत्मां रा कार्य सारचा सं० १८६२ काती विद १ आउखो पूरो कीयो।

सोरठा

१० जीवण दीधी भीक, परभव नै पूरे मते।
साची सरधी सीख, पनरै पख मे कीधी फतै॥
११ जीवण कियो जरूर, संथारो वड सूरमै।
कर्म किया चकचूर, दिन गुणचाली सीझियो॥
१२ सिरियारी नो ताहि, दीपो[3] चरण लेई टल्यो।
फिर संजम ले मांहि, छूटो प्रकृति अजोग थी॥

१३ गुलाव[4] दिक्षा ग्रही नीकल फुन, चरण नेऊअे वासो।
चोराणूअै टल छेद लेइ नै गण, पुर मे परभव तासो॥
१४ गोघूदा ना 'मोजीरामजी'[5], वैणीरामजी पासो।
दिक्षा लेई वर्ष निनाणूंअे, संथारो सुख रासो॥

सोरठा

१५ कंटाल्या नो ताहि, 'जैचंद'[6] त्रिय तज चरण गृही।
शीत वसे गृह आय, पाल्या व्रत श्रावक तणा॥

१६ वड पीथल[7] त्रिय छाडी दिक्षा, वाजोली ना नाहरो।
तप वहु षटमासी लग कीधो, तयांसीये संथारो॥

वार्त्तिका

वडा पीथलजी संवत् १८६६ दिक्षा, तीहंतरे चोमासे तप दिन ४० कीया। चोहंतरे तप ८२ कीया। ७५ तगे तप दिन ८३ कीया। चोहतरे देवगढे १०६। सिततरे पुर में तप चौमासे च्यार मास कीया। अठतरे तप ९९ दिन कीया। गुण्यासीये तप १००, असीये दोय मास, इक्यासीये अढाई मास अने २१ दिन तप। वयांसीयें चोमासे तप दिन १०१,

तयासीये पटमासी तप भीम कनै अनें संथारो सागारी सवा पोहर आसरै सावचेत पणै कीयो। मोटी तपसा वहुल पणै आछ आगारै कीवी अनें उन्हाले घणा वर्ष आतापना लीधी।

सोरठा

१७ सांवल[*] दिक्षा लीध, पाली सैहरे छासठे।
आवी त्रिया प्रसीध, हाकम भृष्ट करावियो॥

१८ गुमानजी रा टोला मां थी, वगतोजी[*] व्रत धारो।
तीमतरे इक सौ इक दिन तप, दिन इकवीस संथारो॥

वार्त्तिका

तिवरी का वासी वगतोजी धाडीवाल, गुरुधारणां तो भारीमालजी स्वामी री पिण सावां रो जोग मिल्यो नही, अने दिक्षा लेवा रा भाव, जद गुमानजी रा टोला रा साधु मिल्या त्यां कह्यो तेरापंथी थानक में न रहै, अने म्हे पिण थानक मे न रहां छा इत्यादिक अनेक वचने ठगवाजी करि दिक्षा दीधी त्यां भेला रहै ते भेपधारी किवाड जडै नै आहार करै, वगतोजी वारा सूं आया वाहिर ऊभा रहै पिण किमाड खोल ने मांहै जावै नही अने ते भेपधारी आहार करि नै वारै आया पूछ्यो-थे वाहिर क्यू ऊभा, माहै आहार करिवा नै क्यू आया नीं ? जद वगतोजी वोल्या—किमाड खोल्यां अजयणा हुवै तिण सूं खोल नै मांहि आयो नही। इम किताक दिन नीकल्या। एक दिन गुमानदासजी रा साधु दुर्गदासजी हुंता त्यांरै साथे विहार कीयो, रसते किण ही नीलोती धांमी जद दुर्गदासजी कह्यो —थारा भाव तो चोखा पिण म्हांनै कल्पै नही। जद वगतोजी कह्यो—स्वामी। आप काहुं कही, आपनै कल्पै नही तो अकल्पती वस्तु धामै तिण रा भाव चोखा किम हुवै, पछै कोई साधां नै स्त्री धामै तो कहै थारा भाव तो चोखा पिण म्हांनै कल्पै नही ए वात किम हुवै। पछै भेख-धारयां सूं मन भागो त्यांनै छोड भारीमालजी स्वामी रा टोला में दिक्षा लीधी। वड वैरागी थयो। सं० १८ तीहोतरे धाकडी चोमासो कीयो, आछ रै आगारे १०१ दिन तपसा रो

पारणो करी थोडा दिनां पछै संथारो पचख्यो दिन २१ रो संथारो आयो। घणो धर्म को उद्योत थयो।

१९ सणदरी रा संतोजी[10] व्रत, अघ नो वहु भय ताह्यो।
संवत् उगणीसै वर्ष वारे, पोहता परभव माह्यो॥
२० गुलावजी रा बंधव ईसरजी[11], सोम्य प्रकृति सुखकारो।
वैणीराम सामी दी दिक्षा, उगणीसैं संथारो॥

वार्त्तिका

नव वर्ष आसरै एकांतर तप कीयो ३४ वर्ष आसरै संजम पाल्यो सिघाड़बंध।

२१ गुमानजी[12] नै दिक्षा दीधी, वैणीरामजी स्वामी।
आंवेट में उगणीसै दश कै, परभव शिव सुख कांमी॥
२२ सरूप[13] भीम[14] जीत[15] त्रिहु बंधव, मात सहित वर दिक्षा।
संवत् अठारै गुणंतरे वर्ष, सैहर जयपुर वर शिक्षा॥
२३ पोह सुदि नवमी सरूप दिक्षा, भारीमालजी सारो।
उगणीसै पणवीसे अणसण, जवर दिशा जयकारो॥
२४ महा विद सातम चरण जीत नै, राय ऋषेश्वर दीधो।
रायचंदजी स्वामी रे, ए पाटोधर सुप्रसीधो॥
२५ फागुण विद इग्यारस दिक्षा, भीम मात संग सारो।
परभव सत्ताणूंअे वर्ष पोहता, उद्यमी अधिक उदारो।

वार्त्तिका

छेदोपस्थापनीय चारित्र पहिला भीम नै दीधो पछै ऋषि जीत नै दीधो।

सोरठा

२६ नंदे[16] दिक्षा लीध, भारीमालजी स्वाम पै।
कर्मे खुराव कीध, अल्पकाल में नीकल्यो॥

२७ वेणीरामजी चरण राम[17] नै, वर्प सत्तरे दीधो।
संवत् उगणीस वर्प उगणीसे, परलोके सुप्रसीधो॥

२८ निशि दिक्षा वर्द्धमान[18] सित्तरे, तप पटमास गुणांणो ।
उदक आगार एक सौ निहुं दिन, चौराणुंअे परलोगो ॥

वार्त्तिका

भारीमालजी स्वामी आसरै आवी रात्रि गया दीक्षा दीधी ।

सोरठा

२९ भवान[19] संजम जाण, भेषधारचा थी आय नै ।
टल्यो तयासीये[1] बाम, पिण गण न सन्मुख रह्यो ॥
३० तिलोकचंद शिष्य ताहि, (रूप) 'उकोनरे दिक्षा ग्रही ।
संकडाइ रै माहि, दुक्कर निण न नीकल्यो ॥
३१ छूटक खुसाल मीस, राहनिग ' नरण ग्रहा वली ।
ऋषिराय वरतार जगीस, चारित्र ने छूटा वली ॥

३२ माणक[20] सैहर केलवै वासी, हींगर जानि पिछाणो ।
चउमासी तप आछ आगारे, लाहवै परभव जाणो ॥
३३ लघु पोथल[21] वे मासी लग तप, जाति चंडाल्या धारो ।
सैहर उज्जैण अठतरे वर्ष, दिवस पनर संथारो ॥
३४ भारीमालजी दीक्षा दीधी, बोहित्तरे उनमानो ।
परभव पनरे वर्ष टीकम[22] ऋषि, मावापुर वसवानो ॥
३५ त्रिया संघाते रत्न[23] लाहवा ना, त्रिय सुत तजि अमीचंदो[24] ।
इक दिन तीहोत्तरे ए दिक्षा, दीधी हेम मुनिंदो ॥
३६ संवत् उगणीसै वर्ष सतरे, सैहर आंवेट मझारो ।
ए गुणपचास दिवस आसरै, सीझ्यो रत्न संथारो ॥
३७ वस्तु सेलडी नी सहु त्यागी, बहु शीत उष्ण सुभ ध्यानो ।
चौविहार दश दिन लग कीधा, घोर तपस्वी जानो ॥
३८ चौविहार पनरै दिन पचख्या, त्रिण दिन उदक आगारो ।
सत्यासीये तीजै दिन[1] परभव, अमीचंद अणगारो ॥
३९ त्रिय संग दिक्षा वर्ष तीहोत्तरे[2], पटमासी वे न्हालो ।
त्राणूअे तेला में परभव, हीर[25] ऋषि गुणमालो ॥

---

१. दूसरी प्रति मे छ्यासिये मिलता है पर पहले की प्रति मे तयासीये है अत: वह ठीक लगता हैं ।

१. तीजै दिन तृखा अति लागी पिण पाणी पीवो नही ।

२. दीक्षा स० १८७४ होनी चाहिए । (देखे, ढा. ४ गा. २९ की वार्त्तिका) ।

वार्त्तिका

हीर तप प्रथम चउमासे १६, दूजै चउमासे ५८ तीजै चउमासे ८,३१,८२ आसाढ सहित, चउथै चउमासे ३१, पचमे चउमासे ६७, छठे चउमासे २४, सातमे चौमासे ६१, आठमे चौमासे १३५, नवमें चौमासे छमासो, दशमें चौमासे ४ मास इहां पिण आसाढ सहित संभवै, इग्यारमे वर्ष इकतीसा षटमास कीया, वारमें वर्ष ११ दिन, तेरमें वर्ष १२६ दिन, चवदमे चौमासे ६२ दिन, पनरमें चौमासे ५१दिन, सोलमे चौमासे ११,५ प्रमुख तप सतरमें वर्ष अढाई मास, ८,१२ कीया, अठारमें वर्ष १८ पाच, चोला,तेला घणा। सेषेकाल पिण मोकलो तप कीयो ए तप कोई आछ आगारे कोई उदक आगारे सर्व में आसरै कहिणो।

४० चीमंतरै दिक्षा सीहावास ना, अति सुविनीत उदारो।
उगणीसे गुणतीसे अणसण, वड [२८]"मोती"[१] गुण धारो॥
४१ जाति वाफणा सैहर लाहवा ना, चरण पचंतरे धांमी।
उगणीसै इग्यारे परभव, [२९]"शिवाजी"[२] शिव नां कामी॥

वार्त्तिका

शिवजी नो तप-४१४ आसरै उपवास, २२ आसरै बेला, इम सर्व जागा आसरै कहिणो। ३४ तेला, ८ चोला, ११ पंचोला, सात वार छ ना थोकडा कीया, तीन वार सात-सात ना थोकडा, ६ अठाई, नव, दश, इग्यारै, वारै, चवदै, पनरै, त्रिण त्रिण बेला कीया। दोय वार तेरै, दोय वार सोलै, वारै वार मासखमण,३२ दिन, ३६ दोय वार, ४० एक बेला, दोढ मास नव बेला, ५० दोय बेला, ५५ एक वार, दोय मास ५ बेला, अढाई मास दोय बेला, नेऊ पाणी रै आगारे एक बेला, १८६ आछ आगारे एक बेला, वहुल-पणै तप उदक आगारे।

४२ सुरगढ ना ऋषि भैर[३०] चरण तसु, जयणां अधिक जगीसो।
अढी मास तप परभव पोहता, उगणीसै पणवीसो॥

---

१. सिंघाडवध।   २. सिंघाडवध

४३ गाम कोचले लघु अमीचंद[11], चरण पिन्नंतर ताह्यो।
चौराणुए वर्ष शहर गोगुंदे, पहुंतो परभव मांह्यो ॥
४४ सुरगढ़ ना त्रिय छांड रत्न[12] सिव[13], कर्मचंद[14] सुकुमारो ।
छिहंतरे वर्ष इक दिन दिख्या, हेम हाथ सुविचारो ॥
४५ मासखमण प्रमुख तप कीधो, रत्न ऋषि गुण धारो ।
परभव उगणीसे मुनि पोहतो, गुरलां में संथारो ॥
४६ संवत् उगणीसै वर्ष तेरे, सिवजी नो संथारो ।
पंच दिवस जल अल्पज पीधो, सप्त दिवस चोविहारो ॥
४७ वार अनेक वतीसी वाची, मास खमण तप सारो ।
उगणीसै वावीसे परभव, कर्मचन्द अणगारो ।

वार्त्तिका

सभाय ध्यान घणो कीयो, भगवती नां भीणा २ थल तेह्नी इधक धारणा जयाचार्य पासे करी। उत्राध्येन दशवैकालिक अनेक सेइकडा वार चितारी ।

४८ वर्स सितंतरे चर्ण हेम पै, सोम्य प्रकृति सुखकारो ।
उगणीसै नवके मुनि परभव, सतीदास[15] गुण धारो ॥

वार्त्तिका

सैहर गोघूदै वाघजी कोठारी धनवान, ज्यारै तीन वेटा-धूलजी १ सतीदासजी २ फौजमलजी ३ त्या में विचेट पुत्र सतीदासजी सौम्य प्रकृति पुन्यवान घणो । दिख्या रा परिणाम पिण सर्म घणी आज्ञा मांगणी दुर्लभ । संवत् १८७५ हेम जीत आदि ६ सावां सू चोमासो गोगुधै । ऋषि जीत पै सतीदासजी घणी चरचा वार्त्ता सीख्यो पक्को थयो, पछै ऋषि जीत सतीदासजी नें कह्यो-परणवा रा त्याग अनें व्यापार रा त्याग थांरा मूह्ढ़ा सूं वखाण में सगला सुणतां प्रगट कर देवो । पछै रात्रि कै समै हेम वखांण वाचतां सतीदासजी सामायक मे उभो थई नैं आसरै सइकड़ां लोकां सुणता कह्यो-म्हारै परणवा रा नें व्यापार करवा रा जावजीव त्याग है, इम कही नै बैस गयो । पछै हेमराजजी स्वामी 'साचो है शील संसार में' ए ढाल री केइ गाथावां कही । पछै प्रसिध

१. सनक ।

बात थई लोकां जाण लीधी। न्यांतीला नैं दोरी लागी, कहै-नींद में 'झक'[1] उठ्यो। पछै कितरायक दिन निकलीयां रात्रि रा वंखाण वाचतां राज वालां आदमी मेल्यो ते आय नै वोल्यो-साधां! ग्राम में रहिज्यो मती, विहार कर जाज्यो। पछै पाछली रात्रि रा भाया आय नै साधां नै कह्यो-आप विहार करो म्हे पिण गांम में रहा नही, गांम छोडवा त्यारी थया। पछै राज वालां सुण्यो गांम रा लोक साधां लारै निकलै है, जद पाछो कहिवायो-साधां बैठा रहो। पछै सतीदासजी नै आज्ञा लेता आसरै तीन वर्स लागा। अनुक्रमे संततरे मह्। सुदि ५ दिख्या लीधी। अनुक्रमे वतीसी वांची, च्यार सूत्र कंठाग्रे कीया, सूत्र नी घणी झीणी २ रेसां हेम समीपे धारी, कंठ कला व्याख्यान री घणी भारी, प्रकृति कोमल घणी, पाप रो भय घणो। संवत् १९०९ कै वर्सें वीदासर में परभव पोहता। तिण रो विस्तार शांति विलास थी जाणवो।

४९ सरूप समीप सितंतरे दिख्या, दीप[36] जीव[37] बेहुं भायो।
वहु तप करि नै वर्स त्राणूए, अणसण दीप सुपायो॥

वार्त्तिका

हिवै वडो जीवोजी दिख्या लीधी तेहनों विस्तार कहीयै छै। सरूपचंदजी स्वामी रो सिघाड़ो भारीमालजी स्वामी कीधो, पाच ठाणां सूं चोमासो पुर भलायो। पछै पुर चोमासे उपगार मोकलो करी विहार कर गंगापुर आया। तिहा रही गंगापुर सू विहार कीयो, लोक पोहचावा नै त्यारी थया जद जीवोजी पिण अंग रखी उतार नै सता नै पोहचावा लारै थयो। हिवै परषदा पोहचाय नै गाम मे पाछी आई एक जीवोजी साथे रह्या, १३ वर्ष री अवस्था आसरै, ऋषि सरूप नैं वन मे कहै-मोने साधुपणो पचखाय देवो, म्हारा भाव घणा तीखा है। ऋषि सरूप कहै-गंगापुर में जाय नैं थारै भाई भोजाई नै पूछ नै पचखांवा। जद जीवैजी कह्यो-अवारू तो म्हारा भाव घणा तीखा है, पछै परिणामा री खवर नही। जद ऋषि सरूप विचारयो जीवाजी रो वडो भाई दीपजी तिण आसरै वर्स पहिला आग्यारो कागद लिख दीयो

१. सनक।

हुंतो ने ६ महिना पछै म्हारो भाई जीवोजी दिख्या लेवै तो म्हारी आज्ञा है, इसो कागद भारीमाल पास हुंतो। तिण मूं ऋषि सरूप साधुपणो पचखायो संवत् १८७७ पोह विद ६। साधुपणो पचखाय नैं एक साधु नै सैहर गंगापुर में दीपजी रे घरे म्हेल्यो सो दीपजी घरे न हुंतो अने दीपजी री स्त्री जीवाजी री भोजाई घरे हुंती तिण नै कह्यो-जीवोजी साधुपणो लीधो, इतरो कही नें साधु सरूपचंदजी स्वामी कनै आय गयो। पछै ऋषि सरूप विहार कर नै कांकरोली भारीमाल ना दर्शण कीया, सर्व हकीकत कही। भारीमाल आदि साधु घणां राजी हुआ। हिवै लारै गंगापुर में दीपजी गामतरे व्यापार नैं गयो सो आयो नें खबर पड़ी सो क्रोध में घणो आयो। पछै आमेट आयो लोकां आगे मन आवै ज्यूं घणों बक्यो, अवगुणवाद घणां बोल्या। लाहवे आदि गांम में घणा लोक साधां री घणी हेलणा करवा लागा, लाहवै रा भाया घणा वैराजी थया। पछै दीपजी कांकरोली भारीमाल, सतजुगी, ऋषिराय कनै आयो। पछै साधां कह्यो-ओ थारा हाथ रो आज्ञा रो कागद है जिण में छ महीना पछै आज्ञा लिखी तिण वात नै वर्स कै आसरै थयो, इत्यादिक अनेक प्रकार करि नै समझायो जद ठंडो पड्यो, राजी हूओ। संता रा वचन सुण नै घणो वैराग्य पायो। स्त्री पिण आई हूंती ते पिण राजी थई। दोनूं जणा सील आदर्यो। पछै विनय सहित कहै-म्हे पिण दिक्षा लेस्या, घणो विनो भक्ति कर संता नै वंदणा नमस्कार कर पाछा गंगापुर आया। हिवै मोजीरामजी स्वामी ठाणा ३ सू राजनगर भारीमाल रा दर्शण करवा आवतां रसता में लाहवे आया, त्यां कितायक दिन रह्या, सो भारीमाल बोल्या-उठै रा भाया तो वैराजी हुंता सो विग्रह चाला में मोजीराम रह्यो, तिण सूं ओ अठै दर्शण करवा नै आवै जद कोइ साधु वंदणा कीजो मती, इम कह्यो। पछै मोजीरामजी स्वामी आया, बाजार मे घणा साधु देखे पिण कोई उंचो हाथ करै नही, पछै आया नै भारीमाल नैं वंदणा कीधी, पछै भारीमाल संता नै हुकम कीयो-अबै वंदणा करो, जद साधां वंदणा करी, इम मान भंग करि घणो ओलंभो दीयो। पछै कह्यो—थे म्हारी मुरजी विना उठै क्यूं रह्या इम कही प्रायच्छित दीयो। पिण मोजीरामजी स्वामी री शासण ऊपर

दृष्टि तीखी घणी तिण सूं मोरचे सैठा रह्या, चलचित हुवा नहीं, अपूठा ज्यांरा गुण दीप्या । अने दीपजी नै दिक्षा देवा नै गंगापुर सरूपचन्दजी स्वामी नै हीज भेज्या । त्या जाय नै दीपजी नै अने दीपजी री स्त्री नैं दिख्या दीधी संवत् १८७७ जेठ सुदि तेरस दिने । वडा ओछव सू दिख्या दे नै भारीमाल रा दर्शण कीया । लाहवै रा भाया पिण भारीमाल रा दर्शण कीया, ते पिण राजी हुवा । जीवैजी तो पोस में दिख्या लीधी हूती अने सतीदास वस्त पंचमी नै दिख्या लीधी पिण सतीदासजी नै वड़ी दिख्या आठमें दिन आई तिण सू सतीदासजी वडा थया अने दीपजी नै वडा करणा तिण सू जीवैजी नै वडी दिख्या छ महीना सू दीधी । दीपजी वडो तपसी थयो । सीयाले १२ वर्ष एक चोलपट्ट रे आसरै ओढयो । ऊन्हाले आठ वर्स कै आसरै आतापना । वले सेषेकाल ७ कीया अने १७ उदक आगारे, दोय मास आसरै बेले-बेले पारणो, सात महीना रै आसरै एकंतर इत्यादि विचित्र प्रकारे शेषेकाल तप कीयो । हिवै चोमासा रो तप वर्णन-प्रथम चोसासे मासखमण, वीजे चोमासे तप ३६ दिन, तीजे वर्स च्यार, मास ५ दिन, चोथे चोमासे एक मास, पाचमें वर्ष पाच ने ५ दिन, छठे चोमासे मासखमण, सातमे, आठमें चोमासे आठ दिन कीया, नवमे वर्स १८६ दिन आछ आगारे कीया, दशमे चोमासे १ मासखमण, इग्यारमे चौमासे दोढ मास, वारमे चोमासे ३६ दिन, तेरमे चोमासे ६ दिन कीया अनें एकंतर दोढ मास ताई कीया, चवदमे चोमासे दश दिन कीया, ए १४ चोमासा में किण ही चौमासा में उदक आगारे तप अने किण ही चोमासा में आछ आगारे तप । पछै संवत् १८६१ फागुण सुदि पूनम ने बेलै २ पारणो धारयो जावजीव तांई उदक आगारे, पनरमे चोमासे छठ २ में एक मास उदक आगारे कीयो, छठ-छठ तो तिमहीज विविध, अभिग्रह कीया । पछै वेला में पाणी पिण पचख्यो कदा पाणी पीवै तो पारणै विगै रा त्याग, वले सतरै द्रव्य उपरंत त्याग कीया, विगै वले तीन उपरत नही लेणी, कारण पडया औषधि रा त्याग कीया, नित्य एक पोहर मूंन साझणी धारी । सोलमो भीलोडे छठ-छठ तप कीयो, विचरत-विचरत पुर सैहर मे आया, कांयक असाता ऊपनीं तव सागारी संथारो पचख्यो । फागुण विद अमावस दिन

पाछिलै दीपजी कह्यो-मौनें तीन आहार ना त्याग जावजीव करावो, पको संथारो पचखाय देवो। जद जीवोजी नें गुलावजी वोल्या-तपसी संथारो दुक्करकार है। तपसी कहै-धान धूलसमान छै, सूरां वीरां नै दुक्कर नहीं, कदा निंद्रा में म्हारा प्राण नीकलै तो हूं बिना संथारे काल करूं, थे दोय मास तांई तो म्हारी चिंता मति करो। इम सुण नैं सहु हरख्या, जीवैंजी संथारो पचखायो। मयाजी आर्य्या वैहन छी तिके पिण छैहडे अवसर आवी मिल्या। छेहडै २२ पोहर नो संथारों आयो पुर सैहर में संवत् १८९३ फागुण सुदि ३ गुरुवार नै परलोक पहुंता। हिवै दीपजी रो भाई जीवोजी तिण री गाथा।

५० जीव ऋषी वहु जोड सूत्र नीं, आमल वद्धमान जगीसं।
चमालीस ओली लग परभव, उगणीसै गुणतीसं॥

५१ चरण मोडजी[३८] वर्स सिततरे, विचित्र तप सुजगीसो।
उगणीसै चौवीसे परभव, सखर चरम ए शीसो॥

वार्त्तिका

संवत् १८७७ चैत सुध ८ दिख्या हिवै तप री विगत-५,६,८, दोय इग्यारै, ३०,३१, २ वतीस, २ तेतीस, ४६,८६,५७, ४७,६३, ७२, २ वाणु, २ पिछंतर, ६४,९१,९३,१०७,१०८, ७६,६६,९०,१८५,१८१, ११ ए तप वहुलपणै आछ आगारे किहांक छाछ पिण सं० १९२४ आयु मृगसर विद १

छंद धमैया तथा रेडक छंद

स्वामी भारीमाल ना सीस भला जी, निज आत्म निस्तारी।
ज्यांकोक भजन कीयां ज्याको भजन कीयां भव पारी॥ध्रुपदं॥

५२ शिष्य जवान[१] थयो धुर सखरो वर्ष इकसठे वारु।
जीवणजी ऋषि[२] ईधक जोरावर, समचित तिरवा सारू।
वलि गुलाव[३] टलगणमै अणसण, मोजीराम[४] सुधारी॥

५३ पृथ्वीराज[५] तपस्वी तप तपियो, सखरो सुजश सवाया।
वखतो[६] मुनि वडो वैरागी, संतो[७] ऋषि सुखदाया।
ईसर[८] वीरम ग्राम चोमासो, तारचा वहु नर नारी॥

५४ गुमान[9] नो उपदेश घणुं वर, सरूप[10] गण सुख स्हाजौ।
पांडव भीम सरिख भीम[11] फुन, जीत[12] तूर्यं पट जाझौ।
रामचन्द[13] वृर्धमान[14] तपस्वी, सन्त माणक[15] सुखकारी ॥
५५ पीथल[16] टीकम[17] रत्न[18] अमीचंद[19], हीर[20] तपस्वी हीरो।
वड मोती[21] नो सुजश वखांण्यु, सिवजी[22] सिवपुर सीरो।
चारू भैर[23] अमीचंद[24] छोटो, रत्नचंद[25] सुविचारी ॥
५६ शिवजो[26] कर्मचन्द[27] मुनि सुगणो, सतीदास[28] सुखकारू।
वारु दीप[29] जीव[30] विहू बंधव, चरम मोड[31] ऋषि चारू।
मुनि इकतीस रह्या गण माहै, आख्या नांम उदारो ॥

दोहा

५७ भारीमाल न शिष्य वली, छूटा गण थी जेह।
दीपो[1] जैचंद[2] सावलो[3], नंद[4] भवान[5] कहेह ॥
५८ रूपो[6] ने रासिंघ[7] ए, टलिया गण थी सात।
एक तीस गण मै रह्या, सहु अड़तीस संजात ॥
५९ भागचंद भिक्षु छता, चरित्र ग्रही टल ताम।
भारीमाल पै चरण ग्रहि, सारचा आत्म काम ॥
६० भिक्षु वरतारा विपै, नाम कह्यो छे तास।
ते माटै इहा तेहनु, न कह्यु नाम विमास ॥

६१ उगणीसै चौतीसे आसु, सुदि वारस भृगुवारो।
भारीमाल ना शिस नी जोडी, जय जश संपति सारो ॥

सोरठा

६२ भारीमाल शिष्य जोय, तास जोड़ तेहनै विषै।
विरुद्ध आयो ह्वै कोय, ते मुझ मिथ्या दुःकृतं ॥

इति भारीमाल गणी वरतारे रा सत गुण वर्णन समाप्त

आहार त्याग्या, दोय दिवस नो अणसण आयो, सैहर कंटाल्यै कार्य सार्‍या संवत् १८६६ वर्से।

सोरठा

७ राही[४] दिख्या लीध, कर्म जोग गण सूं टली।
संजम कठण प्रसीध, कायर सूँ ते किम पलै॥

८ सती खुसालां[५] भीलवाडा नी, केलवा री कुनणा[६] जी धारी।
जोगीदासजी चल्यां चरण तसुं, तास त्रिया अति सुखकारी जी॥

वार्त्तिका

जोगीदासजी स्त्री छोड भिक्षु वारे दिख्या, ते चल्या पछै भारीमाल वरतारे तेहनी स्त्री कुनणाजी दिख्या लीधी।

९ 'सगी वैहन'[१] सतजुगी स्वाम नी, कांकडोली सासर न्हाली जी।
तप वहु वर्ष सतसठे आसरै, दोलां[७] अणसण दीवाली जी॥

१० वड खाटू ना वासी वारु, सोम प्रकृति फुन फुन वुद्ध भारी।
वर संथारो वर्ष छिन्नूअे, "चंदणा"[८] वडी सुजश धारी॥

वार्त्तिका

आसूजी सिघाड़ैवंध संवत् १८६६ आसरै वडा चंनणाजी आसरै १७ वर्स जाझेरी वय संजम लीयो। भारीमाल भणाई गुणाई। अनेक झीणी २ चरचा सीख्या, ग्रंथ हजारा मुहढै कीयो। उपवास वेला तेला वहु कीया, ५,८ आदि दे नै तपसा करी तीस वर्ष तांई आछो उपगार कीयो। इगतीसामा वर्स में विचरत-२ सिरीयारी सैहर आव्या तिहा ऋपिराय नां दर्शण किया। तठे ठाणा ५५ आसरै भेला थया, तिहा एक मास आसरै ऋपिराय दर्शण देई नै विहार कीयो। चंदणांजी सिरीयारी चोमासो कीयो, कांयक कारण जाणी मृगसर में चंदणाजी नै पूज्य दर्शण दीया, तिहां दिन ७ तांई दर्शण कीधा। पछै चंदणाजी सत्यां संघाते कंटाल्ये आया मृगसर मास मे कांयक सास रो कारण थयो जद ऋपिराय ना दर्शण कीधा विना तीनू आहार ना त्याग कीया। जद भायां पयवर में कासीद भेज्यो आसरै ४ पोहर अभिग्रहा में, पछै पको सथारो कीयो तीनू आहारा नां त्याग जावजीव रा कीया, ४

१. दोलाजी सतयुगी की वहिन नहीं, वल्कि भतीजी थी। २. सिंघाडवंध।

पोहर आसरै संथारो आयो। संवत् १८६६ पोह विद ६मीं कार्य सारया सती चंदणाजी। २५ खंडी मांहढी श्रावकां कीधी, संसारिक मोहछव घणां थया।

११ वाजोली रा चरण छासठे, वडी चन्नूजी[९] अवधारी।
उगणीसै चवदे संथारो, चोविहार मुख उचारी॥

व त्तिका

वडा 'चन्नूजी'[१] नै आसुजी दिख्या दीधो, हीरांजी नै सूंपी। तिणां कनै रहै, वखांण वांणी री कला तीखी, सूत्र तीस वाच्या। चौथ छठादिक घणा कीया तीन वार सोलै-२ कीया, वरसोवर्षे दस पचखाण कीया। सीयाले तीन पछेवडी छोडी तीस वर्स आसरै। अने घणा वर्स तांइ पंच विगै त्यागी एक कढाई विगै मास में ५ दिन राखी। वहु वर्स विचरी। छेहडै संथारो चोविहार निज मुहढा सू पचख्यो। दोय महुर्त्त आसरै अणसण आयो राजनगर में उगणीसै चवदे पोह सुदि ४ परभव पहुंती वडी चन्न जी।

१२ वीसलपुर ना चरण अडसठे, मासखमण तप चिहुं भारी।
अणसण वर्स अठयासीये वारु, सती जसूजी[१०] सुखकारी॥

वार्त्तिका

जसूजी सीतकाले वहु वर्सा लग सी खम्यो। सरल भद्रीक घणी। चोथ छठ आदि उपवास घणा कीया, ४ मासखमण आसरै किया। वीस वर्स आसरै संजम पाल्यो। छेहडै अणसण कीयो सौ दोय दिन रो अणसण आयो संवत् १८८८ लाडणु में कार्य सारया।

१३ वोरावड नीं सती खुसालां[११], अणसण कर पोहती पारी।
वाजोली री सुत तज गींगा[१२], चेलावास वर संथारी॥

---

१. सिंघाडबंध।

१४ सुरगढ़ तणी खुसालां[1] सखरी, चारित्र लीधो धर प्यारी।
श्रीजीदूवारे सखर संथारो, वर्स त्राणूंअे हितकारी ।।
१५ तोसीणा रा चरण पीउ तज, छोटी "चत्रू"[1] सुविचारी।
उगणीसै तेरे आणंदपुर वर अणसण, पोहती पारी ।।
१६ वोरावड ना सती फतूजी[1], उत्तम अणसण सुविचारी।
ए 'विहुं सतियां'[2] इक दिन दिख्या, लीधी अति हीमत धारी ।।
१७ रंभाजी[1] कालु कुडकी रा, जाति श्रावगी जयकारी।
उगणीसै पनरे संथारो, वली 'खोड' तणी पन्ना[1] धारी ।।
१८ सरूप भीम जीत नी माता, वर्ष गुणंतरे व्रत धारी।
समत अठार सत्यासीये अणसण, सती कलूजी[1] तप भारी ।।

वार्त्तिका

सती कलुजी रो तप वर्णन-पांच आठ १५,१७,२०,२५, मासखमण पांच, तिण में अल्प सो 'पाणी पीधो।'[3] उपवास बेलादिक घणां कीया। इम सोलै वर्स लग विचरया। कायक सांस रो कारण देखी विचारयो—हिवै सलेखणा करणी सिरै, तो पहिला तन तोल नै मुख वारे वात काढू, इम चितव नैं 'परख्या'[4] निमते ऊंणोदरी करी आत्मवस देखी हरख्या, हाथ जोड नैं ऋषिराय सूं अरज करी—'इच्छा हुवै तो तपसा करूं। ऋषिराय कहै—छती शक्ति मे उतावल इती क्यू करो। सती सूरापणे कहै—तप री मुझ मन हुंस छै, हिवडा तीखा परिणाम छै तिण सू कृपा कीजै। साधु साध्वी घणा वरजै, श्रावक श्रावका पिण वरजै, पिण मान्यो नही। घणी हठ सू आज्ञा लेई एक मास तांई अधिक उणोदरी करी। दिन मे एक फलका रे आसरै लीयो जाणीजै। वहु कष्ट सह्यो। केयक एकंतर कीया, केइक उपवास छूटा कीया, पछै तेलै-तेलै पारणो मंड्या, विच में आठ वेला किया। पारणें अल्प सो आहार लीयो एक फलका रै आसरै। तेला ५० रै आसरै, तेला रै पारणे २ फलका रै आसरै, केइ तेला चोविहार कीया। काया खंखर कीधी। पछै पूज्य

१. सिंघाडवन्ध
२. चत्रूजी, फतूजी
३. दोढ सेर आसरै सुणियो।
४. परीक्षा।

पधारचा दर्शण दीया, तीनूं सुत आया, खैरवै संत सत्या रा ठाणा ४३ थया। पूज्य दर्शण देनैं विहार कीयो। वली तप करणो मांड्यो—पोस विद में पैहला तो पांच दिन पचख्या, पांचां मांहै दस दिन कीया, दस दिनां में पनरै कीया, पनरा मांहै एक मास पचख्यो, तिण में दिन प्रतै अद सेर पांणी रे आसरै पीधो। सात चोविहार कीया। ए तप करचो तिण में पांणी पीधो पिण आछ लीधी नही। हिवै इग्यारा रो थोकडो कीयो, एक अठाई करी एक तेलो कीयो तिण में अल्प आछ लीधी। तीन मास आसरै एकातर कीया। घणा दिन अधिक ऊणोदरी करी। तप कर नै तन सूकाय खंखरभूत कीयो। सावण सुदि तेरस पाछिले पोहर असाता ऊठी मुख सू बोल्यो न जाय जद सत्यां सागारी अणसण करायो। एक पोहर आसरै संथारो आयो, सं० १८८७ श्रावण सुदि १३ सैहर खैरवे कार्य सारचा कलूजी सती।

१९ वालांजी[19] आउआ ना वासी, पीउ तज संजम हितकारी।
नगां[20] गुणतरे चरण सु अणसण, उगणोसै एके वारी॥

वार्त्तिका

नगांजी बोरावड़ ना वासी सं० १८६९ आषाढ महीने वागोट मे आसुजी कनै दिख्या लीधी। पछै तप कीयो—आसरै सतरै चोमासा में एकंतर कीया। तेला, चोला, पांच, छ, सात, आठ, नव, दश, इग्यारै कीया। दोय वार तेरै-२ कीया। वले वीस उदक आगारे,कीया। सतरै सीयाला में दोय पछेवडी छोडी। तेरै सीयाला में एक पछेवडी ओढी। सरल घणी, हस्तुजी कनै रहै, विचरत-२ सबलपुर में आया। कारण अधिको ऊपनो सती समभावे सहै, घणी वेदना जाण नै सत्यां सागारी संथारो करायो। सती सरध लीयो, हाथ जोड नै अगीकार कीधो। दोय पोहर आसरै अणसण आयो, संवत् १९०१ श्रावण सुदि पूनम परलोक पहुंती। इकतीस वर्स रै उपरै संजम पाल्यो। सबलपुर में श्रावका मांढी आदि महोछव संसारचां कीधा नगांजी सती रा।

२० सैहर पाली नी सती उमेदा[21], वीदासर अणसण भारी।
चरण सत्तरे [22]रत्नाजी[1] फुन, सत्यासीये आयु धारी॥
२१ चनणा[23] चारित्र वर्षं सतरै, सत्यासीये पोहता पारी।
पच्यासीये अणसण केसरजी[24], माधोपुर नां विहुं धारी॥
२२ गैनाजी[25] गोपालपुरा ना, पीउ छोड संजम भारी।
तप वहु कीधो वर्स चौरांणूअे, सथारो तसु सुखकारी॥
२३ गंगा[26] नोजां[27] ए दोनूंई, फत्तू तणी चेली धारी।
चरण लेई नै वर्स गुण्यांसीये, संथारो वर सिरीयारी॥
२४ सती गैनांजी री देरांणी, पियर विदासर सेखांणी।
कांकडोली में परभव पहुंती, सती वनांजी[28] सुखदांणी॥
२५ वाजोली रा चरण इकोतरे, सती जतनांजी[29] सुखकारी।
संथारो वोरावड सखरो, निज आतम प्रति निस्तारी।
२६ दीप जीव नी वहिन मयाजी[30], चरण वोहितरे सुविचारी॥
उगणीसै तीये वर्ष परभव, सैहर लाडणू सुखकारी।
२७ सती मघूजी[31] सरल विजाजी[32], गाम सणधरी रा वारी॥
परभव उगणीसै आठे मधु, पछै विजां पौहती पारी॥

सोरठा

२८ पछिम थली नी पेख, अमियाजी[33] व्रत आदरचा।
काली कर्म कुरेख, तिण सू अपछंदी थई॥

वार्त्तिका

अमीयाजी नै दिख्या अजवूजी दीधी। तिण रे गीगाजी सूं जिलो देख्यो जद त्यानै कह्यो दोनू न्यारी २ रहो, भेली एक सिघाडे मति रहो। जद मान्यो नही, आचार्य री आज्ञा न पाली, जद दोया नैं छोड दीधी। पछै अमीयांजी तो ग्रहस्थणी थई अनें गीगांजी प्राछित लेई पाछी गण में आय चेलावास संथारो कर पार पौहती। तेहनो विस्तार पहिला कह्यु हुंतो।

---

१. ग्राम-डीडवाणा।

२८ वर्स वोहितरे चरण [1]"दीपांजी", ऋषिराय तणी मुरजी भारी।
उगणीसै अष्टादश अणसण, पढी भणो वहु जश धारी॥

वार्त्तिका

हिवै जोजावर में सौमोसाह, तें पहिली परणी, तिणे दूजी दीपाजी नै वरी। थोड़ा दिना में चल गयो तिसे आसूजी संवत् १८७२ आया, जठे दीपांजी नैं समझाया दिख्या दीधी। पछै भारीमाल ना दर्शण कीया। अनुक्रमे सूत्र सिद्धात भणी, कंठ कला वखाण री घणी, ऋषिराय री पूर्ण मुरजी, सूत्र ३२ वांच्या, झीणी रहिसां री जांण, चरचा दृष्टंत देवा री कला घणी, स्वमत्या अणमत्यां में प्रसिद्ध। घणी सत्यां नै संजम दीयो, घणां श्रावकां नै व्रत अदराया, घणा जणा नै सुलभ कीया। तिण रै छोटो भाई माणकजी, तिण पिण संजम लीयो, वडो तपसी थयो। सं. १९०८ ऋषिराय परलोक पधारचा तो ही जयाचार्य दीपांजी रो तोल राख्यो। छैहड़ै कारण थयो, सं. १९१८ आमेट में भाद्रवा विद ५ दोय घडी दिन आसरै चढचां संथारो कीयो, भाद्रवा ७ निशा संथारो सीझ्यो। २० पोहर आसरै संथारो आयो, परिणाम घणा चढता रह्या। सोले वरस री वय में दिख्या लीधी। आमेट मे कार्य सारचा सती दीपाजी।

सोरठा

२९ लाहवा ना वसवान, रत्न त्रिया साथे दिख्या।
वर्ष तिहोत्तरे जान, पाछै पेमा[1] नीकली॥

वार्त्तिका

सं० १८७३ मृगसर विद ६ अमीचंदजी तपस्वी पुत्र त्रिया छोड अनें रत्नजी जिण रै स्त्री तिण रो नाम पेमा या तीनां हेम हाथे एक दिन दिख्या पछै कर्म जोगे पेमा गण सू निकली।

---

१. सिघाडवंध।

३० संवत अठारै वर्ष तिहोतरे, हेम हाथ चारित्र धारी।
नदू[36] अकन कुंवारी किन्या, भणी वखाण कला भारी ।।

वार्त्तिका

नंदूजी पाडिया रा गृहस्थ रा कपड़ा सहीत, हेमराजजी स्वामी साधुपणो पचखाय नैं जोताजी नैं सूपी। पछै जोताजी साधा रा कपड़ा पैहराया ते 'पाडियारा'[1] वस्त्र तिण रा वाप नै सूप्या।

३१ कठार ना नवलांजी[37] कहियै, पीयर काकड़ोली धारी जी।
चरण हीर त्रिय[38] "कमल"[2] चिमंतर, संथारो वीये सारी जी ।।

वार्त्तिका

भिक्षु नी शिष्यणी व्रजूजी, तेह कनै कमलू दिख्या लीधी सं० १८७४ स्त्री भरतार साथे भरतार ते हीरजी वडो तपसी थयो। अने कमलू पिण हजारा ग्रंथ मुढै सीख्या। सरल भद्रीक, विवध तपस्या करी, घणा सूत्र सिधात वाच्या। घणां जीवा नै सुलभवोधी कीया, घणा नैं श्रावक रा व्रत दीया, केकां नै दिख्या दीधी। विचरत २ पुर सैहर आया, कायक कारण ऊपनो, हिवै भाद्रवा विद ७ पाछलो दिन दोय मुहूर्त्त उनमांन छतां मुख सूं संथारो पचख्यो। आसरै साढा च्यार पोहर पछै आयु आयो सं० १९०२।

३२ लघु पीथल री बेटी नवलां[39], सत्यासीये अणसण धारी।
दोला[40] वर्स पिचतरे दिख्या, खोड़ तणा ए सुविचारी ।।

३३ वोरावड ना चरण छिहंतरे, सती उमेदां[41] सुखकारी।
समत् अठार निंनाणूवे आयु, निज आतम प्रति निस्तारी ।।

३४ वोरावड ना चरण सतंतरे, सासरिया सिघी धारी।
उगणीसै दसे संथारो, नोजां[42] पुर पोहती पारी ।।

---

१. प्रातिहारिक (जो गृहस्थ को वापस सौंपे जा सकते है)।

२. सिंघाडबंध।

३५ नांनसमा रा चरण सतंतरे, सती मगदूजी सुविचारी ।
सखर सात दिन नो संथारो, उगणीसै सतरे धारी ॥
३६ चरणसतंतरे दीप मुनि त्रिय, सुगणी चत्रूजी समणी ।
सप्त पोहर संथारो नेउवे, चरम चेली भारीमाल तणी ॥
(चरम चेली दीर्घमाल तणी) ॥
३७ भारीमाल थकां ए दिख्या, आवी च्यार अनें चाली ।
राही-अमियां पेमा छूटी, गण मांहे रही इकताली ॥
३८ एक कुमारी किन्या नन्दू, आगूजी चत्रू सारी ।
वाहलाजी नें गैनाजी फुन, ए त्रिहुं पीउ प्रति परिहारी ॥
३९ संजम 'तीन सजोडे'[1] सखरो, 'वैहन भाई फुन' वे[2] धारी ।
'त्रिहुं सुत एक माता'[3] वलि संजम, भारीमाल नै वरतारी ॥

छन्द-धमैया

४० आसू[1] झूमां[2] अने सती हस्तू[3] सुखकारी ।
सखर कुसालां[4] सुमति, निमल कुनणा[5] नै तारी ।
दोला[6] चंदणा[7] देख, वडी चत्रू[8] बुद्धिवंती ।
जसू[9] खुसालां[10] जाण, सती गींगां[11] चित शान्ती ।
चित चरण कुशाला[12] फुन चत्रू[13], सुमन फतू[14] रंभा[15] सती ।
वलि पन्ना[16] कलू[17] नो पवर तप, समणी वाहलां[18] सोभती ॥
४१ नगा[19] उमेदां[20] न्हाल, सती रत्नांजी[21] साची ।
चदणां[22] केसर[23] चतुर, चरण रस गैनां[24] राची ।
गंगा[25] नोजा[26] गुणी, वना[27] जतनाजी[28] वारु ।
मयाजी[29] मघू[30] गुणमाल, चरित्त वीजा[31] चित चारु ।
दीपां[32] जु सती अति दीपती, नंदू[33] कुंवारी कन्यका ।
भव तरण चरण नवलां[34] भली, धारयो धर्म सुधन्यका ॥
४२ कमलू[35] कंत सहीत, पवर दिख्या दीपंती ।
नवला[36] गुणनिधि न्हाल, सती दोला[37] सोभंती ।
सुजश उमेदा[38] सार, वली नोजां[39] लजवंती ।
मगदू[40] चरण सु मंड, पवर चत्रू[41] पुन्यवंती ।
गणि आण एक चालीस गण, स्रमणी सखर सुजाणियै ।
पट द्वितीय कही अज्जा पवर, वारु सुजश वखाणियै ॥

---

१. १. रत्नजी २. दीपजी ३. हीरजी ए तीन स्त्री सहित दिक्षा लीधी ।
२. वेहन भाई ना जोड़ा—माणकचंदजी ने दीपाजी, जीवोजी ने मयाजी ।
३. १. सरूपचदजी स्वामी २. भीमजी स्वामी ३. जयाचार्य महाराज ए तीनू भाई माता कल्लूजी महासत्याजी ।

दोहा

४३ भारीमाल छतां भली, अज्जा इकचालीस ।
मुनि इकतीस सुहामणा, गण मे रह्या जगीस ।।

४४ सप्त संत चारित्र ग्रही, गण सुं टल्या अयाण ।
अज्जा तीनज नीकली, सर्व वयांसी जाण ।।

४५ उगणीसै चोंतीसे कार्त्तिक, विद अष्टम पुण्य चंद्रवारी ।
सखरी जोड करी सतीया नी, जयजश संपत सुखकारी ।।

सोरठा

४६ भारीमाल नी जोय, शिष्यणी तेहनी जोड में ।
विरुद्ध आयो हुवै कोय, ते मुझ मिथ्या दुःकृतं ।।

इति भारीमाल वरतारे रा सत्या गुण वर्णन ।

५

आर्य्या-दर्शन

ढाल १

(सं० १९०८ शेषकाल एवं १९०९ का विवरण)

दोहा

१ भिक्षू मर्यादा भली, वाधी[1] सखर सुजाण।
शेषेकाल चौमास पिण, रहिवो सुगुरु आण॥

२ चौमासो उतरिया पछै, गुरु दिश करणो विहार।
सुखे समाधे रीत ए, छल वल दूर निवार॥

३ साठे भिक्षु स्वामजी, सखर कियो संथार।
भारीमाल अठंतरे, अणसण अधिक उदार॥

४ मुनि इकवीस सुहामणा, समणी सत्तावीस।
मेली ने परभव गया, भिक्षू गण ना ईश॥

५ वर पैंतीस मुनिस्वरु, समणी इकतालीस।
मेली परभव 'पांगर्या', भारीमाल 'जगीस'[2]॥

६ तीजे पट ऋषराय जी, माह विद चवदश जाण।
उगणीसै आठे समय, परभव कियो प्रयाण॥

७ एक सौ तयालीस आसरै, समणी महा सुखदाय।
मुनि सतसठ मूकी करी, पहुंता परभव मांय॥

८ पूज परभव पहुंता पछै, आठे वर्ष मझार।
मुनि पोखर दिख्या ग्रही, समणी थई इग्यार॥

९ छोडचो एक हुकमा भणी, समणी मघू सोय।
गींगां वाजोली तणी, परभव पहुंती दोय॥

१० वर्ष आठै रा अंत में, इक सौ वावन जोय।
समणी महा सुखदायनी, साधू सतसठ सोय॥

११ आतमवश जेहनी घणी, गुरु दर्शण रो कोड।
त्यागी वेरागी वडा, कवण करै तसु होड॥

१२ लोलपणो जेहनै नही, सुगुरु प्रीत अधिकाय।
ते सेवा में रति लहै, अन्य नैं कठण अथाय॥

---

१. पधारे। २. स्वामी।

२६ वड मगदूजी च्यार ठाणां सूं, वृद्ध असक्ति विशेषं ।
सात दिवस आसरै दर्शण, कीधा हरष अशेषं ॥
२७ आठ ठाणां सूं लघु मगदूजी, ए पिण चैत मभारं ।
दिन बावीस आसरै दर्शण, कीधा हरष अपारं ॥
२८ लघु मगदू चौमासे सतियां, रोडां पनरै कीधा ।
वीठोडा वाली चंदणाजी, चवदै दिवस प्रसीधा ॥
२९ पांच ठाणां सूं मया महासती, मास वैसाख मभारं ।
वर दर्शण 'दिवस'[1] आसरै, कीधा हरष अपारं ॥
३० च्यार ठाणां अमृतां विजांजी, आप वृद्ध अधिकेरा ।
तीन मास आसरै दर्शण, कीधा हरष घणेरा ॥
३१ कंकूजी पिण तीन ठाणां सूं, आणी अधिक हुलासं ।
वर दिन पनरै आसरै दर्शण, कर धारचो चौमासं ॥
३२ आंख तणो कारण चंदणाजी, अज्जा तीन 'पठाई'[2] ।
सात दिवस आसरै गुर पद, प्रणमी नै फिर आई ॥
३३ नवठांणां सू जीउ चौमासो, दिवस आसरै सातं ।
दर्शण कर चौमासो धारी, विहार कियो 'रलियातं'[3] ॥
३४ कुनणाजी पिण नव ठांणां सू, दर्शण करवा आया ।
सात दिवस दर्शन कर नैं, चौमासो धारसिधाया ॥
३५ षट ठाणा सू मोताजी दिन, सात आसरै जाणी ।
'हित'[4] दर्शणगणपतिना कीधा, सुगुरु आण अगवानी ॥
३६ तीन ठांणैं म्हैताव कुंवर, गणपति रै पासे आई ।
दिन तेवीस आसरै दर्शण, कर नै आप सिधाई ॥
३७ षट ठाणा सू रंगूजी दिन, पनर आसरै देखं ।
वर दर्शण गणपति ना करनै, विहार कियो सुविसेखं ॥
३८ लघु नंदूजी च्यार ठाणां सूं, सवा मास उनमानं ।
दर्शण कर चौमासो धारी, विहार कियो धर ध्यानं ॥
३९ द्वादस ठांणा जोवनेर में, सिरदारा सुखवासं ।
चौमासो कर सुगुरु समीपे, रह्याज आठू मासं ॥
४० सिरदारा चौमासे सतियां, चंदणा लछू जाणी ।
सोलै सोलै दिवस कियो तप, कुनणा दश पिछांणी ॥

१. दिन की सख्या लिखी हुई नही है ।
२. भेजी ।
३. सानंद ।
४. हितकर ।

४१ समणी तीन लाडणूं सैहरे, पाली चिहुं चौमासो।
ए उगणीस अज्जिका, सिरदारांजी संग हुलासो।।
४२ पांच ठाणां सूं सेरांजी पिण, दर्शण करिवा आया।
आठ दिवस आसरै गुरू पद, प्रणमी नै हुलसाया।।
४३ नवलांजी पिण च्यार ठांणां सूं, आया गणपति पासं।
दिवस एक चालीस आसरै, दर्शण किया हुलासं।।
४४ सर्व एकसौ वावन अज्जा, नवके आदि निहालं।
गणपति आणा मांहि रमंतां, सतसठ मुनि सुविसालं।।
४५ पनर तेवीस मुनि अज्जा ना, वर चौमास जगीसं।।
विहु चंदणां एक सरूप भेलो, सर्व क्षेत्र अडतीसं।।
४६ तिण वर्षे इक मुनिवर दिख्या, दोय मुनि कियो कालं।
पंच अज्जिका परभव पहुंती, नव दिख्या गुणमालं।।
४७ चंदणांजी डाहीजी छूटी, हिवै नवकारै अंतो।
सर्व एकसौ चौपन अज्जा, छासठ मुनी महंतो।।
४८ उगणीसै चवदे वारस विद, चैत लाडणू सैहरे।।
मुनि गुणतीस एकसौ पंच, अज्जिका महासुख लैहरे।।
४९ नव का वर्ष तणी समणी नी, सखर जोड सुख साझी।
भिक्षु भारीमाल ऋषराय परतापे, जयगणि संपति जाझी।।

सोरठा

५० नवका वर्ष रै आदि, सतसठ संत हुतां सही।
पंडत मरण समाधि, ते वर्ष वे मुनि तणो।।
५१ गोघूदा ना जांण, सतीदास चरण सतंतरे।
मृगसर विद नवमी पिछाण, परभव वीदासर मझै।।
५२ सुत त्रिय तज व्रत सार, उत्तमचद इक्यासीये।
वगडी सैहर मझार, परभव मांहि पागरचा।।
५३ तुसांम ना अग्रवाल, पुत्र पोतरा छोड नै।
जैपुर चरण विसाल, जय गणि पै कातिक मझै।।
५४ नवका वर्ष रै आदि, इकसौ वावन अज्जिका।
सात 'विरह'[1] नव 'वाध'[2], विगत कहू छू तेहनी।।

---

१. घटी।

२. वढी।

५५ राजलदेसर माहि, पीहरिया सिणगार ना।
ससुर लाडणूं ताहि, कार्तिक चरण सरूप पै ॥

५६ वोहिथरा वीकानेर, मृगसिर में मघू दिख्या।
पियर लाडणूं सैहर, सहजावत जय पै चरण ॥

५७ सीसोदा रा तांम, जात कछारा जांणजो।
पियर कडोली गांम, कंकू दिख्या माह मझै ॥

५८ जसोदां वीकानेर, डागा जाति कहीजियै।
पियर देशणोक सैहर, दिख्या माह में जय कनै।

५९ जाति खीवसरा जांण नवलां गंगापुर तणी।
पियर वेमाली मांण, वोहरा फागुण में चरण ॥

६० वेमाली वोहरा जात, पियर मोखणुंदा मझै।
'खेम चरण जय 'भ्रात[1]', वडी दिख्या दिन आठमें ॥

६१ वैद मूहता वर जात, सेरा डीडवांणा तणी।
माह में चरण विख्यात, वडी दिख्या चिउं मास थी।

६२ लाडणू तणा गुलाव, दूगड जाति सुदीपती।
जेठ चरण जय हाथ, त्रिहुं मासे कीधी फतै ॥

६३ ससुर भलावत जात, चत्रुजी रायपुर तणी।
आसाढ मे अखियात, दिख्या मोताजी कनै ॥

६४ ए नव दिख्या देख, नवके समणी नी थई।
आगल वात असेख, चित्त लगाई साभलो ॥

६५ पांच पहुंती पर लोग, उगणीसै छकै दिख्या।
सिरदारा सुभ जोग, वेगाणी वीदासर तणा ॥

६६ जीउ जीउ रै पास, पांचे चरण रिणी मझै।
पादू मे चौमास, परभव मांहे पांगरी ॥

६७ लिछमा पिउ नै छोड, दिख्या लीधी त्राणूअे।
ससुर सांमसुखा जोर, रतनगढ परभव गई ॥

६८ अठचासीये व्रत धार, रिधू सुजाणगढ रा।
धाडीवाल सुखकार, पाली में परभव गया ॥

६९ वगतू कालूं मात, पुत्र सहित व्रत आदरचो।
आठे श्रावगी जात, पुर अणसण नव पोहर नों ॥

---

१. खेमांजी को मुनि स्वरूपचन्दजी ने दीक्षित किया।

७० ए पांचू परलोग, बे छूटी ते वर्ष में।
डाही कर्म संजोग, चंनणां कांकडोली तणी ।।
७१ इम नवका रे अंत, इकसौ चौपन अज्जिका।
गणपति आण रमंत, जय जश मंगल मालिका ।।

ढाल २

(स० १६१० का विवरण)

दोहा

१ दसा वर्ष का आदि मे, छांसठ मुनि सुविशाल।
एकसौ चौपन अज्जिका, संत सत्या गुणमाल ।।
२ संवत उगणीसै दशे, सतियां दर्शण कीध।
विगत कहूं छू तेहनी, वारू विनय समृद्ध ।।

*ए तो सतियां वडी सयाणी रे, सुगुरू आण अगवांणी।
ज्यां री जाभी कीरत जांणी रे, परम दिशा पंहिछांणी ।। ध्रुपदं ।।
३ श्रीजीदुवारे जय गणपति पै, सिरदारांजी चौमासं।
अज्जा पनरै विवध तपोधन, अधिक विनय गुण रासं ।।
४ सप्त थांवले च्यार खेरवे, समणी भणी चौमासं।
ए छवीस अज्जिका, सिरदाराजी संग हुलासं ।।
५ आठ ठाणै वड चत्रू वृद्धा, समणी भणी पठाई।
पनरै दिवस आसरै दर्शण, कर फिर मरुधर आई ।।
६ लघु चत्रूजी षटठाणां सू, आय सक्या नही आपं।
सतिया नै पिण नाही मोकली, थिर कारण नीथापं ।।
७ रंभाजी पिण चार ठांणां सू, वृद्ध असक्ति सुहोई।
मरुधर सूं मेवाड सुगुरु पै, आय सक्या नही कोई ।।
८ दीपांजी सतरै ठांणै था, च्यार अज्जा नै मेली।
पांच दिवस आसरै दर्शण, कर गुरू आंणा झेली ।।
९ दीपांजी ग्यारै ठांणा सूं, चीतोड मे चौमासं।
हमीरगढ जेतां षट ठांणै, वरणवियै तप रासं ।।
१० गैनांजी इकतीस किया, सुदरजी पनरै जाणी।
नाथांजी रा माता जैता, त्रेसठ किया पिछाणी ।।

*लय : ए तो जिन मार्ग रा नायक रे.....।

११ हस्तु तीस रामूंजी पनरै, सेऊ दश सुखदाई।
मूलां तीस मलूकाजी पिण, तीस दिवस सिवसाई॥
१२ वड नंदूजी दश ठांणां सू, पाच दिवस परिमाणं।
दर्शण कीधा माघ मास मे, सिरधारी गुरू आणं॥
१३ भीलोडे नंदू पास सरूपां, द्वादश दिन तप कीधा।
सीता दोलां मूलां मैहकां, मास मास जश लीधा॥
१४ वडा मगदूजी च्यार ठांणां सू, एक मास उनमानं।
गुरू दर्शण कीधा सुभ चित सूं, सुगुरु आण सुखस्थानं॥
१५ लघु मगदूजी सात ठांणां सू, सतगुरु दर्शण कीधा।
दिवस पचास आसरै वांण, सुधा-रस प्याला पीधा॥
१६ कांनोड मे लघु मगदू पासे, रोडांजी इकवीसं।
वीठोडा वाला चदणाजी, कीधा तप दिन तीसं॥
१७ मया सती पिण च्यार ठाणां सू, आया सतगुरू पासो।
दिवस पचास आसरै दर्शण, कर धारचो चौमासो॥
१८ रीछेड चिउं ठांण मयाजी, गंगा पिउ तज चरणं।
दिवस अठारै किया दीपता, विजां सोल सुवंरणं॥
१९ सती अमृतां विजा वृध पिण, च्यार ठांणां सुखदाई।
तीन मास आसरै दर्शण, कीधा पीत सवाई॥
२० कंकूजी पिण च्यार ठाणा सू, गुरूपद प्रणम्या आणं।
दिन चालीस आसरै दर्शण, कीधा भाग प्रमाणं॥
२१ देवगढ कंकूजी कहियै, चंपा दिन एकतीसं।
वाजोली वाला चंदणा जी, कीधा दिवस इकवीसं॥
२२ चंदणाजी चक्षु कारण सू, मूकी त्रिण सुअज्जा।
आठ दिवस आसरै दर्शण, कीधा आण 'सकज्जा'[1]॥
२३ दशठांणां चंदणां बेहु ठामे, डीडवाणे डाभगामं।
पिउ तज संजम धर हस्तू तप, दिन-एकवीस आरामं॥
२४ आठ ठांणां सू जीऊजी पिण, त्रिऊं अज्जा मूकी तासो।
सात दिवस आसरै दर्शण, कर धारचो चौमासो॥
२५ कुंनणाजी पिण नव ठाणां सूं, माघ मास सुखदाया।
एक मास कर दर्शण आछो, चित संतोपज पाया॥

१. सुप्रयोजन।

२६ पुर नव ठाणा कुनणांजी पै, फत्तू च्वदै न्हाली।
अनांजी दिन सोल तपोधन, लिछमां काग चाली ॥
२७ दिन छत्तीस किया नाथाजी, एक अठाइ एजाणं।
वगतावरजी दिवस इग्यारै, हुकमां सोल प्रभणं ॥
२८ अढी मास आसरै आछा, गुरु ना दर्शण कीध।
सात ठांणा सूं मोतांजी, वचनामृत प्याला पीधा ॥
२९ मोतांजी गंगापुर ग्यारा, रूपकुवर नव नीका।
डीडवाणा री सेरां पनरै, वरजू सात सधीका ॥
३० च्यार ठाणा महतावकुवर, एक मास आसरै आछा।
दर्शण कीधा वंछत सीधा, धारचा गुरु वच जाचा ॥
३१ कृष्णगढ पै चिउं ठाणां, म्हेतावकुंवर दिन आठं।
कुनणाजी वाजोली वाली, तेरा दिवस सिव वाटं ॥
३२ षट ठाणा सूं रंगूजी पिण, आणी हरप उमंगा।
दोय मास आसरै दर्शण, कीधा है चित चंगा ॥
३३ रंगूजी षट ठाण केलवे, अमरू द्वादश कहियै।
रूखमाजी दिन आठ किया वर, सुगुरु आण सुख लहियै ॥
३४ लघु नंदूजी पांच ठाणां सू, दिन वावन उनमानं।
दर्शण कर चौमासो धारचो, धर सिर आण निधानं ॥
३५ लघु नंदू ठाणैं पांच वणेरे, पंदराडा नी रंभा
दिन त्रेसठ तप कियो दीपतो, दूर करी चित 'दंभा'
३६ सेराजी पिण सात ठाणां सू, हरप धरी गुरु [illegible]
दोय मास आसरै दर्शण, करनै चित आ[illegible]
३७ सात ठांणै नवैनगर सेरां पै, कुनणां दिन गुण[illegible]
मनां सतरै भांनाजी दश, गणपति आणां सीस[illegible]
३८ नवलांजी पिण च्यार ठांणां सू, एक मास चित चंगे
गणपति ना दर्शण कर, चौमासो धारचो उचरंगे।
३९ पाली वाली नवल दौलतगढ, हस्तू करी अठाई
कुनणां सोल सुरताजी दश, गणि आणा जश पाई।
४० सर्व एकसौ चौपन अज्जा, दशकै आदि निहालं
गणपति आणा माहि रमंता, छासठ मुनि सुविशालं ।

---

१. छद्म।

४१ पनर चौवीस मुनि अज्जा ना, इक गणि पास जगीसं ।
दीपां चंदणां जीउ ना वेबे, सर्वक्षेत्र अडतीसं ॥

४२ तिण वर्षे दिक्षा चिउ अज्जा, तीन अज्जिका कालं ।
तिणहीज वर्षे डाही दिक्षा, फिर निकली दुख आलं ॥

४३ दशकै वर्ष दिक्षा त्रिहुं मुनि नी, पिंडत मरण त्रिहुं पाया ।
पंच जणा गण वाहिर निकल्या, इक पाछा गण आया ॥

४४ दशकै अंत एकसौ चौपन, अज्जा सखर सनूरी ।
छासठ समण अधिक सुखदाई, प्रीत सतगुरु सू पूरी ॥

४५ उगणीसै चवदे चवदश विध, चैत लाडणू वारू ।
इकसौ पंच अज्जिका आछी, तीस संत तत सारू ॥

४६ दशका वर्ष तणी सतियां नी, सखर जोड जय साभी ।
भिक्षु भारीमाल ऋषराय प्रतापे, गणपति संपति जाभी ॥

सोरठा

४७ दशा वर्ष रै आदि, छासठ मुनि सुजाण जो ।
अंत वासठ अहलाद, विगत कहू छू तेहनी ॥

४८ जीवण वृध वय मांय, वासी मोखणूदा तणो ।
त्रिया छोड व्रत पाय, मारू गोत तसु वाफणा ॥

४९ पनालाल पोरवाल, राम हीर सिव सहोदरू ।
सुत त्रिया तज व्रत न्हाल, वासी ते सूरवाल नो ॥

५० ए 'वेहुं'[1] दिक्षा सार, दश का वर्ष मांहि थई ।
त्रिहुं मुनि पाम्या पार, नांम कहूं छूं तेहना ॥

५१ देवीचन्द त्रिया साथ, उगणीसै पांचे दिक्षा ।
गुमांन वृध विख्यात, मृगसर परभव वेहुं मुनि ॥

५२ पंचाणूए व्रत न्हाल, टीलो ऋष कुल मेंसरी ।
चीत्तोड गोत नूंवाल, परलोके आषाढ में ॥

---

१. इस वर्ष तीन दीक्षाएं हुई थी—१. मुनि जीवणजी (१६९) २. पन्नालालजी (१६८) ३. सदासुखजी (१६७)। सदासुखजी उसी वर्ष गण से अलग हो गए थे ।

देखें गा० ४१, सो० ८ ।

५३ तीन थया गण वार, धनो हमीर नन्दजी।
विण पूछै हुआं 'खुवार'[1], 'अजेस'[2] पाछा नाविया ॥

५४ दशै वर्ष में देख, सदासुख फिर ग्रही थयो।
'चेतन'[3] टली अलीक, फिर गण आवी डंड लियो ॥

५५ एवं वासठ संत, दशका रै अंते रह्या।
समणी नो विरतंत, विगत कहूं छूं तेहनी ॥

५६ दशका वर्ष रे आद, इकसौ चौपन अज्जिका।
चिहुं चारित्र अहलाद, लीधो नांम कहूं तसुं ॥

५७ वड चत्रुजी री वैन, दिक्षा लीधी ईडवे।
धर चारित्र चित चैन, वर्ष सित्तर के आसरै ॥

५८ नाम छगीनां जाण, जाति सुराणा सासरचा।
पिहरीया सिंघी पिछांण, मृगसर विद ग्यारस दिक्षा ॥

५९ कुनणां चरण उदार, पाली सासर वापणा।
अनोप सुतन वहु सार, वहु धन तज व्रत आदरचा ॥

६० नानसमा रा पेख, व्रत अमृतां आदरचा।
जाति छोटावत देख, पिहरचा स्याल कहीजियै ॥

६१ ए चिहुं दिक्षा न्हाल, त्रिहु अज्जा परभव गई।
गुलाबांजी सुविशाल, दूगड ते लाडणूं तणा ॥

६२ मगनाजी री माय, नंदूजी लीधी दिक्षा।
छकै वर्ष सोभाय, दशकै परभव पुर मझै ॥

६३ नोजां सतंतरे वास, वोरावड सिंधी सासरचा।
अणसण पुर मे तास, पौहर पैताली आसरै ॥

६४ एवं दशरै अंत, इकसौ पचपन अज्जिका।
गणपति आण रमंत, 'जय जश' हरप वधारणा ॥

ढाल ३

(स० १९११ का विवरण)

दोहा

१ ग्यारा वर्ष रा आदि में, वासठ मुनि सुविसाल।
इकसौ पचपन अज्जिका, संत सती गुणमाल ॥

---

१. खराव।
२. अभी तक।
३. मुनि जीवराजजी (११३)।

२ हिव इग्यारा वर्ष में, सतियां कर चउमास ।
दर्शण कीधा सुगुरु ना, वरणवियै जस वास ॥

*आछी आचरज नी आण, सतियां पालती जी लाल ।
आज्ञा पालती जी लाल, दोषण टालती जी लाल ॥
गर्व सुगालती जी लाल, अवगुण जालती जी लाल
मग उजवालती जी लाल, वारु गणपति नी मर्याद,
सतियां पालती जी लाल ॥ ॥ ध्रुपदं ॥

३ वारू गणपति पास हुलास, ठांणै तीस थकी सिरदार ।
सेषे काल अने चौमास, वारु संत सत्यां सुखकार ॥
वारु संत सत्यां विश्वास ।
च्यारू तीरथ मांहि उजास, पूरण पुन्य तणो सुप्रकास ।

सोरठा

४ जयगणि पै रतलांम रे, तीस किया लिछमां सती ।
दूजी सिरदारां तांम, तप दिन सोलै दीपता ॥

५ वीजराज नी मात, तप चौती सिणगार नो ।
चौला पंच षट सात, और सत्यां नो छै अधिक ॥

६ चत्रु आठ ठांणैं सुविचार, दर्शण तीन दिवस लग सोय ।
छोटी चत्रुजी षट ठांण, रंभा च्यार ठांणैं अवलोय ॥
रंभा च्यार ठांणैं अवलोय ।
दोनूं वद्ध अवस्था जोय, दर्शण करण न आया कोय ।

सोरठा

७ वडा चत्रुजी पास, सेरांजी सतरै किया ।
ऊमां आठ हुलास, गुलांबाजी ग्यारै किया ॥

८ सौलै ठांण दीपांजी संग, दर्शण च्यार दिवस लग जांन ।
नन्दू दश ठांणै सुविसाल, दर्शण वीस दिवस उनमान ।
दर्शण वीस दिवस उनमान ।
मगदू अठ दिन आसरै जान, वारू दर्शण महा सुविधान ॥

---
*लय : म्हारा दादाजी की पोल ..... ।

सोरठा

९ दीपांजी पै देख, तीस मनूकाजी किया ।
सुंदर चवद सपेख, गमं ग्यारा जाण जो ।।

१० लघु जैताजी तीस, 'अमा'[1] नाथाजी तणां ।
हस्तू जी सैतीस, भीलोडे चौमास में ।।

११ वड नंदू दशगंण, इकवीस रंभा सुखां किया ।
पनर सरुपा जाण, पनर तप पन्ना तणां ।।

१२ दोलां सीता देख, तीस तीस तप सुंदरू ।
लच्छू सोना पेख, सात मास नो थोकडो ।।

१३ आसरै दिवस अठावीस सार, छोटो मगदू किया उमंग ।
मया सात दिवस उनमान, अमृता वीजांजी रस रंग ।
अमृता वीजांजी रस रंग ।
आसरै तीन मास चित चंग, इण रै अधिक होंगे उछरंग ।।

सोरठा

१४ लघु मगदू चांणोद, मास खमण रोडां कियो ।
चंदणां वीस प्रमोद, चंपाजी पट दिवस तप ।।

१५ मया देवगढ माहि, वीस दिवस वीजा सती ।
पनर अमृता ताहि, मासखमण गंगा तणो ।।

१६ अमृता विजां उदार, चौमासो कानोड मे ।
चिउठांणै सुविचार, तिहां ऊमां सतरै किया ।।

१७ [1]कंकू दिन अठ आसरै देख, च्यार ठांणां मू दर्शण कीध ।
चंदणा दश ठाणा सुविसेख, जीउ आठ ठांणै सुप्रसीध ।।
जीउ आठ ठाणै कहिवाय, कारण दोनूं रे अधिकाय ।
तिण सू आवणी आयो नांय ।।

सोरठा

१८ कंकूजी प जोय, चंपाजी सतरै किया ।
चनणां पनरै सोय, लघु कंकू वारै किया ।।

१. माता ।

१६ पनां तीन ठाणां सूं आय, आसरै पनरै दिवस प्रमाण।
कुनणां नव ठांणा सू ताय, इकवीस दिवसआसरै जाण।
इकवीस दिवसआसरै जाण
मोतां दोय मास उनंमान, षट ठाणै दर्शण गुणखान।।

सोरठा

२० कुनणांजी रै पास, अनाजी चौती किया।
वगतावर लिछमां मास, द्वादश हुकमा दीपता।।
२१ मोतांजी पै जोय, रूप कुवर चवदै किया।
आठ तीजां अवलोय, चत्रु सात नों थोकडो।।

२२ ठांणै तीन हूंती म्हैताव, आसरै सात दिवस दरसाय।
रंगू षट ठांणै कहिवाय, कारण सेती आया नाम।
कारण सेती आया नाय।
छोटा नंदू चिउ संग आय, आसरै नव दिन दर्शन पाय।।

सोरठा

२३ नंदू आठ जगीस, नोजां द्वादस दिन किया।
एकसौ ने वयालीस, तप भारी रंभा तणो।।
२४ रंगू पास जगीस, गंगापुर चौमास में।
रुखमाजी इकतीस, अमरूजी पनरै किया।।

२५ सेरा पांच ठाणै सू पेख, दर्शण आसरै द्वादश दिन्न।
नवलां पांच ठाणै सुविसेख, आसरैं नव दिन दर्श प्रसन्न।
आसरै नव दिन दर्शण प्रसन्न।
ज्यांरै गुरु दर्शण सू मन्न, त्यारो जीतव जन्म सुधिन्न।।

सोरठा

२६ सेरा पास जगीस, मास खमण कुनणा कियो।
भांनांजी पणवीस, सैहर थादले जांणियै।।

२७ द्वादश संतां ना चौमास, तेवीस समणी ना सुखकार।
गणपति पासे एक उदार, आणां स्वाम नी जी सार।
आणां स्वाम नी जी सार।
चदणां जीऊ ना बे बे सुधार, आख्या खेत्र चौतीस मझार।।

२८ आखी वर्ष इग्यार नी आदि, समणी एकसौ पचपन सार।
साधु वासठ महा सुखकार, दिख्या वर्ष इग्यार मझार।
दिख्या वर्ष इग्यार मझार।
समणी पंच हुई गुणधार, परभव पहुता समणी च्यार।।

२९ साधु दोय हुआ इकतार, पिंडत मरण त्रिहुं मुनि पाय।
निर्लज एक नीकलियो वार, तेतो जग में फिट फिट थाय।
जग में फिट फिट हुवै गुण सुन्न, ग्यारा वर्ष नै अंते सुजन्न।
समणी एक सौ छप्पन्न, साठ मुनि स्वर गण में प्रसन्न।

३० उगणीसै चवदै सुदि चेत, एकम लाडणू सैहर मझार,।
एक सौ पांच अज्जिका सार, साधु पैंतीस था तिण वार।।
साधु पैंतीस था तिण वार।
जोडी 'जय जश' करण सुसार, गणपति संपति महा सुखकार।।

सोरठा

३१ ग्यारा वर्ष रे आदि, इकसौ चौपन अज्जिका।
वासठ मुनि अहिलादि, विगत कहूं ते वर्ष नी।।

३२ 'एक थयो अणगार'[1], अग्रवाल रांमरत्न जी।
भीयाणी तणा उदार, चैत विद वारस दिने।।

३३ तीन मुनि कियो काल, रामां सैहर गूदोच रो।
छठ छठ तप गुण माल, चौविहार अणसण सुखे।।

३४ शिव ल्हावा नों सार, विविध तपे तन तावियो।
'षट मासी बे वार'[2], छिहंतरे व्रत आदरयां।।

३५ तुसाम ना रांमदत्त, नवके व्रत लीधा हुंता।
पंडित मरण पवित्त, ग्यारै वर्षे पांमिया।

---

१. इस वर्ष साधुओं की दो दीक्षाएं हुई—मुनि रामरतनजी (१००), शिवलालजी। शिवलालजी उसी वर्ष गण से पृथक् हो गये। देखें, सो० ६।

२. ख्यात आदि सभी कृतियों मे एक वार ही छह मासी करने का उल्लेख है।

३६ ग्यारा नैं . वर्ष तास, शिवलालजी व्रत आदरचा।
छूटो तिण हिज वास, वर्षान्ते मुनि साठ इम ।।
३७ ग्यारा नैं वर्ष दीख, चिमन भतीजी ने सुता।
कुंवारी विहुं तहतीक, रतलांमे जय पै दिख्या ।।
३८ सासरिया श्रीमाल, पियर आंमेट चंडालिया।
वृधु दिख्या न्हाल, मृगसिर सुदि वारस दिने ।।
३९ सूरा सेठिया गोत, देवगढ माह में दिख्या।
वागोरनी चपलोत, लालाजी वैसाख में ।।
४० ए पांच दिख्या न्हाल, पंडित मरण चिउ पामिया।
तास विगत सुविसाल, चित्त लगाई सांभलो ।।
४१ सरसां सासरिया वैद, वासी ते लाडणू तणा।
उगणीसै बीये सुमेद, तिण दिख्या लीधी हुंती ।।
४२ कोसीथल री जाण, कोठारयां रा घर तणी।
चौके दिख्या पिछाण, नोजाजी नीका सती ।।
४३ दोलांजी दिल सार, वैद म्हता रा घर तणी।
पिछंतरे वर्ष अठार, संजम भद्र सुहांमणी ।।
४४ हीरालालजी साथ, जैताजी व्रत आदरचा।
उगणीसै अखियात, ग्यारे परभव पांगरचा ।।
४५ इम इग्यारा रै अंत, इकसौ छप्पन अज्जिका।
गणपति आण रमंत, जय जश संपति अमल सुख ।।

ढाल ४

(स० १९१२ का विवरण)

दोहा

१ वर्ष वारा का आदि में, साठ मुनी पहिछाण।
इकसो छप्पन अज्जिका, शासण महा गुण खांण ।।
२ हिव वारा रा वर्ष में, सतियां कर चौमास।
गुरु दर्शण कीधा तसू, आखू विगत विमास ।।

*सतियां स्याणी रे, सतियां स्याणी रे—

गुरु आण अराधै कीरत तास वखांणी रे ।।स० ।
मर्याद अखंडत पालै ते अगवाणी रे ।। स० ।
गुरु कठण सीख दै तो पिण हिय हुलसांणी रे ।।स० ।
वस करै आतमा ते वहु जाण कहाणी रे ।।स० ।ध्रुपदं।।

---

*लय : गणी गुण गावो रे……।

३ उदियापुर जय गणपति पै, सिरदारांजी चौमासो रे।
समणी इकतीस ठाणा सू, सेवा सदा उलासो रे।
४ चौमासे तप विविध प्रकारे, छठ अठमादि वधाता।
सिणगारा दश पांच कियो तप, वीजराज नी माता ।।
५ फत्तूजी पनरै दिन कीधा, कुनणाजी तप सोला।
षट अठम दशम अधिकेरा, विनय रस 'झाक झवोला'।
६ वड चत्रुजी आठ ठांणा सू, काकडोली चौमासो।
एक पख उनमांन सुगुरु ना, वर दर्शण सुख वासो ।।
७ वड चत्रूजी पास गुलावा, नव दिन कीधा नीका।
ऊमाजी इग्यारै कीधा, सेरू पनर सधीका ।।
८ लघु चत्रुजी षट ठाणै वृद्धा, त्रिण अज्जा नै मेली।
दिवस तेर आसरै दर्शण, कर गुरु आणा झेली ।।
९ लघु चत्रु पै चपा सोलै, दश सिणगारा स्याणी।
द्वादश सिरदारां चादू नव, हस्तू पनर वखांणी ।।
१० रंभाजी चक्षु कारण वृद्धा, चिहुं ठांणै अवलोयो।
आय सक्या नही गणपति आगे, तेहनो दोष न कोयो ।।
११ दीपाजी सोलै ठाणा था, चवद दिवस उनमांनो।
गुरु दर्शण कर नै चौमासो, धारचो सखर सुजानों ।।
१२ दीपांजी पै पुर मे तपसा, मलूका दिन इकवीसो।
मासखमण वलि कियो दीपतो, मगना मास जगीसो ।।
१३ दिवस वतीस वड जेताजी, गोघूदा रा ग्यानी।
चूनाजी पनरै दिन कीधा, फेर सात नव जानी ।।
१४ इकसौ पणवीस झूमांजी, सुदर साठ सुहाता।
लघु जेताजी इकसौ बावन[1], नाथाजी री माता ।।
१५ वर इकसौ ऊपर सतंतर, गैनाजी तप गाजै।
चौमालीस किया रामू, हस्तु षट मास विराजै ।।
१६ वड़ा नन्दूजी नव ठाणा सू, सुगुरु समीपे आया।
सवा मास आसरै दर्शण कर, संतोषज पाया ।।
१७ वड नंदूजी पै लछूजी, तप दिन सात जगीसो।
पंनांजी वावीस किया नें, दोलाजी सैतीसो ।।

---

१. जयसुजश ढा०४३ गा० २२ मे छह मासी का उल्लेख है, पर यह पहले की कृति होने से १५२ दिन का उल्लेख यथार्थ लगता है।

१८ सतर सरूपां कीधा सखरा, सोनां नव सुजगीसो।
सीता नें म्हेकां मूलांजी, दिन पैंतीस पैंतीसो ॥

१९ वड मगदूजी च्यार ठांणै था, वृध असक्ति पिछाणी।
वर दश दिवस आसरै दर्शण, कीधा उचरंग आंणी ॥

२० वड मगदूजी पासे वारू, पन्नांजी ने गंगा।
तेर तेर दिन किया दीपता, रोडा चवद सुरंगा ॥

२१ लघु मगदूजी सात ठाणै सू, वखतगढ चौमासो।
पनर दिवस आसरै दर्शण, कीधा आण हुलासो ॥

२२ लघु मगदू वगतगढ में, रोडां दिन इकत्रीसो।
चंदणांजी दिन पांच किया वर, गणपति आणा सीसो ॥

२३ पांच ठांणां सू मया महासती, लाछूडे चौमासो।
आठ दिवस आसरै दर्शण, कीधा आंण हुलासो ॥

२४ लाछूडे महासती मया पै, तेर वीजां चित चंगी।
दिन पैताली किया अमृतां, गगा साठ सुरंगी ॥

२५ सती अमृता वीजां वृद्धा, कोठारचे चौमासो।
तीन मास आसरै दर्शण, सखर प्रीत जग वासो ॥

२६ सती अमृतां वीजां समीपे, ऊंमा तीस सुजांणो।
'पनर वलि तिणहीज चौमासे"[1], परभव कियो प्रयांणो ॥

२७ कोसीथल चौमासे कंकू, पच ठाणा सू पेखो।
सवा मास आसरै दर्शण कीधा, हरप विसेखो ॥

२८ पंच कंकूजी आठ सूरता, लघु कंकूजी वीसो।
चंपा चदणा मासखमण तप, गणपति आण जगीसो ॥

२९ दश ठांणै चंदणाजी कहियै, अज्जा भणी पठाई।
ग्यारै दिवस आसरै दर्शण, सुगुरू आण सवाई ॥

३० चदणां हस्तु पादू ईडवै, चंदणाजी दश कीधा।
ऋधू नव ओटांजी सतरै, हस्तू द्वादश सीधा ॥

३१ जीऊजी पिण सात ठांणै था, एक मास उनमानो।
दिन वतीस आसरै पन्ना, त्रिहुं ठांणै दर्शानो ॥

---

१. यहाँ 'पनर 'नवल' तिणहीज चौमासे' .... होना चाहिए। क्योंकि इस वर्ष दिवंगत होने वाली साध्वियो मे एक नवलांजी (२८५) थी।

[पीछे देखें, सो० १४]

३२ कुंनणांजी पिण आठ ठांणा सूं, मालव देश मझारो ।
गणपति आणा सूं चौमासो, आय सगला नहीं सारो ॥

३३ कुंनणां पै नाथा अना दश, नवदै किया सुजाणां ।
लिछमाजी चौतीस किया, हुकमा इकवीस प्रमाणां ॥

३४ छ ठांणै मोतांजी कहियै, सुगुरु सरीखे आगा ।
दोय मास आसरै दर्शण, कीधा हरष सवाया ॥

३५ मोताजी पट ठाण केलवै, रूपकुंवर गुणनामो ।
तीजा इकवीरा, सेरा सतरै, गुरु सन्मुख नव दीनो ॥

३६ महतावकुंवर तिहुं ठाणै रायपुर, द्वादश दिन 'निज'[1] ठानो ।
दिवस दश आसरै दर्शण, कर रत्नागर भागो ॥

३७ छ ठांणै रंगूजी दर्शण, दिन सातां उनमानो ।
पाच दिवस आसरै दर्शण, लघु नदू तिहुं ठाणां ॥

३८ गोघूदे रंगूजी पासे, रतना दिन इकतीसो ।
अमरूजी इकवीस कियां तप, गुरु आणा धर सीसो ॥

३९ गाम पहुने नदूजी वर, मासखमण तप कीधो ।
पटमासी रंभाजी कर नै, जग मांहे जश लीनो ॥

४० पांच ठांणै सेरा दर्शण दिन, एकावन उनमानो ।
पाच ठांणै नवला दिन च्यार, आसरै दर्श प्रधानो ॥

४१ चित्तोड मे मेरां चौमासो, कुनणा मनां जगीसो ।
मास मास तप कियो दीपतो, भांना दिन इकवीसो ॥

४२ गगापुर नवलां पै हस्तू, पनरै दिन तप ठायो ।
रोडा पट कुनणा पंच कर, वैशाखे परभव पायो ॥

४३ सर्व एकसौ छप्पन अज्जा, द्वादश आदि निहालो ।
गणपति आणा माहि रमंता, मुनि साठ गुणमालो ॥

४४ 'वार चौवीस मुनि अज्जा ना, सखर चौमास जगीसं ।
इक गणि भेलो वे चंदणा ना, सर्व क्षेत्र चौतीसं'[2] ॥

४५ तिण वर्षे दिख्या पंच अज्जा, वलि परभव पंच अज्जा ।
द्वादश अत एकसौ छप्पन, अज्जा उत्तम लज्जा ॥

---

१. स्वय ने ।

२. स० १९१२ की चातुर्मासिक तालिका मे साधुओ के १२ और साध्वियो के २२ चातुर्मास है । सरदार सती का जयाचार्य के साथ होने से चातुर्मास स्थान कुल ३३ (१२-२१) होते हैं

४६ द्वादश वर्षे दिक्षा दोय मुनि नी, परभव पद बे पाया ।
इक छूटो इम द्वादश अते, गुणसठ मुनि गुणाया ।।

४७ द्वादश वर्षे तणी समणी नी, सखर जोड सुख साभी ।
भिक्षु भारीमाल ऋषराय प्रतापे जय गणि सपति जाभी ।।

४८ उगणीसै चवदे चैती पूनम, वारु धर्म वधाता ।
मुनि पणवीस पच्यासी समणी, सुजांणगढ सुख साता ।।

सोरठा

४९ वारा वर्ष रे आदि, इकसौ छप्पन अज्जिका ।
साधू साठ समाधि, विगत कहूं ते वर्ष नी ।।

५० पादू रा वसवांन, हंसराजजी हद करी ।
आंचलिया पहिछान, पुत्र पोतरा छोडिया ।।

५१ पंडित मरण बे पाय, मारू वासी 'करेला'[1] तणा ।
रूपचंद मुनिराय, एके चरण लियो हुतो ।।

५२ सतीदासजी (सतोजी) सत, वासी ते सणदरी तणा ।
आचारी गुणवत, अठार छचांसठे दिख्या ।।

५३ विहारी तिणहिज वास, दिख्या ले छूटी गयो ।
द्वादश अते तास, एव गुणसठ मुनि रह्या ।।

५४ पाच दिख्या प्रमाण, सुरगढ ना वासी सही ।
जात वाफणा जाण, छोटाजी दिख्या ग्रही ।।

५५ साकरजी श्रीमाल, वासी चीवडे गांम ना ।
नोजा मगदू न्हाल, दक वरार पीपली तणा ।।

५६ तीनू नै इक दिन्न, जेठ विद नवमी दिने ।
दीधो चरण प्रसन्न, गगापुर ना जीवजी ।।

५७ नानूजी पिण जाण, निमांणी आसाढ मे ।
सुदि तेरस पहिछाण, चरण फलोधी सू लियो ।।

५८ परभव पच हुलास, उगणीसे एके दिख्या ।
हस्तू कर षट मास, श्रीमाल चीवडा नी सती ।।

५९ कुनणांजी पोरवाल, उगणीसै तीये दिख्या ।
माधोपुर नी न्हाल, परभव माहै पांगरचा ।।

---

१. करेड़ा ।

६० देवीचंद त्रिय साथ, कुनणांजी पांचे चरण ।
पालो माहै विख्यात, जाति सुरांणा जेह नी ॥
६१ सासर श्रीजीदुवार, चरण अठार पचांणूए ।
पियर गोघूंदे सार, जश धारक जैता सती ॥
६२ खीवसरा हद खेत, उगणीसै नवके दिख्या ।
वर नवलां नो वेत, अणसण जय-भ्राता मुखे ॥
६३ इम वारा नै अंत, इकसौ छपन्न अज्जिका ।
गणपति आण रमंत, जय जश संपति साहिवी ॥

ढाल ५

(सं० १९१३ का विवरण)

दोहा

१ वर्ष तेरा ना आदि में, गुणसठ मुनि सुविशाल ।
इकसौ छप्पन अज्जिका, संत सती गुण माल ॥
२ हिवै तेरा ना वर्ष में, सतियां कर चउमास ।
दर्शण कीधा सुगुरु ना, वर्णवियै जश वास ॥

*देखो स्वाम शासण छिव सोहती ।
अमल चित्त मर्याद आराधै, ज्यारी वाधै कीरत अति ओपती ।
नीत निपुण निमल चारित्रिया[1], देखो प्रभु शासन छिब सोभती ॥
इकतालीस कहि ए अज्जा, देखो स्वाम शासण छिव सोहती ॥ध्रुपदं॥

३ अरे सुगणा ! पाली जय जश पास चौमासं, च्यार तीस ठांणैं सुख वासं ।
सिरदाराजी अधिक हुलासं ॥
गणपति पास कियो गुण माल, अखंड आण आत्म उजवालं ।
पाछै आठूं मास विलासं ॥
नवलां सात ठाणैं चौमासं, सैहर फलोधी अधिक हुलासं ।
सिरदारांजी संग प्रकाशं ॥

४ †पाली में तप वडा हस्तु दश, किया दिल रंग सू ।
सरूपा दिन सात चिमनां, पाच तप चित चंग सू ॥
५ सात गोमां चवद गंगा, ग्यार मोतां जाणियै ।
सोल रोडा बे सिणगारां, मगन घट घट माणियै ॥

*लय : अरे कनवा गउ चरावत वन वन डोलै ......।
१. चारित्रवान् साधु-साध्वी ।
†लय : पूज मोटा भाजै ।

६ सात दूजी सिरदारांजी पनर मघू पेखियै ।।
अपर वौहली अज्जिका, वर दशम भक्त विसेखियै ।।

७ फलवधी तप ग्यार फत्तू दश जसोदां दीपती ।
वार कुंनणां दशम द्वादश, अपर तप तन जीपती ।।

८ अरे सुगणा! आठ ठांणै चत्रु वृद्ध अज्जा, मूकी सतियां तीन सकज्जा ।
तीन दिवस दर्शण वर लज्जा ।
पांच ठांण छोटा चत्रुजी, दोढ मास दर्शण हृद पूजी ।
अंत समै अति संवली सूजी ।
गणपति आण रंमंती सतियां, देखो स्वाम शासण छिव सोहती ।।

९ वडा चत्रु पै गुलावां, कैलवे द्वादश किया ।
ऊमां नव दिन सतर सेरू, आठ ठाणै जश लिया ।।

१० लघु चत्र इड़वा मे, तीस चंपाजी सती ।
सिणगार ग्यारै हस्तु सोलै, पनर सिरदारा वती ।।

११ अरे सुगणा! च्यार ठांणै सू समणी रंभा, दिन तेवीस दर्श तज दंभा ।
वय वृद्ध पिण अति नीत अचंभा ।
चवद ठांण दीपांजी जाणी, सतिया मूकी सखर सयांणी ।
दिन पणवीस दर्श चित ठांणी ।
वडी नंदू रो लेखो हिव सुणियै, राखो स्वाम शासण दृढ आसता ।
पंडित मरण मंडै पिण सुगण न छडै ते लहै अविचल सुख आसता ।
हो गुणवंत गैहर गंभीरा धीरा, राखो प्रभु शासण री आसता ।।आंकडी।।

१२ वृद्ध रंभा च्यार ठाणै, मांढा रा चौमास में ।
अमेदां इकतीस कीधा, सतर लिछमां हरष में ।।

१३ दीपांजी पै पनर गैना, सोल रामू अठ चुनो ।
पनर झूम मलूक सुदर, जैत वत्तीसै गुनो ।।

१४ अरे सुगणा! तीस दिवस आसरै तीखा, नव ठाणै वर दर्शण नीका ।
नंदू कीधा सखर सधीका ।
वड मगदू चिहुं ठांणै नाया, वृद्ध असक्ति पणै कहिवाया ।
लघु मगदू पट ठांण सुहाया ।
दोयमासआसरै दर्शण कीधा, देखोस्वामशासन छिवसोहती ।।

१५ वड नंदू पै पनर सोनां, तेर तप पन्नां तणो ।
म्हेकां रू मूंलां सीता दोलां, मास मास सुहांमणो ।।

सोरठा

तप मगदू पे सार रे, पन्नाजी पनरै किया ।
गंगा किया अग्यार, गणपति आणा गिरधरी ।।

१६ अरे सुगणा! मया च्यार ठांणै मन वाली, दिन चालीस आसरै न्हाली ।
गुरु दर्शण कर पाप पखाली ।
सती अमृता विजां सयाणी दिन दश दर्श आसरै जाणी ।
गुरु सेवा में अधिक पिछाणी ।
पिण गुरु सिघ्र विहार करायो त्यानै, देखो स्वाम शासन छिव सोहती ।।

१७ चौमास वाजोली मया पै, बावीस अमृता नव विजां ।
त्रिऊं ठांण अमृतां रावलिया मे, पनर तप ऊमां अज्जा ।।

१८ अरे सुगणा! च्यार ठाणै कंकू चित चाया, दिन पणवीस आसरै पाया ।
गुरु दर्शण कर हिये हुलसाया ।
चंदणाजी नव ठांणैं चंगा, एक मास उनमान अभंगा ।
सतगुरु सेवा सखर सुरंगा ।
गणपति आण आरावै ते गुण गिरवा, देखो स्वाम शासन छिव सोहती ।।

१९ कंकूजी सिरियारी ग्यार चंपा, वलूदे कानू मझे ।
नव ठांण चंदणा ऋवू वर, चौमास विचित्र सुतप सजै ।।

२० अरे सुगणा! छ ठांणै जीऊ चोमासो, वर गुरु दर्शण रो विश्वासो ।
दिन उगणीस आसरै जासो ।
पना तीन ठांणैं कहिवाया, दोढ मास आसरै पाया ।
कुंनणां आठ मालव थी आया ।
दिन पाच आसरै दर्शण कीधा, देखो स्वाम शासन छिव सोहती ।।

२० जीउ पास छिगना तेर मूलां, सोल रत्नां मास ।
चौमास भावी पनां पासे, पनर सूरां तास ।।

२१ मालवे कुनणाजी पै तप, चवद कुंवर सुजांण ।
लिछमा अनां वगतावर हुकमा, मास मास दिनमांण ।।

२२ अरे सुगणा! पट मोतां गुरु दर्शन मेवा, दोढ मास उनमांन धरेवा ।
सखर चित सू कीधी सेवा ।
म्हेताव कुंवर चिहुं ठांण चौमासं, एक मास दर्शण विश्वासं ।
गणपति आण अखंड प्रकासं ।

रंगूजी षट ठांण सुजाणं, दर्शण पंच दिवस उनमानं।
लघु नंदू चिहु ठाण विज्ञानं।
दिन वीस आसरै दर्शण कीधा, देखो स्वामशासन छिवसोहती।।

२३ मोता कंटाल्ये ग्यार तीजा, आठ सेरा जांणियै।
अमृताजी किया द्वादश, वारू तप वखाणियै ।।

२४ 'दूघवर'[1] में, म्हेतावकुवर, वर तेर दिन तपसा करी।
लघू भगनी नवला वारू, वर अठाई आदरी।।

२५ नांनस मै चौमास रगू, आठ अमरूजी किया।
पीपाड़ नव दिन लघु नदू, मघु आठ सुजश लिया ।।

२६ अरे सुगणा! च्यार ठाणै सू सेरा आई, दर्श आसरै मास अढाई।
सुगुर तणी आण सिर ठाई।।
चिहुं ठाणै लघु नवल जगीसं, दर्श आसरै दिन वावीसं।
गणपति आणा विश्वावीसं।
शिव अभिलाषी आण न खडै, देखो स्वाम शासन छिव सोहती।।

२७ आंमेट मे लघु नवल पै, नव हस्तु रोडा नव किया।
संथार सार सुधार रोडा, अंत समय सुजश लिया ।।

२८ अरे सुगणा! सर्व एकसौ छप्पन अज्जा, गुणसठ सत उभय वर लज्जा।
सर्व तेर नी आदि सकज्जा।
नव अज्जिका सयम पाई, परभव माहे तीन सिधाई।
अत एकसौ बासठ थाई।
दिख्या एक मुनि हद पाया, परभव माहै दोय सिधाया।
वे छूटा विन पूछयां ध्याया।
तेर अंत रह्या छप्पन साधू, देखो स्वाम शासन छिव सोहती।

२९ अरे सुगणा! बार बावीस मुनि अज्जा ना, वर चौमास अछै नही छानां।
गणपति आण रमै गुणखांना।
हद गणपति रै पास हुलासं, इक चौमास अज्जा गुणरासं।
चंदणा ना वे खेत्र विमासं।
खेत्र चौतीस सर्व चौमासा, देखो स्वाम शासन छिव सोहती।

१. दुघोड़।

३० अरे सुगणा तेरा वर्ष ए सारं, उगणीसैं चवदे अधिकारं।
विद वैशाख वीज बुधवारं।
सैहर सुजाणगढ सुखसाता, मुनि पणवीस ग्यान गुण माता।
समणी पच्यासी रलियाता ।।
भिक्षु भारीमाल ऋषराय प्रसादं, अधिक हरप जय जश अहलादं।
गणपति संपति परम समाधं ।।
आण अखंड आराधो सुगणा, देखो स्वाम शासन छिव सोहती ।।

सोरठा

३१ तेरा वर्ष रे आदि, इकसौ छप्पन अज्जिका।
गुणसठ संत समाधि, विगत कहूं ते वर्ष नी ।।
३२ अमा सहित व्रत लेख, मोती लखासर तणों।
डागा लघु वय देख, आण आराध्यां सुख हुसी ।।
३३ दोय पौहता पर लोग, चरण अठार छिहंतरे।
चौविहार सुभ जोग, सुरगढ वासी शिव ऋषी ।।
३४ वेंगाणी पुंजलाल, अठारसयै इक्यासीये ।।
चरण उजैण विशाल, ए विहुं परभव पांगरचा ।।
३५ दोय थया गण वार, कपूर नें जीवो ऋषी।
आई कुमति अपार, विण पूछै चलता रह्या ।।
३६ इम तेरै नै अंत, छप्पन संत रह्या सही।
समणी नो विरतंत, चित्त लगाई सांभलो ।।
३७ चूना जडाव तास, फलवधी सू आवी करी।
पाली में चौमास, जय हाथे इक दिन चरण ।।
३८ कंटाल्या रा जाण, जात खीवसरा जाणजो।
सरूपांजी हित आण, मृगसर मे लीधी दिख्या ।।
३९ नवा नगर ना न्हाल, सेराजो जय कर चरण।
जांत मूणोत पिछाण, पिउ छांडी व्रत आदरचा ।।
४० भांमा मोती माय, वलि राजां रायपुर तणी।
रत्नसुता कहिवाय, चीपड पिउ तज नीकली ।।
४१ लूकड सूवटां नाम, वासी पंचपदरा तणा।
जीऊ चंडालिया तांम, आंमेटे व्रत आदरचा ।।

४२ पूगलिया पहिछांण, जैपुर थी लिछमा चरण।
पियर वैद सुजांण, वर्ष तेरै ए नव दिख्या ॥
४३ तीन पौहती परलोग, लघु चत्रू वर्ष अडसठे।
पिउ तज चरण सुजोग, तोसीणा ना न्हार ते ॥
४४ रोडां चौरासीये सार, श्रीजीदुवारा थी चरण।
सतावीस पोहर चौवीहार, चोरडिया कुल सासरचा ॥
४५ ससुर चोरडिया सार, चांदू सुजाणगढ नी ॥
'पयवर'[1] में संथार, चरण साढा आठ वर्ष रो ॥
४६ एवं तेरै अंत रे, इकसौ वासठ अज्जिका।
गणपति आण रमंत, जयजश संपति सुख सदा ॥

ढाल ६

(सं० १९१४ का विवरण)

दोहा

१ चवद वर्ष रा आदि मे, छप्पन सत सुजाण।
इकसौ वासठ अज्जिका, शिरे सुगुरू नी आण ॥

१ *स्वाम भिक्षु वच दिल धरणा रे, गणपति आण अखंड आराध्या भवदधि से तिरणा।
स्वाम वचनां लीजै सरणा रे, गणपति आण अखड आराध्या भव दधि से तिरणा
॥ ध्रुपद ॥

२ वीदासर जय गणपति सगे रे, वी०२ चवदै संत अधिक सुख दायक रमत विनयरंगे।
सती सिरदाराजी स्याणी रे, स०२ आदि देइ नै आठ चालीस अज्जिका सुखदाणी ॥
वडी नवला तप दिन वीसं रे, व०२ तेर सरूपां कुनणा ग्यारै ओटा उगणीस।
उभय सिणगारां अठ वार रे, उ०२ लिछमां तप वावीस लछू दश दश मोतां सारं।
स्वांम भिक्षु वच दिल धरणा रे, स्वा०२ गणपति आण अखंड आराध्या भव दधि
से तिरणा ॥

३ दूजी सिरदारा ने मगना, वगतू चाद कुवर मधु साकर जडाव ने छिगनां।
किया दिन पांच पांच तीखा, प्यारे जशोदा षट सरूपा न्हानू अठ नीका।
आठ चूना नें अठ चिमना, सेरा मगदू भामां फत्तू व्रजु दशम सुमनां।
पिउ तज चरण व्रत चंगा, दिवस इकसौ तीस कियो तप गुणवंती गंगा।
गणि सेवा संपति वरणा रे, गणि संग तास आदि वरणा। गणपति० ॥

१. दुधोड़।

*लय : लावणी—सुगुरु की सीख हिये धरणा रे।

४ वडा चत्रुजी धुर जांणी, सैहर कैलवे आठ ठांणा सू चौमासो ठाणी।
पाच दिन तप पोतै दीसं, ऊमां तेर गुलावां द्वादश सेरुजी वीसं॥
पोष सुदि चोथ सुदिन आयो, चौविहार संथारो निज मुख सू चत्रू ठायो।
आसरै दोय मुहुर्त सोधी, सुगुरू पास आवी वरजूजी मास सेव कीधी।
सुगुरू आराध्यां सुख सरणा, गणपति० ॥

५ च्यार ठाणा सेती रंभा, वगडी सैहर कियो चौमासो छांडी दिल दंभा।
नेत्र कारण सू नही आया, वृद्ध असक्ति छता पिण दर्शण सू चित अधिकाया॥[1]

६ चवद ठाणा सू दीपाजी, वर आमेटज मास मास तप रामू मूलांजी।
दिवस इकवीस साकर वरणी, चूनाजी दिन पनर किया पिण आत्म वस करणी।
मलूकां गैना गुण रासी, जैतां सुदर झूमां पांचू तप षट षट मासी।
चौमासो उतरिया म्हेली, समणी च्यार एक पख दर्शण गुरु सेवा झेली।
आण आराध्यां अघ हरणा, गणपति० ॥

७ वडा नंदूजी दश ठांणै, पचपदरै चौमासे तप दिन तेर पनां माणै।
तपो दिन मूलां वावीसं, म्हेकां सोनां सोलै सोलै सीता गुणतीसं।
मास इक दोलां तप वासी, ग्यार सूरतां पिण आत्म वस कीधां सुख पासी।
माघ सुदि गुरु दर्शण कीधा, च्यार मास जाझेरा वचनामृत प्याला पीधा।
'मछर'[2] तजवै संपति धरणा, गणपति०।,

८ भीलोडे मगदू चिउं ठांणं, वृद्ध पणै गुरु पै नही आया पिण सिर धर आणं।
लघु मगदू पनां दीसं, दश ठांणै चांणोद चोमासे रोडा सैतीसं।
सूरांजी तप नव दिन नीका, षट मास आसरै गणपति दर्शण कीधा तहतीका।
लोटोती मया सुत्रिहुं अज्जा, सतर दिवस तट कियो अमृतां सप्त रु षट वीजां।
आसरै मास चिउं वरणा, गणपति० ॥

९ अमृतां लाछूड वासं रे, चिउं ठांणै पिण असक्ति माटै नाया गुरु पासं।
खेरवे कंकू चिउं ठांणै रे, कंकू चंदणा पनरै सवा मास दर्श माणै।
पीपार माहे अठ चंदणाजी, नव नव तप दिन चंदणां रूपां पनरै नाथांजी।
दर्श करवा मूकी अज्जा रे, दिवस इग्यार आसरै सेवा उत्तम वर लज्जा।
अमल चित आण अंगी करणा, गणपति० ॥

सोरठा

१० अज्जा अमृतां पास, ऊमांजी चउदै किया।
राजाजी सुख वास, एक पख तप आदरचो॥

---

१. मूल प्रति मे पूरा पद्य नही है।
२. मत्सर (ईर्ष्या)।

११ जीउ षट वोरावर जासं, एक मास रतनां मूलां नव नंदू वेमासं।
दर्श वर अढी मास जीउ, कुनणां आठ ठांणै दौलतगढ दशम भक्त विहुं।
नाथांजी तप दिन इग्यार, हुकमा रै इक मास अनांजी चौतीस अधिकारं।
दर्श करवा अज्जा आई, सतावीस दिन सेव करी गुरु आणा सुखदाई।
आण आराध्या उद्धरणा, गणपति० ॥

सोरठा

१२ मोतां पाली चौमास, म्हेतावकुंवर वालोतरे[1]।
तपसा वहु विध तास, गुरु दर्शण वहु दिन किया ॥

१३ रंगू पंच कारण सूं नाई, गोघुंदे चौमासो तपसा करता सिव साई।
वालोतर नंदू चिउं जाणी, रभा रै नव दर्शण जाझा अढी मास माणी।
सेरां चिउं हरिगढ में वासं, भांनां ग्यार मनां नव जाझा दर्शण पट मासं।
चिउं सिणगार सप्त सारं, चंपा तेर आठ हस्तु रै पंच सुसिरदार।
दर्श पंच मास सुगुरु सरणा, गणपति० ॥

१४ धाकडी चौमासे सांची, चिउं ठाणै वर वर दशम नवल हस्तु रै पख जाची।
जीउ रै सप्त दिवस जाणी, लालांजी छ कियाज नीका सुकृत निसांणी।
पोष सुदि सुगरु सेव साझी, शेषे काल अने चोमासे नवल सेव जाझी।
तदा चउदा रा वर्ष माहि, अचरज वात अधिक गुण लायक सुणजो सुखदाई।
सुमति धारचा सू उद्धरणा, गणपति० ॥

सोरठा

१५ चवदा वर्ष रै माय, नवलाजी चिउं ठाण सूं।
कर जोडी कहैवाय, हूंसिरदाराजी री नेश्राय छू ॥

१६ जय कहै पर नेश्राय, किण कारण रहो छो तुम्हे।
मुझ आणा सुखदाय, सिंघाडे विचरो सुखे ॥

१७ नवल कहै नही चाय, सिंघाडा री मो भणी।
वर यारी नेश्राय, रहिवा रा मुझ भाव छै ॥

---

१. साध्वी मेहतावकवरजी का चातुर्मास वालोतरा लिखा है तथा आगे की गाथा मे साध्वी नदूजी का भी वालोतरा लिखा है। इससे लगता है कि किसी कारणवश दोनो सिंघाडो का चातुर्मास वालोतरा हुआ था।

यतनी

१८ जय कहै पाती रो काम, वले पांती रो वोझ तमाम।
नित गोचरी उठणो ताय, वलि वर्तवो तसु अभिप्राय ।।

१९ ज्यारी नेश्राय मे रहिणो, त्यांरा हुकम प्रमांणे वहिणो।
आहारपाणी वस्त्रादिक देख, वलि अवर ही वोल अनेक ।।

२० इम विविध पणै कहिवाय, विद वैसाख नवमीं सोभाय।
वलि दशम रै दिन प्रात, जय वहुजन मे कही वात ।।

२१ कर जोड नवल कहैवाय, आप सांभलजो मुनिराय।
सिंघाडा मे जाणू दुख, यांरी नेश्राय में जाणू सुख ।।

२२ वहु हठ कर नै पाय लागी, भारी भाग्य दिशा तसूं जागी।
दुख दालिद्र होय गया दूर, पामी संपत सुख भरपूर ।।

सोरठा

२३ विद पख वलि वैसाख, तिथ चवदश हुइ वारता।
अति हित धर अभिलाख, सुगुण सुजन सुणजो सही ।।

ढाल ७

*सुण सुखदाई, आ तो शासण सुदिशा सवाई ।।ध्रुपदं।।

२४ मगदू मया पना मतिवती, तीनू सिंघाडावंध सोभंती।
कर जोड गणि नै कहैवायो, म्हे तो सिरदाराजी री नेश्रायो ।।

२५ गणपति कहै इम वायो, थे तो क्यूं रहो पर नेश्रायो।
मुझ आण थकी अभिलाखो, थारो सिंघाडो ज्यू को ज्यू राखो ।।

२६ गौचरी पाती रो कामो, पूर्व रीत वताई तामो।
यारे कनै समणी पालै आणं, तिम हिज करणी आण प्रमाणं ।।

२७ जव ए कहै सहू अगीकार, म्हारा मन मांहे हरख अपार।
इम हठ करनै अधिकायो, थया सिरदारांजी री नेश्रायो ।।

२८ मगदू सात ठाणा सुविचारी, मया तीन ठाणै सू धारी।
पना तीन ठाणै वर अज्जा, एक ही समणी तेर सलज्जा ।।

२९ वैसाख सुदि आठम सारं, वडी नंदू सेरा सिणगारं।
ए पिण हठ कर नै अधिकायो, थया सिरदाराजी री नेश्रायो ।।

*लय : सुण चिरताली थांरा लीजै चरित्र संभाली …।

३० वोभ काम पांती रो जांणो, किया ना कहिवा रा पचखाणो।
वले गोचरी करी अंगीकारो, वहुजन वृंद माहि उदारो ॥
३१ भणी गुणी नें किन्या कुंवारी, नंदू आठ ठाणैं सुविचारी।
चिउं चिउं ठांणैं सेरां सिणगारो, कह्यो सोलै अज्जा नो अधिकारो ॥
३२ वैसाख सुदि नवमी विचारी, जीऊ छ ठांणैं याहीज धारी।
पूर्व रीत करी अंगीकारो, वहुजन वृंद मध्ये तिवारो ॥
३३ प्रथम जेठ विद छठ आई, नंदू पांच ठांणै सुखदाई।
ए पिण हठ कर वहुजन मांह्यो, थइ सिरदारांजी री नेश्रायो ॥
३४ उगणीसै पनरे सुजन्नो, पोष विद एकम रे दिन्नो।
तीन ठांणै महतावकुंवर आयो, वहु हठ कर थइ नेश्रायो ॥
३५ पोष विद तीज दिन आई, कंकू आठ ठांणै अति हरपाई।
इण पिण लीधो योहीज पंथो, वहु हठ कर मेटी मन भंतो ॥
३६ पोप सुदि एकम दिन धारी, सात ठाणै मोतां किन्या कुंवारी।
इम हठ कर अति रलियाता, नेश्राय थई हुई साता ॥
३७ ऋषू कहै वलि तिणहीज दिन्नो, मोनै कह्यो चंदणा महासतियां सुजन्नो।
म्हे पिण सिरदारांजी री नेश्रायो, ते चंदणा आठ ठाणै कहिवायो ॥
३८ सगला अक्षर लिख दिया पाने, ते तिण प्रगट पणै पिण नही छांने।
यां तो काम पाती रो धारयो, वले पाँती रो वोभ विचारयो ॥
३९ गोचरी आदि कार्य अनेको, करणो आज्ञा प्रमाण विसेखो।
सिरदारांजी रे कनै रहै और अज्जा, तेहीज रीत यांरी वर लज्जा ॥
४० कोइ विकल वोलै इम वायो, चरण वडी अज्जा सुखदायो।
किम लागै छोटी रै पायो, वलि किम रहै तसु नेश्रायो ॥
४१ मूढ इतरो न जांणै मन माह्यो, छोटी रै पगां लागै किण न्यायो।
ए तो वंदी गणपति रा पायो, थई सिरदारांजी री नेश्रायो ॥
४२ ए तो वहु हठ कर नै ताह्यो, निज मन सू थइ नेश्रायो।
ते पिण जाणी पोता रो सुख, यां तो मेट दीयो वहु दुख ॥
४३ ए तो 'वांण्यां'[1] री छै वेटी, ए तो अकल तणी छै पेटी।
यां तो अधिक आतमवस कीधी, मूढ इतरी न जाणै सीधी ॥
४४ वर्ष चवदा पनरा रै माह्यो, थयो शासण उद्योत सवायो।
हिवै संत सत्या रो लेखो, थे तो सुणजो हरष विसेखो ॥

१. वनिये (महाजन)।

सोरठा

४५ चवदा वर्ष री आदि, छप्पन संत सुहामणा।
समणी अधिक समाधि, इकसौ वासठ ओपती ॥

४६ वे संत हुआ ते वास रे, छजमल त्रिय भगनी सुता।
मांढा ना सुविलास, इक दिन चरण वीदासरे ॥

४७ गुलाव वाफणा जांण, वासी वाजोली तणा।
परदेशे पहिछाण, गुलजारी-पै चारित लियो ॥

४८ छूटा तेरे वास, दोय मुनि कर्म करी।
जुदा रह्या त्रिण मास, ते चवदे गण आविया ॥

४९ लिखत सैतीसे स्वाम, आख्यो छै इण रीत सूं।
निकलै गण थी ताम, मुनि सरधै आंपां भणी ॥

५० तो प्रायश्चित यथायोग, देई लेणो गण मझै।
ए वच देख प्रयोग, डंड दियो दोनू भणी ॥

५१ थिवर वियावच नै जाय, आग्या विण जे दिन रहै।
ववहार पहिले वाय, तेता दिन नों छेद तप ॥

५२ इत्यादिक वच ताय, देखी दंड दे गण लिया।
'ताकू रंग चढाय, भागां पछै जे वाहुडै'[1] ॥

५३ इम चवदा रै अंत, साठ मुनि सुजांणजो।
समणी नों विरतंत, चित्त लगाई सांभलो ॥

५४ छजमल त्रिय वर 'वैन'[2], केसर कुवारी किन्यका।
चरण धर्यो चित चैन, सुदि पख दशमी भाद्रवे ॥

५५ वालोतरे वसवान, जाति पुवाड सुसासरया।
पियर चोपडा जान, मृगसर विद सातम दिख्या ॥

५६ मृघाजी सुविलास, जाति श्रावगी पाडिया।
सैहर लाडणू जास, मृगसर विद वारस दिख्या ॥

५७ मानांजी कहिवाय, वगसी वीकानेर का।
पियर खटेड ताय, माह विद एकम नी दिख्या ॥

५८ कुनणां सिरेकुवार, कोठारी कुल मा सुता।
वीकानेर सुविचार, जेठ चैत लीधी दिख्या ॥

---

१. जो भाग कर वापिस रणभूमि मे आते है उनके रग चढ़ जाता है अर्थात् उनकी बलिहारी है।
२. बहिन।

५९ ए अठ दिख्या सार, वड चत्रू परभव गई।
चोविहार संथार, जन्म सुधारे जश लियो॥
६० एवं चवदै अंत, इकसो गुणंतर अज्जा।
मुनिवर साठ महंत, जय जश संपति साहिवी॥
६१ ए जोड करी सुख कंदा, उगणीसे पनरै आनंदा।
तिथ चोथ माघ सुदि सारं, सुजांणगढ मभारं॥
६२ तिहा संत तेतीस सुसारं, समणी एकसौ नव उदारं।
भिक्षु भारीमाल ऋषराया, जय जश हरष सवाया॥

ढाल ८

(सं० १९१५ का विवरण)

दोहा

१ पनर वर्ष री आदि में, साठ संत सुखदाय।
इकसौ गुणंतर अज्जा, जय जश संपति पाय॥

*स्वामी भीखनजी जशधारी रे, ज्यारा संत सती सुखकारी रे।
शासण सोभै केसर नी ज्यू क्यारी रे॥ ध्रुपदं॥

२ सैहर लाडणू जय गणपति वर, सतर संत गणि सहितं।
समणी सिरदाराजी आदि, पंच चालीस पवित्तं॥
३ एक मास फत्तू वनाजी, दिन इकवीस वखांणं।
सोलै मोता सोल जसोदां, सतगुरु आण प्रमांणं॥
४ सिणगारां तप चवद इग्यारै, कुनणा नव तप कहियै।
नोजा सात पांच इक दशम, गणि आणां जश लहियै॥
५ सात सात तप छगना चूना, षट तप चिमना खातं।
वलि सूरतां षट दिन कीधा, सुगुरु आण सुख शांतं॥
६ चंदणा वगतू लछू चादकुवर, सिणगारा भांमा।
मृगा दशम दशम तप दिन, गणि आणा आरामा॥
७ च्यार ठांणै रंभाजी पयवर, चौमासौ चित धांमी।
कारण सू दर्शण न किया पिण, नीत मांहै नही खांमी॥
८ दीपांजी चवदै ठाणा सूं, देवगढ चौमासं।
इकसौ सोल मलूकां ऊजल, हद तप कियो हुलास॥

---

*लय : स्वाम सरूप चंद सुखकारी ……।

९ ग्यानां सुदर झूमां जेतां, षट षट मासी कीधी।
मगनां तप उगणीस करी, जग मांहे सोभा लीधी॥
१० मूला तप इकतीस पवर हिव, चउमासो उतरियां।
दीपांजी रे तन कारण सू, अज्जा दर्शण न किया॥
११ सात ठांणै वड नंदू चूरू, तप सीता नव दिन्नं।
दिवस एकसौ सोल आसरै, दर्शण किया सुमन्नं॥
१२ मगदू ठांणै च्यार दोलतगढ, पनर पनां सुखदाया।
गंगा ग्यार दिवस कारण थी, दर्शण करवा नाया॥
१३ लघु मगदू नव ठाण चौमास, सुजाणगढे सुखकारी।
मूला दिन पणवीस तपो धन, गणि सेवा अधिकारी॥
१४ गंगापुर पिउं ठाण अमृता, ऊंमा दश तप ठाया।
अष्टादश राजा कारण सू, दर्शण करवा नाया॥
१५ कंकू चिउं ठाणै वाजोली, चौमासो ऊतरियां।
दिन पैताली आसरै दर्शण, कीधा कार्य सरियां॥
१६ अठ ठाण चंदणा पीपाड, तेर नव पाच पचोला।
चोला इकतालीस आसरै, तप रस ना रंग रेला॥
१७ ऋद्धू सात पनर नाथा, रूपा दश तप चित भावी।
दिन पणवीस आसरै दर्शण, करवा अज्जा आवी॥
१८ छ ठाणैं जीऊ वोरावड, नंदू साठ सुजानं।
रत्नां तीस मूलां नव दर्शण, दोढ मास उन्मानं॥
१९ पना पांच ठांणै राजलदेसर, तप सूरां ग्यारा।
लघु अमरां ग्यारै दर्शण हद, सात मास अधिकारा॥
२० कुनणा आठ ठांणै पुर मे तप, नवलां आठ उदारं।
लिछमा सतरै नाथा चवदै, दशम सुजाणकुंवारं॥
२१ अनां इकती हुकमा तेई, वगतावर तप सतरै।
दिन वावीस आसरै दर्शण, अज्जा आवी इतरै॥
२२ रत्नगढ मोतां ठाणै सत, तप षट रूप रमेवा।
सेरां नवल अमृत दश दश, तीन मास गुरु सेवा॥
२३ राजनगर वरजू सत दशम, ऊमां षट तप जासं।
सेर गुलावां तेरै तेरै, दर्श अज्जा 'अध मास'[1]॥

---

१. पन्द्रह दिन।

२४ नवैनगर त्रिहुं ठांण, म्हेतावकुंवर पनरै दिन जानं।
छोटा दशम दर्श इकसौ, पर तेरै दिन उन्मानं॥
२५ देशणोक हस्तू चिउं ठांणैं, सुगुरु सेव सुख रासं।
लघु सरूपां पंच कियो तप, वड़ी सरूपां मास॥
२६ पंच ठाणै रंगू गोघूदे, कारण थी नही आया।
लघु नंदू नागोर आसरै, दिन पचास दर्शाया॥
२७ सात ठांणै पाली सेरा, दशम ओटां इक मासं।
दशम एक अठारै मेनां, गुरु आंणा सुख वासं॥
२८ सात रु दशम एक अमृता, भांनु सोल तप दिन्न।
दिवस एकसौ षट आसरै, सेवा सुगुरु प्रसन्न॥
२९ पीसागण वाला सिणगारां, कृष्णगढ चिउ ठाणै।
इकसौ वावन दिवस आसरै, सुगुरु सेव सुख माणै॥

सोरठा

३० सिणगारां रे सात, आठ चंपा हस्तु तणै।
नव सिरदार विख्यात, वलि इक इक दशम त्रिहुं तणै॥
३१ नवल फलोधी रा नव ठाणैं, वीकानेर वखाणूं।
गंगा मास मगन षट रोडा, सात मघू अठ जांणू॥
३२ साकर आठ जडाव किया षट, न्हानू नव तप नीको।
मास आसरै सात सुगुरु सेवा, आंणा जश टीको॥
३३ पोष विद एकम मेहतावकुवर, मन हरष सवायो।
वहु हठ कर नैं रहीज सुगुणी, सिरदाराजी नेश्रायो॥
३४ पोष विद तीज इम कंकू, पोष सुदि एकम दिन्न।
कुवारी किन्या मोतां हठ कर, थइ नेश्राय सुमन्न॥
३५ तिणहिज दिन ऋधू इम वोली, चंदणाजी कहिवायो।
वहु हठ कर सिरदाराजी री, ए पिण थइ नेश्रायो॥

सोरठा

३६ पनर वर्ष री आदि, संत साठ गणि आण में।
समणी अधिक समाधि, इकसौ गुणंतर गुणी॥

३७ छोग संकलेचा जाण, देशणोक वासी दिख्या ।
मात सहित पहिचाण, भाद्रव कृष्ण बारस सिख्या ॥

३८ चंदेरा ना लाल, टीकम माधोपुर तणा ।
संत विहूं सुविसाल, अणसण श्रीजीदुवार में ॥

३९ एक थयो अणगार, दोय मुनि परभव गया ।
पनरै अंत उदार, गुणसठ संत गुणीजियै ॥

४० सेरा छोग रे साथ, चूनाजी चूरू तणा ।
ससुर कोठारी जात, चोथ शुक्ल कार्तिक दिख्या ॥

४१ वखतावर अकनकुमार, रांमचंद दूगड़ सुता ।
मृगसिर विद पंचम सार, दिख्या लीधी दीपती ॥

४२ साकर ताल नी जांण, जाति देराडचा सासरचा ।
पियर करेडे पिछाण, पिउ छाडी व्रत आदरचा ॥

४३ रंभा कालू नी जाण, जाति श्रावगी सोभता ।
बीज जेठ सुदि माण, परलोके पोहती सती ॥

४४ हीगड पियर आमेट, ऋषभ-सुता मगदू सती ।
भल मन अणसण भेंट, चेत वदी में चल गई ॥

४५ कंटाल्या ना जाण, जाति गोलेचा सासरचा ।
सरूपाजी पहिछांण, बीज माघ सुदि परभवे ॥

४६ पंडित मरण सु तीन, च्यार दिख्या अज्जा तणी ।
इकसौ सित्तर लीन, पनर अन्त में पेखियै ॥

४७ एवं पनरै अंत, इकसौ सित्तर अज्जिका ।
आख्या गुणसठ संत, जय जश सपति साहिवी ॥

४८ ए जोड करी सुखकार, उगणीसै सतरे समैं ।
वैसाख विद एकम सार, डीडवाणे दिल पाक सूं ॥

४९ सत वीस सुख दाय, एकांणू तिहां अज्जिका ।
भिक्खु भारीमाल ऋषराय, जय जश संपति रंग रली ॥

ढाल ६

(स० १९१६ का विवरण)

दोहा

१ सोल वर्ष री आदि में, गुणसठ संत गुणाय ।
इकसौ सित्तर अज्जिका, जय जश संपति पाय ॥

*सतियां सुगुणी रे सुखदाय ।।ध्रुपदं।।

२ सैहर सुजाणगढ जय गणपति, संत अठार सुजाण।
सिरदारांजी आदि अज्जिका, इकतालीस पिछांण ।।

३ फत्तूजी सैंतीस किया वर, वन्नांजी इकतीस।
उगणीस जशोदां, लिछमां चूना, सोल सोल तप दीस ।।

४ सेरा ग्यार सरूपा कुंनणां, दश दश कुनणा आठ।
चादकुंवर छगना ने न्हांनू, सात सात तप थाट ।।

५ वखतू जडाव पट षट कीधा, चंदणां लछू जांण।
वलि पाली वाला नवलांजी, पंच पंच पहिछांण ।।

६ चिउं दशम इक पंच भामाजी, हस्तू कस्त लेख।
मगदू, हरखू, वृधु, लालां, जीउ, दशम दशम तप देख ।।

७ श्रीजीदुवार चवद ठांणैं, दीपां पै मूला मास।
चूना चवदै ग्याना साकर, जैतां पंच पच प्रकास।

८ दीपांजी मगना नै मेली, वहु हठ कर सु जगीस।
नेश्राय थइ सिरदाराजी री, दर्शण दिन वावीस ।।

९ पाली सात ठाणै वड नंदू, मेहकां सात सात उदार।
सीता तेरै दोलां वारै, किया सूवटां ग्यार ।।

१० मगदू च्यार ठाणै लाछूडे, पंना तीस सुमन्न।
रोडां पंच, गंगा चउदै, दर्शण न किया वृद्ध तन्न ।।

११ विजा अमृता पच ठाणै सू, राजनगर सुद्ध जांन।
ऊमा मास, पनर राजां, विहु मास दर्श उन्मान ।।

१२ रंभा काल कियां, चंपा कालू, त्रिहुं ठांण चौमास।
दिवस एकसौ तीन आसरै, सेव सुगुरु सुखवास ।।

१३ नवैनगर चिउं ठांणै कंकू, चपा तप नव दिन्न।
चंदणां कंकू दश दश दर्शण, न किया कारण तन्न ।।

१४ पीपाडे चंदणां अठ ठांण, तेर नाथा तप जांण।
दिन उगणीस आसरै अज्जा, दर्शण कीधा आण ।।

१५ षट ठांणै जीउ वोरावड, मूलां तप गुणतीस।
दश रत्ना दिन सात आसरै, सतगुरु सेव जगीस ।।

१६ सिरदारगढ षट ठाणै, पन्ना, सूरां मास सुजान।
अमरू दश चिमना अठ दर्शण, सात मास उन्मान ।।

---

*लय : सीता आवै रे घर राम.....।

१७ अठ ठांणैं कुनणा भीलोडे, लिछमां पवर सुजांण।
पट षट नवलां दशम, दर्श अज्जा दिन उगणी मांण ॥

१८ डीडवांणे सत ठांणै मोतां, पंच सेरां सत जांण।
वार चवद अमृता लिछमां, दोढ मास दर्शन ॥

१९ काक्रोली सत ठाणै वरजू, अज्जा दर्शण आय।
सतरै दिवस आसरै सेवा, तप नी खवर न काय ॥

२० म्हेतावकुंवर तेरै दिन कीधा, सैहर रिणी त्रिहु ठांण।
छोटां आठ सुगुरु सेवा वर, तीन मास परिमांण ॥

२१ लाडणू छ ठाणैं हस्तु मघु, दशम मृघा पट जास।
मूलां नव गणपति नी सेवा, जाझेरी सत मास ॥

२२ पंच ठांणैं रंगू गोघूदे, गणि आणा सिर ठाय।
अधिक कारण सूं दर्शण न किया, तप नी खवर न काय ॥

२३ चिउ ठांणै नागौर गोमाजी, कुनणा दशम पिछांण।
पंच पंच मोतां सिणगारां, अधिक सेव मन आण ॥

२४ देशणोक चंनणां पट ठाणै, रोडा पंच रू च्यार।
चंदणा दशम सुगरु दर्शण, जाझा सत मास उदार ॥

२५ कृष्णगढ पंच ठाणै नंदू, दश रंभा इकमास।
वृद्धां जैतां पंच अठ दर्श, आसरै मास उजास ॥

२६ भीयांणी चिहुं ठाणैं सेरां, दशम भाना दश जांन।
षट सिरदारा नव मीना, त्रिहु मास दर्श उन्मान ॥

२७ चिउ ठाणैं राजलदेसर, पीसांगण ना सिणगार।
चवद कियो तप चंपा पनरै, वलि इक दशम उदार ॥

२८ हस्तू द्वादश दिन अरु दशम, सिरदारा नव पंच।
सवा चिउ मांस आसरैं दर्शण, गणपति सेव सुसंच ॥

२९ सैहर फलोधी नवला, वीदासर मे नवठांण।
पट चोला इक सात मया, सिरदारां सात मडाण ॥

३० वीजां च्यार अठारै ओटां, गंगा सोल सुचंग।
मगना तेर अमृतां तेरा, अधिक सेव उचरंग ॥

३१ कोसंवी चिउ ठाण सिणगारां, 'वर जूमां साकर ताय'[१]।
दशम दशम तप च्यारां कीधौ, गणि सेवा अधिकाय ॥

---

१. यहां 'वरजू जूम (झूमा) साकर ताय' होना चाहिए।

३२ सैहर तेवीस माह चोमासा, अज्जा नो अधिकार।
ग्यार सैहर मांह मुनि ना तप, गुण ग्यान भंडार ॥

सोरठा

३३ सोल वर्ष री आद, गुणसठ संत कह्या सही।
इक सय सितर साध, गणि आणा में अज्जिका ॥
३४ तपसी हुवा वे सत, वीकाणा नो अमरचंद।
जाति वेगवाणी तंत, कार्तिक सुदि तेरस दिख्या ॥
३५ दीपचंद अगरवाल, वासी भीयाणी तणो।
लीधो चरण विसाल, मृगसिर सुदि वारस दिने ॥
३६ पंडित मरण इक जाण, ईडवा नो वासी कह्यो।
जाति चोरड्या जाण, लघु जुवान सुजांणज्यो ॥
३७ छूटो एक जुहार, मांनव रो भव हारियो।
नीत न देखी सार, काढ दियो गण वारणै ॥
३८ इम सोला रे अंत, गुणसठ संत कह्या सही।
समणी नो विरतंत, चित्त लगाई सांभलो ॥
३९ च्यार अज्जा परलोग, पांच चरण व्रत आदरया।
सुणजो धर उपयोग, नाम जूजूआ तेह ना ॥
४० नवा नगर की न्हाल, त्रिय गजमल मूणोत री।
पिउ तज व्रत रसाल, सेरां अण सण पोस में ॥
४१ छोग चतुर ऋष माय, अणसण माह सुदि पंचमी।
वोरड सासरचा ताय, रुखमा कार्य सारिया ॥
४२ डागा सासरचा जात, रत्नगढ ना जाणजो।
आसाढ मास आख्यात, परभव ऊमा पागरी ॥
४३ जूनी अज्जा जांण, धाड़ीवाल मेड़ता तणी।
लछू कीध किल्यांण, प्रथम सिषणी ऋषराय नी ॥
४४ पंच दिख्या पहिछाण, तीजां भाद्रव सुदि तेरसी।
सुजाणगढ ना जाण, नाहर संजम लियो ॥
४५ पियर चौधरी पीपाड़, रत्नकुंवर फागुण दिख्या।
सिंघी सासरचा सार, समर्थमल नी कुल-वहू ॥
४६ ससुर गंगापुर माहि, हीगड़ जात वखतावरी।
पियत चोरड्या ताहि, आसाढ विद नवमी दिख्या ॥

४७ ससुर चोरड्या न्हाल, रत्नाजी रूडी करी।
इड़वा में 'मामाल'[1], आसाढ सुदि दशमी दिख्या ॥

४८ चिंतामा ना जाण, वहिन नाथा समणी तणी।
रायकुवरी पहिछांण, आसाढ सुदि ग्यारस दिख्या ॥

४९ एवं सोलै अंत, इकसय एकोतर अज्जा।
गुणसठ संत सोभंत, स्वाम भिक्खू गण में सही ॥

५० जोडीधर अभिलाख, उगणीसै सतरे समै।
विद सातम वैसाख, जय जश संपति साहिवी ॥

---

१. ननिहाल।

६

संत गुण वर्णन

मुनि थिरपालजी[1]

(ख्यात सं० १)

ढाल १

१ *स्वामी थिरपालजी फतैचंदजी, वाप बेटा वैरागी।
वासी लांवियां गाम रा, दीया भेषधारचा नैं त्यागी ॥
२ संत सगला में दोनूं वडा, थाप्या भीखू स्वामी।
आप पगां लागता दोनूं तणे, ऐसा अंतरजामी।
३ आगै ढूढिया माहि बडा हूंता, सो बडा रा वडा राखू।
यांनै छोटा कर नै हूं वडो हूऊं, इण में स्यूं फल चाखू ॥
४ इम भीखू ऊंडी आलोचना, वडा राख्या वेसंत।
एहवी बुधि भीखू तणी, उत्तम पुरुष गुणवंत ॥
५ कोई पूछै संत दोनू भणी, थे किण रा टोला रा सोय।
ते कहै भीखणजी रा टोला तणा, ऐसा निगर्वी दोय ॥
६ चरचा वोल कोई पूछता, दोनू संत भाखंतो।
भीखनजी नै पूछ निर्णय करो, भीखू कहै सो तंतो ॥
७ एहवा सरल हीय तणा, संत दोनू सुखकारी।
सी तापादिक तपसा कीधी घणी, विविध प्रकारे भारी ॥
८ त्यांरी तपस्या तणो विवरो सुण्या, इचरज अधिको आयो।
कायर तो कंपै घणा, सूरा हरष सवायो ॥
९ फतैचंदजी वरलू मझै, संथारो इकतीसे।
थिरपालजी परभव गया, अष्टादश वतीसे ॥
१० नित्य भजन करो यां संतां तणो, पामो आणंद कोडो।
संवत अठारै अठाणूए, जेठ मासे करी जोडो ॥

***लय—प्रभवो मन में चितवै····**

[1]. देखिए परिशिष्ट १, स० १।

मुनि हरनाथजी

(ख्यात सं० ६)

ढाल १

*धिन धिन संत सुहामणा ।।ध्रुपदं।।

१ हरनाथजी हाजर रह्या, टोकरजी तंत सारोजी काई।
सत दोनूंई सुहामणा, कियो भेषधारऱ्या रो परिहारो जी कांई ।।

२ छेहलै अवसर भीखू कह्यो, हरनाथ टोकर भारीमालो।
यां तीना रा साहाज थी, मैं संजम पाल्यो रसालो ।।

३ सोम मूरति सुख कारणी, वांरू दोनू सुविनीतो।
भक्ती भीखू नी भारी करी, पूरण पाली प्रीतो।

४ गुणग्राही गिरवा घणा, 'परछादा'[1] रा चालण हारो।
संत दोनू रा गुण संभरऱ्या, आवै हरख अपारो ।।

५ भीखू पाटथाप्या भारीमालजी, वर्स वतीसे विचारो।
ऐ संत दोनूइ वडा हुंता, नाण्यो गर्व लिगारो ।।

६ ऐसा निगर्वी ओपता, त्यांरा गुण पूरा कह्या न जायो।
याद आया मन हुलसै, रोम राय़ विकसायो ।।

७ भजन किया भव दुख मिटै, पामै आणंद कोडो।
संवत अठारै अठाणूंए, म्है हरख धारी कर जोडो ।।

---

*लय—कुशल देश सुहामणो……

१. दूसरो के अभिप्रायो के अनुसार ।

मुनि सुखरामजी (वडा)[1]

(ख्यात सं० ९)

ढाल १

*भज संत वडा सुखराम ए ।।ध्रुपदं।।

१ संत वडा सुखराम ए, त्यां सारचा आतम कांम ए।
तीखी सुमत गुप्त तमाम ए ।।

२ देव मूरत सम जाण, ज्यारी शांत प्रकृति गुण खान।
सुवनीत घणा अभिराम ए ।।

३ आसरै वयालीस वरस तास, चारित पाल्यो आण हुलास।
गुरु मिलिया भीखू स्वाम ।।

४ अणसण पचीस दिन नों आवियो, मुनि सगलारै मन भावियो।
पोहता वासठे परलोक ताम ।।

५ अठांणूंए समत अठार, सुखरांम गायो सुखकार।
नित्य जाप जपो ले नाम ।।

*लय—भज लै पूज भारीमाल ए ....।

१. देखिए परिशिष्ट, १ स०२ ।

मुनि अखैराम जी

(ख्यात स० १०)

ढाल १

*मुनि भजिए सदा । सा ॥

॥ध्रुपदं ॥

१ आनंद कारी अखैरामजी, छतीसतेला करतायो तन्नहो ॥गुणधारी॥
चोला में चलता रह्या, अखै दीवाली दिन्न हो ॥सुखकारी॥
२ वासी लोहावट गांम रा, पारिख जान पिछांण ।
पारखा साची था करी, भेंटचा भीखू संत गुणखांन ॥
३ भेखधारचा नै छोडनैं, दिढ व्रत धारचा धीर ।
तप जप था कीधो घणो, चरचा करण वजीर ॥
४ बहु वर्स चारित्र पाल नें, पौहता इगसठे वर्स परलोक ।
भजन करै नित आपरो, तो मिट जावै दुख भर्म सोक ॥
५ संमत अठारै अठाणूए, जेठ सुदि वीज सुकरवार ।
आनदकारी अखैराम नै, जपतां जय जय कार ॥

*लय · आई छू देवा ओलभड़ो ····· ···· ।

मुनि खेतसीजी (सतजुगी)[1]

(ख्यात सं० २२)

ढाल १

*खरा ऋष खेतसी थांरी, करणो भारी हो ।।ध्रुपदं।।

१ सतजुगी स्वामी सुहामणा जी, सुविनीता सिरमोड ।
कठण वचन गुरु सीख थी, उचरंग सहित कर जोड ।

२ संत सत्यां नैं 'आशासना'[2], स्वामी जनक समांन ।
नरमाई तन मन तणी, खिम्यावंत गुणखांन ।।

३ सूत्र सिद्धांत सूरा घणां, झीणी रहिस ना जांण ।
विनय तणो स्यूं वर्णवो, त्यांरा भीखू ऋष किया वखांण।

४ म्हांसू उपगार कियो घणो, सीखाइ रहिस अमोल ।
याद आया मन हुल्लसै, तुम गुण सिंधु अमोल ।।

५ समत अठारै एकाणवे, चैत्र वीज सोमवार ।
वच दृढ खेतसी गावियो, भर्म भंजन सुखकार ।।

ढाल २

१ †सतजुगी स्वामी नित समरियै जी, संत प्रतिपाल सुखमाल ।
गैहर गंभीर गिरखा गुणी जी, सीतल नयण निहाल ।।

२ सुवनीत घणा सतगुरू तणा, कारज विलंव रहीत ।
गुरुकुल वासे राजी घणा, पूरण पाली ज्यां प्रीत ।

३ चरचा करवा नै चातुर घणा, झीणी रहिसां तणां जांण ।
ग्यांन सागर गुण आगला, भीखू ऋष किया वखांण ।।

४ समता दमता खमता घणा, रमता गुरु वचना रे रंग ।
कठण वचन गुरू सीख थी, मन माहि पांमै उचरंग ।।

---

*लय : रूपाला रूपजी थांरी ......।

†लय : एहवा मुनिवर वंदियै जी ए ।

१. देखिए परिशिष्ट १, सं० ४

२. दिलासा देने वाले

५ एक टक उदक आगार थी, तप कियो दिवस अठार।
ग्रीषम ऋतु आतापना, मन माहि हरष अपार।
६ सूत्र सभाय सूरा घणा, चरण करण चित धार।
सील सुधारस स्वाम नैं, वांदियै वारूवार ।
७ वरस वयालीस आसरै, पालियो संजम भार ।
अंतकाल अणसण कियो, सफल कियो अवतार ॥
८ समत अठारै एकाणवे, तिथ इखू तीज तिवार।
स्वाम सतजुगी गुण गाविया, रांमगढ़ सैहर मझार॥

ढाल ३

१ *सतजुगी स्वामी नित समरियै, गिरवो ने गुणवान।
उपगारी गुण आगलो, वारु बुध निधांन ॥
२ चरचावादी चातुर घणा, संत सत्यां सुखदाय।
सुमता रस नों सागरू, महिमा वंत मुनिराय॥
३ विनय विवेक वारू घणो, सुगुरु थकी वहु प्रीत।
सतजुगी स्वामी सारिखा, विरला संत वनीत ॥
४ प्रति पालक सहु गण तणों, स्वामी जनक समांन।
याद आयां मन हुल्लसै, एहवा खेतसीजी गुणखांन॥
५ वलिहारी हूं थांहरी, वारूं मुखरा वैण ॥
उंडी बुद्धि स्वामी आपरी, तू च्यार तीर्थ नों सैण[1]।
६ भक्त वच्छल भारी घणो, लीध जनम नो लाह।
आप तणा गुण संभरी, गुणीजन कहै वाह वाह॥
७ भीखू गुरू भल भेटियो, भारीमाल नें साहज।
प्रीत घणी ऋषराय थी, जगत उधारण जिहाज॥
८ खेल विनय नो खेलियो, तप धारियो तंत सार।
सीख सुगुरु नी सैठी ग्रही, खेतसीजी नांम उदार॥
९ संवत अठारै अठाणूंए, पौस विद ग्यारस सुक्रवार।
गुणीजन खेतसी गाइयो, जयपुर में जयकार॥

१. सज्जन (हिरवछक)।

*लय : पूज नै नमे हो सोभो........।

ढाल ४

*सतजुगी स्वामी, थे गणपाल अंतरजांमी ॥ध्रुपदं॥

१ सतयुग सरीखा सतजुगी जांण, खेतसीजी गुण रत्ना री खांन ॥
२ समण सत्यां नै जनक समान, प्रतीतकारी थे बुधवान ॥
३ सतगुरु सीख कठण वयणेह, थे समचित धारी गुण-गेह ॥
४ वारु रे खिम्या गुण आपरो पेख, याद आयां हीयो हरख विसेख ॥
५ आछी रे सतजुगी थांरी मुद्रा ऐन, पेखत पांमै चितमां चैन ॥
६ सुंदर थांरी वाण विशाल, निर्मल सुधारस अति सुविशाल ॥
७ तूं गिरवो गुणवंत सुबंभ, तू धोरी जिनमत नो थंभ ॥
८ कोमल थारी प्रकृति अमोल, च्यार तीर्थ में आपरो तोल ॥
९ संत सत्या निस दिन समरंत, तूं 'पियर'[1] सम महा जशवंत ॥
१० खेतसी अवर नाम उदार, चित्र लिखत जिम हृदय मझार ॥
११ भीखू भारीमाल अनें ऋषराय, पूर्ण प्रीत नीभाई सवाय ।
१२ झीणी रेस वताई मोय, हू निसदिन समरूं मुनि तोय ॥
१३ संवत अठारै नीनाणूवे न्हाल, वीदासर मे रची गुणमाल ॥

ढाल ५

†धिन-धिन स्वामी सतजुगी रे ॥ध्रुपदं॥

१ भीखू भारीमाल ऋषराय थी हो। सतजुगी। पूरण पाली प्रीत हो। मोटा मुनि।
भक्ति वछल गिरवा मुनि हो। सतजुगी। सुखदाई सुविनीत हो। महामुनि।
२ शांत प्रकृत थांरी सुंदरु, लघु वृद्ध जत्न विसेख।
कर्म काटण उदमी घणा, परम विनै गुण पेख ॥
३ एक टक उदक आगार थी, तप कियो दिवस अठार।
विलंव रहित कार्य गुर तणा, गण वछलगण आधार ॥
४ सील तणा घर थे सही, वारु थारी अमृत वैण।
परम प्रियजन वालहा, आप साचेला सैण ॥
५ हूं वलिहारी थाहरी, ज्ञान दातार गुण खांन।
याद आयां मन हुल्लसै, सकल मिटै दुख खान ॥

---

*लय : ब्रजवासी लाला की ... ।

१. पिता।

†लय : प्रेम प्यारा छं नंदरा रे ... ।

६ संत खेतसी जी सारखा, दुलभ होणाइ इण काल।
चौथे आरे पिण विरला होसी, इसा आप परम दयाल ।।

७ आप तणां गुण किम वीसरुं, प्राणनाथ महाराज।
सुपनें देख्यांइ सुख उपजै, आप तारण तिरण जिहाज ।।

८ याद करै नित्य आपनै, समण सत्यां सुविसेख।
असरण सरण तूं ही सही, परम विनय गुण पेख ।।

९ क्षम दम सम गुण सागरु, आसा-पूरण आप।
समरण करूं नित्य आपरो, सकल मिटै सताप ।।

१० सतजुग सरिखा थे सही, निर्मल गुण निरदोस।
चार तीर्थ थांनै संमरै, पूर्ण आपरो पोप ।।

११ 'हूंस'[1] धरी गुण म्हे रटचा, उगणीसै तीये अवधार।
पोस विद वीज पुष्य नक्षत्र मे, सूर्यवार श्रीकार ।।

१२ पुज रायचंद मुख आगलें, जैपुर सैहर में जोय।
वीस सावु तेसठ आंर्य्यां, रंगरली जयपुर होय ।।

ढाल ६

*सतजुगी स्वामी भजो भाव सूं रे ।। ध्रुपदं ।

१ खेतसी स्वामी नैं वांदो 'ध्यांत'[2] सू रे, नित्य नित्य भाव सहित नमस्कार रे।
सतजुगी महा सुखांरो लाडलो रे, भव-भव दुखरो भाजण हार रे ।।

२ नाथदुवारे नीका पणे, संजम लियो वड वैराग।
मात पिता ऋधि संपत छाडनैं, मुनिसर लागा मुक्त रै माग ।।

३ भीखू गुरु मिल्या मोटा भाग सू, त्यांरा सिप हुवा घणां सुवनीत।
विनय वियावच में वधियां घणां, सागेइ चोथा आरा नी रीत ।।

४ भण्या गुण्या घणाइज भाव सू, अनेक कला सीख्या असमान।
तिण माहली कोय प्राणी आदरै, घट माहै जागै तिण रे ग्यान ।।

५ व्रत अव्रत मांड वतावता, जाभा रूडा तिणमे जाव।
हलुकर्मी रे हृदय ऊतरै, पापंड छोडै तुरत 'सताव'[3] ।।

---

१. उमग।
२. ध्यान।
*लय : आउखो टूटा न सांधो......।
३. शीघ्र।

६ एकंतर आदि तपस्या कीधी घणी, सीयाले सी उनाले आताप।
दुक्कर करणी करी वरसा लगे, काटण पूर्व भव ना पाप ॥

७ मामोजी ऋषराय आचार्य तणा, दोनूइ समणी नें हेम तणो वडवीर।
भोपा साहाजी तणो छै 'डीकरो'[1], हरू माता जायो छै गुणधीर रे ॥

८ संवत उगणीसै चौके वरस में रे, मृगसर सुदि दूज अने गुरुवार रे।
गुण गाया सतजुगी तणा रे, गाम 'दोहिंदा'[2] में हितकार रे ॥

ढाल ७

*खेतसीजी भजो धर खंत ए ॥ध्रुपदं॥

१ स्वाम खेतसीजी सार ए, अडतीसे चरण उदार।
वाह-वाह विनय गुणवंत ए ॥

२ सुध प्रकृति घणी सुखमाल, महा संत मोटो सुविशाल।
आ तो सुरगिरि जेम सोभंत ॥

३ स्वामी आप प्रसंस्यो सधीर, वारू भीखू रै पास वजीर ॥
मुनि भाग वली मतिवत।

४ भीखू भारीमाल ऋषिराय, शातिकारी सतजुगी सोभाय।
स्वामी तुझ गुण नित्य समरत ॥

५ उगणीसै आठे उदार, समरचो खेतसीजी सुखकंद।
म्हारै परमोपकारी महंत ॥

ढाल ८

†संत सिरोमणि सतजुगी, ज्यारी हू वलिहारी ॥ध्रुपदं॥

१ सखरा स्वामी सतजुगी, विनयवत सुविचारी।
भक्ति वछल भीखू तणा, हद मुनिवर हितकारी ॥

२ नरम प्रकृति नीकी घणी, सूरत सुखकारी।
वचनामृत सम वरसता, निर्मल 'शिव-नेतारी'[3] ॥

३ 'धोरी'[4] जैन धर्म-धुरा, सम दम सुविचारी।
विनयवंत मुनि वाल हो, सासण सिणगारी ॥

*लय : भजो पूज भारीमाल ।
†लय : जाप जपो सतजुगी ।

१. पुत्र।
२. घोइंदा।
३. मोक्ष के अधिकारी।
४. प्रमुख।

४ संत सत्यां समरण करै, जग में जशधारी ।
'खांत'[1] गुणे हद खेतसी, पद सूरत प्यारी ।।
५ उगणीसै आठे समै, जेठ विद पंचम सारी ।
स्वाम खेतसी समरियै, जयजश वृधिकारी ।।

ढाल ९

१ *जाप जपो सतजुगी तणो, पामै परमानंदो ।
सुमत सुधारस सागरुजी२, 'मणधारी'[2] मुणंदो ।।ध्रुपदं।।
२ खांत गुणे कर खेतसी, सुध सील सोहंदा ।
चरण करण चित चातुरी, मन भविक मोहंदा ।।
३ विनयवंत श्री वीर ना, सिप पढम सोहंदा ।
आग्याचार आगे करी, धर पाय धरिंदा ।।
४ स्वाम भीखू ना सेविया, वर चरणारवृंदा ।
गुरुकुल वासे गाढ़ा घणां, 'अंत-सीम'[3] आणंदा ।।
५ संत सत्या नै आसासना, अति सेव अमंदा ।
निर अहंकार चित निर्मले, धिन-धिन विनय धुनिंदा ।।
६ वर्णव विनय तैं वारता, किम जाय कथिंदा ।
जनक लघु वृध जत्न थी, उचरंग अमंदा ।।
७ 'समय-सभाय'[4] सूरा घणा, 'चरचा हित चंदा'[5] ।
'अनभय कूची'[6] आगला, मेटण भर्म मंदा ।।
८ वाचंयम अति वाल हो, समणी सुखकंदा ।
आचार्य रै आगलै, उवभाया उमंदा ।।
९ याद आयां मन हुल्लसै, 'ऋत पामै रू-कंदा'[7] ।
'सापुरप सतजुगी सारिखा, मनमथ स्यू मथिंदा'[8] ।।

---

*लय : विलावल ......।

१. क्षमा ।
२. शिरोमणि ।
३. अन्त तक ।
४. आगम का स्वाध्याय ।
५. चर्चा के समय चन्द्रमा की तरह शीतल ।
६. अभय की चावी ।
७. रोम-राजि आनंद को प्राप्त होती है ।
८. मुनि खेतसीजी जैसे सत्पुरुषों को कामदेव क्या परास्त करेगा? अर्थात् परास्त नहीं कर सकता ।

१० मोसूं उपगार महामुनि, अति कीध उमंदा।
जन्म-जन्म नही वीसरूं, वर तुज गुण-वृंदा।।
११ समण सत्यां वहु संमरै, गुणाधार गुणिंदा।
प्रवल पुन्य पूज प्रगटियो, एह थी अति आनंदा।।
१२ अखिल गणाधार ओपतों, रुडो ऋषराय चंदा।
'दृष्ट'[१] भविक विगसै हीयो, समीचीन समुंदा।।

१. देखने से।

मुनि हेमराजजी[1]

(ख्यात सं० ३६)

ढाल १

दोहा

१ हेमजी स्वामी दीपता, सासण मे सिरदार
कर्म काटै विचरै सुखे, त्यांनै नमो नमो नरनार ।।

२ आहार पांणी नैं वस्त्र दीयै, करै सेवा भक्ति गुणग्राम ।
ते पिण तिरै जीव संसार थी, ते पामै अविचल ठांम ।।

३ वले त्यांमे गुण छै अति घणा, ते पूरा केम कहवाय ।
कोड जीभ्या कर वर्णवू, तो पिण पार न थाय ।।

४ थोडोसा प्रगट करूं, लेस मात्र विस्तार ।
भाव धरी भवियण सुणो, आलस ऊंघ निवार ।।

*सुणजो गुण हेमजी स्वामी तणा ।। ध्रुपदं ।।

५ भीखू स्वामी रा सासण मझै, चितामणि रत्न समान । सुग्यांनी रे ।।
स्वामी हेम गुणकर सोभता, गुण रत्ना री खांन ।।

६ ग्रामां नगरां विचरै घणा, ए तो करै घणो उपगार ।
कर्म काटै तप जप खपकरी, समजावै नर नार ।।

७ तपवंत गुणवंत खपवत, जपवंत क्षमावंत जांण ।
तेजवंत दयावंत जांणजो, लज्यावंत मतिवंत बखाण ।।

८ सर्मवंत क्षमावंत दयावंत, समवंत नें महिमावंत ।
वेरागवंत धीर्यवंत वखांणजो, विनैवंत नें वचन महंत ।।

९ जाबदेवा समरथ पिछाणजो, प्रश्नां रा अनेक प्रकार ।
अन्य तीर्थी पूछै तेह नै, स्वामी जाब देवै तंतसार ।।

१० अणसमजू नै समजाय नै, मार्ग आणै ठाय ।
अन्यमती नैं जाब देवा समरथ छै, जीवादिक नवतत्व बताय ।।

११ छ द्रव्य नें नवतत्व तणा, लधी बंधी कायस्थित जांण ।
वासठियादिक वोल थोकडा, न्यारा न्यारा कीधा पिछांण ।।

---

*लय : पूज नै नमै हो सोभो गुण……।

१ देखिए परिशिष्ट १, स० ५

१२ वाल ब्रह्मचारी थेट रा, वेगो लीधो मुक्ति रो माग।
पछै पढ गुण नै पीडत हुवा, 'नमा सुख'[1] पाया छै अथाग॥
१३ पंच महाव्रत पालै निर्मला, साध छ काया ना पीहर।
सुवांणी अमृत सम वाग रै, जांणे खीर समुद्र नो नीर॥
१४ वारै भेदे तप तपै, सतरै भेदे संजम भार।
दशविध जती धर्म सहीत छै, भरत खेत्र में सार॥
१५ गुणवंत ना गुण गावतां, तीर्थंकर गोत बंधाय।
संका हुवै तो देखलो, ग्याता सूत्र रै मांय॥
१६ इत्यादिक गुणारा भंडार छै, कर्म करै चकचूर।
आश्रव द्वार रोक्या संवरद्वार सू, वैराग करे भरपूर॥
१७ भेखधारी श्रावक सहीत सु, चरचा करे तिण काल।
त्यांनै चर्चा मे 'कष्ट'[2] करै घणा, जव देवै 'कुडा-कुडा आल'[3]।
१८ ते चर्चा में कष्ट ह्वै तरै, रीस करै 'कूड जाय'[4]।
द्वेष रे वस श्रावका भणी, लगावै ते करे वकवाय॥
१९ जव हेमजी स्वामी क्षमा करै, त्यारो जोर न चालै कोय।
वोलै ते गणत राखै नही, सूत्रां सांमो जोय॥
२० हस्ती वजार मे हालता, लारै कुत्ता करै भसवाय।
हस्ती तो गिणत राखै नही, त्यां स्हामो न जाय चलाय॥
२१ खट अणसण त्यां कने हुवा, त्यानें वैराग चढायो भरपूर।
जन्म मरण त्यांरा मेटवा, उपगार कियो वडसूर॥
२२ जोगीदास स्वामी जीवणजी, सुखजी स्वामी भोपजी जाण।
सांमजी ने स्वामी रांमजी, ए छहुं तपसी वखाण॥
२३ इम कहि कहि नै कितरो कहुं, हेमजी स्वामी में गुण संभाल।
हेम सोनो सोलमो, ए ओपमा लीजो न्हाल॥
२४ संवत अठारै वर्स वोहितरे, सावण विध चवदस ने सुक्रवार।
हेमराजजी स्वामी रा गुणा तणी, जोड़ कीधी कंटाल्या गांम मझार।

ढाल २

*गावत मैं तो हेम तणा गुण भारी, ज्यांरी सूरत री वलिहारी।
ज्यांरी करणी री वलिहारी। गाव०॥ध्रुपदं॥
१ हेमाचल सारिखा हेम ऋषेवर, धुरवाला ब्रह्मचारी।
जगत उधारक तारक स्वामी २, आप थया अवतारी।

---

१ नौवा सुख (दस सुखों मे नौवा सुख साधु का माना गया है)।
२. फरास्त।
३. झूठे-झूठे आरोप।
४. मन ही मन क्रोध करते है।
*लय : गावत में तो पूज तणी ....।

२ अंतरजामी आप ओजागर, सागर जेम उदारी।
गुणना गागर नागर निर्मल, धर्म-जागर धुनधारी।गा०॥
३ सोम मुद्रा सुखदाई दीठां, हिवडो हरषै अपारी।
नांम सुण्यां तन मन हुलसावै, उत्कृष्ट उपगारी॥
४ सुपना में तुम सूरत देख्यां, आणंद होय अपारी।
प्रत्यक्ष पेखण नो स्यूं कहिवै, ते जाणे जिन सारी॥
५ गेहर गंभीर धीर सुरगिरी सा, खिम्यावान महाभारी।
उपसम रस नो स्वाद तुम लीनो, कर्म काटण सिरदारी॥
६ कहिवै सुणवै नें समभ्रण में, मुनि हेम विचक्षण भारी।
मोसू उपगार कियो उत्कृष्टो, सासण ना सिणगारी॥
७ याद आयां सूं चक्षु हुवै 'आद्रक'[1], आप ऐसा उपगारी।
पुन्य प्रमाणे मिल्यो 'मुज बलभ'[2], सतीदास सुखकारी॥
८ शांति प्रकृति अरु पुन्य सरोवर, 'बलभ'[3] बांण उदारी।
उग्रभागी दिशावांन ऊजागर, एहवो सतीदास भारी॥
९ संवत उगणीसै ने बीए, आसाढ मास उदारी।
विद सातम गुण गाया हेम ना, नंमाणा गांम मझारी॥

*हेमनी वलिहारी॥ध्रुपदं॥

१ ए तो हेम ऋषि गुणसागार, मुनि खिम्या तणा तो आगर।
मुनि सुमति गुप्त सुखकारी, ज्यांरी सूरत मुद्रा प्यारी हो॥
२ परगटिया पंचम आर, स्वामी कियो घणा रो उधार।
घणां नैं दियो संजम भार, घणा श्रावक किया सुखकार॥
३ आप उत्तम पुरुष अवतारी, थांरी सोम मुद्रा हितकारी।
थांनैं याद करै नर नारी, हेम ऐसा हुंता उपगारी॥
४ अठारै सै तेपने उदार, भिक्खू हाथ संजम लियो सार।
उगणीसै चोके परलोग, वरताया सुभ जोग॥
५ म्हांसू उपगार कियो भारी, ग्यान चरण दायक अप धारी।
कला सीख अकल सुभ सारी, सीखाइ अधिक उदारी॥
६ निश दिन तुझ ध्यांन सुधारी, बस रह्या मुझ मन मझारी।
थांरो गुण नही मूलू लिगारी, मुज प्राण-बलभ सुखकारी॥
७ उगणीसै साते सुविचारी, महा सुदि आठम तिथि सारी।
वडा नराणा गया उपगारी, गाया हर्ष प्रमोद अपारी॥

---

१. गीली।
*लय: कहै रूपसी नार ए (षटमल मेवासी)
२. मेरा मित्र (जयाचार्य के मुनि सतीदासजी बाल मित्र थे।)
३. प्रिय।

ढाल ४

*हेम ऋषि नित्य वंदियै ।।ध्रुपदं।।

१ हेम २ उरजन जिसा, काइ हेम दिशावांन भारी जी कांई ।
संवत अठारेसै तेपने, हेम चरण वृधिकारी जी काई ।
२ संत वारे अति सोभंता, हद तेरमा हुवा मुनि हेम ।
तठा पछै घटीयो नही, उग्रभागी कह्या एम ।।
३ सोम सुरत हद्द सोभती, सुमति गुप्ती सुखकारी ।
सखर हेम गुण समरचा, पामै मन अति प्यारी ।।
४ मुझ उपगारी महामुनि, चित मे नित चाहूं ।
मुनिआपतणो सरणो इसो, प्रत्यक्ष ही सुख पाऊं ।।
५ समत उगणीसै आठै समै, हेम गुणे हियो हरख्यो ।
आसापूर्ण आप छो, परम दृष्टि कर परख्यो ।।

ढाल ५

†हद स्वाम भजो मुनि हेम ए ।।ध्रपदं।।

१ हेम साचेला हेम ए, ज्यांरे परम,चरण सूं प्रेम ए ।
निमल विमल तसुं नेम ए ।।
२ ग्यांन ध्यांन गलतांन, वली खिम्या सूरा गुणखान ।
जन भजन करै जिन जेम ।।
३ गुण सागर गैहर गंभीर, वारू कर्म काटण वडवीर ।
ज्यांरे सदा कुसल नै खेम ।।
४ मुज परमोपगारी मुनिंद, चित शीतल पूनमचंद ।
पूरा गुण कह्या जावै केम ।।
५ उगणीसै आसाढ आठे उदार, विद तेरस मगलवार ।
प्रगटचो गुण गावत प्रेम ।।

ढाल ६

१ +संवत अठारै छिहंतरे रे, फागुण तेरस दिन सार रे सुजाणो ।
उदियापुर में आविया पिछांणो ।।

*लय : कुसल देत सुहामणो ए........ । †लय : भजो पुज भारीमाल ए .... ।
+लय : साभलचंद नरेश........ ।

२ तेरै साधा सूं पधारिया, हेम रखी रायचंद मुणंदा।
घणा जीवां रा ज्यां मेटिया फंदा ॥

३ हीदुपती सुण हरखत थयो, असवारी कीधी तिणवार अणंदे।
साधां सनमुख आय नैं वंदै ॥

४ गुणग्रांम करै मुख सूं घणा, जब इचरज हुवा वहु लोक विशेखी।
केइ धर्म धेखी पिण इचरज थया देखी ॥

५ पछै आसाढ विदएकम दिने, हेम कीयो उदीयापुर माय चौमासो।
अष्ट ऋषी गुण सोभता हुलासो ॥

६ सूत्र चरचा वखांण मे, हेम साचेला हेम ए आछा।
सुंदर इमृत बोलता रे वाचा ॥

७ सीतल नयण सुहांमणो, गहर गभीर गुजास ए गाजै।
जुगत खिम्या कर सोभता विराजै ॥

८ गजवी साध गुमांनजी, भीम भगत करी अरु जीत सुजांणो।
भारीमाल गुरु पांमिया पिछांणो ॥

९ त्या वृधकरी वृधमांनजी, तपसा करवा तंत ए मंडा।
साढा तीन मास तणा त्यां रोपिया रे झंडा ॥

१० 'चाछ'[1] 'आछ'[2] अन्न छोड नै, हेम समीपे सोहै एहवा सूरा।
पूरा रे तपसीजी किया कर्म रा चूरा ॥

११ पाखंड़ 'जाडो'[3] उदीयापुर मझै, भेखधारी गया भरम भूल एवंका।
त्यानैं हठाया वागा जीत रा डंका ॥

१२ हिवै चौमासो उतरचो, कियो तिहांथी विहार अणगांरा।
गौघूंदै चाल्या देइ जीत रा नगारा ॥

१३ गोघूंदे हेम पधारिया, हर्ष्या घणा नर नार अनेको।
उद्योत थयो जिन धर्म नो विसेखो ॥

१४ वाघजी कोठारी तिहां वसै, तिण रै पूत्र हुंतो सतीदास ओ आछो।
सीलव्रत साचे मन आदरचो जाचो ॥

१५ तिण नै न्यातीला उपाय किया घणा, घर में राखण काज अनेको।
संसार नो लोभ देखावियो विसेखो ॥

१६ उपसर्ग त्यां दीधो घणो, पिण सैंठो रह्यो सतीदास सनूरो।
चारित्र लेवा मन ऊठियो सूरो ॥

---

१. छाछ (तक्र)।
२. आछ गर्म छाछ का निथरा हुआ पानी।
३. वहुत ज्यादा।

१७ रेहतो न जांण्यो घर मझै, जव आज्ञा दीधी तिण वार सुजांणो ।
दिख्या रा मोछव अति घणा पिछांणो ।।
१८ संवत अठारै सतंतरे, सुदि पांचम वुधवार उदारु ।
सतीदास सजम लीयो सोभनो वारु ।।
१९ चढ़ती वय चढ़ती कला, रिध रमण दीधी छटकाय उमंगे ।
हेम समीपे संजम आदर्‌यो उचरंगे ।।
२० घणा नरनारी इचरज थया, केइ पाखंडी पिण इचरज थाय प्रसीधी ।
चोथा आरा जिसी आरे पंचमे कीधी ।।
२१ दिख्या दे विहार कीयो त्या थकी, आय भेटचा भारीमाल संपेखी ।
च्यार तीर्थ मन हर्षत थया देखी ।।
२२ उद्योत थयो जिण धर्म रो, धिन भीखू भारीमाल मुणंदा ।
घणा जीव समजाय त्यारा मेटीया फदा ।।
२३ संवत अठारै तेपना पछे, उदै उदै पूजा अति जाण सपेखो ।
ए तौ प्रत्यक्ष निजरा देखलो विसेखो ।।
२४ इम साभल उत्तम नरा, धारो साचा गुरु निग्रंथ अै रूडा ।
तिण सू मुक्ति तणा सुख पामसो पूरा ।।

मुनि जीवोजी[1]

(ख्यात सं० ४४)

ढाल १

*धिन-धिन स्वामी, जीवराज नैं जी। ध्रुपदं ॥

१ जीवोजी स्वामी नैं नित्य वंदिए जी, सरल घणा सुवनीत।
आज्ञा आराधी आछीतरै जी, त्यांरी गण में घणी प्रतीत ॥

२ प्रकृति भद्रीक प्रज्ञा भली, अल्पभासी अल्प आहार।
विनय विवेक विचार में, सकल जीवां सुखकार ॥

३ पांच षट आठ तपस्या घणी, उन्हाले अधिक आताप।
सीत काले वहु सी खम्यो, ध्यान सझाय मन थाप ॥

४ भीक्षू भारीमाल ऋषराय नी, भक्त करी भरपूर।
संत 'ऋक्षपाल'[2] सुहामणा, काटण कर्म करूर ॥

५ सील सुमता रस सागरु, पतला क्रोध मांन माया लोभ।
चरण करण मे चातुर घणा, 'परिसह उपसर्ग अखोभ'[3] ॥

६ समण मुद्रा कर सोभता, घणी विगै नो परिहार।
त्यागी वैरागी हीये निरमला, वंदणा करूं वांरूवार ॥

७ समत अठारै एकाणूए, तिथ इखू तीज तिवार।
जीवाजी मुनि ना गुण गाविया, रामगढ सैहर मझार ॥

ढाल २

†धिन मुनि जीवजी। ध्रुवपद ॥ १ ॥

१ धिन-२ जीवो मुनि जगतारक, जगत उदारक जांणी।
सुवनीता में जीवो सिरोमणि, सुंदर मघुरी वाणी ॥

२ धिन-२ भिक्षू स्वामी, जिण एहवो शिष कीधो।
पंचमे आरे प्रगटयो, जीत नगारो दीधो ॥

१, देखिए परिशिष्ट १, स० ७

२. रक्षक।

†लय—राघव आविया हो

*लय—एहवा मुनिवर

३. परिषह एवं उपसर्ग के समय क्षोभ (घबराहट रहित)।

३ प्रकृति भद्रीक घणो जोवामुनिनी, पतलो च्यार कषायो।
सुखदाई गण में महा गिरवो, सुजश लोकां में पायो ॥
४ भिक्षू भारीमाल ऋषराय नी, साचे मन करी सेव।
याद आया तन मन हूलसावै, जीवो तज्यो अहमेव ॥
५ हलूकर्मी जीवो मुनि गायो, अठाणुए समत अठारो।
चेत सुदि पंचम 'चूंप" नै, जीवो रट्यो जगतारो ॥

मुनि जवानजी (बडा)

(ख्यात सं० ५०१२-१)

ढाल १

दोहा

१ जशधारी ऋष जवांनजी, जाभी कीरत जांण।
सुभ मन कार्य सारिया, 'पयवर'[१] गांम पिछांण ।।

२ इगसठे संजम लियो, वडी पादू वसीवांन।
वर्ष पैतालीस आसरै, पाल्यो चरण प्रधांन ।।

*जवांन सुखकारी रे, ।।ध्रुवदं ।।

३ प्रथम शीप भारीमाल नो, जशधारी रे, सुगुरू भणी सुखकार, संत गुणधारी रे।
ग्रहणा नैं आसेवना, गुणधारी रे, सीखै शिक्षा सार गुणधारी रे ।।

४ जवांन सुमति नो सागरू, जवांन गुप्त गुण पूर।
आज्ञा अखंड आराधवा, जवांन साचेलो सूर ।।

५ जवांन इर्या धुन ओपती, जवान भाषा नो जाण।
एषणा सुमति आछी तरै, जवान मुनि सुविहाण ।।

६ वस्त्रादि लेवै मूकवै, जवांन सुमति सुखदाय।
जवान पंचमी सुमति में, सावधान अधिकाय ।।

७ मन वचन काया गोपवै, जवांन ऋषी हद जांण।
अहिंसा सत दत्त जवांना, स्यू करियै वखांण ।।

८ गुप्त ब्रह्म ऋष जवांन नो, नारी नाहरी जांण।
सील धरयो नववाडि सू, परिग्रह नो पचखाण ।।

९ खम्या अति ऋष जवान नी, निर्लोभी निग्रथ।
जवान सरल सुख सागरु, पालण प्रभू नो पंथ ।।

१० निर्मल जवांन ऋष अति घणो, कर्मोपधि लाघव जवान।
सत्यवादी मुनि संजमी, निर्मल चरण निध्यान ।।

---

१. दूधोड।

*लय—आज आणदा रे ....।

११ जवांन 'तपी'[1] तप सागरू, जवान सुसील विचार।
असणादिक दै साधां नैं, दिल रो जवांन दातार ।।
१२ सूरत मुद्रा जवांन नी, अतिसयकारी अैन।
वचन सुधा जन सांभल्यां, चित में पांमै चैन ।।
१३ विनीत घणो सतगुरु तणो, गुरुकुल वासे वसंत।
अंग चेष्टा मांहै वर्त्ततो, सीखे सूत्र सिद्धंत ।।
१४ भारीमाल ऋष हेमनी, सेव करी वहुवास।
संवत अठारै वोहितरे, न्यारो करायो चौमास ।।
१५ गामां नगरा विचरता, पालै गुरु नी आंण।
नर नारी प्रतिवोधता, वाचै सरस वखांण ।।
१६ सभा चातुर सैणा घणा, जशधारी अतिजाण।
ज्यां ज्यां जवांन ऋष विचरचा, त्यां त्या जन करत वखांण ।।
१७ हेतु दृष्टंत कला घणी, सूत्रानी रहिस उदार।
हजांरा ग्रंथ मूंहढै सीखिया, याद करै नर नार ।।
१८ मुरधर मेवाड नें मालवे, हाडोती ढूढार।
थाट किया थली देश में, एहवो जवांन अणगार ।।
१९ घणां नै दियो साधू पणो, श्रावक वौहला कीध।
सुलभ वोधी वहु नै करी, जग माहै जश लीध ।।
२० चौथ छठादिक वहुकिया, नव तप आठ उदार।
पाच पांच नां थोकडा, कीधा वहुली वार ।।
२१ जवांन ऋष इण रीत सू, लीध जन्म नो लाह।
जवांन तणा गुण देख नै, गुणिजन कहै वाहरवाह ।।
२२ विचरत विचरत आविया, मुरधर देश मझार।
कारण 'वांण'[2] नो ऊपनो, समभाव सहै अणगार ।।
२३ सूंप्या संत सेवा करण कू, परम पूजनो पोष।
चौमासो चिरपटीये करचो, पाम्यां अति संतोप ।।
२४ विनयवांन श्रावक श्रावका, ऋषिजवांननी सेवकरंत।
संत हाजर सेवा मझै, जवान ऋषि पुन्यवंत ।।

---

१. तपस्वी। २. लकवा (पक्षाघात)।

२५ सतां संघाते पोस में, पयवर कीध प्रवेश।
नर नारी हरख्या घणा, समण पंच सुविशेप।।

२६ करी सलेखणा इण विधे, वहुला किया उपवास।
पाच बेलां रै आसरै, तोडण कर्मा री 'पाश'[1]।।

२७ दोय चोला किया दिपता, च्यार तेला उनमान।
एक पांच नो थोकडो, ध्यावता निर्मल ध्यान।।

२८ आलोइ निदी निसल हुवा, मेटचो आतम वंक।
इम आतम कर ऊजली, जवान थयो निकलंक।।

२९ समत उगणीसै पाचे समै, वैशाख दिन नवमी सार।
पाछिली निशि परभव गया, वरत्या जैजैकार।।

३० पचीस खंडी माडी करी, जाणैक देव विमाण।
एतो किरतब ससार ना, धर्म तो अंस म जाण।।

३१ जिन मार्ग जवान दीपावियो, लोढा जात ओसवाल।
भजन करो भवियण सदा, समरण मंगल माल।।

३२ संवत उगणी सै छ के समै, प्रथम वैशाष विद एकम सार।
गुण गाया ऋष जवान ना, चूरू सैहर मझार।।

ढाल २

दोहा

१ जवान 'जोरावर'[2] करी, लोढा जाति सुलीन।
ओसवंश मे अवतरचा, चरण हरष धर चीन।।

२ संमत अठारै इगसठे, भारीमाल रे हाथ।
चारित्र धारचो चूप सू, सूर पणे साख्यात।।

३ वासी बडी पादू तणा, वारू विनय विवेक।
गुरु-भक्ता गुण-आगला, 'पवर'[3] गुणागर पेख।।

४ प्रथम शिष्य भारीमाल ना, जाझी कीरत जाण।
गुरुकुल वासे सेवता, सखरी भांत सयांण।।

५ वर्ष पैतालीस आसरै, पाल्यो संजम भार।
जन्म सुधारचो महा मुनि, पयवर गांम मझार।।

१. वधन।
२. जबरदस्त।
३. प्रवर (श्रेष्ठ)।

*हरष धर जवांन ऋष नित्य वंदो, भव-भव पाप निकंदो।
इह भव पर भव पांमै आणंदो ।।ध्रुपदं।।

६ ऋष जवांन सुकीरत जाभी, हद सूरत मनोहर ताजी।
त्यां सू च्यार तीर्थ घणा राजी।

७ वारू विनय भक्त अति करता, श्रुत ग्यान गुणे दिल भरता।
वारू शीख हिया माहै धरता।।

८ भारीमाल नी सेवा कीधी, वहु वर्ष आत्म दम लीधी।
पाया ग्यान तणी वहु ऋधी।।

९ पछै हेम नी सेवा में आया, पंच वर्ष तांई सुख पाया।
थयां वहुश्रुत अधिक सवाया।।

१० एकोतरा रै वर्ष विचारो, पूज कीधो है न्यारो सिंघाड़ो।
पछै कियो घणो उपगारो।।

११ मुरधर मालव देश मेवाडो, वली हाडोती देश ढूढारो।
थली माहै कियो उपगारो।।

१२ ज्यां री कंठ कला हद भारी, दृष्टंत नी छिव न्यारी।
सूतर सिद्धंत मे अधिकारी।।

१३ सभा चातुर अधिक नीहालो, ऋष जवान जिसा सुविसालो।
विरलाई इण पंचम कालो।।

१४ घणा नै दीयो संजम भारो, देश विरती घणा किया सारो।
वहु सुलभ किया नर नारो।।

१५ तप चौथ छठादिक धारो, पांच पांच ना थोकडा सारो।
मुनि कीधा है वोहली वारो।।

१६ वहु वर्ष चारित्र इम पाल्यो, जिन शासण नै उजवाल्यो।
मुनि गर्व कर्म नो गाल्यो।।

१७ छेहडै कारण अधिक उपनो, समभावे सहै महा मुनो।
तप ध्यान तणी धर धुनो।।

१८ कीधी सलेखणा इण रीतो, वहु चोथ भक्त धर प्रीतो।
एक कर्म काटण री नीतो।।

१९ पांच वेला चौला वे सुहाया, तेला च्यार अधिक सुखदाया।
एक पाच नो थोकडो पाया।।

*लय : नमोनाथ अनाथा रो नाथो.... ।

मुनि मोजीरामजी[1]

(ख्यात स० ५४।२-५)

ढाल १

१ *थयो मोजीरांम ऋष भारी, वच वारु कला विचारी।
वखाण घणो सुखकारी रे, उपगारी मुनि गुण आगलो ।।ध्रुपदं।।
२ मूहढै ग्रंथ हजारां कीधा, हद दृष्टत हेतू सीधा।
ज्यां जग माहै जश लीधा, कांइ पीधा प्याला प्रेम ना ।।
३ दशवैकालिक भणियो, उत्तराधेन मुख गुणियो।
आवसग बृहत्कल्प थुणियो, वहु वर्सा लग कठा राखिया ।।
४ वलि सीख्या आचारंगो, दूजो सुतखंध सुचंगो।
'सूत्रांनी हूंडी'[2] संगो, उमंग करी नै चीतारता ।।
५ ज्यांरी वचन कला सुखकारी, साभल हरषै नर नारी।
ज्यांरी कीरत भारी, वलिहारी जन जन उच्चरै ।।
६ वहु नर नारयां नैं उपदेशो, तप ज्ञान तणी घाली रेसो।
हरष धरी नै हमेसो, च्यरचारिक वोल सीखावता ।।
७ वारु वैराग चढाई, तपसा पिण घणो कराई।
नर नारया नै सीखाई, मिटाया अवगुण तेह ना ।।
८ पोते पिण वहु तपस्या कीधी, चालीस तांई हद लीधी।
आछ आगारे प्रसीधी, तपस्या में वखाण छोडयो नही ।।
९ विचरया मुरधर मेवाडो, हाडोती थली ढुढारो।
वलि मालव देस मझारो, उपगार कियो स्वामी अति घणो ।।
१० त्यां कियो घणो उपगारो, ऋष मोजीराम गुण धारो।
त्याधै याद करै नरनारो, सुखकारो तीर्थ च्यार नैं ।।
११ सतसठे संजम लीधो, तप जप वहुलो कीधो।
जीत नगारो दीधो, काइ संमत अठारै नीनाणूए ।।
१२ ज्यां आतम कार्य सारयो, जीतव जन्म सुधारयो।
निज आतम नै तारयो, श्रीजीद्वारे परभव गया ।।

---

१. देखिए परिशिष्ट १, स० १२

२. आगमो की सक्षिप्त नोध।

*लय : आबूगढ़ तीर्थ ताजा ...।

मुनि पीथलजी (बड़ा)

(ख्यात सं० ५६।२-७)

ढाल १

दोहा

१ पीथल लीधो मुगत पथ, पीथल पाम्या पार।
'पीथल तप हरि पाखरचो'[1], वड पीथल व्रत धार॥

२ वंस ओस 'हरि'[2] जाति वर, वाजोली वसीवान।
संजम पाली सैहर मे, छासठे साल सुजान॥

३ सतरै वर्ष रे आसरै, तपसा कर तन गाल।
तयासीये अणसण तपी, 'परलोके पटसाल'[3]॥

४ विविध प्रकारे तप बुहा, संखेपे संवंध।
निसुणो थे नर नारिया, पीथल तणो 'प्रबंध'[4]॥

*तपसी प्रथ्वीराज रो तप भारी रे॥ध्रुपदं॥

५ पीथल सुध रंग रमीजै रे, तप धर्म सुधा रस पीजै रे।
दिन दिन गुण अधिक ग्रही जै॥

६ पाली सैहर संजम भल पायो, छिन एक 'नार'[5] छिटकायो।
स्वामी हेम मिल्या सुखदायो॥

७ षट चौमासे तप खड्गधारा, विचित्र प्रकारे विसाला।
आतापन लेता ऊनाला॥

८ तिहंतरे सैहर सरियारी, चालीस कियां तंतसारी।
ओर तप कियो विविध प्रकारी॥

९ चिमंतरे गोघूदे वयासी, पाली पिचतरे तप तयासी।
विविध तप सूं कर्म विणासी॥

१० छहंतरे देवगढ़ छाजै, एक सो षट दिन साजै।
तप सू तन सोभ विराजै॥

---

*लय : प्रभु नमीनाथजी मुज प्यारा रे।

१. पीथल मुनि तपोवल से सिंह की तरह सज्जित हो गये।

२. नाहर (उनका गोत्र नाहर था)।

३. परलोक (स्वर्ग) की पृष्ठशाला मे वास किया।

४. विस्तार।

५. नारी।

११ सतंतरे पुर किया च्यार मासो, अठंतरे निनाणू अभ्यासो।
करै कर्म अरि नो विणासो ॥

१२ गुण्यासीये सौ उपर नीको, असीये दोय मास सधीको।
तप शिवरमण रोटी को ॥

१३ इक्यासीये मास अढाई, इकवीस वलि तप ठाई।
तप सू तरवार वजाई ॥

१४ एकसौ एक पाली आणंदो, बयासीये तप गुण वृंदो।
गुर मिलिया पूज रायचंदो ॥

१५ तयासीये कांकरोली तासो, पटमास भीम ऋप पासो।
पचखाया पूज हुलासो ॥

१६ केलवे वर्धमान छमासी, राजनगर हीर तप वासी।
कांकरोली पीथल पद पासी ॥

१७ राचंद पूज सुहाया, तीनूं ए परिणांम चढाया।
तपसी तप करण उमाया ॥

१८ पुन प्रबल पूज रायचंदो, प्रतपै 'धर'[1] जेम 'दिनंदो'[2]।
जिन मार्ग तिलक मुणिंदो ॥

१९ तप साज देण मुनि तीखा, त्यारा साध साधवी नीका।
संजम तप करण सधीका ॥

२० गुण आचार्य नैं गूजै, तस नामे पाखंडी धूजै।
राय रांणा तास पूजै ॥

२१ हस्तमुखी पूज गुण परखै, सरल सूरत जे नर निरखै।
तस तन मन हिवडो हरखै ॥

२२ तप ग्यान ध्यान हुवै ताजो, रायचंद स्वामी दीयो साजो।
धिन धिन धिन पूज महाराजो ॥

२३ सुध आचारी सतगुर लीजै, हीण आचारी दूर तजीजै।
गुण सू गुरु पाय नमीजै ॥

२४ तपसी तीनू नै साझ दीधो, त्यांरो सफल जमारो कीधो।
जग मांहे पूज जस लीधो ॥

२५ जेठ कृष्ण पखे मुनिराया, छमासी तीनूं नै पचखाया।
पूज उदीयापुर चल आया ॥

२६ उदीयापुर धर्म उजासै, ऋपराय रह्या चौमासै।
हीदूपति हुओ हुलासै ॥

---

१. धरा। २. सूर्य।

२७ चतुरमास करी ऋषरायो, आया कांकरोली सैहर चलायो।
पारणो पीथल नै करायो ॥

२८ तीनू षट मासी तप कीधो, पाणी आछ आगार प्रसीधो।
देश देश माहि जश लीधो।

२९ मुरधर देश रा दर्शण सारो, आया अरज करै वारवारो।
मुज देश महाराज पधारो ॥

३० साध साधवी दर्शण काजो, आया सित्तर ठाणे समाजो।
भेटचा श्री पूज महाराजो।

३१ मालवा रा बाइ भाइ आया, पूज दर्शण कर सुख पाया।
छवि देख घणा हरषाया ॥

३२ पूज मालव देश पधारो, म्हें अर्ज करां वांरवारो।
थाहरा दर्शण री वलिहारो ॥

३३ त्यारी वीनती पूज मानी, विहार कियो मालवा कानी।
वहु संत परिवारे पिछांणी ॥

३४ भीम जी नै पीथल भलायो, रत्न मांणक हुकम सुहायो।
पांचू साध काकरोली मांयो ॥

३५ पीथल अंग असाता पांमी, चढते परिणाम तमामी।
आयु आय लग्यो तिण ठामी ॥

३६ पोस सुदि दशम दिन सोयो, जीभ थाकी असाता होयो।
जित सावचेत अवलोयो ॥

३७ भीम पूछचो करांवा संथारो, भरियो तव काय हूंकारो।
सावचेत पणै श्रीकारो ॥

३८ पचखायो संथारो सागारी, आसरै सवा पौहर विचारी।
पहुंता परलोक मझारी ॥

३९ सतरै वर्ष संजम उनमानो, तिण में तप तप्यो प्रधानो।
तप निर्मल गुण नी खानो ॥

४० इम सुण तप सुध करीजै, कोडां भव ना कर्म हरीजै।
तिण सूं शिवपद ना सुख लीजै ॥

४१ चौपन ठाणां सूं पूज पधारचा, मालवा मे घणा जीव तारचा।
पाखंडचा नैं दूर निसारचा ॥

४२ खाचरोद उजीण नोलाई, रतलांम झाबूवा मांही।
दीया जीत रा डंका वजाई ॥

४३ समज्यो झाबूआ नो महाराजो, कुमर जी आया वंदण काजो।
वाजंत्र रह्या वहु वाजो ॥

४४ गज सू ऊतर बैठो कुमारो, 'जन खलक'[1] सुणै नर नारो।
कहै हू छू सेवग तुमारो ॥

४५ मालवे उपगार मंडाणो, जिन मारग जोर जमाणो।
पूज गाल्या पाखंड्या रो मानो।

४६ षट मास कोदर तप ठायो, पाणी आछ आगार रखायो।
पूज सगे जगत जश छायो ॥

४७ सक्षेपे सत 'जश वासो'[2], सवत अठारै वर्ष चोरास्यो।
मृग सिर सुदि अष्टम तासो ॥

४८ वडनगर पूज प्रसादि, गाया पीथल गुण अहलादि।
पूज दीधी घणा नै समाधि ॥

४९ जवेरचंद जी आदि दे जाणी, वीणती हींदूपति नी आंणी।
किरपा कीजै पूज पिछांणी ॥

५० रायचंद पूज गुण जिहाजो, ग्यांन ध्यांन नी द्यो मुज साजो।
म्हारी अरज सुणीजै महाराजो ॥

५१ मोने आप तणोज आधारो, स्वामीनाथ अरज अवधारो।
पीथल जिम पार उतारो ॥

५२ के तो ग्यान रूपी शक्ति दीजै, नही तो तप रूपी भक्ति लीजै।
दोयां मे एक तो महर कीजै ॥

५३ तुम चरणारविंद सोभायो, मुझ मन भ्रमर लोभायो।
रस रूप गुणां लिपटायो ॥

ढाल २

तपस्वी पृथ्वीराज नैं नित्य वंदो।
भव-भव ना हरे, भव-भव नां पाप निकंदो।
॥ध्रुपद॥

१ वड़ पीथल विड़द भारी, षट मास तांई तप धारी।
तप कीधो हरे, तप कीधो विवध प्रकारी।

---

१. जन-समूह (झुंड के झुंड)। २. सुयश-सुगध।

२ सुवनीत घणो सुखकारी, विनय व्यावच नो गुण भारी।
तपस्या में हरे, तपस्या में हरे महा सिरदारी॥

३ तुम गुण सिंधू सुहावे, मुझनै तुम गुण वहु भावै।
याद आया हरे, याद आया हरे, हीयो विकसावै॥

४ मुझ सूं तो घणो गुण कीधो, वाल पण थकी साझ दीधो।
विडदधारी हरे, विडदधारी हरे, भलो जश लीधो।

५ अठाणूए संवत अठारो, चैत्र विद पंचम गुरुवारो।
गायो पीथल हरे, गायो पीथल हरे मो मन प्यारो॥

मुनि संतोजी

ख्यात सं० ५६।२-१०

ढाल १

*धिन-धिन संत सुहांमणा ।।ध्रुपदं।।

१ स्वाम सतोजी सोभता, इर्या धुन अभिराम ।
आचारी गुण आगलो, एक चरण नी 'हांम'[1] ।।

२ सुमति सचेत सुहामणो, गुप्त यत्न गणि आंण ।
आछी रीत अराधतो, सुगणो सत सुजांण ।।

३ पंच महाव्रत पालतो, संग रहित सुध रीत ।
'वीहक'[2] पाप थकी वहु, परम सुगुरू सू प्रीत ।।

४ भारीमाल ऋपराय नी, सेव आंण सुध मांन ।
जीत तणी अति जत्न सू, पाली आंण प्रवान ।।

५ विचरत विचरत आवियो, सैहर आंमेट मझार ।
मांणक आदि मुनिस्वरू, सेव करै सुखकार ।।

६ कारण तन माहे ऊपनो, इतलै जयगणि आय ।
संतो घणो हरखावियो, आनंद तन अधिकाय ।।

७ 'पांती छोडी'[3] संत नी, हरप्यो संत विसेख ।
अरज करी वचने करी, आपो मुनि वली एक ।।

८ लघु नेम नैं वली मूक नै, संतोष्यो सुविचार ।
अधिक हरष उपजाय नैं, जय गणि कियो विहार ।।

९ दिवस सातमे संतजी, काल कियो तिणवार ।
उगणीसै वारे समै, पोह सुदि तेरस सार ।।

१० मांणक नेम आदि अरी, संत सेवा में पंच ।
पद आराधक पांमिया, सुध ववहार सु संच ।।

---

१. इच्छा ।

२. भीरु ।

*लय : वैरागे मन वालियो........।

३. भोजन विभाग से मुक्त किया ।

११ संमत अठारै छासठे, लीधो सजम भार।
मासखमण मुनि वहु किया, वलि तप विचित्र प्रकार॥
१२ सणधरी ना वासी मुनि, जाति वोकरिया सार।
उत्तम चरण आराधनै, कर गयो खेवो पार॥
१३ उगणीसै तेरे समै, सुदि श्रावण पंचम सार।
मुझ वाल मित्र सत गावियो, पाली सैहर मझार॥

मुनि स्वरूपचंदजी

ढाल १

१ *स्वाम सरूप सुहामणा, शासन रा सिणगार हो। भविकां।
गुणग्राही गिरवा घणा, नाम लिया निस्तार हो।। भ०। स्वा०।।

२ आचारज सू अति घणी, अधिकी प्रीति अमूल्य।
गण वच्छल गण स्तंभ गुणी, ऊंडी बुद्धि अतुल्य।।

३ रागी कर राखै आपरो, तिण नै जाणता जहर समान।
जिल्लो भुजंगम सारिखो, सह स्वरूप नी वान।।
(स्वाम स्वरूप नी शीखड़ी)।।

४ निर्लज्ज टालोकर नागड़ा, फिट-फिट हुवै जग मांय।
तास संगत करवी नही, एह स्वरूप नी वाय।।

५ शासन सदा दृढावणो, देशना मे निरभीक।
फल्यो फूल्यो रहिणो गण मझै, एह स्वरूप नी सीख।।

६ साप्रत काले स्वाम नो, शासन वन रह्यो फाव।
संका राखै निरभागिया, एह स्वरूप ना जाव।।

७ सांप्रत काले स्वाम नो, शासन महा सुखकार।
शका राखै अविनीतडा, तिण रा पुन्य गया परवार।।

८ साप्रत काले स्वाम नो, शासन मोटी मांड।
शका राखै निरभागिया, ते हुवै जगत में भांड।।

९ साप्रत काले ए सही, स्वाम शासन शुद्ध माग।
शंका राखै अविनीतड़ा, तिण रो जाणजो पूरो अभाग।।

१० बेमुख आचारज थकी, अविनीतां सू प्रीत।
शंका राखै गण मझै, ते भव-भव होसी फजीत।।

११ स्थिर पद गाढो रोपियै, शासन में सुविनीत।
पक्ष तजै अविनीत री, ते गया जमारो जीत।।

*लय : शिवपुर नगर सुहामणो ..... ।

१२ इत्यादिक हितकारणी, सीख सरूप नी सार।
अमल चित्त करीआदरो, राखो गणपति सू अति प्यार ।।

१३ उगणीसै अठवीस मे, पूनम मास वैसाख।
जोड़ी शीख स्वरूप नी, लाडणू शहर सुसाख ।।

ढाल २

१ सांप्रत काले स्वाम नो, शासन वन रह्यो फाव हो। सुगणा।
संका कंखा राखै नही, त्यांरी च्यार तीर्थ मे आव हो।सु०।
स्वाम सरूप नी शीखड़ी।

२ साप्रत काले स्वाम नो, शासन सरवर सुमाग ।।
संका कंखा राखै नही, तिण रा जाणज्यो मोटा भाग ।।

३ सांपत काले स्वाम ना, शासन महा सुखकार।
संका कंखा राखै नही, तिण रा दिन-दिन पुन्य श्रीकार ।।

४ साप्रत काले स्वाम ना, तीर्थ च्यार सनूर।
संका कंखा राखै नही, त्यारी भाग्य दिशा भरपूर ।।

५ साप्रत काले स्वाम ना, च्यार तीर्थ रा झड।
संका कखा राखै नही, ज्यारी महियल मोटी मड ।।

६ साप्रत काले स्वाम नो, शासन अति ही विशुद्ध।
शंका कंखा राखै नही, ज्यारी निर्मल बुद्ध ।।

७ उगणीशै अठवीस मै, जेष्ठ कृश्न छठ सोमवार।
हित शिक्षा सुविनीत नी लाडणू जय-जयकार हो ।।

---

*लय- शिवपुर नगर सुहामणो ·· ·····।

मुनि हरखचन्द जी

(ख्यात स० १४ ।३-५७)

ढाल १

*हो मुनिवर गुणधारी ।। ध्रुपदं ।।

१ थयो हरप मुनि हुसीयार, ओ तो शासण रो सिणगार।
आचार्य सूं इकरंगी, तिण रै प्रीत अधिक अति चंगी ।।

२ वांच्या वर सूत्र बतीस, गणी आसता विसवावीस।
भीखू मर्यादा भाली, तिण परम प्रेम करि पाली ।।

३ भीखू गण अधिक दृढ़ावै, टालोकर भणी उड़ावै।
गण वाहिर जे अपछंदा, तसु जांण्या जैन रा जंदा ।।

४ गणपति नो अति सुवनीत, थयो वसुधा मांहि वदीत।
रुडी तसु वारु रीत, गयो जमारो जीत ।।

५ अति अमल चरण आराध्यो, सुख ब्रह्म तणो मुनि साध्यो[1]।
गणपति सुरइंद्र समाज, तसु सामानिक मुनिराज ।।

६ गणपति ना जे अभिप्राय, बुद्धि सू जाण्या मुनिराय।
अवनीतां रो संग छोड़ी, गणपति सूं प्रीत सुजोड़ी ।।

७ तलेसरो गायो सुखरास, उगणीसै सैंतीसे वास।
विद चैत अष्टम बुधवार, जय जश हरप अपार ।।

१, प्राचीन अनुश्रुति के अनुसार कहा जाता है कि मुनि हरखचदजी पांचवें देवलोक मे गये।

मुनि स्वरूपचंद जी

(ख्यात सं० ६२।२-१३)

ढाल १

१ स्वाम स्वरूप सुहामणा, गुण सागर ज्ञानो।
उपगारी गुण आगला, धुन निरमल ध्यांनी॥
२ परम पीत गणपति थकी, वारु कीर्त्ति वखाणी।
जिन मत भार 'धुरंधरा'[1], गण वछल ज्ञानी॥
३ तीर्थ च्यार सुधारवा, सीख दीयै सुखदानी।
'बंक'[2] मिटावण वागरै, वर अमृत वांणी॥
४ ऊंची मति आलोचनां, 'जूनी'[3] धारणा जांणी।
अधिक सासण री आसता, ओपम गगन समांनी॥
५ समय सज्झाय सूरा घणा, अहो निशि जांनी।
नित निपुण अति निरमल, थिरता चित ठाणी॥
६ सम परिणांम वेदन मझै, हद भावन आंणी।
सिखर मोड सुसील नो, रमवा सिव रांणी॥
७ गुणतरे संजम ग्रह्यो, पणवीसे सुविधानी।
पद आराधक पामियो, भजन करो भव प्राणी॥

---

१. धारण करने वाले।
२. कमी।
३. पुरानी।

मुनि भीम जी

(ख्यात स० ६२।२-१४)

ढाल १

*भजो भवि प्राणी, भीम नद आणंद करण मुगुण खांणी ।। ध्रुपदं ।।

१ भीम ऋषी भजो भाव सू, भ्रम भय भाजण 'भीम'[1] ।
याद आया मन हुल्लसै, हर्ष सवाया 'हीम'[2] ।।

२ गुण नों तू ग्राही घणो, वचन तणो तूं सूर ।
ऊंडी तुझ आलोचना, साहस वंत सनूर ।।

३ मुनि वछल जन बालहो, अल्प-भासी दीसो आप ।
जाप जपंता तांहरो, दल रूप टलियै संताप ।।

४ सरूपचंद सहोदर भणी, ते दीधो दीसै सनमांन ।
दिव्य रूप देख्यां छतां, हरष थयो असमांन ।।

५ चैत्र विद सातम गुण गाविया, अठाणूवे संवत अठार ।
अभिलाषा हिव पूरियै, म करो जेज लिगार ।।

ढाल २

दोहा

१ भजियै भीम मुनि भलो, संजम पाली सार ।
कीध किल्याण जन्म तणो, नित जपियै नर नार ।।

२ संवत अठारै गुणंतरे, विद पक्ष फाल्गुन मास ।
इग्यारस तिथ ओपती, चारित्र लियो हुलास ।।

३ बे भाई दिक्षा ग्रही, दोढ मास पहिला देख ।
पाछै पोते मात सहित, चारित्र लीधो पेख ।।

४ सवा अठाइस वर्स ऊपरे, धरचो संजम ध्यान ।
भजन करो भवियण सदा, भीम ऋषी गुण खान ।।

---

१. बहुत बडा ।
२. शीतल ।

*लय— भजो भवि प्राणी रे ···· ।

*भीम भजलै गुणधारी रे, संत सुगणो सुखकारी रे।
भीम गुण ग्यान भंडारी रे, जगत जश कीरत भारी रे।।ध्रुपदं।।

५ भीम ऋषि भ्रम मेटणो रे, भीम गुणे भरपूर ।।
चरचा वोल सीखावा रे, भीम साचेलो सूर ।।

६ भीम प्रकृति नो भद्रीक घणो, सतगुरु नों सुविनीत।
भीम सरल सुखदाई गण मझै, भीम आत्म-लीधी जीत ।।

७ भीम व्यावचियो वालहो, समणी संत सुहाय।
श्रावक श्राविका सुलभ वोधी, भीम घणो सुखदाय ।।

८ वारुं वैराग वधायवा, उदमी भीम हुलास।
उपवास बेलादिक वोहला कीधा, अर्द्धमास नें वले मास ।।

९ थिर चित वायां भायां भणी, थोकडा सेरचां सीखाय।
निस दिन भीम नैं संभरैं, त्यांरा तन मन नैण भराय ।।

१० सूत्र सिद्धंत वाच्या घणां, वारुं करवै वखाण।
भविजन नैं समजायवा, भीम भलो सुविहांण ।।

११ मुरधर देश मेवाड मालवे, हाडोती नें ढूंढार।
थली हरियाणे वीचरया, त्यांरा जाप जपै घणां नर नार।।

१२ सरूपचंद ऋष जीत नो, भीम सहोदर सार।
वहु क्रोध मांन माया नही, कांइ सुंदर मुद्रा उदार ।।

१३ वाल ब्रह्मचारी भीम मुनिसर, विचरत विचरत सोय।
लाडणूं होय चूरू आय नैं, पछै आया रांमगढ जोय।

१४ भीम भागचंद पूंजो नें नंदजी, संत च्यार सुविहांण ।।
सैहर वीसाउ आविया, आसाढ विद छठ जांण ।।

१५ वमन थई तन वेदना, सातम दिन सुभ ध्यांन।
थोडा मैं चलता रह्या, कांइ सुध परिणामां जांण ।।

१६ सांभल करडी लागी घणी, साध श्रावकां सोय।
संवत अठारैं सताणूए, भीम पौहता परलोय ।।

१७ धिग धिग इण संसार भणी, काल आगे नही जोर।
अणचिंतव्या चलता रह्या, कांइ भीम गुणे महाधीर।

*लय : मिल्यो फंद काट ....।

१८ पांडव भीम सरिखो भीम ऋषि रे, भीम गुणां रो भंडार ॥
सुविनीत सुखदाई सुगणो, याद करै घणा नर नार ।
१६ भीत तणा भागछा महाभारी, गुरु मिल्या पूज रायचंद ॥
विविध प्रकारे मनोरथ पूरचा, वरताय परम आणंद ॥
२० भीम आउखो पूरो करचो, साभल्यो पूज महाराज ।
मन मांहि करडी लागी घणी, भीम हुंतो गुण जिहाज ॥
२१ संवत अठारै सताणूंए, असाढ सुध एकम बुधवार ।
भीम ऋषी ना गुण गाविया, डीडवांणा सैहर मझार ॥

मुनि बर्द्धमानजी

(ख्यात सं० ६७।२-१८)

ढाल १

*भजलै तपसी वर्धमान ए ।।

१ वृद्धिकरी वर्धमांन ए, तप दिन तयालीस प्रधान ए ।
उन्हाले पाणी रे आगार जाण ए ।।

२ वले मास खमण वहुवार, वले तप दिन एकसौ च्यार ।
उदक आगारे पिछाण ।।

३ किया मास अढाई उपरंत, वले खट मासी घर खंत ।
आछ आगार वखांण ।।

४ सीयाले सह्यो शीत ठार, रात पछेवडी परिहार ।
पौहर दिन चढ्यो उनमांन ।।

५ ग्रीष्म काले आताप, वहु वर्स लगे चित्त थाप ।
गोचरी फिरवै आसांन ।।

६ साहसीक छाती नों 'हरीफ'[1], परिसह इंद्री लीधी जीप ।
वर दृढमन अधिक सुजाण ।।

७ भारीमाल ऋषिराय, त्यांरी सेवा करी चित्त लाय ।
कीधो जन्म कल्याण ।।

८ मुझ वाल मित्र वर्द्धमान, छेहडै दर्शन रो रह्यो ध्यांन ।
तपसी गुणनी खांन ।।

९ वर्स सीतांणूए समत अठार, सैहर काकरोली सुखकार ।
गायो वर्धमांन सुजान ।।

---

*लय : भजलै पूज भारीमाल......।

१. मजबूत ।

ढाल २

*तपसी जी वैरागी ।। ध्रुपदं

१ वर्धमान वडवीर, तप हरष सवायो हीर हो। तपसी वैरागी।
एकसो दिन च्यार सधीर, तप उदक आगारे वजीर हो ।।
२ सह्यो शीत उष्ण तप भारी, मास खमण किया वहुवारी।
गुणग्राही तू सुखकारी, साहसीक जगत हितकारी ।।
३ मुज बाल मित्र तू जाचो, तूं प्रीत निभावण साचो।
भ्रम भंजण काजे आछो, तुझ निर्मल अमोलक वाचो ।।
४ तूं सुगुणो सुखदाई, गणवछल कीरत सवाई।
ते पदवी भल पाई, तुम तपस्या करी हित ल्याई ।।
५ समत अठारै अठाणू, गायो वर्द्धमान गुण भांणू।
सुखदायक नें सुविनीत, थासू तन मन लागी प्रीत ।।

ढाल ३

[1]भजो भवि प्राणी रे।
भीम मुनिंद आनंद करण सुख दांणी रे ।।ध्रुपदं।।

१ भीम ऋषि भर्म भंजणो रे, भीम पांडव सम भीम।
भीम तणा गुण संभरयां रे, हिवडो हो जाय हीम.।।
२ सरल सुखदायक गण भणी, धुर वाला ब्रह्मचार।
आत्म कीधी उज्ज्वली, उदमी भीम उदार ।।
३ 'मास तिलक'[1] तपसा करी, बहु विगय तणो परिहार।
गुणंतरे संजम लियो, सताणूए पोंहता पार ।।
४ सरूप जीत नो सहोदरु, भीम भीम भविक सुखवास।
पंचम काले प्रगटयो, कीधो अधिक उजास ।।
५ भजन कियां भव दुख मिटै, सुख संपति श्रीकार।
भीम तणा गुण गावता, प्रत्यक्ष मंगलाचार ।।
६ भीम गुणां रो पोरसो, भीम गुणां रो भंडार।
भीम प्रवल बुद्धि आगलो, भीम सुमति नो दातार ।।

---

*लय : कहै रूपश्री नार.....।

[1]लय—अनंतनाथ जिन चवदमा ... ।

१. एक महीने तक।

७ संवत उगणीसै साते समै, पोह सुदि दसमी सार।
भीम स्तुति करतां छता, पाम्यो हरष अपार।।

ढाल ४

*गुणधारी ओ तो संयम धारी, भीम वडो उपगारी हो। मुनिवर गुण धारी।
।।ध्रुपदं।।

१ भीम ऋषि भारी, वर सूरत महा सुखकारी हो। मुनिवर गुण धारी।
धर्म मूरत महा जशधारी, पद मुद्रा मुनि नी प्यारी हो। मुनिवर गुण धारी।।

२ चरचा चित चूंप विचारी, महा सरल मुनि मणिधारी।
निशदीह जपै नर नारी, एसो हुवो भीम उपगारी।।

३ सरूप जीत नों सारी, भल भीम सहोदर भारी।
सुध चरण गुणंतरे धारी, सताणूवे परभव सुखकारी।।

४ ओ तो अवतरियो इण आरी, गण वच्छल ने हितकारी।
सत पुरुष भीम सुविचारी, नित्य भजन करो नर नारी।।

५ उगणीसै आठे उदारी, भज्यो भीम गुणां रो भडारी।
पूर्ण मन वंछित पारी, सुख संपति नो सहचारी।।

*लय-कहै रूपश्री नारी ....

मुनि पीथलजी (लघु)

(ख्यात सं० ७२।२-२३)

ढाल १

१ *होजी म्हांरै लघु पीथल सूं लागी पूरण प्रीत जो।
गाइयै रे गुण जेहना तपसी गुण निलो रे लो ॥ ध्रुपदं ॥

२ मुनि मास खमण तप कीधो मन उचरंग।
वारू रे वली विविध प्रकारे तप भलो ॥

३ मुनि दोय मास वलि कीधा दिढ़ परिणाम।
धारयो रे मुनि संथारो सूरापणे ॥

४ दिन पनरे रो अणसण आयो त्तांम।
चढते परिणामें मन आणंद घणो ॥

५ मुनि विनयवंत सतगुरु थी वोहली प्रीत।
त्यागी रे वैरागी तपसी महा गुणी ॥

६ मुनि कीधा गुण नो जांण घणो सुध रीत।
गावै रे गुण सरलपणै सुगुणो मुणो ॥

७ मुनि जातिवंत कुलवंत नें लज्यावंत।
गुणधारी उपगारी मुनिवर दीपतो ॥

---

*लय : होजी म्हारै धर्म जिन सूं लागी ······

मुनि रत्नजी

(ख्यात स०७४।२-२५)

१ ढ़ाल

*भजो भवि प्रांणी रे, रतन मुनिंद आनंद करण जग जाणी रे ।। ध्रुपदं ।।

१ रत्न ऋषि रलियामणो रे, लाहवे चरण नो लाह ।
जात बांवलिया जांणजो रे, अमीचद सग शिव राह ।।

२ दीर्घ बंधव फतेचंदजी, धर्मी ने धनवंत ।
उच्चरंग थी अदरावियो, चरण सरस मन खंत ।।

३ 'कंकोतरियां'[1] मेली करी, वोलाया वहु जन्न ।
हेम भणी मेली वीनती, तन मन अधिक सुप्रसन्न ।।

४ संवत अठारै तीहोतरे, मृगसर विद छठ सार ।
रत्न चरण महोच्छव रच्या, आणी हरष अपार ।।

५ 'फतै-सुतन'[2] 'काका'[3] तणो, मोह वस करत रुदन्न ।
कहै फतै किण कारणे, तन मन थाय 'विखन्न'[4] ।।

६ अग्नि मे एक वंधव वलै, एक नीकलै छै वार ।
जे अग्नि मे वलै तेहनै, रोवै ते जग ववहार ।।

७ पिण लायमां सू जे नीकलै, तिण नै रोवै किण न्यांय ।
इण दृष्टते जाणजो, जन्म मरण री लाय ।।

८ ते लाय माहै तो हू बलू, तसु रोवै ते न्याय ।
तुझ काको लाय थी नीकलै, तेह नै रुदन करै कांय ।।

९ इण रीते समजावियो, सजन अने परिवार ।
प्रिय धर्मी धर्म प्यारो घणो, दृढधर्मी अधिकार ।।

---

*लय—अनंत नाम जिन चवदमा......।

१. कुंकुम पत्रिकाए ।
२. फतेचदजी के पुत्र ।
३. रत्नजी ।
४. खिन्न ।

१० रत्न संजोडे विध करी, आंचलियो अमीचंद ।
त्रिय सुत छांडी तिण समै, त्रिहुं हेम हाथ चरण संध ।
११ अमीचंद त्रिहुं ऋतु मझे, जवर कियो तप घोर ।
धना ऋषि नी ओपमा, तपसी में सिरमोड ॥
१२ अठ्यासीये वोरावड मझै, पचख्या पनरै दिन्न ।
चोविहार तीजै दिने, पंडित मरण प्रसन्न ॥
१३ अमीचंद इण आर में, अधिक कियो उद्योत ।
हिवै रत्न तणी सुणो वारता, जाझी गुणां नी जोत ॥
१४ रत्न वहु वर्सा लगे, पाल्यो चरण प्रधांन ।
सुमति गुप्त महाव्रत में, सावचेत गुणखान ॥
१५ नीत निपुण महिमा निलो, आण अखंड आराध ।
परम प्रीत सतगुरु थकी, सखरी रीत समाध ॥
१६ जवर शासण री आसता, सर्व गुणां में ए सार ।
प्रांण खंडै पिण न विछंडै, गण शिव सुख दातार ॥
१७ छेहडै मुनि छती सक्ति मे, माह विद दशमी सार ।
पछै संथारो आदरचो, तिविहार सुखकार ॥
१८ अधिक शक्ति मुनि आदरचो, अणसण अधिक उदार ।
जिम जिम दिवस नींकलै, तिम तिम वधतो प्यार ॥
१९ ग्राम ग्राम ना आवता, दर्शण करिवा देख ।
इतला में पुर में सांभल्यो, मेगराज वोरदियो पेख ॥
२० रत्न संथारो ज्यां लगे, पचख्या तीनू आहार ।
जांणक मेलो मंडियो, आमेट सैहर मझार ॥
२१ श्रीजीदुवारा थी दर्शण किया, फोजमल सुप्रसन्न ।
रत्न कहै वज्र भीत जेहवो, दृढ है म्हारो मन्न ॥
२३ संथारो दिन गुणपचास नो, रत्न भणी सुध रीत ।
जय जय जन ऊचरै, गया जमारो जीत ॥
२४ उगणीसै सतरे समै, फाल्गुन सुदि तेरस सार ।
रत्न ऋषि परभव गयो, पांम्या जन चिमत्कार ॥
२५ अणसण इण आरे इसो, विरला धारै कोय ।
चोथा आरा सारिखो, ए अणसण अवलोय ॥
२६ वीस दिन थया मेघराज रै, वहुजन त्याग वैराग ।
रतन तणां प्रताप थी, वध्यो घणो धर्म राग ॥

२७ जीव राज मांणक मुनि, खूंम पोखर धर खंत।
सेव करी साचे मने, रत्न तणी चित शांत ॥

२८ रत्न चिंतामण सारखो, रत्न ऋषि सुखकार।
भजन करो भवियण सदा, समरण जय जय कार ॥

२९ उगणीसै सतरे समै, चेत अमावस वुद्ध।
रत्न डीडवाणे रटयो, जयजश संपति सुद्ध ॥

१२ कोदर षट मासो करी, वलो तप विविध प्रकार।
संथारो दिन सात रो, छठ-छठ अठम उदार॥
१३ सुवनीतां सिर शेहरो, कोदर तप गुण खांन।
उजवाली निज आतमा, महिमा मेरु समान॥
१४ संजम भार धुरंधरु, वियावच करण वजीर।
गुण हितकारी गुणनिलो, करम काटण वडवीर॥
१५ लघु मोती वाघावास नो, छह मासी तप कीध।
और तप विचित्र प्रकार नो, जीत नगारा दीध॥
१६ राससुख रलियामणो, अडसठ उदक आगार।
तेसठ नें पैंतालीस नो, वलि उगणीस चौविहार॥
१७ इत्यादिक तपसी घणा, सारचा आतम काज।
तन मन सूं समरण कियां, भव दुख जाए भाज॥
१८ सोमवती आसोज नी, छन्नूंए वर्ष अठार।
गुण गाया 'तपस्यां'[1] तणा, चूरू सैहर मझार॥

ढाल २

*भवियण भज ऋष अमृतचंद ॥ध्रुपदं॥

१ इमृतचंद सीतल घणो जी, जैहवो ऋप अमीचंद।
अंतर तप मिटायवा रे, सोम सुधा सुखकंद॥
२ इमृत नें चंद जगत में, वलभ तन विगसाय।
ए वलभ तीर्थ च्यार नै, महा तपसी मुनिराय॥
३ इमृतचंद दीठा पीया, तन मन सुख जोय।
ए समरचा सुख संपजै, एह भव परभव दोय॥
४ इमृत तो तन सुख करै, चंद वाह्य करै जोत।
ए समरचां सुख साता, अंतर भाव उद्योत॥
५ पूर्ण थांरी आसता, एक चटक चित मांय।
के जांणै मन मांहरो, के जाणै जिनराय॥

---

१. इस गीतिका मे मुनि अमीचदजी के अतिरिक्त ९ महान् तपस्वी मुनियों का विशेष रूप से नामोल्लेख किया है—१. मुनिश्री वगतोजी (५८), २. मुनिश्री पीथलजी 'वडा' (५६) ३. मुनिश्री पीथलजी 'छोटा' (७२), ४. मुनिश्री वर्धमानजी (६७), ५. मुनिश्री हीरजी (७६), ६. मुनिश्री दीपजी (८५), ७. मुनिश्री कोदरजी (८१), ८. मुनिश्री मोतीजी 'छोटा' (६१), ९. मुनिश्री रामसुखजी (१०५)।

*लय : कपूर हुवै अति ऊजलो ''।

६ त्यागी वैरागी वडो, थो अवसर नो जाण।
विनय विवेक विचार मे, तपसी महा गुण खाण॥
७ संवत अठारै छिन्नूंए, चूरू शहर मझार।
इमृत आसापूरणो, गायो हरष अपार॥

ढाल ३

*भवजीवा रे भजो 'सुधाचंद'[1] सार ॥ध्रुपदं॥

१ अमीचंद गुण आगलो रे लाल, कालूराग 'करड़'[2]।
चौविहार दश लग किया रे लाल, कर्म काटण महाशूर॥
२ शीतकाले पछिम निशा, ऊभा काउसग धार।
विविध अभिग्रह आदरया, बहु वस्त्र तणो परिहार॥
३ उष्णकाल आतापना, विनय विवेक विशेस।
कर्म काटण उद्यमी घणो, परभव मांहमो पेस॥
४ पंचम आरे प्रगटया, कीधो धर्म उद्योत।
सुख संपति दायक मुनि, घणा घट घाली जोत॥
५ भीम ऋषी भ्रम भंजणो, जन मन रंजन जोग्य।
चरण करण चित चातुरी, आणंद करण आरोग्य॥
६ चिंतामणि सुरतरु समो, भीम धर्मी दुःख-भंजन्न।
निश्चल तन मन सू भज्या, सुख पांमै सुप्रसन्न॥
७ पोह सुदि उगणीसै तीए, सातम नें गुरुवार।
आशा पूरण गाइयो, जैपुर में जैकार॥

ढाल ४

†अमीचंद पंचम आरे परगटियो ॥ध्रुपदं॥

१ अमीचंद ऋष गुण आगर, सम दम तपसी तपनो सागर।
लाहो मनुष भवनोज लीयो॥
२ तीहंतरै गृहवास तज्यो, भव तारक हेम ऋषि नें भज्यो।
छांड त्रिया सुत चरण लियो॥

---

*लय : सीयाले खाटू भली रे"।
१. अमीचद।
२. कठोर।

†लय : पायो मिनख जमारो मती ।

३ शीतकाल वहुशीत सह्यो, ऋष उभा काउसग अभिग्रह रह्यो।
उषाकाल आतप तपियो ॥

४ दश दिवस तांई चौविहार दीपं, जश धारक इंद्रिय विपय जीपं।
रस मिष्ट त्याग तप सू रसियो ॥

५ वाह २ रे तपसी तप वारु, चरण परिणाम वाह २ चारु।
'कष्टी'[1] महातप वहु तपियो ॥

६ दिन पनरै मुनि पचख दिया, ऋष दिवस तीन जल ना रखिया।
परलोक तीजे दिन पांगरियो ॥

७ तप कर तोडी कर्म रासो, पंचम काले परकासो।
अठारै अठ्यासीये काल कियो ॥

८ भजन करो तसु नर नारो, समरण सुख संपति सारो।
वड भागी ऋष मुझ मन वसियो ॥

९ उगणीसै साते पोह सुदि दशमी, ऋषराय गुणे मुज आत्म रमी।
अमीचंद प्रसंगे जय सुयश लियो ॥

ढाल ५

*अधिकारी अमीगुण आगलो। साधूजी ॥ध्रुपदं ॥

१ अमीचंद गुण आगलो। साधूजी। अमृत सखर अमोल हो। गुणधारी ॥
पंचम आरे तूं परगटयो, साध तुझ च्यार तीर्थ माहे तोल हो। गु०।

२ तप उत्कृष्टो कियो, तीनूइ ऋत शी ताप हो।
विविध अभिग्रह धारता, अनघ अथग आप ॥

३ ऊंडी तुझ आलोचना, वर तुझ बुद्धि विसाल।
पार कहो किम पांमियै, म्है परख लियो गुणमाल ॥

४ कालूराम कडलो घणो, परम आप सू प्रीत।
उत्कृष्टी तुज आसता, जांण रहचा जिन रीत ॥

५ उगणीसै आठे समै, जपियो मुनि नो जाप।
समरण सुख संपति करे, आसापूरण आप ॥

---

१. कष्ट को झेलने वाला।

*लय : आई छूं देवा ओलंभड़ो सासूजी"।

ढाल ६

*सुधाचंद नित समरियै रे ।। ध्रुपदं।।

१ मुनिवर रे। अमीचंद गुण आगलो रे, इमृतचंद सरीस हो लाल।
प्रगट्यो आरे पंचमें रे, तपसी विस्वावीस हो लाल।।

२ गुण ग्राहक गिरवो घणो, वचन तणो तू सूर।
ऊंडी तूज आलोचना, मुज मन वंछित पूर।।

३ शीत उष्ण तप ते सह्यो, वारू तुम विसवास।
तू प्रगट्यो इण काल में, मुज मन पुरण आस।।

४ विविध अभिग्रह आदरया, थां सू प्रीत अपार।
याद आयां मन हुल्लसै, जांण रह्या जगतार।।

५ रटियो रूडी रीत सू रे, सुधाचंद सुखकार हो।।

ढाल ७

†मोनैं प्यारो लागो छै जी। इमृतचंद।
मोनैं मीठो लागो छै जी। इमृतचंद।
मोनैं वाल्हो लागो छै जी। इमृतचंद।ध्रु०।।

१ अमीचंद ऋष ओपतो जी २, महीयल मोटो मुनिंद।।
२ वड तपसी जनवालहो, सखरो गुण नो समंद।।
३ पंचम आरे प्रगट्यो, निरमल नयणानंद।।
४ ऊंडी तुज आलोचना, गुणग्राही गुणवृंद।।
५ समरण सू सुख सपजै, किम गुण जायक थिंद।।
६ जश महिमा जन में घणी, पेखत परमानंद।।
७ पुन्य सरोवर पोरसो, सुमता रस सुखकंद।।
८ याद आया मन हुल्लसै, आवै अधिक आनंद।।
९ उगणीसै आठे गुण आख्या, आसाढ मास अमंद।।

*लय : हेम ऋषि भजियै ...।   †लय : मोनै प्यारा लागो छो जी ...।

१. इस गाथा की एक ही पंक्ति उपलब्ध है।

मुनि हीरजी[1]

(ख्यात सं० ७६।२-२७)

ढाल १

*सुगणा तपसी जी हो । मु । हीर अमोलक हीर ।।ध्रुपदं।।

१ प्रथम चौमासे पचखिया हो । मुनिवर । सोलै दिन तंत सार ।
दूजे चौमासे दीपता हो । मु० । कीधा दिवस अठावन धारकै ।।

२ तीजे चौमासे तप तप्यो, आठ करी इकतीस ।
वली वंयासी दिन किया, पूरी मनरी 'जगीस'[2] ।।
(तपसी गुण निलो हो) ।।

३ चौथे चौमासे किया, दिन इकतीस उदार ।
धिन-धिन करणी ताहरी, धिन थारो अवतार ।।

४ प्रवर चौमासे पांचमे, संत सठ दिन श्रीकार ।
वैरागी त्यागी वडो, नाम लीयां निस्तार ।।

५ छठै चौमासे चूप सूं, जैपुर शहर मझार ।
उष्ण पाणी आगार थी, किया तप दिन चौवीस धार ।।

६ वारु ता वर्ष सातमें, इकसठ दिन इकधार ।
सुखदाई सुता भणी, तपसी गुण भंडार ।।

७ अधिक तप वर्ष आठमे, सौ ऊपर पैंतीस ।
उत्तम ऋष गुण आगला, करणी विसवावीस ।।

८ नवमें वर्ष तप निरमलो, षट मासी खड्गधार ।
एहवा महातपसी तणो, भजन करो नर नार ।।

९ दशमें वर्ष तप दीपतो, च्यार मास अन्न त्याग ।
गुणवंता तपसी तणो, फेल्यो जस सोभाग ।।

१० चौमासे इग्यारमें, इकतीसा षटमास ।
वलिहारी हूं ताहरी, स्यू गुण करिये तास ।।

१, देखिए परिशिष्ट १,सं० १३

२. अभिलाषा ।

*लय—राजल इण पर वीनवं हो......।

११ इग्यारा दिन वर्ष वारमें, सुखदाई सुजगीस ।
तप भारी वर्ष तेरमे, एकसौ नें छावीस ॥

१२ चतुर चौमासे चवदमें, थली देश मे थाट ।
वासठ दिन तप ऊजलो, दिया कर्म वहु दाट ॥

१३ प्रगट चौमासे पनरमें, एकावन अधिकार ।
भजन करो भवियण सदा, ज्यू पामो भव पार ॥

१४ सौलमा चौमासा मझे, दिवस इग्यारा कीध ।
पाच आदि तप वहु करी, जग मांहे जश लीध ॥

१५ मास अढाई तप भलो, पंच आठ अरु वार ।
वारू तप विध सू कियो, वरस सतरमै सार ॥

१६ अठारमे आनंद सू, तप दिन किया अठार ।
पाच चोला तेला घणा, नित कीजे नमस्कार ॥

१७ शेषे काल करी घणी, तपसा विविध प्रकार ।
चौमासा मे तप तणो, आण्यो म्हे अधिकार ॥

१८ आछ तणो आगार थी, कोइ तप उदक आगार ।
सुविनीता सिर सेहरो, सरल पणो गुणधार ॥

१९ भारीमाल मुख सू कह्यो, हीर वडो सुविनीत ।
पूज रायचंद प्रशंसियो, रह्योज रूडी रीत ॥

२० सीयाले वहु सी सह्यो, उन्हाले आताप ।
वारू तप वरसात में, काटण पूर्व पाप ॥

२१ नार सहित व्रत आदरचो, छांड पुत्र परिवार ।
कमलू कमला सारिखी, सील गुणे सिणगार ॥

२२ चौथा आरा सारिखो, तप करनै तन ताय ।
याद आया मन हुल्लसै, रोमराय विकसाय ॥

२३ परम पूज पुन्य पोरसो, दियो साझ हीर गुण न्हाल ।
विगट वेला विरच्या नही, एहवा पूज दयाल ॥

२४ वड तपसी कोदर तणो, मित्र हीर हद प्यार ।
दोनू ऋष गुण आगला, कहितां न लहै पार ॥

२५ चउमासे उगणीस मे, पूज्य परम गुरूपास ।
तेला मे चलता रह्या, अणचितविया तास ॥

२६ संवत अठारै त्राणूए, भाद्रवी पूंनम भाल ।
पोहतो मुनि परलोक में, हीर ऋषी गुण माल ॥

२७ छठ छठ अठम तप कियो, कोदर ऋप गुणखान।
संथारो दिन सात नो, महिमा मेर समांन ॥

२८ रामसुख रलियांमणो, अडसठ उदक आगार।
तैसठ पैंतालीस किया, वलि उगणीस चौविहार ॥

२९ पचाणूंए परभव गयो, रांमसुख सुविहाण।
कोदर आठ दिवस अछै, कियो आत्म किल्यांण ॥

३० गुण गाया तपस्यां तणा, छन्नूए वर्ष अठार।
माह विद वारस गुरू दिने, लाडणूं सैहर मझार ॥

ढाल २

*हीर मुनीश्वर वंदियै गुण धारी ॥ ध्रुपदं ॥

१ हीरमुनीश्वरवदियैगुणधारी, हीर साचलो हीर रे।सुखकारीलाल।
सरल भद्रकसूहामणो।गु।सुर गिर जेम सधीर रे। सुख० ॥

२ वे वार छमासी ते करी, इक दोय तीन च्यार मास।
सुवनीतां सिर सेहरो, दियो भारीमाल सावास ॥

३ वलभ वांणी ताहरी, वारू वचन नां सूर।
उंडी तुज आलोचना, गुण भरियो भरपूर ॥

४ मुनि वछल जन वाल हो, धर्मोद्यम चित धार।
महेन्द्रपति कल्प साधियो, मुझ नैं महा हितकार ॥

५ संवत आठरै अठांणूंए, चैत्री पूनम शनिवार।
हरि गुणमाल हीये रची, पायो तन मन प्यार ॥

---

*लय—हुं तुज आगल स्यूं ·····।

मुनि शिवजी[1]

(ख्यात स० ७८।२-२९)

ढाल १

दोहा

१ श्री जिन सासण सोभतो, धारयो भिक्षू स्वाम।
त्यागी वैरागी हुवा, तपसी संत तमांम ॥
२ 'निरूप द्रव्य'[2] शिव साधवा, सिवजी संत सुज्ञान।
महातपसी महिमानिलो, ग्यांन गुणे 'गलतांन'[3]॥
३ संवत अठारै पचंतरे, संजम लीधो सार।
उगणी सै ग्यारै समै, कर गयो खेवो पार ॥
४ वासी लाहवा सैहर नो, जाति बाफणा जाण।
भारीमाल स्व हाथे दियो, वारु चरण विनांण ॥
५ विविध प्रकारे तप 'वुहो'[4], सरल भद्र सुखकार।
संक्षेपे तप वारता, साभल जो नरनार ॥

*हरष अपारं हो, मुनि प्यारा जी। ध्रुपदं ॥

६ मुनि थे तो मास खमण वारै वारं, हरष अपारं रा। तपसी जी।
७ मुनि थे तो वली किया दिवस बत्तीसं, अधिक जगीसं।
८ मुनि थे तो दिवस छतीस सुसारं, किया दोय वारं।
९ मुनि थे तो तप दिन वली चालीसं, विसवा वीसं।
१० मुनि कीया दोढ मास नव वारं, अधिक उदारं।
११ मुनि थे तो दिवस पचास उदारं, किया दोय वारं।
१२ मुनिथेतो दिवस पचावन किधा, तपरस पीधा।
१३ मुनि थे तो पाच वार दोय मासं, किया अधिक हुलासं।
१४ मुनि किया दोय वार मास अढाई, सिवनी साई।

१. देखिए परिशिष्ट १, स० १४
२. निर्विघ्न।
३. अनुरक्त।
४. किया।
*लय-प्रभु थारै गल मोती की माला

१५ मुनि किया दिवस नेउ अति सारं, उदक आगारं ।
१६ मुनि थे तो आछ आगार विमासी, इकसौ छयासी ।
१७ मुनि थे तो वलि उपवास लहीजै, आसरै कहीजै ।
१८ मुनि थे तो च्यार सौ चवदै तासं, किया उपवासं ।
१९ मुनि थे तो वावीस कीधा वेला, चौतीस तेला ।
२० मुनि थे तो आठ किया वली चोला, इग्यारै पंचोला ।
२१ मुनि थे तो सातवार सुप्रसीधा, षट-षट कीधा ।
२२ मुनि थे तो सात किया तीन वार, अति श्रीकार ।
२३ मुनि थे तो षट वार करी अठाई, महा सुखदाई ।
२४ मुनि थे तो नव दश इग्यारै वारं, तीन-तीन वार ।
२५ मुनि थे तो चउदै पनरै पिण सारं, तीन-तीन वारं ।
२६ मुनि थे तो दोयवार तेरै समोलै, दोय वार सोलै ।
२७ मुनि थे तो वहुल पणै तप सारं, उदक आधार ।
२८ मुनि थे तो कोइ तप आछ आगार, कीया उदारं ।
२९ मुनि थे तो सीत काल सी खमता, इंद्रया दमता ।
३० मुनि थे तो चोलपटा उपरत, निशि सी खमत ।
३१ मुनि थे तो उभा काउसग कीधा, अभिग्रह सीधा ।
३२ मुनि थे तो रात्रि पाछली लेई, ध्यान धरेई ।
३३ मुनि थे तो उष्म काल में सीधा, आतापना लीधा ।
३४ मुनि थे तो तपती रेत सिला पर, 'उष्ण समाचर'[1] ।
३५ मुनि थे तो वहु रस त्याग सूं सीधो, मन वस कीधो ।
३६ मुनि थे तो सरल भद्र सुखदायो, जगजश छायो ।
३७ मुनि थारै सासण आसता तीखी, नीत सु नीकी ।
३८ मुनि थे तो संग अवनीता रो छंड़ी, कुमति विहडी ।
३९ मुनि ए तो अणसण कर तन खंडै, पिण गण न विछंडै ।
४० मुनि ए तो सद्‌गुरू आण लहलीनां, तन मन भीना ।
४१ मुनि थांरी सुमत गुप्त अघ-हरणी, काहा कहुं करणी ।
४२ मुनि थे तो अविनय आग 'उल्हावी'[2], सम चित भावी ।
४३ मुनि थे तो सुवनीता सिर-सेहरा, सतजुग जेहरा ॥
४४ मुनि थांरी तप मुद्रा हद प्यारी, हूं बलिहारी ॥
४५ मुनि थे तो सरवर संवेगे भरिया, गुण ना दरिया ।

---

१. आतापना ली ।
२. धकेल दी ।

४६ मुनि थे तो सुवनीता संग धरिया, अविनय हरिया ॥
४७ मुनि थे तो प्रवल गुणे पाखरिया, निर्मल किरिया ॥
४८ मुनि थे तो विमल गुण भरिया, सुभग सुचरिया ॥
४९ मुनि थारी फैली विनय सुवासं, जन दीयो सावासं ॥
५० मुनि थारी लागी मुक्ति सू लिव जी, नांम सु शिवजी ॥
५१ मुनि थे तो मरुधर देश मेवाडो, विचरया ढुंढाडो ॥
५२ मुनि थे तो मालव देश दीपायो, हाडोती मायो ॥
५३ मुनि थे तो वली हरियाणे देसं, कीयो परवेसं ॥
५४ मुनि थे तो चरम चौमासो अमंद, कीयो पेटलावद ॥
५५ मुनि थे तो विहार करी सुखदाया, जखणावदे आया ॥
५६ मुनि तिहां अनोपचंद सुविमासी, करी पट मासी ॥
५७ मुनि तिहा थे पिण करी अठाई, पारणो संग लाई ॥
५८ मुनि तिहां अनोप रो पारणो करायो, जीत ऋषि आयो ॥
५९ मुनि तिहा संत सत्यारा थाटं, अति गहघाटं रा ॥
६० मुनि थे तो पारणो करयो तिण वेला, हुई रंग रेला ॥
६१ मुनि तिहां समण्या जय जश गावै, अधिक सुहावै ॥
६२ मुनि तिहा देश मेवाड ना आया, वहु वाया भाया ॥
६३ मुनि तिहां पेटलावद ना प्रगटं, थया हद थटं ॥
६४ मुनि वली थादला ना पिण आया, हरष हुलसाया ॥
६५ मुनि तिहां च्यार तीर्थ गुण गावंता, सुख पावंता ॥
६६ मुनि तिहा जन हर्ष हिलोला खावै, दर्श फरसावै ॥
६७ मुनि तिहा पारणे महुछव हुयो भारी, धर्म जयकारी ॥
६८ मुनि तिहा थानै दीयो सिर पावो, जीत सुख पावो ॥
६९ मुनि थांरो काम पाती रो छुडायो, कुरव वधायो ॥
७० मुनि थे तो विहार करी नै धाया, राजगढ आया ॥
७१ मुनि थारै कारण अधिक उपनो, पीड अति तनो ॥
७२ मुनि थांरी सेव 'जैचंद' ऋष 'लाल', करै 'कुसालं'[1] ॥
७३ मुनि थे तो समचित वेदना सहिता, दिवस वहु रहिता ॥
७४ मुनि तिहां सैहर इंदोरे सुणियो, जीत ऋषि थुणियो ॥
७५ मुनि थारी सेवा करवा सोयो, मेल्या मुनि दोयो ॥

---

१. खुशहाल ।

७६ मुनि थे तो संत हिंदू सुखकंद, वली वीर चंद ।।
७७ मुनि तिहा तुरत आवी ततखेवा, करै तुज सेवा ।।
७८ मुनि थानै जैचद संत उठाया, वखतगढ लाया ।।
७९ मुनि थे तो वेदन सम परिणामे, सही गुण धामे ।।
८० मुनि थे तो पांच दिवस इक धार, न लीधो आहारं ।।
८१ मुनि थे तो पारणो कीधो अल्प मात, चल्या तिण रात ।।
८२ मुनि थे तो उगणीसै इग्यारै सु भातम, चैत सुनि सातम ।।
८३ मुनि थे तो कीयो अणचिंत्यो काल, महा गुण माल ।।
८४ मुनि थारा प्रात मोछव वहु कीधा, लोकिक प्रसीधा ।।
८५ मुनि थानै धन-धन जन अति कहता, मन गंहगहता ।।
८६ मुनि थे तो जीत नगारा दीधा, वंछित सिद्धा ।।
८७ मुनि थे तो करणी कीधी भारी, शिव ने तारी ।।
८८ मुनि थां जिसा संत इण आरे, विरला विचारे ।।
८९ मुनि थे तो चौथा आरा सरीखा, तपसी नीका ।।
९० मुनि थे तो वर्ष छतीस सु जाझो, चरण धर ताजो ।।
९१ मुनि थांरा हर्ष धरी गुण रटिया, उपद्रव्य मिटिया ।।
९२ मुनि थारा उगणीसै इग्यारै विमासं, वैशाख मासं ।।
९३ मुनि म्हे तो विद सातम सोमवारं, सिव गुण सारं ।।
९४ मुनि म्हे तो सैहर वखतगढ मायो, सिव दीपायो ।।
९५ मुनि म्हे तो हूस धरी गुण गाया, हर्ष सवाया ।।
९६ मुनि तिहां संत सती सुखदाया, तिहोत्तर आया ।।
९७ मुनि तिहा सत वीस मुनि सज्जा, छयालीस अज्जा ।।
९८ मुनि तिहा सिवकर सिव ऋष गायो, जय जश छायो ।।

मुनि भैरजी

(ख्यातसख्या ७६।२-३०)

ढाल १

*धन धन मुनि भैरजी ।।
।।ध्रुपदं ।।

१ सरल भद्रीक सुहामणो, समण भेरजी सार । सलूणा ।
वोली मीठी ते भणी, मीठो नाम उदार । सलूणा ।

२ ईर्य्या पूंजण परठणो, रुडी जयणा रीत ।
अन्यमति स्वमति देख नै, पामैं अधिकी प्रीत ।।

३ सीयालै वहु सी खम्यो, उन्हाले आताप ।
तेवीस चौमासा आसरै, एकंतर चित थाप ।।

४ मास-खमण तप वहु किया, दोय अढी तीन मास ।
उदक आछ आगार सूं, इम तोडी 'अघ-रास'[1] ।।

५ चौंथ भक्त सु आदि दे, वावीस दिन लग तास ।
ए तप लड तीखी करी, अति चढते परिणांम ।।

६ चोला में चलता रह्या, उगणीसै पणवीस ।
मृगसर मासे महामुनि, सफल करी जगीस ।।

७ सरूपचंद स्वामी जी, सखरो दीधो स्हाज ।
वर्ष पणवीसे गाइयो, भैर भवोदधि 'पाज'[2] ।।

---

१. अशुभ कर्म समूह ।
२. सेतु ।

*लय . सुमति सदा हिवडे ……।

मुनि दीपजी[1]

(ख्यात सख्या ८५।२-३६)

ढाल १

दूहा

१ दीपचंद ऋष दीपतो, भाई भगनी नार।
यां सगला सजम लियो, एकण घर रा च्यार ॥

२ सतंत्तरै संजम लियो, त्राणूए संथार।
चौमासा सोला मझे, तपकियो दीप अणगार ॥

३ सरुपचंद अणगार पै, लीधो संजम भार।
तप कर कार्य सारिया, तेहनौ कहूं विचार ॥

*धिन-धिन, धिन-धिन ऋष दीप नै ।।।ध्रुपदं।।

४ धिन २ धिन २ ऋष दीप नै, द्वीप सरीखो हो भव समुद्र मझार।
कीयो तीनूं ऋत में तप आकरौ, तिण रो सुणजो संखेपे विस्तार।

५ सेषेकाल सीयालै सी सह्यो, द्वादश वर्षा हो पछेवडी नों परिहार।
एक चोलपटा रा आधार सू, रविआथमिये होशीतसह्योएकधार ॥

६ आठ वर्ष उन्हाले आतापना, सात कीधा हो मुनि उदक आगार।
दिन सतरै कीया वलि दीपता, बे मास आसरे हो बेलै-बेले तप धार ॥

७ एकंतर सात मास आसरै, विचित्रप्रकारे हो तप कीयो सेषेकाल।
हिवै सोलै चौमासा में तपतपस्याकरी, तिण रो विवरो हो सुणजो सुरतो संभाल।

८ मास खमण प्रथम चौमासे कियो, वीजे चौमासे हो तप दिवस छतीस ॥
च्यार मास पांच दिन ऊपरै, तीजे चौमासे हो तप विश्वावीस।

९ चौथे चौमासे मास वलि पचखियो, पांचमा मे हो पांच मास दिन पंच।
छठे मास खमण तप न्हाल जो, चित्त उज्जल हो तप कीयो कर खंच ॥

---

*लय : भवजीवां तुम्है जिन धर्म··· ···।

१. देखिए परिशिष्ट १, सं० १६

१० सातम आठमें आठ-आठ किया, नवमे कीधा हो तप दिन पट मास।
सूरवीर पणै सम भाव सू, मुनि कीधो हो घणा कर्मा रो विणास।।

११ दशमे चौमासे मास वलि दीपतो, इग्यारमा मे हो दोढ मास दीपंत।
वारमे छतीस दिन तप कियो, चित निर्मल हो मन हरप अतंत।।

१२ तेरमे नव दिन नीका किया, वलि कीधा हो एकंतर दोढ मास।
चवदमे चौमासे दश दिन किया, पछै धारचो हो वेले वेले तपतास।

१३ किणही चौमासा में आछ लीधी नही, किणहीक वरसे हो तप आछ आगार।।
हेम पूज्य सरूप ऋष आगले, चउदै चौमासा हो मुनि किया श्रीकार।।

१४ संवत अठारै एकाणू ए, फागुण सुदि हो पूनम तिथ सार।
जावजीव वेले बेले पारणो, तिण मे कीधो हो आछ तणो परिहार।।

१५ पनरमे चौमासे छठ छठ मझे, एक मास हो कीधो पांणी रो आगार।
वलि छठ छठ तो तिमज किया, विविध अभिग्रह हो मन हरप अपार।।

१६ पछै बेला में पाणी पिण पचखियो, पांणी पीधां हो पारंणे विगै त्याग।
द्रव्य सतरै उपरंत त्यागिया, दिन दिन हो चढतौ छै वैराग।।

१७ विगै तीन उपरंत लेणी नही, कारण पड़िया हो ओषध रा पचखांण।
नित्य एक पौहर मून साझणी, चित 'घेरचो'[1] हो मुनि समता आंण।।

१८ सोलमो चौमासो भीलोडे कियो, छठ छठ हो तप करता तिवार।
दोय वर्ष आसरै छठ तप कियो, विचरत आयां हो पुर सैहर मझार।।

१९ कांयक असाता ऊपनी, मुनि पचख्यो हो सागारी संथार।
तपसी रा परिणाम तीखा घणा, चित उज्जल हो भावै भावना सार।।

२० फागुण विद अमावस दिन पाछिले, मुनि वोल्यो हो ततक्षिण धर प्रेम।
पको संथारो मोनै पचखाय दो, तीन आहार ना हो करावो मुझ नेम।।

२१ लघु बंधव गुलाव ऋष इम कहै, तपसीजी हो संथारो दुक्कर कार।
तपसी कहै धांन धूल समान छै, सूरावीरां हो नही दुक्कर लिगार।।

२२ निद्रा मे जो निकसै प्राण माहरा, विण संथारे हो तो हूं कर जाऊं काल।
दोय मास तांई चिंता मत करो, इम सांभलनै हो सहु हरख्या ततकाल।।

२३ 'लघु भाई'[2] संथारो पचखावियो, चित उज्जल हो दीयो धर्म नो साझ।
'मयाबाई'[3] आदि आरजीया आवी मिली, विस्तारियो हो जग जश अवाज।।

---

१. वश मे किया।

२. मुनि जीवोजी (८६)।

३. मयाजी (८६) आदि साध्वियां आई। मयाजी उनकी संसार पक्षीया वहिन थी।

२४ धिन धिन तपसी रा परिणाम नै, धिन धिन हो तपसी रो सुभ ध्यान।
धिन धिन तपसी रा वैराग नै, मन कीधो हो मुनि मेरु समांन॥
२५ धिन धिन धिन धिन मुख ऊचरै, चारूं तीर्थ हो करै गुण तहतीक।
धिन धिन तपसी रो सूरापणो, धिन धिन हो तपसी साहसीक॥
२६ संमत अठारै त्रांणूए, फागुण सुदि हो तीज ने गुरुवार।
दीप ऋष परलोक पधारिया, वावीस पोहर नो हो आयो संथार॥
२७ च्यार तीर्थ उचरंग पाया घणो, पुर खेत्र हो सुविनीत श्रीकार।
जिन मार्ग कलस चढावियो, धिन धिन हो तपसी नौ अवतार॥
२८ समत अठारै चौराणूए, फागुण सुदि हो इग्यारस मंगलवार।
ऋष दीप तणा गुण गाविया, थली देशे हो लोहावट गांम मझार॥

मुनि पूंजोजी

(ख्यात संख्या ८८।३-२)

ढाल १

*सुगणा साधजी, वारू संत थयो पूंजो।
नगीना संत जी, पूंजो गुणां तणो कूजो।।ध्रुपदं।।

१ वर्ष इक्यास्यै संजम लीधो, स्वाम सरूप सुपासे।सुगणा ..।
सुमति गुप्ति में सावचेत वर, दिन-दिन कला प्रकासे।सुगणा ..।।

२ पढ्यो भण्यो ने प्रबल विद्या गुण, वारूं सरस वखांणो।
विनयवंत सतगुर नो वारू, गिरवो ने गुण खांणो।।

३ सूत्र बत्तीस बाच्या सखरा, कथा हेतु वहु के'तो।
विविध रसे कर सरस वारता, हृद दिष्टंं तज देतो।।

४ मास-खमण तप कीधो मुनिवर, वले तप विविध प्रकारे।
सीतकाल मे सी अति सहितो, आप तिरै पर तारे।।

५ थिर चित सेती अधिक थोकड़ा, बहु जन नै सीखाया।
सासण ऊपर नील निरमली, प्रगट सुजश जग पाया।।

६ पूनमचंद सहोदर साचो, तास परसादे जांणी।
संजम लीधो कार्य सीधो, पूर्ण प्रीत पहिछाणी।।

७ उगणीसै तेरे पूंजे ऋष, विद एकम वैशाखे।
कार्य सारयो जन्म सुधारयो, भलो भलो जन भाखै।।

८ पूंजा ऋषी नी जोड करी ए, वर्स चवदे उगणीसै।
कृष्ण सप्तमी जय जश गणपति, संपद सरस जगीसै।।

९ सप्त वीस मुनि अधिक सनूरा, अखंड आण रंग राता।
जवर एकसौ पंच आर्यिका, सैहर लाडण साता।।

*लय : हठीला कान जी छलो ....।

मुनि कोदरजी[1]

(ख्यात संख्या ८१।३-२)

ढाल १

दोहा

१ कोदर तप करडो कियो, ओस वंस अवतार।
जाति विनायक जाणज्यो, मालव देश मझार।।
२ तात ताराचंद दीपतो, मिरगा नामे मात।
सुत कोदर कीधो सखर, वारू तप विख्यात।।
३ गुणंतरे सो गुरु किया, स्वामी वैणीरामजी पास।
वडनगरे वसतां थकां, धारचो धर्म हुलास।।
४ अठंतरे शील आदरचो, पूणा च्यार वर्ष उनमांन।
वारू व्रत वधारता, दिन-दिन चढते 'वान'[2]।।
५ संवत अठारै इक्यासीये, विद जेठ वीज तिथ सार।
पूज रायचंद रै आगले, लीधो संजम भार।।
६ चवदै वर्ष रे ऊपरे, पाल्यो चारित्र सार।
विविध प्रकारे तप कियो, ते सुणज्यो विस्तार।।

*धिन-धिन कोदर तपसी मोटको।।ध्रुपदं।।

७ पहिले वर्ष वतीस दिन तप कियो, एक वेलो हो आसरे तेतीस वास।
सर्व सतसठ तप दिन दीपता, तपसा करता हो मन अधिक हुलास।।
८ दूजे वर्ष किया दोय थोकडा, दिन चोराणू हो वली पांच पिछांण।
उपवास पनरै आसरे, एकसो चवदै हो तप दिन गुण खांण।।
९ तीजे वर्ष किया पाच थोकडा, एकसो इक्यासीहो, तेरे पांच षट च्यार।
तेला तीन, वेला दोय, उपवास दश भला, दोय सो वतीस हो तप दिन श्रीकार।।
१० दोय मास चोथे वर्ष दीपता, सात कीधा हो मुनि चढते ध्यान।
तेला दोय, बेला सात, तीखे मने, उपवास कीधा हो तयालीस उनमांन।।

*लय :भव जीवा तुम्हे जिन धर्म ओलखो ...।

१. देखिए परिशिष्ट १, स० १७
२. उमग।

११ जावजीव एकंतर धारिया, पारणा में हो षट विगै रा पचखांण।
'विगै लेणी विहार तप दिन जेतला'[1], सगला तप दिन हो एकसो तीस जांण॥

१२ पांचमें वर्ष षट थोकडा, पचीस, वावीस हो नव, आठ, पांच, च्यार।
सात तेला, बेला उगणीस रै आसरै, एकसो उगणीस हो उपवास उदार॥

१३ कारण पडियां ओषध करवा तणा, मुनि कीधा हो जावजीव पचखांण।
दिढ धर्मी दिढ आतमा, तपसी भारी हो गुण रत्ना री खांण॥

१४ एकसौ एक दिन छठा वर्ष में, वली पाचरो कियो थोकडो एक।
आठ वेला एक सौ आसरै, उपवास कीधा हो मन हरष विसेख॥

१५ पाणी आछ आगारे ए तप सहू, सघलां में हो कहणो आसरो घाल।
तपसी रा परिणाम तीखा घणा, चित उजल हो रह्यो तप मांहै म्हाल॥

१६ मास खमण कियो पांणी तणो, वर्ष सातमें हो वारै वेला, तेलो एक।
उपवास सवासौ आसरै, तप दिनसगला हो एकसो वंयासी देख॥

१७ आठमै वर्ष दिल्ली शहर में, मुनि धारचो हो मन उचरंग आंण।
जावजीव बेले-बेले पारणो, मन कीधो हो मुनि मेर समांण॥

१८ दिन वीस तणो इक थोकडो, दोय तेला वेला एकसो आठ।
दोयसो वयालीस तप दिन सहु, तपसा करनै हो काटचा कर्मा रा काट॥

१९ नवमे वर्ष चोलो इक निरमलो, एक तेलो हो वेला एकसो पचीस।
दोयसौ सतावन तप दिन सहू, तपसा करनै हो पूरी मनरी जगीस॥

२० दसमे वर्ष चोलो एक दीपतो, तीन तेला हो वेलां एकसौ ने तेर।
दोयसौगुणचालीस तप दिन सहू, चित निरमल हो मन में लीधो घेर॥

२१ वर्ष इग्यारै में दोय चोला किया, एक सौ तेरे हो वेला तेलो एक।
तप दिवस दोयसो सैतीस आसरै, ऋष रूडो हो वारू विनय विवेक॥

२२ वेला एक सो छावीस रै आसरै, एक चोलो हो वर्ष वारमें सार।
वारू व्यावच सर्व साधा तणी, शहर बीकांणै हो चोमासो सुखकार॥

२३ लेप उपरंत विगै त्यागन करी, तप करता हो छठ-छठ एकधार।
विनय व्यावच करण उद्यमो घणा, घणो सोभा हो तीर्थ च्यार मझार॥

२४ वर्ष तेरमे साता रो इक थोकडो, दोय चोला वेला एकसौ ने वार।
विगै रहित करै पारणा, धिन-धिन हो तपसी नो अवतार॥

२५ वले 'लेप'[2] बेला रे पारणे, मुनि पचख्यो हो मन घर संतोष।
'अधिको तप जिता दिन आगार सू'[3], तन खीणो हो तप नो वहु पोष॥

---

१. विहार के तथा वेले आदि के जितने दिन हो उतने दिन एकातर के पारणे मे विगय खाने का आगार रखा।

२. घी तेल आदि से चुपड़ी हुई रोटी आदि। ३. तेले चोले आदि तप मे लेप का आगार (छूट) रखा।

२६ चवदमे वर्ष इग्यारै थोकड़ा, चूरू आया हो चित धर चउमास ।
अठम-अठम भक्त मुनि पचखिया, अधिका तप दिन हो जितला छठ तास ।।

२७ तिण वर्ष इग्यारै किया थोकडा, दश वारै हो पाच किया चोला आठ ।
बावन तेला पेतीस बेला किया, तपस्या करनै हो दिया कर्म वहु दाट ।।

२८ चवदै वर्ष रा तप दिन एतला, गुणतीसो ने गुणसठ उनमान ।
सगलां मांहै आसरो घालणो, तप करनै काया करी 'गलतांन'[1] ।।

२९ वर्ष पनरमै अधिक सलेखणा, च्यार तेला हो निरंतर निरदोष ।
पारणे आंविल 'एक टक'[2] कियो, जशवंता हो मन परम संतोष ।।

३० इग्यारै किया उचरंग सू, आंविल कीधो मुनि अभिग्रह सहीत ।
तपसी रा परिणाम तीखा घणा, मुनि हुआ हो घणा देशा मे 'वदीत'[3] ।।

३१ ऊन्हो पाणी रोटी बाजरी तणी, दोय द्रव्य थी हो उपरत पचखाण ।
ते पिण आविल एक पारणे, जीवे ज्यां लग हो धारचो समता आंण ।।

३२ पछै अठम भक्त कियो ऊजलो, आविल करनै हो चवदै पचख्या मुणंद ।
अभिग्रह कियो चवदै रै पारणे, चित निरमल हो जाणे पूनमचद ।।

३३ सुहागण ओढण चूनडी, तिलम टीकी हो तिणरै दीसै निलाड ।
तिणरा हाथ सू रोटी बाजरी तणी, जो नही पूगै हो तो दोय दिन अधिकार ।।

३४ एहवो अभिग्रह चवदै रै पारणे, ते पिण फलियो हो आविल कियो द्रव्य दोय ।
वडभागी तपसी घणो, तिणरी करणी हो अचरज कारी अवलोय ।।

३५ पछै अठम भक्त वली पचखियो, दोय द्रव्य रो आविल पारणे कीध ।
कर जोड कहै ऋष जीत नै, अदरावो हो सथारो प्रसीध ।।

३६ ऋष जीत कहै संथारा तणो, तपसीजी हो काम दुक्कर कार ।
साध श्रावक श्राविका वरजै घणा, नही मानै हो तपसी वात लिगार ।।

३७ तेला रे पारणे आछीतरै, सेर आसरे हो जाभो कियो दीसै आहार ।
तिण सू इतरी उतावल काय करो, अणसण कीजै हो घणी वात विचार ।।

३८ तपसी कहै चिंता कोइ मत करो, तीन मास रो तथा आवै जो छ मास ।
पूरो मनोरथ माहरो, घणा दिना रो हो सथारा नो हुलास ।।

३९ नमोथुण अरिहंत सिद्धा भणी, धर्माचार्य हो त्यांनै तीजो नमस्कार ।
कर जोड बैठो मुख आगले, घणो मांगै हो सथारो वारूंवार ।।

४० अरिहंत सिद्धारी साख थी, अदरायो हो सथारो श्रीकार ।
तीनू आहार ना त्याग कराविया, वहू नर नारी हो देखता तिणवार ।।

---

१. लहलीन । २. एकवार । ३. प्रसिद्ध ।

४१ आसाढ शुक्ल पख ओपतो, तिथ रूडी हो दसम ने अदीतवार।
दिन चढ्यो सवापोहर आसरै, कोदर तपसी कीधो संथार ॥
४२ धिन-धिन तपसी रा वैराग नै, धिन-धिन तपसी रो शुभ ध्यांन।
धिन-धिन तपसी रा परिणांम नै, मन कीधो हो तपसी मेरु समांन ॥
४३ धिन-धिन जन मुख उचरै, धिन-धिन तपसी तहतीक।
धिन-धिन तपसी रो सूरापणो, धिन-धिन हो तपसी साहसीक ॥
४४ जिण परिणांमे चारित्र लियो, तिणहिज रीते हो आराध्यो सार।
तीखे परिणांमे तप कियो, तीखा चित सुं तपसी कियो संथार ॥
४५ जैसोइ मारग शुद्ध पामियो, जैसो धारचो हो तप विनय उदार।
तैसोइ जिन मारग दीपावियो, धिन-धिन हो तपसी नो अवतार ॥
४६ ग्यारा उन्हाला में लीधी आतापना, च्यार सीयाले हो पछेवड़ी परिहार।
बहुविध व्यावच करिवै करी, कष्ट सह्यो हो मुनि विविध प्रकार ॥
४७ मुरधर मेवाड़ ढूंढार में, थली मांहे हो मुनि कर दीया थाट।
कच्छ मालव ने गुजरात मे, विहरंतां हो दीया कर्मा नै दाट ॥
४८ सात दिवस रो आवियो, चउदै भक्त हो पोहता परभव मांह।
चढते परिणामें चित ऊजले, जन्म सुधारचो हो पाम्या हरष ओछाह ॥
४९ सावण विद एकम दिन पाछिले, उदक चुकावी हो बोल्यो साधांनै वाय।
कने उभा श्रावका नै कहै, करो सामायिक हो पडिक्कमणो सुखदाय ॥
५० पडिक्कमणो कियां पछे तपसी भणी, सरणा देवै हो चढावै परिणांम।
तपसीकहै चोखा परिणाम माहरा, पोहर आसरे हो गई रात्रि तमांम ॥
५१ ऋष जीत पूछ्यो तपसी भणी, गुण गुण शब्द हो काइ करो छो ताय।
तपसी कहै नवकार गुणू अछू, इणविध बोलै हो सचेतपणै सुखदाय ॥
५२ गले हाथ घाल नै इम कहै जीत नै, आप पोढो हो बोल्यो प्रगट बाय।
जीत कहै असाता थांहरै, हूंकिम सूवू हो तपसीजी जाय ॥
५३ तपसी कहै असाता काहिरी माहरै, आप सूवो हो वली कह्यो दूजीवार।
पसवाडो आफेई फेर नै, उत्तर कानी हो मुख कियो श्रीकार ॥
५४ सीघ्र सास असाता अधिक जाण नै, जीत भाखै हो थांनै होजो सरणा च्यार।
कष्ट थोडी वेला रो रह्यो अछे, सुख भारी हो पामता दीसो सार ॥
५५ हम किंचित वेला में तपसी तणा, प्राण छूटा पोहता परलोग।
साधू शरीर वोसराय अलगा हुवा, च्यार लोगस नो कियो काउसग जोग ॥
५६ समत अठारै सौ छन्नूए, सावण विद हो एकम शनिवार।
आसरै पोहर रात्रि गयां थकां, तपसी पोहतो परलोक मभार।

५७ साध श्रावक धिन-धिन ऊचरै, अन्यमती होते पिण कहै धिन-धिन ।।
तपसी जन्म सुधारयो आपरो, अहो निश कीजै तन मन सूं भजन्ना ।।

५८ वड व्यापारी थो संसार में, वड तपसी हो संजम लेई हूओ सूर ।
चवदै वर्ष दोय मास ऊपरै, चारित्र पाल्यो कर्म किया चकचूर ।।

५९ तिथ वीज 'निहरण'[1] परभात रा, महोछव कीधो हो मन हरष हंगांम ।
एतो सावद्य किरतव संसार ना, चूरूमांहे हो कोदर सारचा आतम काम ।।

६० आसाढ शुक्ल आठम दिने, रामसुखजी हो कियो आत्म कल्यांण ।
आठ दिवस पछै कोदर कियो, वड तपसी हो परभव मे पयांण ।।

६१ तप आदि विस्तार कोदर तणो, आघो पाछो हो कह्यो हुवै कोय ।
वली विरुध वचन आयो हुवै तिणरो, म्हारै हो मिच्छामि दुक्कड़ं जोय ।।

६२ संवत अठारै छन्नूए, विद सावन तीज ने सोमवार ।।
वड तपसी कोदर तणा, गुण गाया हो चूरू शहर मझार ।

ढाल २

*धिन धिन कोदर तपसी मोटको रे ।। ध्रुपदं ।।

१ कोदर तपसी भजियै भाव सू रे, त्यागी वैरागी सुध परिणांम रे ।
छांड त्रियाधन चारित्र आदरचो रे, तप कर सारचा आतम काम रे ।।

२ च्यार सीयाला में वहु सी खम्यो, रात्रि पछेवडी नो परिहार ।
उन्हाला में लेता वहु आतापना, आसरै जांणो वर्ष इग्यार ।।

३ एकंतर धारचा वर्ष पच्यासीये, ओषध रा जावजीव पचखाण ।
अठयासीये दिल्ली शहर में आदरयो, छठ २ तप निरंतर जांण ।।

४ सुमत गुप्त में सचेत घणो, सुविनीत साधां नै वहु सुखदाय ।
व्यावच करवा मुनि उद्यमी घणो, वलि विवध तपसा करि तननैं ताय ।।

५ सात तणा कीधा वे थोकडा, पांच पाचोला तप सार ।
छठ अठ नव दश ग्यारै वारै किया, वलि तेरे चवदै किया इकइक वार ।।

६ वीस वावीस पचीस किया वली, तीस किया मुनि उदक आगार ।
वतीस साठ चौराणू दिन करी, दिन इकसौ ने एक किया श्रीकार ।।

७ एकसो ने इक्यासी दिन पचखिया, आछ आगारे तपसा कीध ।
कोयक उदक आगारे जाणज्यो, तप कर जग माहि जश-लीध ।।

८ सतरै चोला कीधा समभाव सू, तेला छीहंतर नै उनमांन ।
बेला किधा मुनि सातसो आसरै, ऊपर इक्यासी तप गुणखान ।।

---

[1] चलेवा ।

*लय : जोयजो रे समकत नो रस ....

८ ते पिण हुवा अधिक वनीत, पूरी थांरी सुगुरु सू प्रीत ।
थे गया जमारो जीत, वारूं थांरा वचन वदीत ।।

९ गाया थारा गुण अधिकार, छिन्नुए वर्ष अठार ।
चूरू शहर मझार, भजन करो नरनार ।।

ढाल ४

दोहा

१ कोदर संजम आदरचो, छांड त्रिया धन सार ।
तप कर कारज सारिया, ते सुणज्यो विस्तार ।।

*तपसी नो सुजस घणो ।। ध्रुपदं ।।

२ इक्यासीये व्रत आदरचा हो, दुक्कर तपस्या धार ।
विनय व्यावच वारू घणो हो, साधां नैं घणो सुखकार ।।

३ एकंतर धारचा पच्यासीये, पारणे विगय परिहार ।
विहार अधिक तपसा करै, इतला दिन विगै रो आगार ।।
(कोदर ऋप जीतो रे) ।

४ तिणहिज वर्प किया मुनि, जावजीव औषध रा त्याग ।
दिढ धर्मी तपसी तणो, फेल्यो जश सोभाग ।।

५ अठयासीये मुनि आदरचो, दिल्ली शहर मझार ।
जावजीव बेले बेले पारणो, सफल कियो अवतार ।।

६ पांच पंचोला परवडा, कियो छ नो थोकडो एक ।
सात तणा दोय थोकडा, मन माहै हरष विसेख ।।

७ एक अठाई ओपती, निरमल नव निकलंक ।
दस दिन पचख्या दीपता, मेटचो आतम वंक ।।

८ इग्यारै दिन आछा किया, बारै नो थोकडो एक ।
तप तेरै दिन नो तप्यो, तपसी सुद्ध विवेक ।।

९ चवदै दिन तप चूप सूं, बीस पांणी रै आगार ।
दिन बावीस पचीस नो, तप कीधो खड्गधार ।।

१० तीस किया तीखे मने, उष्ण पाणी रे आगार ।
शहर बीकानेर में जाणजो, वर्ष अठ्यासीये विचार ।।

*लय : राम को सुजश घणो ए ...... ।

११ प्रथम चौमासे किया मुनि, आछ आगारें वत्तीस।
दोय मास नो दीपतो, तप कियो विश्वावोस ।।

१२ चौरांणूं दिन चित चाव सू, एक सो एक अमोल।
त्यागी वैरागी घणो, च्यार तीर्थ में तोल ।।

१३ एकसो इक्यासी किया, मालव देश मझार।
उत्तम ऋप गुणवंत नो, जस फेल्यो संसार ।।

१४ सतरै चोला सोभता, तेला छीहंतर उनमांन।
एकंत कर्म काटण भणी, तप कर तन गलतांन ।।

१५ सातसो इक्यासी आसरै, कोदर वेला कीध।
देश-देश मांहै विचरता, जग माहै जश लीध ।।

१६ च्यारसौ एकावन आसरै, कीधा मुनि उपवास।
व्यावच सर्व साधा तणी, तप सू पूरो प्यास ।।

१७ आछ आगारे तप कियो, कोयक उदक आगार।
विगै वेला रै पारणे, त्यागी त्रांणूए वर्ष विचार ।।

१८ च्यार सीयाला सी सह्यो, राते पछेवडी परिहार।
ऊन्हाला में आतापना, आसरै वर्ष इग्यार ।।

१९ कछ मालव हरियांणे गुजरात में, थली मरुधर मेवाड ढूढार।
यां देशां में तपसी विचरियो, धिन-धिन करै नर नार।

२० एकंतर चालीस मास रे आसरै, छठ छठ आसरै वर्ष सात।
अठम अठम वर्ष एक आसरै, सूरवीर साख्यात ।।

२१ जावजीव तेले-तेले पारणो, मुनि धारचो ऊजम आंण।
उन्हो पाणी रोटी वाजरी तणो, वे द्रव्य उपरंत पचखांण ।।

२२ चवदै करी अभिग्रह कियो, चूडो चूनडी टीकी निलाड।
तिण रा हाथ सू रोटी वाजरी तणी, न पूंगा वे दिन अधिकार ।।

२३ ते पिण अभिग्रह फलियो सही, आंविल कियो द्रव्य दोय।
एकटक पट सोगरा आसरै, सवा सेर आसरै जोय ।।

२४ तपसी कहै साधां भणी, वे सोगरां नी भूख मोय।
पिण मुख मसूडा सूजे रह्या, तिण सूं खांता दुख वहु होय ।।

२५ अठम भक्त कियो ऊजलो, तीजा दिन रै मांय।
रामसुख तणो मरण देखनै, आयो वैराग अथाय ।।

२६ म्हां पेहली रांमसुख चल गयो, तपसी कहै साधा नैं वाय।
रांमसुखजी री जायगां, म्हांरो करो विछांवणो जाय ।।

२७ आषाढ सुदि नवमी दिनै, कियो तेलारो पारणो तांम।
साढ पांच सोगरा रै आसरै, आवल कर अभिराम ॥
२८ नवमी दिन दोपहरा आसरै, ऋष जीत नै कहै कर जोड।
जावजीव संथारो कराय दो, पूरो मुज मनरा कोड ॥
२९ ऋष जीत कहै तपसी भणी, धीरप राखो ताय।
आहार अधिक शक्ति दीसै घणी, इम संथारो केम कराय ॥
३० साध अनें श्रावकां भणी, पूछी नै कराइ जै संथार।
ते पिण घणी विचार नै, ए अणसण दुक्कर कार ॥
३१ तपसी कहै कर जोड नै, नगर उजैणी चौमास।
गुलावजी कियो सात संत सू, लघु पीथल त्यारै पास ॥
३२ नवापुरा थी जाय नै, गोचरी शहर मे कर पाछा आय।
'डील'[1] वीखरियो जांण नै, पीथल माग्यो संथारो ताय।
३३ साध श्रावक बैठा घणा, पिण किणही नै न पूछ्यो ताय।
विण पूछ्यां लघु पीथल भणी, दीयो सथारो कराय ॥
३४ अणसण कराय नै वोलिया, साध श्रावक सुणजो वाय।
पीथैजी अणसण कियो, सुण नै सहु अचरज थाय ॥
३५ पनरै दिन नो पीथल भणी, अणसण आयो सार।
जिन मार्ग पिण दीप्यो घणो, मालव देश मभार ॥
३६ ज्यूं आप पिण मौनै कराय दो, संथारो श्रीकार।
अवर भणी काइ पूछणो, इम अरज करै वारूंवार ॥
३७ जो अणसण मोनै करावो नही, तो हूं वेठो छू आप पास।
परिणांम नही ऊठण तणा, घणा दिन रो अणसण रो हुलास ॥
३८ जीत कहै पीथल नै करावियो, गुलावजी संथार।
इम तो मोसूं नावै करावणी, कीजै सगलां री सल्हा विचार ॥
३९ इम विविध पणै समजावियो, तो पिण मनरा उवेहिज परिणाम।
इम वीता पोहर सात आसरै, वारूंवार अणसण मांगै तांम ॥
४० आसाढ सुदि दशमी दिने, वखांण दीया पछै ताय।
वहु नर नारयां सुणतां कहै, मोनै अणसण दीजै कराय ॥
४१ साध श्रावक वरजै घणा, कहै संथारो दुक्कर कार।
लहलीन पणै तपसी कहै, कोइ मत करो फिकर लिगार ॥

१. शरीर।

४२ तीन मास तथा षट मासनो, जो अणसण आवै मोय।
तो पिण दिढ परिणांम माहरा, मांहरी चिंता करो मत कोय॥

४३ नमोथुणं अरिहंत सिद्धा नै करो, धर्माचार्य नै तीजो धार।
करजोड वैठा मुख आगले, वारूंवार मागै संथार॥

४४ ऋषजीत कहै तेरस दिन, दीजो अणसण ठाय।
इम सुणनै तपसी 'वेदल'[1] थई, किणविध वोलै वाय॥

४५ जिन मार्ग में काज आज्ञा तणो, विण आज्ञा जोर चालै नाय।
तपसी वैराजी हुओ घणो, इम गृहस्थ वोल्या वाय॥

४६ साध श्रावक इम वोलिया, एहवां दिढ यांरा परिणांम।
तो संथारो आप कराय दो, निसंक पणै अभिराम॥

४७ ऋष जीत कोदर तपसी भणी, तीन वार पूछी नै खराय।
अरिहंत सिद्ध नी साखेकरी, दिया तीनू आहार पचखाय॥

४८ संवत अठारै पचाणुए, आसाढ सुदि दशम रविवार।
वहु नर नारी देखतां, कोदर कियो संथार॥

४९ धिन-धिन तपसी वैराग नै, धिन-धिन तपसी रो सुभ ध्यांन।
धिन-धिन तपसी रा परिणाम नै, मन कियो मेर समान॥

५० अणसण आदरिया पछै, मुख थयो हे 'डहडायमांन'[2]।
वहु वातां करै ओछाव सू, संवेग रस गलतांन॥

५१ किणही गृहस्थ कह्यो तपसी भणी, अणसण कीयां पहिला देख।
धीरे-धीरे वोलता, हिवै तो दीसै शक्ति विसेख॥

५२ तपसी कहै म्है जाणियो, म्हारै अणसण करणो ताय।
वहु शक्ति जांण्यां न करावसी, तिण सू धीरै वोल्यो मन ल्याय॥

५३ इम सुण नै सहु हरषिया, साध श्रावक तिणवार,
परिणांम दृढ जांण्या घणा, धिन-धिन करै नर नार॥

५४ तीनू टंक आवै घणा, वहु नर नार्‌यां वृन्द।
तपसी उपदेश दे आछीतरै, ते सुण-सुण पांमै आणंद॥

५५ तपसी कहै लोकां भणी, सांभल जो मुजवाय।
संका कंखा मत आणजो, भिक्षु ना मारग मांय॥

५६ निंदक एकल निंद्या करै, त्यारी वात म मांनजो कोय।
ए वोलै छै विना विचारिया, ए अल्प बुद्धी जीव जोय॥

---

१. उदासीन।

२. प्रफुल्लित।

५७ म्हांरै तो काम पड्यो घणो, संत सत्या सूं जोय।
परदेश थी जाता आवता, भेला रहिता अवलोय ॥
५८ हूं माहिली वातांनो जाणछू, दिख्या लीया हुंवा वहुवास।
थाप रूप दोष जांणू नही, इण विध वोलै विमास ॥
५९ जीतमलजी रै तो मत थापणो, भोला लोक जाणै ताम।
पिण म्हारै तो मत नही थापणो, म्हे तो सथारो कियो सारण काम ॥
६० जेतरूपजी वांठिया कनै, वले सूरतरामजी वैद पास।
वलि शिवजीरांजी कठारी कनै, इण विध वोलै विमास ॥
६१ महाव्रत फेर आरोपिया, जोव राशि खमावै ताम।
ज्या साधा भेलो रह्यो तेहनो, खमावै ले ले नाम ॥
६२ आलोवणा आछी तरै, सुणिया अचरज थाय।
दोढ पांनो हाथे लिखकरी, एहवी शक्ति संथारा माय ॥
६३ सूत्र नी रहिस सुणावता, भीक्षू भारीमाल दोप हीर।
वले ओर तपस्यां री ढाला सुणी, तपसी हुवो अधिक वजीर ॥
६४ मास सवा मास रै आसरै हो, अणसण आवतो जाणता ताम।
पिण कारण दस्तरो उपनो हो, पिण दृढ घणा परिणांम ॥
६५ ज्यां परिणांमां सू अणसण कियो, थारा तेहिज छै परिणांम।
इणविध तपसी नै पूछियो, जव कहै घणा तीखा तमांम ॥
६६ सातमै दिन प्रभात रा, साधा नै वोल्यो वाय।
आज भरोसो नही म्हारा डील रो, रहिजो सावचेत सवाय ॥
६७ आथण रा उदक चुकाय नै, त्याग किया तिणवार।
साधा नै कहै उदक चुकायलो, इम वोलै गुणधार ॥
६८ इतले दिशां जइ आवियो, संत मोती सुखकार।
मोतीजी स्वामी उदक चुकायलो, तीखे स्वर बोले अधिक विचार ॥
६९ कनै उभा छै त्या श्रावकां भणी, बोल्यो प्रगट वाय।
सामायिक पडिकमणो करो, ते सुण हरषत थाय ॥
७० पोतै पडिकमणो कीया पछै, तपसी नैं पूछ्यो ताम।
परिणांम चोखा थाहरा, तपसी कहै चोखा तमांम ॥
७१ सरणादिक देवे करी, तपसी रा चढावै परिणांम।
आसरै पोहर रात्रि आयां पछै, शक्ति हीणी पडी तांम ॥
७२ गुण-गुण शब्द सुणी जीत पूछियो, काइ करो छो एथ।
तपसी कहै नवकार गुणूं अछू, इण विध वोलै सचेत ॥

७३ गल वांहि घाली कहै जीतनै, आप पोढो सुखदाय।
जीत कहै असाता थांहरै, हूं किम सूवूं जाय॥
७४ म्हारै असाता काहरी, आप सूवो कहै दूजी वार।
पसवाडो आफेइ फेर नै, कियो उत्तर मुख श्रीकार॥
७५ शीघ्रसासजाणी जीतवोलियो, थांनै होयजो शरणा च्यार।
कष्टथोडी वेलां रो रह्यो अछै, सुख पामता दीसो उदार॥
७६ इम किंचित वेला मझै, प्राण छूटा तिणवार।
साधां शरीर वोसिराय नै, गुणिया लोगस च्यार॥
७७ सवत अठारै छन्नूए, सावण विद एकम शनिवार।
आसरै पोहर रात्रि गयां पछे, पौहता परलोक मझार॥
७८ धिन धिन साधु श्रावक कहै, अन्यमती पिण कहै धिन धिन।
जन्म सुधारचो आपणो, त्यांरो अहो निस कीजै भजन्न॥
७९ वड व्यापारी थो संसार में, पछै वड तपसी थयो सूर।
चवदै वर्ष दोय मासरो, चारित्र पाल्यो पंडूर॥
८० वीज नीहरण परभात, किया महोच्छव विविध प्रकार।
ते तो सावद्य काम संसार ना, तिण में धर्म नही छै लिगार॥
८१ आसाढ सुदि आठम दिने, रामसुख कियो कल्याण।
दिन आठ पछै कोदर कियो, परभव मांहि पयाण।
८२ च्यारूंइ तीर्थ नैं घणो, कोदर नो वहु साझ।
याद आया मन हुल्लसै, विकट तपसी मुनिराज॥
८३ पर उपकारे आगलो, विनय थी वहु अह्लाद।
'करलो कार्य'[1] उपना छतां, कोदर आवेला याद॥
८४ वारू वड तपसी घणो, वारू वड सुविनीत।
उद्यमी अधिक सीखायवै, पूर्ण पाली प्रीत॥
८५ चवदै वर्ष दोय मास मे, तप दिन गिणती होय।
आसरै आया एतला, तीन हजार ने दोय॥
८६ ए वर्णन कोदर तपसी तणो, तिणमें विरुद्ध आयो हुवै कोय।
आघो पाछै कह्यो हुवै, तो मिच्छामि दुक्कडं मोय।
८७ संवत अठारै छन्नूए, वैशाख सुदि चवदश सार।
गुण गाया तपसी तणा, मरुधर देश सैहर पीपाड॥
(कोदर ऋष जीतो रे॥

---

१. कठिन कार्य।

ढाल ५

*धिन-धिन कोदर मुनिवरू ।।ध्रुपद।।

१ कोमल नियम गुणे घणो, दमतो इंद्रिय पंच । मु ।
रमतो श्री जिन वचन मे, कोदर नाम सु सच । मु ।।

२ कोड मुनि तपसा तणो, दयावत दीपाय ।
रत्न चिंतामण सारिखो, कोदर नाम सुहाय ।।

३ कोस भंडार गुणा तणो, दश विध जती धर्मधार ।
रसना नो रस त्यागियो, कोदर नाम श्रीकार[1] ।।

४ उपगारी गुण आगलो, साहसवंत सधीर ।
सुवनीतां सिर सेहरो, 'विगट'[2] तपसी वडवीर ।।

५ छठ-छठ अठम आकरो, धारचो धर चित्त सार ।
संथारो दिन सात नो, आदरचो हरष अपार ।।

६ भजन किया भव दुख मिटै, सुख पामै श्रीकार ।
कर्म काटण रै कारणै, भजन करो नरनार ।।

७ संवत अठारै सताणुए, शहर गोघूदा मझार ।
कोदर करूणानिधि भणी, गायो हरष अपार ।।

ढाल ६

†धिन-धिन कोदर मुनिवरू, तपसी महा त्यागी ।।ध्रुपदं।।

१ कोदर तप करडो कियो, कोदर वड वैरागी ।
छांड त्रिया चारित्र लियो, लिव शिवपुर लागी ।।

२ छठ-छठ अठम आदरचा, जावजीव सोभागी ।
षट मासी तप खंत सू, कियो गुणरागी ।।

३ व्यावच्चियो जन वाल हो, विनयवत वैरागी ।
तपस्या में तीखो घणो, रसना रस त्यागी ।।

४ तूं गुण नो ग्राही घणो, उदधि जेम अथागी ।
याद आयां मन हूलसै, तू धोरी शिव मागी ।

५ संवत अठारै अठांणूए, सुदि पंचम मास 'फागी'[3]।।
कोदर कुरुणा-निध भणी, गायो हरष अथागी ।।

---

१. प्रथम दूसरी और तीसरी गाथा के प्रथम द्वितीय और तीसरे चरण के आद्याक्षर को द र है जो कोदर नाम का सकेत करते है । *लय—स्वार्थ सहु नै वाल हो ... ।

२. उग्र ।

३. फाल्गुन । †लय—विलावल ए देशी ... ।

ढाल ७

*व्यावचियो निजरां म्हे दीठो, धिन-धिन तपसी तपधारी।
मनवलि यो गुणवंत सिरोमणि, भजन करो नित नरनारी ॥ध्रुपदं॥

१ कोदर तपसी तप हद कीधो, षट मासी तांइ भारी।
मास वतीस साठ चोरांणू, सौ उपर इक अधिकारी ॥

२ छठ छठ जावजीव तप धार्यो, वहु वर्षां लग सुविचारी।
अठम अठम अधिक अनोपम, वलि ओपध नो परिहारी ॥

३ व्यावचियो तपसी मुनि वलभ, सप्त दिवस अणसण धारी।
समरण करतां संपति पांमै, मुनि आनद नो अधिकारी ॥

४ तेसठ अडसठ दिन पैताली, रामसुख तपसी भारी।
चोविहार उगणीस दिवस कीधा, मुज मुख आगल सारी ॥

५ प्रत्यख निजरां आगल तपसी, म्है दीठो महा सुखकारी।
वारु विनय विवेक तपे कर, दिढ मन तेहनी वलिहारी ॥

६ सुख संपत दायक गुण लायक, नायक, नीत निपुण भारी।
जन मन रंजन भ्रम भय भंजन, तप धारी हद इकतारी ॥

७ उगणीसै तीए पोह सुदि, सातम गुरुवारे गुणधारी।
आनंद रंग विनोद हुवै, तपसी जपतां जै जैकारी ॥

ढाल ८

†होजी म्हारै कोदर वस्यो मन मांय, होजी म्हानै कोदर अधिक सुहाय ॥
॥ध्रुपदं॥

१ कोदर तपसी कुरणा आगर, चार तीर्थ चित चाय।
२ आछआगारेपटमासकियाअति, वे तीन मास तपाय ॥
३ जावजीव तप छठ छठ जाझो, अंतर रहित अधिकाय।
४ व्यावचियो मुनिवर वैरागी, ऊंडी विचारणा अथाय ॥
५ संथारो कियो हठ कर सखरो, सात दिवस सुखदाय ॥
होजी म्हांनै रामसुख अति सुहाय,
होजी म्हारै 'राम' वस्यो मन मांय ॥
६ रामसुख तपस्वी रलियामणो, तेसठ अडसठ तन ताय।
७ चोविहार उगणीस चूंप सू, वरणवै जन वाह वाह ॥

*लय : चेत चतुर नर कहै तो ......।
†लय : भिक्षू नाम को आधार... ।

८ कोदर रामसुख नी करणी, सुणतां अधिकसुखदाय ।।
९ आशा पूरण आप अनोपम रूडै चित रटाय ।
१० संवत उगणीसै आठे गुण गाया, हिवडो अधिक हुलसाय ।।

ढाल ६

*कोदर ऋषजी नै वदियै हूं वारी ।।ध्रुपदं।।

१ कोदर ऋष कुरुणा गरु हू, वारी, कोदर तपसा करूड ।
कोदर जन्म सफल कियोहूवारी, सत्यवादि महासूर।।
२ छाड त्रिया चारित्र लियो, छठ छठ तप वहुवास ।।
षट मासी करी खात सू, वलि इकदोयत्रिण मास ।
३ संथारो दिन सात नो, छन्नूए वर्प पिछान ।
चवदै वर्ष दोय मास नो, चारित्र पाल्यो प्रधान ।।
४ याद आयां मन हूलसै, पूरण तुज मुज प्रीत ।।
साप्रत ही सुखदायको, आवै हरष अचीत ।।
५ उगणीसै आठे आसाढ मे, कृष्ण वीज करी जोड ।
कोदर नो समरण किया, पहुचै मन ना कोड ।।

---

*लय : ढंढण ऋषजी नै वदणा ·· ···।

मुनि मोतीजी (लघु)

(ख्यात नं० ६६।३-६)

ढाल

*मोती शासन नों मोती हो ।।ध्रुपद।।

१ लघु मोती बाघावास नों, पट मासी तप कीधो हो ।
वले तप विविध प्रकार नों, जग मे जस लीधो हो ।
२ प्रकृत भद्र प्रज्ञा भली, गुनदाई नृ होती ।
'चारित कृण्या चोकसी'[1], जप तप नी जोती ।।
३ उष्ण शीत तप आकरो, गुवनीत सुगोती ।
व्यावच्चियो मुनि बाल हो, धारी ध्यान 'धनोती'[2] ।।
४ रोग परीसह आवियो, तो पिण दृढ मुनि गोती ।
समभावे उपसर्ग सही, मेटी दुगती 'पनोती'[3] ।।
५ अंतकाल आलोवणा, आछी रीत परोती ।
सुभ ध्यांन तप झूपणो, कर लीधी करोती ।।
६ छेहड़ै साझ दीयो भलो, सरूपचंद 'जसोती'[4] ।
चित साचै कर सरधिया, गुण ग्राहक मोती ।।
७ समत अठारै सताणूए, काकरोली कहोती ।
हरष वसै हंस थी, रटियो रूप मोती ।।

---

१. संयम की रक्षा मे सावधानी ।
२. धनी ।
३. दुर्दशा ।
४. यशस्वी ।

*लय : सोही तेरापंथ पावै ए......।

मुनि रामजी

(ख्यात स० १००।३-१३)

ढाल १

दोहा

१ संवत अठारै पच्यासीये, सावण सुदि छठ सार।
ऋष रायचंद महाराज रे, राम ऋष व्रत धार॥

२ विविध प्रकारे तप पवर, कीधो अधिक सनूर।
वैरागी त्यागी वडो, कर्म काटण महासूर॥

३ अधिक अभिग्रह आदरचो, शीत उष्ण समभाव।
सुविनीतां शिर सेहरो, निरमल तरणी नाव॥

४ वच दृढवारू वड 'वखत'[1], महा मुनी गुणमाल।
किणविध काज सुधारिया, सुणज्यो सुरत संभाल॥

*भजो नर राम.राम॥ ध्रुपदं॥

५ राम ऋपेसर राम मुनीश्वर, ऋपिराम वडो सुखदायो।
राम ऋषि हृद सरल हीयां नो, राम सुजश जगत छायो।

६ उपवास छठ अठम दशम, छ सप्त तप दिन सार।
अठाई आदि सुतप अधिकेरो, कीधो है वोहली वार॥

७ इग्यारै मास खमण चित उजल, कीधा है अधिक उदार।
वहुल पणै तप उदक आगारे, आछतणो परिहार॥

८ इकतालीस दिन अधिक अनोपम, वलि तप दिन वयालीस।
पैतालीस वलि किया पांणी रा, वर तप विस्वावीस॥

१. किस्मत।

*लय : राम रा दिन जाणो ?ड़ा

९ संवत अठारै एकांणूए धारचा, जावजीव लग जांण।
अंतर रहित एकांतर उत्तम, 'परिठावणियो'[1] पचखांण॥
१० घणां वर्ष मुनि शीतकाल में, पछेवडी परिहार।
आतापना लियै उष्ण काल में, मनमांहि हरख अपार॥
११ संवत उगणीसै ने आठे, छट्ठ, छट्ठ तप सुविचार।
जावजीव लग धारचा मुनीश्वर, महा सुदि पूनम सार॥
१२ इण विध तप करतो अघ हरतो, विचरत महा मुनिरायो।
मालवदेश वगतगढ मांहि, भाग प्रमांणे आयो॥
१३ मृगसर विद नवमी निश पाछली, लागी दस्त तीन वार।
दगम दस्त वमन तन वेदन, समभाव सहै अणगार॥
१४ ऋष जीत आदि देइ संत समणी, ठाणां अठावन सु ठाट।
दर्शण देता प्रणांम चढावता, होय रह्यो गहघाट॥
१५ जीत ऋपि शिष रामचंद नै, महाव्रत आरोपाया।
आलोवणा कर निसल्य थयो मुनि, उचरंग अधिको पाया॥
१६ संत लघु मोती जवान आदि दे, सेव करै चित साचै।
पारणो छठ तणो तिण दिन थो, ऋप संवेग रस में राचै॥
१७ ऋष जीत भणी कहै 'मुज अदरावो, संथारो सुखकार।
जीत कहै काम कठण घणो छै, धीरप राखो इणवार॥
१८ तपसी कहै षट मास नीकलै, तो पिण मुज चित तीखो।
वारूंवार संथारो मांग्यो, साहसीक मुनि हद नीको॥
१९ सागारी अणसण जय अदरायो, 'दिशा'[2] गया गाम वार।
इह अवसर सिरदाराजी आया, वहु सतियां तस लार॥
२० सुखसाता पूछी कीधा खमत खांमणा, विवध प्रणांम चढावै।
सरणा लेवै तपसी मुख सेती, सती वैराग री वातां सुणावै॥
२१ राम ऋपी कहै सिरदारांजी नै, संथारो मोनै करावो।
वार वार संथारो मांगै, अधिको हरख उमावो॥
२२ सिरदारांजी कहै राम ऋषी नै, स्वामीजी दिशां पधारचा।
पूज्य पाछा आया अणसण कीजो, इम कोमल वचन उचारचा॥

---

१. अत्यधिक आहार हो तो साधु उपवास मे (जिसका परिष्ठापन करना पड़े) खा सकते हैं, ऐसा उनके आगार रहता है पर मुनि रामजी ने उपवास के दिन परिष्ठापन किये जाने वाले भोजन का परित्याग कर दिया।

२. शौचार्थ।

२३ इतरे राम बोल्यो इणरीते, जावजीव लग जांण।
तीन आहार ना त्याग छै म्हारै, बोल्यो प्रगट वांण॥
२४ थोड़ी बेला सू जीत ऋष आयो, संथारो कियो सुणियो।
वैराग वारु चढावै विध सू, थिर चित संवेग थुणियो॥
२५ आथणरो आहार करि तपसी पासे, जीत पडिक्कमणो कीधो।
सरणा दियै परिणाम चढावै, लाभ सुजश हद लीधो॥
२६ अंतकाल जांणी जीत कहै इम, राखजो परिणांम उदार।
थोडी वेलांरो कष्ट रह्यो छै, भारी सुख पामता दीसो सार॥
२७ संवत उगणीसै वर्ष इग्यारे, मृगसर विद दशम तिथि सार।
आसरै दोढ महुर्त्त रात्रि गया, मुनि पहुतो परलोक मझार॥
२८ सवापोहर आसरै संथारो आयो, जावजीव नो जाण।
कुलवंत राम वंस उजल, लोढा जाति पिछांण॥
२९ हेमराज मोदी हद चित्त सू, दशम दिन इकधार।
सेव करी अति तन मन सेती, अंत सीम अधिकार॥
३० प्रात मंडाण ओछव अति कीधा, देव विमांण ज्यू देख।
ए कार्य संसार तणा छै, धर्म तो जिन आज्ञा में पेख॥
३१ भाग्यवली ऋषराम मुनिश्वर, जोग मिल्यो अति जुगतो।
सांमधर्मी दृष्ट नीत सुसखरी, भल सतगुरु केरो भगतो॥
३२ शासण जमावण रामऋषीश्वर, हरप मने हूसीयार।
धर्म धुंरधर धोरी सरीखो, तपसी अधिक उदार॥
३३ राम जिसा तपसी इण आरें, विरला सत विमास।
अणसण आदरै पिण न चले गण थी, दीजै तस स्यावास॥
३४ अवनीत अजोग स्वार्थ अणपुगै, निकलै गण थी वार।
इहलोक फिट-फिट ह्वै, धिग तेहनो जमवार॥
३५ एहवा अजोग रै इण भव माहे, उसभ[1] उदै हुवै आय।
विविध प्रकार ना रोग ऊपजै, आदर किहां नही पाय॥
३६ परभव नरक नीगोद मे ऊपजै, गणना जे अवनीत।
जाति न्यात लजावै पाछली, ह्वै घणो फजीत॥
३७ कर्म जोगे गण थी जो नीकलै, कुलवत फेर ठाय आवै।
गाम-गांम निज आतम निंदै, शासण ना गुण गावै॥

---

१. पाप कर्म।

३८ गोसाला रो जीव केवल ग्यांन पांमी, गांम-गांम इम कहसी।
वीर सूं बेमुख हुई कर्म वांध्यां, इम कहितो लाज न लेसी॥
३९ कुलवंत नी नीत संजम पालण, ते फेर जो ठाय आवै।
जन वृंद माहि आत्म निंदतो, मन में लाज न लावै॥
४० अवनीत अजोग री सगत न करै, राम जिसा सुवनीत।
पिंडत मरण करी कार्य सारया, गया जमारो जीत॥
४१ पद आराधक पाया मुनीश्वर, शासण आसता धारी।
इम सा भल शासण सनमुख, हुवै उत्तम नर नारी॥
४२ संवत उगणीसै नें इग्यारे, फागुण सुदि नवमी रविवार।
सैंहर उजेण राम ऋषि गायो, जय जश हरष अपार॥

मुनि रामसुखजी

(ख्यात संख्या १०५।३-१८)

दोहा

१ रामसुख रलियामणो, साधू अधिक सुजांण ।
वैरागी त्यागी वडो, तपसी गुण नी खांण ।।

२ देश ढूढाड जाणियै, सूरवाल सुखदाय ।
माधोपुर थी 'ढूकडो'[1], ग्रांम मनोहर ताय ।।

३ दयाचंद रूपां त्रिया, पुत्र रामसुख सार ।
इक्यासीये सील आदरयो, भांमण ने भरतार ।।

४ वहु वर्षां श्रावक पणै, तपसा कीधी तांम ।
सामायिक पोसा करै, पालै वरत तमाम ।।

५ जैपुर सैंहरे जुगत सूं, निव्यासिये निकलंक ।
दशरावे लीधी दिख्या, मेटयो आतम वंक ।।

६ पूंणा सात वर्ष रै आसरै, पाल्यो संजम भार ।
तप कर कारज सारिया, ते सुणज्यो विस्तार ।।

ढाल १

*धन्य-धन्य ऋषि रांमसुख भणी ।। ध्रुपदं ।।

७ पहिलो चौमासो वालोतरे जी, निरमल पालतो नेम ।
आत्म वस करी आपरी जी, लिखणो करवा वहु प्रेम ।।

८ सैहर फलोदी मांहे कियो, दूजो चौमासो दीपंत ।
विनय विवेक वारु गणो, त्यागी वैरागी महासंत ।।

९ लाडणू सैहर मांहे कियो, तीजो चौमासो तहतीक ।
उगणीस चौविहार लगता किया, सूरपणो साहसीक ।।

१० वीसमें दिवस पांणी पीयो, इकवीसमो वलि चौविहार ।
दिवस वावीसमे पारणो, ए विकट तप अधिक उदार ।।

---

१. नजदीक ।

*लय : एहवा मुनिवर वंदिये ए……।

११ चोथे चौमासे किया चूप सूं, सैहर वीकानेर मांय।
तेसठ दिन तप आकरो, मन माहि हरष अथाय॥
१२ दिवस बारै पाणी आचरयो, आछ धोवण नही पीध।
ते वारै दिवस कहूं जू जूआ, सांभलजो प्रसीध॥
१३ दिवस तीजे अरु सातमे, वारमे ने उगणीस।
वावीस नें पचीसमें, इकतीसमे ने अडतीस॥
१४ चमालीसमें दिवस पचासमें, छपनमें जल लीध।
इकसठमो दिन जाणजो, ए दिवस वारै पाणी पीध॥
१५ शेष एकावन दिन मझे, च्यारूंइ आहार पचखाण।
उतकृष्टो तप आकरो, आदरयो उजम आण॥
१६ स्वमत अन्यमत हरषिया, तपसी तणा गुण देख।
उद्योत हुओ जिण धर्म नो, तपसी मन अधिक विवेक॥
१७ पंचमे वर्ष पाली मझै, अडसठ दिन तप सार।
इग्यारै दिन जल आचरयो, सतावन दिन चोविहार॥
१८ चौथे दशमे दिन सोलमें, वीसमें दिवस विचार।
छावीसमे दिवस वतीसमे, पेतालीसमें जलधार॥
१९ एकावन ने अठावनमे, वासठमें दिन देख।
छासठमो दिन जांणजो, ग्यारै दिन उदक विसेख॥
२० शेष सतावन दिन मझै, तज दीया च्यारूंइ आहार।
ए उत्कृष्टो तप देख ने, पाया घणा चिमत्कार॥
२१ केइ धर्म तणा घेषी मांनवी, ते पिण इचरज थाय।
ए तप चौथा आरा सारिखो, कियो मन हरष अथाय॥
२२ छठै चौमासे वली लाडणू, एकंतर एक टक आहार।
पछै वेले बेले किया घणा दिनां, तीजे पोहर पारणो धार॥
२३ पारणै विगै व्यंजण तणां, मंगावण रा पचखाण।
एक 'सपी'[1] रो आगार मुनि राखियो, 'निजर रिख्या'[2] भणी जाण।
२४ 'उतरतो आहार'[3] साधां तणो, तीजै पौहर एक टक ताय॥
घणा दिनां तांई जाणियै, 'खंखर'[4] कर दीधी काय।
२५ विचरत-विचरत आविया, सैहर चूरू मांहे सोय।
एकंतर दिवस केता लगै, चढतै परिणांम सुध जोय॥

---

१. घृत।
२. दृष्टि की रक्षा।
३. विरस आहार।
४. कृशतम।

२६ कांयक असाता 'वाइ'[1] तणी, ग्रीषम काल विकराल।
पिण ध्यानतपसा करिवा तणो, किया दिवस पैंतालीस भाल॥
२७ जेठ मासे अति आकरो, आधो आसाढ दिन जोय।
ए उष्ण पांणी रा आगार सूं, वलि आतापन अवलोय॥
२८ साध श्रावक वरजै घणा, कहै ग्रीष्म ऋत विकराल।
तप करो अवसर देख नै, पारणो कीजियै न्हाल॥
२९ जवरी सूं करायो पारणो, आसाढ सुदि तिथ तीज।
चौथ चौविहार कीधो वली[2], पिण शरीर 'निपट'[2] गयो 'छीज'[3]॥
३० आठम शुक्ल आसाढ नी, आलोई निसल निकलंक।
सर्व सूं करी खमत खांमणा, टालियो आतक वंक॥
३१ महाव्रत फेर आरोपिया, चढते परिणाम चित चंग।
कहै भय नही म्हारे मरवा तणो, वातां करै उचरंग॥
३२ कांयक असाता तन ऊपनी, घणा लोक देखंतांजी ताय।
ऋष जीत पूछचो तपसी भणी, थांरै सोच नही मन मांय॥
३३ तपसी कहै सरधा आचार मे, भ्रम ह्वै ते करै सोच।
वलिसोचकरै कायरहुवै जिको, ए वोलियो वचन आलोच॥
३४ इतला माहै जिभ्या थक गई, पचखायो सागारी संथार।
वचन पाछो नही वागरचो, आसरै घडी अवधार॥
३५ संवत अठारै पचाणूंए, आसाढ सुदि आठम जोग।
दिन पाछिलो पौहर रै आसरै, ऋष रामसुख पोहतो परलोग॥
३६ धिन धिन धिन मुख ऊचरै, वहु नर नारचां रा वृंद।
चिमत्कार हुओ चूरू सैहर में, पायो रामसुख परम आणंद॥
३७ षट सीयाले वहु सी सह्यो, पछेवडी नो परिहार।
एक चोलपटा रा आधार सूं, कष्ट वहू सह्यो तिणवार॥
३८ 'व्यंजण'[4] 'विगय'[5] नही आचरचो, उतरतो लियो आहार।
वहू काल करणी करी 'आकरी'[6], तन मन हरष अपार॥
३९ विनीत घणो आज्ञा पालवा, निज छांदो रूंधणहार।
विकट तपसी गुण आगलो, महा निरलोभी नें लिखणदार॥

---

१. वायु (वात)।
२. विल्कुल।
३. क्षीण।
४. साग।
५. दूध, दही आदि।
६. उत्कृष्ट।

४० सरधा में अडिग सैठो घणो, पकी देव गुरां री परतीत।
संत ऋष रामसुख सारिखा, विरला छै तपसी विनीत।।
४१ इम साभल उत्तमां नरां, राखो देव गुरां नी परतीत।
रामसुख ज्यूं तपसा करी, आतम लीज्यो थे जीत।
४१ संवत अठारै पचाणूए, आसाढ सुदि बारस तास।
गुण गाया ऋष रामसुख तणा, सैहर चूरू मे विमास।।

ढाल २

*भवियण धिन-धिन ते अणगार।।ध्रुपदं।।

१ रामसुख रलियामणो जी, संता ने सुखदाय।
छ सीयाला वहु सी खम्यो रे, पछेवडी परिहार रे।।
२ आहार उतरतो आचरचो, पाच विगय परिहार।
व्यंजण न मंगावियो, वहुकाले ए तप धार हो।।
३ प्रथम चौमासो वालोतरे, दूजो फलोधी सैहर।
तन मन सू लिखणो कियो, मेटी मनरी लैहर।।
४ तीजो चौमासो लाडणू, पचख्या दिवस इकवीस।
वीसमें दिन जल आचरचो, चोविहार दिन उगणीस।।
५ वीकानेर वखाणिए, चौथो चौमासो कीध।
तेसठ दिन तप निरमलो, उन्हो पांणी बारै दिन लीध।।
६ पाचमे वर्ष पाली मझै, अडसठ उदक आगार।
इग्यारै दिन जल आचरचो, सतावन चोविहार।।
७ छठो चौमासो लाडनू, एकंतर एक धार।
पछै छठ छठ तप करतां थकां, तीजे पौहर आहार।।
८ विचरत विचरत आविया, चूरू सैहर जगीश।
द्वितीया जेठ आसाढ मे, तप दिन पैतालीस।।
९ जवरी सूं करायो पारणो, आसाढ सुद तिथ तीज।
उपवास कियो दूजे दिने, शरीर निपट गयो छीज।।
१० आठम शुक्ल आसाढ नी, आलोई निसल निकलंक।
सर्व सूं किया खमत खांमणा, मेट्यो आतम वंक।।

*लय : कपुर हुवे···।

११ असाता अधिकी जांण नै, पचखायो सागारी संथार।
आसरै घडी वीता पछै, पोहता परलोक मझार॥
१२ चौथा आरा सारिखो, तप कीधो खड्गधार।
जन्म सुधारयो आपरो, भजन करो नर नार॥
१३ गुण गाया रामसुख तणा, चूरू सैहर मझार।
संवत अठारै छिन्नूए, सावण विद आठम शनिवार॥

ढाल ३

*रामसुख तपसी। तैं तप कीधो अति भारी॥ध्रुपद॥

१ चउविहार कीधा उगणीस, त्रेसठ अडसठ नै पैंतालीस॥
२ शीत ताप विगय परिहार, निर्मल मती नै लिखणदार॥
३ तूं कीधा उपगार नो जांन, तैं जीतो मन्मथ नै मान॥
४ सुगरु तणो तूं बडो सुविनीत, तैं हद पाली पूरण प्रीत॥
५ देव गुरु नी पकी परतीत, चरण आराध्यो रूडी रीत॥
६ वचन तणो तू सूर उदार, निर्मल बुद्धि तुम ऊडो विचार॥
७ याद आयांइ हीयो हरकंत, तो सम जग मे विरला संत॥
८ तू प्रतीतकारी गुणवान, आणंदकारी चित तू सुख स्थान॥
९ गुण ग्राहक तू गिरवो गंभीर, वचन निभावण तू वडवीर॥
१० संमत अठारै अठाणूए न्हाल, चैत्री पूनम रची गुणमाल॥

ढाल ४

†सूरत थांरी मन वसै साधूजी॥ध्रुपदं॥

१ रामसुख रलियामणो साधूजी, सुखदाईसु विहांण हो। ससनेही।
प्रत्यक्ष आसा पूरणो साधूजी, अमृत पान हो॥ स सनेही॥
२ तैसठ अडसठ तै किया, अल्प दिन उदक आगार।
चौविहार उगणीस किया चित्त सूं, वलि पैंतालीस विचार॥
३ पूरण तुझ तुझ आसता, पूरण तुझ परतीत।
वयण विमल उभय वागरया, चित आवै मुज चीत॥
४ थारै अधिक आग्या नी आसता, सात वर्ष मांहि सोय।
परभव में तूं पांगरयो, लियो लाभ अधिक अवलोय॥
५ उगणीसै आठे आसाढ में, विद वीज अनै शनिवार।
जोवनेर मांहे जुक्ति सूं, पायो हरष अपार॥

*लय : सतजोगी स्वाम ।   †लय : सूरत थारी मन बसो ।

मुनि संभूजी

(ख्यात सख्या ११५।३-२८)

ढाल

*सुखदाई भलो सुवनीत। सं। पाल्यो संजम रूडी रीत। सं।
संभू सुहामणो रे। ध्रुपदं ॥

१ संभू संत वडो सुखकारी, हद सूरत गणहितकारी रे।
जग कीरत महा जश धारी रे ॥

२ उद्यमी मुनि अधिक उदारु, वचनामृत वलभ वारु।
समता रस सागर सारु ॥

३ प्रगटयो पादू सैंहर नो वासी, वरमेचा जाति विमासी।
ओसवंस उत्तम गुण रासी ॥

४ वर्स पचाणूंए समत अठारो, सुध संजम धारचो उदारो।
ऋष राय मिल्या गुणधारो ॥

५ सवा च्यार वर्स जाभा सोयो, कृष्ण गढे पौहता परलोयो।
हीमत कलावंत मुनि जोयो ॥

६ ज्यांनैं याद करे नर नारो, सुगुणो संभू अणगारो।
परवीण मुनिजन प्यारो ॥

७ सूक्ष्म बुद्धिकरी शंभू परख्यो, गुणी जांण घणूं मन हरख्यो।
तिणरो मरण सुणी चित धरक्यो ॥

८ सतरा वर्स रे आसरै जाणी, संजम लियो सुमता आणी।
नित्य भजन करो भविप्राणी ॥

९ नीनाणूए जेठ सुदि बीजो, रटियो संभूडो संत चीजो।
गुणमाला हीये पहिर लीजो ॥

---

*लय—कार्तिक मासे दे दिहाड़ी रे ....।

मुनि टीलोजी

(ख्यात स० ११६।३-२६)

ढाल

१ *संत टीलो सुखदाय, ओतो महा मोटो मुनिराय हो। मुनिवर गुणधारी।
सैहर चीतोड नो वासी, चारित्र लीधो सुविमासी हो ॥मुनि० गुण०
२ कुल मेसरी जाति मुहाल, छोड्यो परिग्रह जजाल।
पचांणूए चारित्र लीधो, ऋषराय स्वहथ प्रसीधो ॥
३ भली दृष्टि चरण नी भारी, सतगुरु सू इकतारी।
मुनि सुमति गुप्ति घर ग्यांनी, धुन व्यावचियो वर ध्यांनी ॥
४ सुखदायक नें सुविनीत, निर्मल व्रत पालण नीत।
संगत अविनीत नी टाली, मुनि आतम नै उजवाली ॥
५ अपछंदा जे अविनीत, जिलो वांधी हुआ 'फजीत'[1]।
त्यांरी संगत टीलै छंडी, भल प्रीत सुगरु सू मंडी ॥
६ मंडी हद प्रीत सुगुरु सूं, तसु कार्य सुधरै धुर सू।
भारीमाल सरीखा देखो; सिष सुवनीतां रो लेखो ॥
७ लेखो शिष सुवनीता रो, धिन-धिन 'जीतव्य'[2] जस ज्यारो।
गुण कीधा केवल नांणी, धुर उत्तराध्ययन ने जाणी ॥
८ धुर उत्तराध्ययन, निगम में, वले दशवैकालिक नवमे।
सुवनित नैं वीर सरायो, इह भव परभव जश छायो ॥
९ जश इह भव परभव जाजो, तत्व जाण सुवनीत सुताजो।
परभव वर पदवी पावै, इह भव गण अधिपति थावै ॥
१० गण अधिपति सुगुरु भेटयां, संग अवनीता रो मेटया।
प्रत्यक्ष टीलो पायो, सतगुरु तसु तोल वधायो ॥
११ तसुं तोल वधायो तीखो, निर्मल चित जांणी नीको।
तसुं सुगुरु सिंघाडो कीधो, मुनि जग मांहै जश लीधो ॥

---

१. वदनाम। २. जीवन।

*लय—हरी म्हांना माहै म्हानो ए.....।

१२ जश लीधो जग में जांणी, तसुं कीधो आगेवाणी।
परतीत जमाई गाढी, अविनीतां री संगत छांडी॥

१३ संगत अवनीता री निवारी, मुनि टीलै जश लीधो भारी।
विचर-विचर मुनिरायो, कांइ सैहर वागौर मांह्यो॥

१४ वागौर माहि मुनिरायो, कीधो उपगार सवायो।
चिहु संत साथ सुविहांणी, टीलो ऋषि आगेवांणी॥

१५ आगेवाणी ऋषि टीलो, सुमता रस में रह्यो भीलो।
वारुं वखाण सुणावै, गुणि जश कीर्ति जन गावै॥

१६ गावै जश कीर्त्ति जन्नो, तन दस्ता नो कारण उपन्नो।
अणचिंत्यो आउखो आयो, पहुंता मुनि परभव मांयो।

१७ परभव आसाढ में पौहतो, सुख दुख समभावे सहतो।
उष्णकाल में सीधो, मुनि जीत नगारो दीधो॥

१८ दीधो मुनि जीत नगारो, सासण सनमुख सुखकारो।
गण आसता तीखी धारी, तिण सू वरत्या जय जय कारी॥

१९ जश जय-जय कार जिणांरो, जश वाधै सुवनीता रो।
'वेमुख'[1] नों मुहढो कालो, फिट-फिट दुख सहै असरालो॥

२० असराल दुखो अपछंदा, विगडायल 'जैन रा जंदा'[2]।
एहवा कृतघ्न लूण हरामी, निर्लज दुरगति नो गांमी॥

२१ दुरगति गांमी अविनीत, तेह सू संगत तजै सुवनीत।
अवनीतां सू रहै दूरा, ते परमेसर ना पूरा॥

२२ गंगा टीला री भगनी, संजम लीधो सुभ लगनी।
विहुं जीतव्य जन्म सुधारया, अणसण कर कार्य सारया॥

२३ टीला ऋष ना गुण गाया, रतलांम माहि सुख पाया।
ठाणां पिचंतर थाट, कांइ संत सती गहघाट॥

२४ उगणीसै वरस इग्यारे, वैसाख सुक्ल सुखकारे।
चवदश तिथ टीलो गायो, जयजश वृध आनंद पायो॥
मुनिवर गुणधारी॥

---

१. विमुख। (प्रतिकूल)
२. जिन-शासन के पिशाच अर्थात् उसको दूषित करने वाले।

मुनि शिवलालजी

(ख्यात स० ११७।३-३०)

ढाल

*सुगण शिवलाल जी रे ।।ध्रुपदं।।

१ ऋषि शिवलाल सुहामणो रे, सुमति गुप्त सुखकार ।
मोजीरांम जी स्वामी कनै, लीधो संजम भार ।।

२ चौथ छठादिक वहु किया, नव तप दिन फुन सोल ।
वीस इकवीस बावीस ही, तपपण दिन वीस किलोल ।।

३ फुन वलि गुणतीस कीया मुनि, मास खमण बे बार ।
तेतीस ने इगतालीस ही, तप पचास उदार ।।

४ एकावन बे वार ही, तेपन तप बे मास ।
तीन मास तंत सार ही, आछ आगारे तास ।।

५ वर्स तेवीस रै आसरै, एक पिछेवडी उपरंत ।
ओढी नही मुनीस्वरु, शीतकाल में तंत ।।

६ स्वाम सरूप रै आगले, सप्त पोहर संथार ।
चौवीसे वैसाख में, कर गयो खेवो पार ।।

७ उगणीसै पणवीस मे, सुदि अष्टम वैसाख ।
शिवलाल ऋषि स्वर गाइयो, जय जश शिव अभिलाख ।।

---

*लय : सीता सुंदरी रे··· ।

मुनि मोतीजी

(ख्यात सं० ११८।३-३१)

ढाल

*धन-धन-धन मोती मुनि।

।।ध्रुपदं।।

१ पयवर(दुधोड)नो वासीपको, मोती नामक कहिवायो जी कांइ।
चिहुं सुत बंधव चिहुं भला, घर मे ऋद्धि अधिकायो जी कांइ।

२ प्रथम पुत्र परभव गयो, दूजो पिण कर गयो कालो।
तृतीय सुत नै पिण तदा, काल लपेटयो न्हालो।

३ मरण तुर्य सुत नो तदा, देखी आयो वैरागो।
चरण लेवा सू चित्त हुवो, संसार सू मन भागो।।

४ मांई तणी लेइ आंगन्या, पूछी बंधव तीनो।
ऋषिराय आचार्य आगले, धारयो चरण सुचीनो।।

५ पंच महाव्रत पालतो, समित गुप्ति सुखकारो।
व्यावचियो तपसी भलो, मोती गुण भंडारो।।

६ शीतकाल बहु सी सह्यो, उष्णकाल आतापो।
चउमासे तपसा करी, काटया बहुला पापो।।

७ चउथ छठ अठमादि ही, तप कियो विविध प्रकारो।
कीधो बहुला थोकडा, आणी हरख अपारो।।

८ उदक आगारे महामुनि, एकसो आठ उदारो।
छाछ आछ छांडी करी, कीधो हरष अपारो।।

९ तपसारै छेहडे तदा, हींदूपति तिहवारो।
समाचार कहि वाविया, ह्विवै पारणो कीजो सारो।।

१० ताम करायो पारणो, सरूपचंद मुनिरायो।
तंतो तंत मिल्यो इसो, ए अचरज अधिकायो।।

---

*लय : साधु कहै भवी सुणो……।

११ रांणाजी रो कहिवावणो, पारणा रो वलि टांणो।
मोती कीधो पारणो, साभल हरष्यो रांणो॥
१२ म्हांरा कह्यां सूं पारणो, संता कीधो सारो।
सींग राणो हरषीयो, ए जन मुख सुणियो तिवारो॥
१३ हेम तणी सेवा भली, कीधी मोती संतो।
सेवा वले सरुप नी, कीधी मुनि मतिवंतो॥
१४ उत्तमचंद मुनिवर तणी, चाकरी कीधी चंगी।
सेवा दीर्घ मोती तणी, सखरी कीध सुरंगी॥
१५ दीर्घ मोती परभव गया, मोती नैं तनु माह्यो।
कारण अधिको ऊपनो, शक्ति घटी अधिकायो॥
१६ संत तीन सेवा मझे, गुलाब बींजराज जीवो।
जयगणि सुण मुनि दे वली, म्हैल्या हरख अतीवो॥
१७ मांणक मुनि रामलालजी, आया मोती रे पासो।
आगला तीन संता भणी, विहार करायो तासो॥
१८ दिन २ शक्ति घटै घणी, मोती नी तिण वारो।
मोती नैं अतिवाल हो, रामलाल अणगारो॥
१९ चढते परिणामे करी, मोती ऋषि गुणमालो।
उगणीसैं तीसे समै, चैत मास कीयो कालो॥
२० विधि विधि सू सेवा करी, रामलाल जश लीधो।
मोती सैहर वालोतरे, जीत नगारो दीधो।
२१ उगणीसै तीसे समै, ताराचंद सुत गायो।
प्रथम आसाढ सुदि तीज ही, जय जश हरष सवायो।

मुनि लालजी

(ख्यात सं० १२२।३-३५)

ढाल

१ वासी चंदेरा तणो, लाल ऋपेस्वर जान।
सुत त्रिय सुतनी वहु तजी, चरण लियो गुण खांन ॥

२ सताणूए मृगसर विद, चौथ चरण सिरदार।
लाल महोछव चरण छठ, विहुं जय पै सुविचार ॥

*सुगुणा साधूजी रे ॥ध्रुपदं॥

३ सुमति गुप्ति मे सावचेत मुनि, विनयवंत सुखकारो जी रे।
सीत उष्ण तप जप समचित्त सू, आणी हरख अपारो रे ॥

४ उपवास वेला नें तेला चोला, पांच सात नव इग्यारो।
वारै तेरै सोलै तप दिन, मास खमण पंच वारो ॥

५ वहु जन नै समझावण केरो, लाल तणैं अति प्रेमो।
गणपति नामे गुरु धारणा, हर्ष लाल चित्त हेमो ॥

६ चरम चौमासो श्रीजीदुवारे, टीकम ऋषि पै जांणो।
उगणीसै पनरे श्रावण में, परभव कियो प्रयांणो ॥

७ चारित्र लीधो चढते भावे, सिद्ध कार्य तिम कीधो ॥
निर्मल सासण नी आसता राखी, जीत नगारो दीधो ॥

---

*लय सयणा थइयै जी रे " "

मुनि जवांनजी (लघु)

(ख्यात स० १२५।३-३८)

ढाल

१ लघु जवांन मरुधरा, जात चोरड्या ताय ।
ईडवा रा वगतगढ में, चरण लियो सुखदाय ।।

२ पुत्र सुतन वहु नै तजी, संवत अठारै जांण ।
सताणुंए संजम लियो, महोछव चरण मंडाणा ।।

*सुणज्यो जवान ऋष री वारता रे लाल ।।ध्रुपदं।।

३ सुमत गुप्ति व्रत साचवै रे, सतगुरु नो सुविनीत रे, सुगुण मुनि ।
विनय व्यावच वारू घणो रे लाल, निर्मल वारू नीत रे, सुगुण मुनि ।।

४ चरचा करवा चातुर घणा, वर अवसर नो जाण ।
वहु जन नै समजाविया, श्रद्धा पमाई जिन आंण ।।

५ सासण सखर दिढायवा, जवर जवान सुजोग ।
चरण पमायो घणां भणी, अधिक कला उपयोग ।।

६ छेहड़ै कारण ऊपनो, चरम चौमासो गणि पास ।
मृगसर आया लाडणू, वेदन तन अहियास ।।

७ छोटू ऋषधारी चाकरी, अधिक हरष मन आण ।
सेवा करै साचे मने, दुक्कर तप ए जाण ।।

८ गणपति दर्शण नित्य दीयै, आलोवण व्रत आरोपाय ।
विहारकियो संतोष नैं, छोटू सेवा में छै ताय ।।

६ फागुण में वलि गणपति, दर्शन दिया इकमास रे ।
छोटू ऋष नै भलाय नै, विहार कियो है तास ।।

१० वैशाष विद निशि तीज नी, वेदन अधिकी जाण ।
अणसण छोटू करावियो, सागारी सुख खाण ।।

---

*लय—धीज करै सीता सती रे लाल" ....

११ अधिक परिणांम चढावियां, पीहता परभव माय।
जाझो महुर्त्त रै आसरै, अणसण आयो ताय।।

१२ तेरै खंडी मांडी करी, जांण के देव विमांण।
ए सावद्य कार्य संसार ना, तिणमें धर्म नें पुन्य म जांण।।

१३ संवत अठारै सताणूंए, लीधो संजम भार।
उगणीसै सोले समै, चाल्या जन्म सुधार।।

१४ जवांन ऋषिवर जुगत सूं, कीधो जन्म किल्यांण।
आछी रीत आराधना, श्रद्धा चरण सु आंण।।

१५ उगणीसै सोले समै, ईखू तीज उदार।
तेतीस निव्यासी मुनि आर्य्या, वीदासर मुनि सुखकार।।

मुनि प्रतापजी

(ख्यात स० १५०।३-६३)

ढाल

*धिन-धिन संत सुहांमणा ।।ध्रुपदं।।

१ प्रतापजी चारित्र लियो, पादू ना वसीवांन।
पुत्र सहित व्रत आदरचा, कीयो जन्म किल्यांण ।।
२ संमत उगणीसै चौके समै, मृगसर विद तिथि तीज।
गुलजारी ऋषि आगले, धरचो चारित्र चीज ।।
३ हंसराज सुत सोभतो, संजम नै अगवांण।
वर्स वारै रे आसरै, साथे चरण पिछांण ।।
४ उपसर्ग सुत नै ऊपनो, रह्यो अडिग विसेख।
कष्ट सहित व्रत राखिया, अचरज थया सहु देख ।।
५ पुत्र पिता दोनू भला, धारयो चरण निधान।
रोकड चवदै सौ आसरै, छाडया विष फल जाण ।।
६ कारण प्रतापजी रै ऊपनो, पूज कीधी सार।
साह्ज दियो अति आकरो, राख्यो सत उदार ।।
७ व्यावचियो मन वालहो, जैचंद ऋष जश लीध।
वारु विविध प्रकार नी, सेवा तन मन कीध।।
८ वस्तु मंगावै प्रतापजी, तो ना कहिवा रो नेम।
खप कर आपै आंण नै, तसु गुण कहिणी आवै केम ।।
९ पूजण परठण अशन नी, व्यावच विविध प्रकार।
जैचंद ऋष कीधी घणी, शीतकाल कष्ट धार ।।
१० मूख सू प्रशंसै प्रताप जी, जैचंदजी नै जाण।
जोमनेर जन हरषिया, सेवा सखर पिछाण ।।

---

*लय—पदम प्रभु नित्य समरियै ।

११ नर नारी धिन-धिन करै, जैचंद ऋष धिन धिन्न
इण विण इसडी कुण करै, हुवा लोक प्रसन्न ।।
१२ शीतकाल अति सी पडै, रात्रि वार अनेक ।
कारण दस्त तणो पडै, परठै हरष विसेख ।।
१३ ऋष जीत आयो तिण अवसरे, हरष्या दोनू साध ।
चैत विद अष्टम तिथ भली, पाया परम समाध ।।
१४ चैत सुक्ल एकम निशा, पाछि ली अल्पमात रात ।
कारण अधिको ऊपनो, वीज थई प्रभात ।।
१५ जीत ऋषि इम ऊचरै, सरणा होयजो च्यार ।
विविध प्रमाण चढावता, आणी हरप अपार ।।
१६ महाव्रत फेर आरोपाविया, आलोवणा कराय ।
सावचेत चित्त सरधता, वोलै वचन सुहाय ।।
१७ नांम हंसराज तणो लियो, ऋष जीत सुजोय ।
ऋप प्रताप कहै इसी, म्हारै मन मे न कोय ।।
१८ वेदन तो अति आकरी, जीत चढावै प्रणाम ।
अणसण सागारी उचरावियो, मुख सू मांग्यो ताम ।।
१९ पुद्गल पछै हीणा पढ़्या, जीभ थकी पहिछांण ।
सरधो तो थांरै जावजीव रा, तीन आहार पचखांण ।।
२० सवा पौहर रे आसरै, अणसण आयो सागार ।
दो पहर ढल्या चलता रह्या, उगणीसै साते सार ।।
२१ पूणा च्यार मासरै :आसरै, ऋप जैचंद ताय ।
जोमनेर माहै रहह्या, खेत्र महा सुखदाय ।।
२२ भाई वाई जोमनेर रा, वारु अधिक वनीत ।
सेव करी साचे मने, तन मन सू घर प्रीत ।।
२३ प्रतापजी री पूरी दिशा, वारु मिलियो जोग ।
कुल सुरांणा उजालियो, सुखे पहुंता परलोग ।।
२४ उगणीसै सातै समै, चैतसुक्ल तीज जांण ।
गुणगाया जोवनेर में, पायो परम किल्यांण ।।

७

सती गुण वर्णन

साध्वी रूपांजी

(ख्यात सं० ३७)

ढाल

दोहा

१ रूपांजी थिर चित्त सूं, धारचो संजम धीर।
रावलियां में रंगरली, श्रीजीदुवारे 'पीर'[1] ॥

*सुण चतुर सुजांण, गुण सतियां ना नित प्रति मन वच गावो।
सती महा गुणवांन, इहभव परभव समरण थी सुख पावो ॥ध्रुपदं॥

२ भाई खेतसी मुनि भारी, ऋषराय तणी मासी धारी।
कांइ सती रूपांजी सुखकारी॥

३ वरष पनरै आसरै वय जाणी, सुत पीउ छांड सुमता आंणी।
सती रूपांजी महा स्याणी॥

४ इकवीस दिन उनमानो, आज्ञा लेता दुख असमानो।
खोडे पग घाल्या दुख खानो॥

५ पछै खोडो तूटो पुन्य प्रमाणो, जश विस्तरियो जग में जांणो।
गुण गावै उदियापुर रांणों॥

६ चारित्र इम लीधो चूंप घरी, कर्म काटण तपस्या वोहत करी।
समणी रूपांजी महा सुखकारी॥

७ हीरांजी समणी हीर कणी, भल कीरत भारीमाल भणी।
सुखे रहै तस पास रूपां समणी॥

८ भीखू सरीखा भल गुर पाया, भारीमाल सतजुगी सोभाया।
रूडा भांणेजा ऋषराया॥

९ बडी वहन खुसालांजी सूरी, रंगुजी नी 'नांनी'[2] रूडी।
सती रूपांजी गुण पूरी॥

---

१. पीहर।
२. वाल साध्वी।

*लय : भीखू भारीमाल गुण भा.....।

१० निमल भाव अति निकलंको, व्रत पाल आतम मेटचो बंको ।
दियो जीत नगारा नो डंको ॥

११ समत अठारै सतावने, परलोक गया धरम ध्यान धुने ।
गुणी जिन गुण गावै सुध मने ॥

१२ गुण वर्स नीनाणूए गाया, विद चैत छठ बहुसुख पाया ।
सबलपुर में सोभाया ॥

साध्वी हस्तूजी (बडा)

(ख्यात स० ४५)

ढाल

दोहा

१ हस्तू कस्तू बेहनडी, सती सिरोमण सार।
सुता जगु गांधी तणी, वसुधा जस विस्तार॥

२ सासरिया मुंहता सही, लखेसरी कहिवाय।
कंत पुत्र दोनू तजी, संजम धारयो सवाय॥

३ संमत अठारै सतावने, संजम सैहर पीपाड।
विनय विवेक विसेख गुण, कीधो जगत उधार॥

४ संमत अठारै छींहतरे, नगर उजेण मझार।
कीध कल्याण आतमतणो, कस्तू-कर संथार॥

५ *बड वैराग दिशा घणी, हस्तू गुण नी खांण रे। हस्तू हद कीधी।
सील तणो घर सोभती, जाझी कीरत जांण रे॥ हस्तू हद कीधी॥

६ श्री जिन मारग जमायवा, धोरी जिम धुन धार।
आराधन गुरू आगन्या, स्यूं कहिवो अधिकार॥

७ निश्चै सही चित निरमल, तन मन इंद्री जीत।
बहु जन नैं समजाय नै, थई देश में वदीत॥

८ सुंदर मुद्रा हस्त तणी, सुंदर तरण री नीत।
सुंदर रूप गुणे भरी, पेख्यां पांमै प्रीत॥

९ सूत्र नी जांण सैणी गुणी, लीध जन्म नो लाह।
निर अहंकार पणै निरख नैं, गुणी जन कहै वाह वाह॥

१० पाखंड पंथ उठायवा, सिंहण सम साहसीक।
गुर भगता गाढी घणी, तंत सरल तहतीक॥

---

*लय : भामा ठग ला……।

११ 'इरषो'[1] अधिको अस्त्री तणै, सहज सभावे होय।
पिण हस्तू न पेखतां, अचरज आवै सोय॥
१२ हस्तू ना गुण एहवा, तेहवा गुण अधिकाय।
नर पिण विरला जांणजो, समणी महा सुखदाय॥
१३ चालीस वरसरै आस रै, संजम पाल्यो सार।
विचरत विचरत आविया, मेवाड देश मझार॥
१४ उणोदरी इधिकी करी, संलेखणा सुध रीत।
महाव्रत आरोपी करी, खमत खांमणा धर प्रीत॥
१५ चौथ भगत कीधो सती, संवच्छरी नो सोय।
पछै आहार बहु ना लियो, तेरस तांई जोय॥
१६ सतियां नै भाखे सती, छेहडै मन सू कर संथार।
भाव किल्यांण करण तणा, एहवी गाढी धार॥
१७ सतियां नै कहै रात्रि ना, मैं कर दीधो संथार।
आसरै दोढ पौहर बीतां पछै, पौहता पर भव मझार॥
१८ भाद्रव सुक्ल पख तेरसी, किल्यांण भीखू कीध।
तेहज दिन हस्तू सती, लाहवे लाहवो लीध॥
१९ समत अठारै सताणूंए, विद वैसाख वीज बुधवार।
गुण गाया हस्तू तणा, सरीयारी सैहर मझार॥

१. ईर्ष्या।

साध्वी जोतांजी

(ख्यात सं० ४८)

ढाल

*जोतांजी मोटी सती सुखदायो रे ।। ध्रुपदं ।।

१ सती जोतांजी महा सुखदायो रे, प्रभु पंथ सती हद पायो रे।
च्यार तीर्थ में जश छायो ।।

२ लाहवा थी भल संजम लीधो, पीउ छांड परम रस पीधो।
दुख सासरियां अति दीधो ।।

३ तीन वार चूडो तोडयो, मार दीधी बांधी तन मोडयो।
चित चारित्र थी नही छोडयो ।।

४ चौथी वार चूडो पहिरायो, घर कां आज्ञा दीधी मन लायो।
स्वाम भीखू नै लिया बोलायो ।।

५ वर्स सतावनो सुखकारो, जेठ मास चारित्र जयकारो।
भीखू स्वमुख चरण उच्चारो ।।

६ व्रजूजी विजांजी नैं सूंपी, सती जोतांजी अधिक अनूंपी।
सीलामृत रस नीं कूंपी ।।

७ ओसवंस बावलिया सुजातो, आसरै वर्ष सतरै विख्यातो।
सती री बुधि घणी उतपातो ।।

८ हुई सूत्र सिद्धंता री जांणो, खिम्या विनय गुणां री खांणो।
वर कंठ सूं वाचै वखांणो ।।

९ स्वाम भीखू सुविचारो, कीयो विजांजी तणो संघाडो।
वखांणीक जोतांजी उदारो ।।

१० हद देशना महा हितकारो, निसुणी समजै नर नारो।
चित माहै लहै चिमतकारो ।।

११ बीजांजी सती तप अति कीधो, साझ जोतांजी अधिको दीधो।
परम विनय तणो रस पीधो ।।

---

*लय : प्रभु नेमीनाथ जो ......।

१२ नव दिन नो संथारो नीको, सत्यास्ये सती विजां सधीको।
सती लीयो सुजश नो टीको ॥

१३ जोतांजी हुई महा जश धारो, अधिको करती उपगारो।
सती शासण री सिणगारो ॥

१४ घणां नैं दीयो संजम भारो, श्रावक पणो घणां नैं श्रीकारो।
घणां सुलभ कीया नर नारो ॥

१५ नीत चारित्र नीं हद नीकी, जूंनी धारणा सरवर सधीकी।
चौथा आरानी सतियां सरीखी ॥

१६ छेहडै क्षीण जंघाबल जांणो, तो पिण रह्या नहीं थापी थांणो।
कांठा नी कोर विचरया सुजाणो ॥

१७ नंदूजी आदि समणी सुंहांणी, मन मांनी सेवा सुखदांणी।
प्रबल पुन्य जोतां ना पिछांणी ॥

१८ ध्यान समरण अधिको धारो, लाखां गमें नवकार संभारचो।
'विषया रस'[1] नैं दूर निवारचो॥

१९ लाहो नरभव नो हद लीधो, अणसण पौहर अढाई समृधो।
सती जीत नगारो दीधो ॥

२० पाली सैहर पिंडत मरण पायो, उगणीसै आठे कातिक माह्यो।
जश जोतां तणो हद छायो ॥

२१ मंढी कीधी है खंड इकताली, महोछब कीधा अधिक निहाली।
ए तो रीत संसार नी भाली ॥

२२ सती जोतां हुई जयकारो, त्यांरो भजन करो नर नारो।
याद आयांइ हरष अपारो ॥

२३ सुध शासण जमावण सारो, सती जोतां सरीखी उदारो।
हिवडां विरली पंचम आरो ॥

२४ पिंडत मरण करी पद पावै, अति कष्ट कदाचित आवै।
आचार्य सूं बेमुख नही थावै ॥

२५ एहवी जोता शासण सिणगारो, इसडा गुण आदरो नर नारो।
तेह थी पांमियै भवदधि पारो ॥

२६ जोतां सती तणां गुण गाया, परम हरष आनंद पाया।
सुध जयजश करण सुहाया ॥

२७ उगणीसै आठे जेठ उदारो, सुदि बारस नें रविवारो।
जोडी सैहर बोरावड मझारो ॥

---
१. इन्द्रियों के विकार।

साध्वी बींजाजी

(ख्यात सं० ५२)

ढाल

दोहा

१ तिणकाले नें तिण समै, दुषम आरा मांय ।
स्वामी भीखू रा साध साध्वी, त्यां कीधा संलेखणा ताय ।।

२ पाली सैहर सुहामणो, तिण में लीधो संजम भार ।
स्वाम भीखू रै आगले सती, वीजांजी तिणवार ।।

३ किण विध करै सलेखणा, किण विध करै संथार ।
सावधान थइ सांभलो, आलस अंग निवार ।।

४ *चौमासो कियो चूंप स्यूं, जैपुर सैहर मझारो ।
कांइ एक असाता उठी खरी, आया कृष्णगढ तिणवारो ।।

५ तीन दिवस रह्या तिहा, कोधो तिहा थी विहारो ।
अजमेर रह्या दिन पांच ही, मन मे हर्ष अपारो ।।

६ विचरत-विचरत आविया, कालू बलूदे होयो ।
पोस विद छठ रे दिन, वार बुध सोयो ।।

७ कांइ एक असाता 'फेरां'[1] तणी, तपस्या स्यू मन अपारो ।
आरज्यां बरजै तिण अवसरे, ऊतावल मत करो लिगारो ।।

८ 'बलता'[2] वीजाजी वोलिया, ए अवसर श्रीकारो ।
तपस्या करूं घणा हर्ष स्यू, कर देऊं खेवो पारो ।।

९ आरज्या सात परिवार स्यू, रह्या लोटोती मजारो ।
च्यार आरज्या नैं मोकली, दर्शण करण तिणवारो ।।

१० पूज जी स्यू कीधी वीनती, पधारया तिण वारो ।
दर्शण दिया तिहां वहु, संता नो परिवारो ।।

---

*लय : सीता सती सुत जनमिया'' ''''।

१. दस्त ।   २. वापिस ।

११ बींजा जी मोटी सती, तपस्या भारी कीधी।
तेलो कियो नीकी परै, नीव मुक्त नी दीधी॥
२२ बत्तीस किया चूंप स्यूं, दस किया श्रीकारो।
सात किया मन उचरंग स्यूं, छ किया तीन वारो॥
१३ पाच किया बेलो कियो, बले बीजी वारो।
बेलो चोलो वले किया, तेलो कीधो लारो॥
१४ चोलो करी पनरै किया, वली बेलो कियो तंत सारो॥
तीन दिवस रै आसरै, आयो संथारो॥
१५ तीन आहार संथारो पचखियो, तीन पोहर चौविहारो।
जाणज्यो चौथी पोहर, लेता पांणी तिवारो॥
१६ आलोवणा कीधी तिहां, मन में हर्ष अपारो।
साध साधवी खमाविया, न राख्यो सल लिगारो॥
१७ समत अठारै सीत्यासीए, मास बैसाख सुजाणो।
शुक्ल पख छठ रे दिने, संथारो सीझ्यो जाणो॥
१८ हस्तूजी चनणांजी जसूजी सती, वले मगदूजी लारो।
दोलाजी दिल ऊजले, कीधी सेवा तिबारो॥
१९ समत अठारै नेउ समें, मास बैसाखे सारो।
जोडी आमेट सैहर में, हुंतो सनीसर वारो॥

साध्वी आसूजी

(ख्यात सं० ५७।२-१)

ढाल

दोहा

१ आसूजी उत्तम आरज्यां, पीउ छांड व्रत पाल
सतियां मांहै सिरोमणी, गुणिए नित गुणमाल ।।

*धिन-धिन धिन आसूजी मोटी सती ।।ध्रुपदं।।

२ समत अठारै इकसठे, संजम लीधो हो एतो शहर पीपाड।
हस्तुजी वडा रै हाथे करी, वीस वर्षनी हो आसरै वाय धार ।।

३ घरसासरिया में ऋद्ध संपत घणी, पियर में पिण धन वहुत बखांण ।
भरतार छोडी पूज भेटिया, सुखदाई सुवनीत सुजांण ।।

४ पूज भारीमाल पाट बेठा पछै, प्रथम सिषणी आसूजी पुनवान ।
सूत्र सिद्धांत सीखे सुविनयकरी, खम्यावंती लजवंती गुणखाण ।।

५ भण गुण प्रवीण पंडित थई, वखांण वाणी कला अधिक विचार।
सती घणा नै दीयो साधूपणो, गांमा नगरा करती उग्र विहार ।।

६ सती घणा जीवां नैं समझाय नै, अदराया श्रावक व्रत उदार ।
केइकां नै सुलभ वोधी किया, स्याणी सुगणी गण में सुखकार ।।

७ आचार्य गुरु नी आगन्या, पालै रूडी चालै मुरजी प्रमाण ।
प्रतीत घणी पेठ तेह री, जसवंती एहवी आसूजी सयाण।।

८ अवनीत हुवै अलखावणा, निमल आग्या पालणी आवै नायं।
इहभव परभव में अति दुख सहै, सूत्र मांहें भाख्यो श्री जिनराय ।

९ सुवनीत आसूजी मोटो सती, संत सत्यां नैं लागे अमीय समान ।
गण में जस सोभा अति घणी, गुरु आग्या पालै न करै गुमान ।।

लय : भव जीवा तुम्हे जिनधर्म ओलखो ·····।

१० वांरू सिद्धांत घणां सती वांचिया, च्यार तीर्थ में ज्यांरी अति घणी चाह।
वर्ष घणां लग विचरिया, जश जग में जन कहै वाह वाह ॥
११ चौथ छठादिक चूंप स्यूं, वारै तांई सती किया उपवास।
सीतकाले सह्यो सी आकरो, रूडा चित्त स्यूं तोडी कर्मां री रास।
१२ संजम पाल्यो वारै वर्ष आसरै, पछै अणसण करायो उछाह।
बचन पाछो नही वागरयो, लाहवे लीधो सती जन्म नो लाह॥
१३ चढते परिणाम घर छोडियो, परभव में पहुंचा चढते परिणाम।
धन धन जन धन धन करै, गुणीजन गावै सुवनीतां रा गुणग्राम।
१४ समत अठारै नीनाणूंवे, फागुण सुदी पूनम धर कोड ॥
गुण गाया आसूजी सती तंणा, वोरावड में वगीची में करी जोड।

साध्वी हस्तूजी (छोटा)

(ख्यात सं० ५६।२-३)

ढाल

दोहा

१ छोटा हस्तूजी हद छटा, पीहर सासरो पीपार।
वासठें संजम आदरचो, नित्य जपियै नर नार ॥

*धिन-धिन हस्तूजी मोटी सती ॥ध्रुपदं॥

२ हस्तूजी घणा हरष सूं, होजी संजम पालै सार।
सुखदाई सहु गण भणी, कांइ आछी प्रकृति उदार ॥

३ चौथ छठादिक चूंप सू, नव तांई निकलंक।
सीत उश्न तप अति सही, मेटचो आतम बंक ॥

४ अंतकाले सती उमंग सूं, लेश्वणा चित थाप।
कायर सुण कंपै हीयो, काटचा पूरव पाप ॥

५ एक वर्स रै आसरै, संलेखणा करी सोय।
वांणू बेला आसरै, चौविहार अवलोय ॥

६ तेला च्यार तीखे मन, आसरै पचीस उपवास।
पारणा में विगै परहरी, हिवडे अधिक हुलास ॥

७ खखर भूत काया करी, धिन धिन सती नां वैराग।
पछै संथारे पचखियो, तीनूं आहार दिया त्याग ॥

८ दोय दिवस नो दीपतो, अणसण अधिक उदार।
सुध परिणामें म्हा सती, कीयो खेवो पार ॥

९ कांठे कोर कंटालियो, जनम्या भिक्षू जांण।
सती हस्तूजीकार्य सुधारिया, छन्नुवे वर्स पिछांण ॥

१० संमत अठारै नीनांणुए, चेत्र विद तीज तिथ जांण।
गुणगाया छोटा हरस्तूजीतणा, सबलपुर सैहर सुजाण ॥

---

*लय : मुज मन मान्यो हो अभय..... .....।

साध्वी दोलांजी (वडा)

(ख्यात संख्या १३।२-७)

ढाल

दोहा

१ सती दोलांजी सोभती, पीहर श्रीजीदुवार।
कांकरोली में सासरो, तलेसरा कुल धार॥

*चतुर नर, गुण सतियां ना गाय॥ ध्रुपदं॥

२ सतजोगी स्वामी तणी जी, सगी भतीजी सुखदाय।
दोलांजी दिल ऊजलै जी, चारित्र लियो ओछाय॥

३ सुवनीत घणी सतगुर तणी, सुंदर प्रकृति सुहाय।
गण मांहे महिमा घणी, निरमल वचन नरमाय॥

४ भारीमाल गुर भेटिया, मणिधारी मुनिराय।
चौथ छठादिक चूंप सूं, तप करनै तन ताय॥

५ वरस घणे लगे विचरिया, सतसठे आसरै सुमन्न।
परलोके पोहती सत्ती, दोलां दिवाली दिन्न॥

६ समत अठारै नीनाणवे, सील सातम सुखकार।
गुण गाया दोलांजी सती तणा, बोरावड सैहर मझार॥

*लय : तिसला नन्दन वीर·····।

साध्वी चंदणांजी[1]

(ख्यात स० ६४।२-८)

ढाल

दोहा

१ चंदणा जो मोटी सती, सतियां नै सुखकार।
जन्म सुधारे जश लियो, जपतां जै जै कार।।

२ पियर वाजोली मझै, कुल वाफणा कहिवाय।
पिता जगरूप पिछांणियै, चंदणा सुता सुहाय।।

३ सासरिया खाटू मझै, वरमेचा कुल माय।
पिउ विजोग वालपणे, वाल ब्रह्मचारी ताय।।

४ भारीमाल गुर भेटिया, पांम्यो परम संवेग।।
चारित्र लेवा चित थयो, धारण तप नी 'तेग'[2]।।

५ भीखूं नी शिषणी भणी, वरजू विजां वजीर।
हीरां हीरकणी जिसी, वगतू अजवू धीर।।

*कार्य सुधारया हो चंदणा महासती रे।। ध्रुपदं।।

६ हीरांजी हस्तु कस्तु भणी रे, दीधो संजम भार।
लखेशरी लोकिक मांहै कहै रे, छोड पुत्र पिउ सार।।

७ हस्तु कस्तु दोनूं वैनडी, कियो घणो उपगार।
आसूजी नैं संजम आपियो, इण पिण छांडयो पिउधन सार।।

८ आसूजी उपगार आछो कियो, चंदणांजी नैं चारित्र दीध।
चत्रूजी साहसीक मोटी सती, दीपांजी जश लीध।।

९ सतरै वरस जाझेरी वय थयां, धारयो संजम ध्यान।
भारीमाल भणाई भाव सूं, चंदणा चंदण समान।।

१० आगम अर्थ अनोपम ओलख्या, भीणी चरचा जांण।
ग्रंथ हजारां मूंहढै सीखिया, वारु अमृत वांण।।

---

1. देखिग परिशिष्ट २, सं० ५

2. तलवार।

*लय : साधुजी नगरी आया......।

११ सूत्र सिद्धंत घणा सती वाचिया, वखांण नी छिव ऐन।
भिन्न-भिन्न भेद सुणी भवि जीवडा, चित में पामै चैन॥

१२ सीलतणों घर भल मोटी सती, निर्मल नीका नैंण।
याद आयां तन मन हीयो हुल्लसै, धिन-धिन सतीरा वैंण॥

१३ सुंदर मुद्रा सती नी सोभती, रूप अनूंप सुरंग।
मन वैराग पांमै देख्यां थकां, वाधै अति उचरंग॥

१४ विनीत घणी गुर आग्या पालवा, सतगुर सूं वहु प्रीत।
धोरी जिण मार्ग जमायवा, संजम पालण नीत॥

१५ उपवास बेला तेलादिक वहु किया, पांच आठ अधिकार।
वहु क्रोध मांन माया सती परहर्या, गण में घणी सुखकार॥

१६ तीस वर्स उपगार कियो घणो, इगतीसमा वर्स माहि।
विचरत-विचरत सरियारी आविया, पूज रा दर्शण री चाहि॥

१७ पूज परम गुर ना दर्शण करी, पाम्यो वहु संतोष।
ठांणा पचावन आसरै आविया, पूज वचन सुख पोप॥

१८ पूज महाराज सती नै दर्शण दिया, एक मास आसरै जांण।
विहार कियो सती नैं संतोप नैं, पूज वच अमी समांण॥

१९ सती चंदणाजी चौमासो त्यां कियो, कांयक कारण जांण।
मृगसर मास पूज पधारिया, दर्शण दीधा आंण॥

२० पूज नो दर्शण कर हरख्या घणा, दिन सात दर्शण कर ताहि।
सतियां संघाते कंटालीये आविया, मृगसर मास रै मांहि॥

२१ शरीर मांहै कांयक साता हूई, आयो आउखो 'अचीत'[1]।
सास तणो कारण तन ऊपनो, तोही गुरु दर्शण सूं प्रीत॥

२२ पूज तणा दर्शण कीधां विनां, किया तीनूं आहार ना त्याग।
पयवर में कासीद पठावियो, भाया धरी अनुराग॥

२३ आसरै पौहर च्यार अभिग्रह मझै, पछै कियो पको संथार।
तीनूं आहार जावजीव त्यागिया, धिन-धिन सती अवतार॥

२४ आसरै च्यार पौहर रो आवियो, संथारो श्रीकार।
जन्म सुधार्यो महासती आपरो, धिन-धिन करै नरनार॥

---

१. अचानक।

२५ पूज तणा दर्शन करिवा तणी, अतरंग थी वहु चाहि ।
हिवै दर्शण करता दीसै महाराज नो, क्षेत्र विदेह रै मांहि ॥

२६ हस्तूजी जीऊजी आदि, सतिया दीयो वहु साज ।
पोह विद नवमी अठारै सै छन्नूए, सती चंदणां सारचा आतम काज ॥

२७ पचीस खंडी मांहडी श्रावकां करी, मोहछव वहुत विध ताहि ।
सावद्य कार्य ससार ना, साधूनै अनुमोदणा नाहि ॥

२८ संमत अठारै सै वर्ष छन्नूए, वैसाख विद गुरुवार ।
सती चंदणाजी रा गुणगाविया, पाली सैहर मझार ॥

साध्वी चतूजी (बडा)

(ख्यात सं० ६५।२-६)

ढाल

*स्वाम तणा सासण मझै रे, सतियां सुखदाई।
सतिय चतुजी सोभती, प्रभुता हद पाई।
सतिय चतूजी वर कीरत पाई ।। ध्रुपदं ।।

१ संमत अठारै छासठे, आसूजी सती पास।
वड चतूजी संजम लियो, आणी अधिक हुलास ।।

२ अधिक भक्त भारीमाल री, हीरांजी हद कीधी।
तास पास रहै महासती, सैणी सुगुणी प्रसीधी ।।

३ सुमति गुप्ति सुखदायनी, आछी आण अराधै।
वारू वखांण जमावती, सिव पंथज साधै ।।

४ सूत्र तीस वाच्या सती, अवसर नी जांण।
संग परिचय सती परहरै, गुण मोटो पिछांण ।।

५ चौथ छठादिक वहु किया, सोलै किया तीन वार।
दस पचखांण किया वले, वरसो वरस विचार ।।

६ तीन पछेवडी परहरी, सीतकाल मझार।
तीस वर्सं रै आसरै, आंणी हरष अपार ।।

७ पंच विगै नैं परहरी, वहु वर्स सुजन्न।
विगै कडाई आचरी, मास में पंच दिन्न ।।

८ हिमतवांन सती हुंती, गुर आण अखंडै।
पिडत मरण 'आरै'[1], तो पिण गण न विछडै ।।

९ संजम वहु सतियां भणी, सुध रीत समाप्यो।
कठन वचन गुर सीख थी, थिर चित नैं थाप्यो ।।

१० वर्स वहु इम विचरिया, छेहडे कियो संथार।
चौविहार चित ऊजले, निज मुख सुविचार ।।

---

१. स्वीकार।

*लय—अमरचन्द मुनिवर कहै रे गणपति……

११ दोय मोहरत रे आसरै, अणसण हृद आयो।
राजनगर रूडी रीत सू, वारू सुजश वधायो॥
१२ उगणीसै चवदे समै, पोह सुदि चौथ पिछांण।
परभव मै सतां पांगरी, कीधो जन्म किल्याण॥
१३ वड चत्रू ना गुण गाविया, चवदे उगणीसै।
चैत कृष्ण तिथ अष्टमी, जयगणी संपति जगीसै॥
१४ संत गुण तीस सुहांमणा, वारू हरष विलास।
एकसौ पाच सु अज्जिका, लाडणू सुखवास॥

साध्वी जसूजी

(ख्यात सं० ६६।२-१०)

ढाल

दोहा

१ पीपाड जोधपुर नै विचै, वीसलपुर वसिवांन।
जसूजी जग जश लियो, सरल भद्रीक सुजांण॥

*धिन-धिन जसूजी मोटी सती जी ॥ध्रुपदं॥

२ समत अठारै अडसठेजी, संजम लियो सुखदाय।
समदम प्रकृति कोमल सतीजी, निरमल हीये नरमाय॥

३ सुवनीत घणी सतगुर तणी, सोभा गण मांहि सवाय।
विनयवंती नें खिम्यावंती, हरष घणो हीया मांय॥

४ समणी मुद्रा कर सोभती, सील सिरोमणि सुहाय।
संत सत्यां नैं सुहामणी, तप कर नै तन ताय॥

५ चौथ छठादिक चित धरी, वोहला किया उपवास।
मास खमण च्यार आसरै, हद तप कियो हुलास॥

६ सीतकाले वहु सी सह्यो, सुमत गुप्त मे सचेत।
प्रकृति भद्र पेखतां, हिवडा में उपजै हेत॥

७ संजम पाली महा सती, वीस वर्स उनमांन।
अंतकाले अणसण कियो, ध्यायो निरमल ध्यान॥

८ आयो अणसण दोय दिन आसरै, अठ्यासीये वरस अठार।
परभव माहे 'पागरी'[1], लाडणूं सैहर मझार॥

९ संमत अठारै नीनांणूए, विद चेत छठ मंगलवार।
गुण गाया जसूजी तणां, संवलपुर गांम मझार॥

---

१. पहुंची।

*लय—साधजी भलाई पधारिया जी

साध्वी चत्रूजी (छोटा)

(ख्यात सं० ७०।२-१४)

ढाल

*नित्य जाप जपै चत्रुजी को ।।ध्रुपदं।।

१ सुमत. गुप्त सैणी सुगणी, भल तंत चत्रु वखाण भणी ।
निमल चरण पाल्यो नीको ।।

२ प्रकृति भद्रीक सुजांण पणे, गुरदेव सासण सू हरष घणे।
तत सती नो ब्रह्म तीखो ।।

३ सरस संवेग अधिक समता, रूडी जिन सासण माहि रंगरता ।
दीन विमन नही मन नीको ।।

४ परम सुगर सू प्रीत घणी, चित माहै हूंस अति सेव तणी ।
संग छाड हियो कियो चंद सरीखो ।।

५ पुदगल नी वहु प्यास नहीं, रित संजम मे लहलीन रही ।
तसु कीरत जिन तहतीको ।।

६ गांम तोसीणा रा वासी, वारु वैराग सू व्रत अभिलासी ।
पीउ छाड चरण धारयो नीको ।।

७ तप जप तो अधिको कीधो, सती लाहो मनुष भव नो लीधो ।
कुसंग परिचय नही किण ही को ।।

८ अधिक विषय हुवै आतमा में, तसु हास कुसगत अधिक गमे ।
एहवो छोड दियो अवगुण पीको ।।

९ मेवाड मुरधर माय मतिवंती, थली हाडोती ढूढाड में विहरंती ।
वहुजन प्रतिबोध्या रमणी को ।।

१० भारीमाल ऋषराय तणी, वलि जयगणपति नी सेव घणी ।
हिमत वल हीया में अधीको ।।

---

*लय : पायो मनुष जमारो मति हारो.... ।

११ मर्याद सुणी अति हरषंती, आतो सतिय सिरोमण लजवंती।
गुण संजम जात्रा जप नीको ॥

१२ तन कारण पिण विहरंता, गुरु दर्शण कर चित हरषंता।
करी वहु दिन हरष अधीको ॥

१३ सीख दीधां पिण विहार करै नांहि, अति हरष दर्शण रो हिया माहि।
ए गुण विरला जन गुणी को ॥

१४ कायर जे दिन अल्प रही, सीख मांगी विहार करै उमही।
एहवो कायर पणो नही ए सती को ॥

१५ वीलाडे पींपाड नें लोटवती, वलूदे आणंदपुर दर्श करती।
तन कारण तो पिण साहसीको ॥

१६ गणपति जय चित समभावै, आलोचण करावी व्रत उचरावै।
छैहडे वास कियो तन मन सधी को॥

१७ संमत उगणीसै तेरै वूजी, वैशाख सुक्ल पूनम दूजी।
पहुंता परलोग सुजश टीको ॥

१८ सिणगारांजी आदि सत्यां सखरी, अति साज दियो हद सेव करी।
तन मन सू पिण 'ना अलीको'[1]।

१९ उगणीसै तेरे जेठ मासो, विद आठम सतिय सुगुण रासो।
जयजश हरष सुजस टीको ॥

१. मिथ्या (कृत्रिम) नही।

साध्वी रंभाजी

(ख्यात स० ७२।२-१६)

ढाल

दोहा

१ रंभाजी रलियामणी, पीयर पुर आणंद।
कासलीवाल मोती-सुता, श्रावगी कुल सोहंद ॥

२ सासरिया पीसांगणे, खीवराजजी गंगवाल।
सुतन बहू पति नो विरह, पाम्यो धर्म रसाल ॥

३ वर्स चौवीस रै आसरै, भारीमाल रै हाथ।
समत अठारै अडसठे, धर्यो चरण वर आथ ॥

४ वरजू झमकू नै गणी, सूपी सुगुरु सयाण।
सेव करै साचै मने, रंभा गुणनी खाण ॥

*प्रकृति भद्र प्रज्ञा भली जी काइ, मरणी गण सुखकार ॥ ध्रुपद॥

५ सुमति गुप्त व्रत साचवैजी काइ, सतगुरु नी सुवनीत।
विनय विवेक विचार में काइ, रंभा जी रूडी रीत ॥

६ सीयाले बहु वर्सां लगै, तीन पछेवडी त्याग।
सील सिरोमण झूलती, तज परिचय नो दाग ॥

७ संवत अठारै वयासीये, सती झमकू पहुंती परलोग।
ऋषराय सिंघाडो रंभा तणो, कीधो जांणी जोग ॥

८ वास बेला तेला वहु, चोला अधिक उदार।
पांच पांच ना थोकडा, आसरै पनरै वार ॥

९ षट सत कीधा खंत सू, आठ किया वहु वार।
नव दश दिन निर्मलो, वहु वार किया इग्यार ॥

---

*लय : वीरमती तरू अब नै जी कांई……।

१० द्वादश तेरै तप धुरा, चवदै पनरै चित चंग।
गांमा नगरां विचरता, सुगरु आंण रस रंग॥

११ एकंतर श्रावण भाद्रवे, वरस पनरै उनमांन।
वारु वखांण सु बांचता, संवेग रस गलतान॥

१२ सासण सूं सन्मुख घणी, सती गुर भगता गुणजांन।
आंण अखंड आराधवा, वारु रंभा वखांण॥

१३ सक्ति घट्यां वृद्ध वयपणै, सती विचरी कांठा री कोर॥
अधिक नीत आचार नी, जबर वैराग सुजोड।

१४ चर्म चौमासो कंटालिये, विचरत विचरत जोय।
वाह्लां गांम खेरवा कन्है, आया जेठ चौथ विद सोय॥

१५ करता अधिक ऊणोदरी, कारण अधिको जांण।
जेठ सुदि एकम दिने, अति वैराग सु आण॥

१६ रह्यो पौहर सवादिन आसरै, मुख सूं सरणा लेवंत।
उचरत जीभ थाकी तदा, चित धर्म ध्यान ध्यावंत॥

१७ पछै आर्जियां जल पायवा, लागी बे तीन वार।
तो विण जल पीधो नही, मुख आडै कर दै तिणवार॥

१८ निशि सवा पौहर रै आसरै, पाछली रात रही तिवार।
परभव माहे पांगरचा, पंडित मरण उदार॥

१९ चंपा उमेदां लिछमा अज्जा, सेव करी सुखदाय।
रंभा जन्म सुधारियो, उगणीसै पनरै ताय॥

२० तेरै खंडी मंढी करी, महोछब विविध प्रकार।
धर्म नही छै तेह में, श्रीजिन आज्ञा वार।

२१ वर्स सैतालीस आसरै, पाल्यो चरण प्रधांन॥
जन्म सुधारी जशलियो, रंभा गुण नी खान॥

२२ उगणीसै सौलै समै, चैती पूनम चंग।
सती रंभा तणा गुण गाविया, जयजश संपति गंग॥

साध्वी कल्लूजी[1]

(ख्यात सं० ७४।२-१८)

ढाल १

दोहा

१ जग तारण जयवंत जिन, महिमागर महावीर।
केवलनांण दिवाकरू, धर्म धुरंधर धीर।।

२ सतावीस पट सुध कह्या, नंदी आदि निहाल।
वीर वचन विगटावियां, भागल भ्रष्ट 'भयाल'[2]।।

३ भीखणजी इण भरत में, जगत उधारण जिहाज।
महापुरुष परगटचा मुनि, सुगणां रे सिरताज।।

४ भारीमाल पट झलकता, रूडो ऋष रायचंद।
पुन्य सरोवर पोरसो, मेटण मिथ्या मंद।।

५ भारीमाल ऋषराय भल, विचरत देश विदेश।
जीव घणा समजाविया, दे सूधो उपदेश।।

६ दिन-दिन दीसै दीपता, समणी संत सवाय।
तपजय ग्यान सुध्यान तर, उदय-उदय अधिकाय।।

७ सतियां कारज सारिया, 'अत्रातर'[3] अधिकार।
कल्लूजी करडी करी, सांभलज्यो विस्तार।।

*धिन धिन कलूजी मोटी सती ।।ध्रुपदं।।

८ पूज वच सुण प्रतिवोधिया, जाण्यो संसार असार।
चारित्र लेवा सू चित थयोजी, तीन सुता नै करै त्यार।।

९ विविध उपदेश दे चरण नो, तीनू रा परिणाम चढाय।
आज्ञा दीधी उचरंग सू, इचरज बात अथाय।।

१० संजम साज सुतां भणी, लाभ भारी लीयो लार।
आप पिण चारित्र आदरचो, पछै तपकीयो विवधप्रकार।।

---

१. देखिये परिशिष्ट २, स० १३

२. भयानक।

३. यहा।

*लय : वीर बखाणी ....।

११ पांच आठ पनरै सतरै किया, बीस पचीस विचार ।
मास खमण पांच शुभ मनै, अल्प पांणी रै आधार ॥

१२ उपवास बेलादिक बहु किया, महिमा गण मांय ।
वरस सोलै इम विचरिया, साधवियां नै घणी सुखदाय ॥

१३ पांचूं इंद्री सुध 'परवडी'[1], आंख्यां री जोत उदार ।
कारण कांयक 'खासने'[2], चित में कियो तास विचार ॥

१४ सिरै सुभ करणी संलेखणा, स्वाम आज्ञा लेउं सार ।
पहिला तोलूं परिणाम नै, वात काढूं मुखबार ॥

१५ इम चितव करे उणोदरी, परख्या निज थिर परिणाम ।
तन वस जांण हरखी तदा, आयो वैराग 'अमांम'[3] ॥

१६ पद प्रणमी कहै पूजनै, गुरुजी होवै जो महाराज ।
तपसा करी तन तायनै, करणो आतम तणो काज ॥

१७ स्वाम कहै छती सक्ति में, इतनी उतावल कांय ।
विहार करे सुखे विचारियै, जन पद देश रै गाव ॥

१८ सती कहै छै सूरा पणै, तप नी मुज 'हूंस'[4] तन मांय ।
तीखा परिणांम तिण कारणे, मैहर कीजै मुनिराय ॥

१९ वरजै बहु साध ने साधव्या, श्रावक श्राविका सोय ।
इतरी उत्तावल काय करो, पिण सूरपणो मन होय ॥

२० परवर आज्ञा लीधी पूज री, विनय करी वारम्वार ।
इम मास अधिक उणोदरी, बहु कष्ट सह्यो तिणवार ॥

२१ केइक दिन एकांतर किया, अल्प सो पारणे आहार ।
केइक उपवास छूटा किया, आहार नित उदार ॥

२२ आहार संखेप करी इण विधे, अन्न तणी रुचि नै उतार ।
तेले तेले मांड्यो पारणो, आठ बेला बिचै उदार ॥

२३ तेले तेले पारणे तप मझै, अल्प सो पारणे आहार ।
वात सुणियां इचरज हुवै, घणा तेला किया चौविहार ॥

२४ धिन धिन सती रा वैराग नैं, धिन धिन सती रो सुभ ध्यानं ।
धिन धिन सती रा परिणाम नैं, मन कियो मेर समांन ॥

---

१. दुरुस्त ।
२. खासी ।
३. निर्ममत्व ।
४. प्रबल इच्छा ।

२५ धिन धिन सती रा गुरां भणी, तप नो दे साज तहतीक।
धिन धिन सती रो सूरापणो, धिन सती साहसीक ॥
२६ पूज रायचंद प्रताप थी, कलूजी सारया निज काज।
तप तणो साज तीखो दियो, महिमागर पूज महाराज ॥
२७ कलूजी तप करलो कियो, तेले तेले तप श्रीकार।
तेला पचास रै आसरै, खंखर काय तिणवार ॥

ढाल २

दोहा

१ चौमासा में चूप सूं, कीधो तप करूर।
आगलि तप वलि आकरो, पोरस आंणी पूर ॥
२ सती परिणाम सैठां घणा, सती भाग सुविहांण।
पूज महाराय पधारिया, दर्शण दीधां आण ॥
३ तीनू सुत आव्या तिस्यै, संत सत्या रा थाट।
ठाणां तयालीस आसरै, खेरवे सेहर गहघाट ॥
४ पाली जैपुर ना परवरया, श्रावक श्राविका सोय।
मृगसर ज्यूं मेलो मंडयो, हरप घणो मन होय ॥
५ पूज दर्शण दे दिन प्रते, सीख दियै सुखकार।
सती भणी संतोप नै, विहार कियो तिणवार॥
६ किण विध वलि तपसा करै, किण विध करै किल्याण।
कार्य सुधारै किण विधे, सुणजो चतुर सुजांण ॥

*धिन-धिन-धिन कलूजी मोटी सती ॥ध्रुपदं॥

७ पोप व्रिद पख में तप परवरो, मन माहे हो आयो अधिक वैराग।
सती तपसा करै साहसीक सू, आहार करण सू मन गयो भाग॥
८ प्रथम तो पांच दिन पचखिया, पाचा माहै दश दिन पचखांण।
दश दिन पनरै किया दीपता, पनरां मांहि एक मास पिछांण॥
९ अध सेर पांणी रै आसरै, चित चोखे हो किया सात।
चौविहार सूर पणै सम भाव सू, अधिको आणी मन मे हरख अपार॥
१० सूर चढै संगराम में, फिर पाछो नही जोवै लिगार।
सती तप संग्राम सूरी घणी, धिन-धिन हो धिन सती अवतार॥

---

*लय : मूला खवाया मिश्र कह्यो.......।

११ इतनी तपसा में आछ लीधी, एती तपसा कीधी पांणी आधार।
चढते परिणांम चित निरमलो, तपस्या ऊपर दिन-दिन बहु प्यार॥
१२ वलि इग्यारै किया उचरंग सू, एक अठाई एक तेलो तास।
अल्प आछ आगारे जाणियै, तप कर नैं तोडी करमां री रास॥
१३ तीन मास एकातर आसरै, इत्यादिक तप विचित्र प्रकार।
घणा दिन करी अधिक ऊंणोदरी, धिन-धिन सती नो अवतार॥
१४ धिन-धिन-धिन सती नो सूरापणो, धिन सती नो वैराग।
धिन-धिन-धिन सती रा परिणाम नै, तपसा ऊपर परिणाम अथाग॥
१५ पुन्य प्रवल पूज रायचंद ना, इधिको दीधो तपसा नो साज।
ओ तो भाग वली पूज प्रगट्यो, तास प्रतापे कलूजी सारै काज॥
१६ सती तप कर तन सूकावियो, खंखर काया तप कर दीधी गाल।
देह ऊपर दीसै दुवली, भीतर दीपै 'तप लिखमी'[1] विसाल॥
१७ सांवण सुदि तेरस दिन पाछिले, उठी असाता मुख वोल्यो न वि जाय।
सतिया सागारी अणसण उचरावियो, पोहर आसरै वीतो तिण वाय॥
१८ संमत अठारै सत्यासीये, श्रावण सुदि तेरस तिथ सार।
सैहर खेरवे 'खात'[2] सू, सती कलूजी कीधो आतम उधार॥
१९ जिण रीते संजम लीयो चूप सू, जैसा मिलिया गुर पूज दयाल।
जैसो हि जिनमार्ग दीपावियो, वारूं करणी कीधी उत्तम विसाल॥
२० सती जिण विध मंडी संलेखणा, तिणहीज रीते उतारी पार।
साढा सतरै वरस रै आसरै, चारित्र पाल्यो तप विचित्र प्रकार॥
२१ संमत अठारै अठयासीये, चैत विद दशमी सोमवार।
गुण गाया कलूजी सती तणा, जमालपुर छै हरियाणा देश मझार॥

ढाल ३

दोहा

१ धिन-धिन-धिन कल्लू सती, करणी कीधी सार।
जाप जपो भवियण सदा, पांमो भव नो पार॥

*कर जोड वांदू कलूजी मोटी सती॥ ध्रुपदं॥

२ सती कलूजी हो थया संजम नै त्यार, तीन पुत्र नै आग्या दीधी दीपती जी।
पोते लीधो हो संजम श्रीकार॥

१. तप रूप लक्ष्मी। २. उमग।

*लय—तीर्थङ्कर हो चोथा जग भाण.........।

३ घणी गमती सती साधविया में जांण, जुगती तपस्या सू इंद्री जीपती।
पांच अठाई पनरै सतरै पिछांण ॥

४ वली सती कीधी वीस पचीस वदीत, जू जूआ पांच मास तन तावती।
उदक आधारे छाछ आछ रहीत ॥

५ वेला तेला हो कीधा वहुलां ताम, के दिन एकांतर कर 'रित'[1] पामती।
ऊणोदरी करता तन ताह्यो तांम ॥

६ तेले तेले पारणो तंत सार, पारणे अल्प आहार सुमता वली।
पचास तेला आसरै श्रीकार ॥

७ मास खमण कीधो मन जोर, आठ ईग्यारै किया महिमावती।
दुर्वल काया वाहिर दीसै घोर ॥

८ आउ अंचीत्यो जीभ थाकी तिण ठाय, सतियां सागारी अणसण उचरावती।
पौहर आसरै वीतो तिण माहि ॥

९ वारू करणी कीधी उत्तम विसाल, धिन-धिन-धिन कहै सुर नर जती।
जन्म सुधारचो छांडी माया जाल ॥

१० संजम पायो हूं पिण सती नै प्रशाद, ए उपगार सती नो भूलूं नथी।
सति सिरोमणि कलूजी साख्यात ॥

११ संलेखणा नी सती काढी मुख वात, कष्ट पडचो पिण वयण चूकी नथी।
सती शिरोमण कलूजी साख्यात ॥

१२ सील सिरोमण समता सागर ताय, संत सत्या नै घणी सुहावती।
सैणी सुगुणी गण में सुखदाय ॥

१३ गुण घणा सती कलूजी माहि, मोसू पूरा गुण कह्या जाय नथी।
याद आया हिवडो हुलसाय ॥

१४ संवत अठारै वर्स एकाणूए तास, काती सुदि वारस गुण गाया हरप थी ॥
सैहर फलवधी षट साधा चौमास ॥

ढाल ४

*कलूजी नी उत्तम करणी।
जनम सुधारे जग जश लीधो, तपसा कर तरणी ॥ध्रुपद ॥

१ अम्मा तीन सहोदर नी, धर्म चारित्र हीये धरणी।
वारु विविध प्रकारे कीधी, तपसा अघहरणी ॥

---

१. आनद।

*लय : करी ज्यां कु मी नहीं......।

२ षट मास तप किया जू जूआ, उदक आधार भणी।
वीस पचीस सतरा पनरादिक, आछ न आदरणी ॥
३ अठम-अठम किया निरंतर, अल्प आहार धरणी।
दिढ परिणाम सती ना दिन दिन, धिन-धिन जन वरणी ॥
४ संजम साज दीयो मुझ नैं, वच दृढ निपुण नमणी।
याद आयां तन मन हुलसावै, खिम्या खेल खमणी ॥
५ संमत अठारै वर्स अठाणूए, जग जश उच्चरणी।
सुख संपत दायक गुण रटियां, भ्रम भय दुख हरणी ॥

ढाल ५

१ *सती कलूजी सोभती, मास खमण बहु वार।
अठम अठम आदरचा, धीरपणो दिल धार ॥
२ सरूप भीम ऋष जीतनी, माता महिमावांन।
संजम साझ सुतां भणी, दीधो अधिक प्रधान ॥
३ गुणंतरे चारित्र ग्रह्यो, सत्यासीये सुविचार।
परभव मांहै पांगरचा, पांम्या भव नो पार ॥
४ सिणगारां मोटी सती, हरखूजी री माय।
चारित्र लेइनै चूप सू, मास चालीस तप ठाय ॥
५ सुखदाई सुगुणी सती, दोनू महा दीपाय।
गण वच्छल गैहरा पणो, कह्यो कठा लग जाय ॥
६ पूरण थांरी आसता, म्हारा मन मांय।
गुण सतियां रा गावता, आनंद अंग न मांय ॥
७ सील सुधारस महासती, परम आप सू प्रीत।
आराधक पद पावियो, निर्मल थांरी नीत ॥

ढाल ६

†धिन-धिन कलू महासती ॥ध्रुपदं॥
१ कलूजी हद करणी करी, सुत तीनू सहीत।
चारित्र धारचो चूप सूं, पाली पूरण प्रीत ॥

*लय : प्रभवो मन में चिन्तवै ....।

†धिन-धिन सिणगारां ए ... ।

२ पंच आठ पनरै सतरै, वीस पचीस विचार।
पंच २ मास खमण छ जू जूआ, अल्प उदक आगार ।।
३ अठम २ आदरचा, निरंतर एक धार।
अठम इक फलका रै आसरै, पारणें लियो आहार ।।
४ गुणतंरे संजम लियो, सत्यासीए परलोग।
भजन करो नर नारियां, मिट जाए दुख सोग ।।
५ गंगा गुणवंती सती, टीला ऋषि नी 'वैन'[1]।
मास खमण तप वहु किया, समरण चित चैन ।।
६ सरल भद्रीक सुहांमणी, कियो हठ सूं संथार।
निरमल चित नीकी सती, कियो खेवोजी पार ।।
७ संवत उगणीसै तीए, पोह सुदि सातम सार।
सतियां तणा गुण गाइया, हुओ हरख अपार ।।

ढाल ७

*धिन-धिन कलूजी सती ।।ध्रुपदं।।

१ कलूजी मोटी सती, धारचो हे सती चरण निधान कै।
अठारैसै गुणंतरे व्रत ग्रह्या, सत्यासीये पाया पद सुप्रधांन कै ।।
२ सरूप भीम ऋष जीत नै, साहज संजम नो दियो भरपूर।
पोते पिण चरण लेई करी, कर्म काटण नैं हुइ महासूर ।।
३ पांच आठ पनरै किया, सतरै दिन वली वीस पचीस।
मास खमण षट जू जूआ, अंत संलेषणा विगट जगीस ।।
४ उंणोदरी अधिकी करी, अठम अठम आसरै पचास।
एक फलका रै आसरै, पारणे वहुल पणे सुविमास ।।
५ चौथे आरे साभल्यो, एहवो तप नें उंणोदरी जाण।
पंचम आरे पेखियो, कल्लूजी नी तपसा सुविहांण ।।
६ मोसूं उपगार कियो घणो, संजम साहज दियो हद रीत।
तिण कारण गुण संमरु, हरख धरी नै कहै इम जीत ।।
७ उगणीसै साते समै, वडा नराणा मे गाया गुण ग्राम।
माह सुदि आठम तिथ भली, हरख प्रमोद आणंद अभिरांम ।।

---

१. वहिन।

*लय : संभव साहिव समरियै·····।

ढाल ८

*सतियां महा सुखदाई ।।ध्रुपदं।।

१ कलू हद कीधी करणी, वारु कीर्ति जन वरणी।
अठम-अठम तप कीधो, लाहो मनुष जनम नो लीधो हो लाल ।।

२ संजम नो सहाज सुहायो, त्रिहुं सुत नैं दियो अधिकायो।
वर विनय भद्र लजवंती, सती शासण मांहै सोभंती ।।

३ मास खमण कियो षट वारो, तिण में अल्प उदक आगारो।
सती जिन शासण उजवाल्यो, बहु वर्स चरण हद पाल्यो।

४ याद आयां हरष अति आवै, सांप्रत तुझ वयण सुहावै ।।
प्रत्यक्ष ही म्है फल पायो, तुझ समरण महा सुखदायो।

५ उगणीसै आठे उदारो, विद असाढ बीज शनिवारो।
थांसू पूरण प्रीत सुजांण, सुख गुणदायक सुविहांण ।।

लय : सतीया नाम ज ·····।

साध्वी नगांजी

(ख्यात स० ७६।२-२०)

ढाल १

दोहा

१ निरमल नगांजी सती, संजम लीयो सार।
सरल भद्रीक सुहामणी, नाम जपो नर नार ॥
२ सासरिया कुचेरिया, वोरावड में जांण।
आसूजी संजम दियो, कीधो जन्म कल्यांण ॥
३ संमत अठारै गुणंतरे, असाढ मास मझार।
सुदि पंचम वागोट में, लीधो संजम भार ॥
४ किणविध तपसा आदरी, किणविधि कियो कल्यांण।
संखेपे कहुं वारता, सुणजोचतुरसुजाण ॥

*सती नगाजी समरियै रे ॥ ध्रुपदं ॥

५ भवियण रे ! सतरै चौमासा मझै रे, एकंतर चित धार हो लाल।
उत्तम तपसा आदरी रे, आणी हरष अपार हो लाल ॥
६ उपवास बेला वोहला किया, तेला चोला पंच।
छ सात आठ नव दश किया, सुखदाई सुभ संच ॥
७ दिवस इग्यारै दीपता, तेरे किया दोय वार।
वीस उदक आगार थी, सती सिरोमणि सार ॥
८ सतरै सीयाला मझै, दोय पछेवडी परिहार।
तेरै सीयाले मझै, एक पछेवडी आगार ॥
९ सरल भद्रीक हिया तणी, हस्तूजी रे पास।
वारु विनय विवेक मे, हिवडै अधिक हुलास ॥

*लय : हेम ऋषि भजियै ।

१० विचरत-विचरत आविया, सवलपुरे सुखदाय ।
कारण अधिको ऊपनो, सहै समभाव सुहाय ॥
११ दोलां मूलांजी सती, चित सुध सेवा कीध ।
दिल नी दुंगंछा मेट नै, जग मांहै जश लीध ॥
१२ कष्ट पड्यां कायम रहै, ते साचेला सूर ।
सहै वेदना समभाव सू, पौरस आंणी पूर ॥
१३ उज्वल वेदन 'आकरी'[1], कायर कंपै देख ।
धिन-धिन नगांजी सती, सहै निज संचित पेख ॥
१४ सूर चढै संग्राम में, पर दल दियै हटाय ।
तिम सती नों मन वैराग मे, नही वेदन री 'परवाय'[2] ॥
१५ वेदन अधिकी जांण नै, सत्यां करायो सागारी संथार ।
चित सुध पंच पदां भणी, कर जोड कियो अंगीकार ॥
१६ दोय पौहर रै आसरै, अणसण आयो सार ।
जन्म सुधार्‌यो आपरो, कर गया खेवो पार ॥
१७ संवत उगणीसै एके समै, श्रावण सुदि पुनम सार ।
परलोके पहुंती सती, वरत्या जै जै कार ॥
१८ मांढी कराई श्रावकां, महोछव विविध प्रकार ।
सखर सवलपुर मे हुओ, आणंद हरष अपार ॥
१९ इकतीस वर्स रै ऊपरै, पाल्यो संजम भार ।
नगां सती चित निरमली, सील गुणांरी भंडार ॥
२० संवत उगणीसै तीए समै, सुदि फागुण नवमी सार ।
गुण गाया नगांजी सती तणा, जैपुर सैहर मझार ॥

१. उग्र । २. परवाह ।

साध्वी दीपांजी

(ख्यात सं०१०१२-३४)

ढाल

दोहा

१ दीपांजी मोटी सती, भारीमाल रै वार।
संजम लीधो सुध मने, आणी हरप अपार।।
२ ऋषराय तणै वरतार में, अधिक कियो उपगार।
स्वाम तणी मुरजी सखर, सुजश वध्यो संसार।।
३ पिहरिया मांडोत वर, ताल तणा वसिवांन।
ल्हौडे साजन जांणज्यो, हिवै सासरिया कहुं जांण।।
४ जोजावर माहे वसै, सोमोसाह पिछांण।
स्त्री पहिली परणी तिणे, हिव दूजी तणो मंडाण।।
५ दूजी दीपाजी वरी, अल्प काल रै मांय।
पडचो विजोग प्रीतम तणो, हिवै मिलै जोग सुखदाय।।

*सुण ज्यो सती दीपाजी री वारता रे लाल ।।१।।

६ भारमाल मुख आगले रे, मतिवंती गुण माल रे। सुगणनर।
हीरां हीर कणी जिस रे लाल, सजम संवत अठारै चौमाल रे ।।सुगण०।।
७ हस्तू कस्तु भगनी भणी, हीरांजी दियो संजम भार।
लौकीक मांहै 'लखी'[1], छोडचो पुत्र पिउ धन सार।।
८ हस्तू कस्तु उपगार आछो कियो, आसूजी नै सजम दियो सार।
यां पिउ छांडी व्रत आदरचो, ओ पिण हीरा सती रो उपगार।।
९ आसूजी उद्योत आछो कियो, बडी चंदणां नैं संजम दीघ।
चत्रूजी साहसीक मोटी सती, ते पिण छै प्रसीध।।

*लय : धीज करै सीता सती रै........।

१. लक्षाधिप।

१० इम उपगार करता थका, आया जोजावर मांय।
उत्तम आसू आर्य्या, दीपाजी नै दिया समझाय॥
११ वैरागे मन वा लियो, जांण्यो अथिर संसार।
समत अठारै वोहितरे, लीधो संजम भार॥
१२ पछै विहार करी नै आविया, भारीमाल रे पास।
दर्शन देखी दयाल ना, पांमी परम हुलास॥
१३ अनुक्रमे दीपां सती हुई, सूत्र सिद्धांत नी जांण।
कंठ कला आछी घणी, वारू वाचै वखांण॥
१४ ऋपराय तणै मुख आगले, हुई 'ओजागर'[1] आप।
पूर्ण मुरजी पूज्य नी, थिर वुधि निर्मल थाप॥
१५ सूत्र वत्तीसूंइ वाचिया, झीणी रहिसां नी जांण।
स्वमति नै अन्यमति मझै, प्रसिद्ध दीपांजी पिछांण॥
१६ चरचा करण नी चातुरी, देवै हद दिप्टंत।
पुन्य प्रवल पोतै घणा, वांण मृदु वरसंत।
१७ घणी सतिया नै संजम दियो, श्रावक ना व्रत सार।
घणा जणा नैं अदराविया, किया सुलभ घणा नर नार॥
१८ लघु वंधव संजम लियो, मांणक मुनिवर जाण।
प्रकृति भद्र तपस्वी भलो, वारु सुगुण वखांण।
१९ महियल मोटी महा सती, कियो घणो उपगार।
शीत काले वहु सी सह्यो, वलि तप विविध प्रकार॥
२० संमत अठारै आठे समै, ऋपराय पौहता परलोग।
जयगणि दीपांजी तणों, राख्यो कुरव सु जोग॥
२१ छेहडै कारण ऊपनो, सती मन सम परिणांम।
अधिक सासण री आसता, दृप्टि आण ऊपर अभिराम॥
२२ जयगणि लाडणू सैहर में, सांभलिया समाचार।
ऋषभदास जी तलेसरा कनै, जव कियो मन में विचार॥
२३ चौमासो उत्तरियां थकां, घणा संत सत्यां रे संघात।
दर्शण देणा दीपाजी भणी, हिवडै अति हुलसात॥
२४ मन सोभो एहवो कियो, जयगण पति तिणवार।
सिरदारा महासती पिण इम कह्यो, सिध्र कार्य करणो सार॥

---

१. प्रभावशालिनी।

२५ सरूपचंद जी स्वामी थली मझै, त्यांरै अर्थे सुविचार।
दर्शण देई दीपांजी भणी, पाछो आवणो थली मझार॥

२६ अल्प दिवस में आविया, आंमेट हुंति समाचार।
कागद में लिखियो इसो, सांभल जो विस्तार॥

२७ भाद्रवा विद पंचम दिने, दिन दोय घडी चढ्यां जांण।
संथारो दीपाजी कियो, हरप हीये अति आंण॥

२८ भाद्रवा विद सातम निशा, सीज्यो सखर संथार।
परिणांम चढता रह्या घणा, कागद मे समाचार।

२९ जयगणि प्रमुख साधु साध्वी, चिउं लोगस्स काउसग ठाय।
याद किया अरिहंत सिद्धां भणी, जिन वच हियडे वसाय॥

३० सौल वर्स वय आसरै, लीधो सजम भार।
उगणीसै अठारे आवेट में, चाल्या जन्म सुधार॥

३१ पद अराधक पांमियै, तेहिज समझ उदार।
पंडित मरण थकी लहै, अल्प भवे सिव सार॥

३२ जेह हलुकर्मी जीवडा, निर्मल जेहनी नीत।
प्राण खंडै पिण न विछंडै, उत्तम गण सूं प्रतीत॥

३३ भिक्खू स्वाम तणों भलो, उत्तम मग अवलोय।
रुडी आसता राखिया, सकल कार्य सिद्ध होय॥

३४ उगणीसै अठारे समै, आसोज सुदि छठ बुधवार।
सती दीपांजी तणा गुण गाविया, लाडनू सैहर मझार।

साध्वी कमलूजी

(ख्यात सं० ६४।२-३८)

ढाल

*धिन धिन महासतियां सुखकारी, भारी भजन करो नरनारो ॥ ध्रुपदं ॥

१ कमलूजी हद कीधी करणी, धीर पणै व्रत धारी ।
पिउ हीर संघाते संजम लेई, आत्म कार्य सारी ।

२ वरजूजी पास भणी बुद्धिवंती, सतवंती सिरदारी ।
घुर आवसग अरु दशवैकालिक, उत्तराध्येन सुधारी ॥

३ विविध विनय विवेक विचार, संतोष सुधारस सील सुधारी ।
समता दमता खमता नमता, जिन वचना में रमतारी ॥

४ सुखदाई सुवनीत मिली वर, समणी रायकुमारी ।
दोषन से डरती व्यावच करती, धरती हरष अपारी ॥

५ पूनम परभव पौहंती कमलू, वर कर उत्तम संथारी ।
आसरै नव मास पछै परभव, पौहंती भल रायकुमारी ॥

६ ऋष जीत करायो हद उचरायो, संथारो सुखकारी ।
रायकुंवारी सरध्यो दिल साचै, कर जोड कीयो अंगीकारी ॥

७ उगणीसै तीए पौह विद, इग्यारस गुण गाया हितकारी ।
समरण करतां भल आणंद होवै, सुख संपति दातारी ॥

---

*लय : आवत मेरी गलियन में······।

साध्वी लछूजी

(ख्यात स० १०।१।३-१)

ढाल

दोहा

१ लछूजी मोटी सती, रिणधीरोत कोठारी जात।
पियर वडी पादू कन्है, रीयां वडो विख्यात।।

२ पिता नांम चंद्रभांणजी, सासरिया धाडीवाल।
जोरावर सुतनी वहू, मेड़ता सैहर मझार।।

३ संवत अठारै अठंतरे, ऋषराय विराज्या पाट।
लछूजी शिषणी प्रथम, दिन दिन अधिका थाट।।

*लछू नो सुजश घणो ।।ध्रुपदं।।

४ अठंतरे व्रत आदरचा हो, फागुण विद चौथ सुतित्थ।
श्रीजी दुवारे आय नै हो, धारचो है चरण पवित्त।

५ वडी विजां वृद्धि कारणी, जोता गुण नी जिहाज।
नंदू कुंवारी किन्यका, सखर मिल्यो तसु स्हाज।।

६ विजां जोता नंदू भणी, सूंपी पूज ऋषराय।
विनय व्यावच करती थकी, दिन दिन हरष सवाय।।

७ सुमति गुप्ति महाव्रत में, सावचेत सुखकार।
सील सरोवर झूलती, परिचय नो परिहार।।

८ पनरै वर्स लगता किया, दश पचखाण उदार।
थिर तन मन चित थाप नै, ध्यांन कियो वहुवार।।

९ उपवास वेला तेला घणा, चोला पांच षट सात।
आठ नव दश तेरै किया, पनरै सतरै तप आथ।।

१० कल्पै च्यार पछेवडी, तीन तणों परिहार।
घणा वर्सां लग जांणजो, शीत सह्यो इकधार।।

*लय : राम रो सुजश घणो......।

११ उगणीसै चवदे समै, जय सेवा में आय।
सिरदारांजी महासती, साहाज दियो अधिकाय ॥
१२ छेहडे कारण ऊपनो, सती मन हरष अथाय।
पोस मास कृष्ण पख में, सैहर बीदासर मांय ॥
१३ सैहर लाडणू सूं आय नैं, जयगणि दर्शण दीध।
अधिक वैराग चढावता, नित्य वचनामृत पीध ॥
१४ सखर स्हाज सिरदार नो, द्वादश अज्जा सूंप।
विहार कियो संतोष नैं, मास रही 'मुनि-भूप'[1] ॥
१५ समभावै वेदन सहै, चौथ छठ हद कीध।
उणोदरी तप अधिक ही, लाभ धर्म नो लीध ॥
१६ चैत सुक्ल पंचम दिनै, जयगणि पोतै आय।
आथण रा दर्शण दिया, अधिक परिणांम चढाय ॥
१७ रात्रि सिरदारां महासती, सरणा दै सुखदाय।
खंधक गजसुखमाल नी, वेदन ही दर्शाय ॥
१८ कहै सिरदारां महासती, सखर करावूं संथार।
सैन करी लछू सती, भरियो तांम हुंकार ॥
१९ अणसण सागारी कराय नैं, अधिक चढावै परिणाम।
सवा पौहर नो आसरै, अणसण आयो तांम ॥
२० संत चौवीस सुहामणा, अज्जा बोहितर जाण।
संत सती भेला हुआ, लछू रै भाग्य प्रमांण॥
२१ प्रात महोछव संसार ना, ग्रहस्थ नो व्यवहार।
वाजंत्र बोहत वजाविया, इण में धर्म नही छै लिगार ॥
२२ अठंतरे व्रत आदरया, उगणीसै सोले सार।
चैत्र शुक्ल पंचम दिनै, पौहतां परलोक मझार ॥
२३ अडतीस वर्स रे आसरै, संजम पाल्यो सार।
तप जप खप कर महासती, कर दियो खेवो पार ॥
२४ समकित में सैंठी घणी, चरण आंण वर नीत।
सासण गुरु दीपावया, लछू अधिक वदीत ॥
२५ इह भव जश लछू तणो, सासण में हद सोह।
परभव सुभ फल चरण ना, समय वचन अविरोह ॥
२६ उगणीसै सोले समै, सुदि चैत वारस सुखकार।
सती लछू तणा गुण गाविया, जय जश संपति सार ॥

१. मुनीश।

साध्वी मगदू जी

(ख्यात सं० १०२।३-२)

ढाल

दोहा

१ मगदूजी मोटी सती, पियर हीगर जात।
सैहर आंमेट मध्ये सही, ऋषभ सुता सुविख्यात ।।

२ हिरण सासरया जात हद, वगतूजी रै पास।
समचित संयम आदरयो, विनय गुणा री रास ।।

३ सरल भद्र सुखदायनी, वगतूजी नी सेव।
पाछै झूमांजी तणी, सेव करी नित्यमेव ।।

४ सती सरूपां नी सखर, इमहिज सेवा कीध।
ऋषराय पूज मगदू भणी, पद सिंघाडे दीध ।।

५ सैणी सुगुणी महासती, ऋषराय तणी हद आंण।
पालै रूडी रीत सूं, वारू तास वखांण ।।

*भजन करो सतिया तणों रे।।ध्रुपदं।।

६ भवियण जजन करो सतियां तणो रे, सतिया मांहै सखर सुरंग रे। भवियण।
सती मगदू सुखदायनी, चित निर्मल शीतल जल गंग रे। भवियण।।

७ सुगुणां मतिवंती मन दृढ घणौ, गमती च्यार तीर्थ नै जाण।
दुधर व्रत धर महासती, आतो मगदू नांम पिछांण ।।

८ वहु दिन एकांतर किया, छठ अठम दशम उदार।
पांच सात अठ वहु किया, वलि नव दश वहुली वार ।।

९ उग्र एकादश तप भलो, वले द्वादश तप दिन पेख।
तंत तेरै नो थोकडो, वले चवदै पनरै सुविसेख ।।

१० दिवस वावीस सु दीपता, वलि तीस कीया तंत सार।
चौतीस चालीस दिन भला, सुध चौपन तप दिन सार ।।

*लय—हंसा नंदीय किनारे रूख.......।

११ वलि शीतकाले वहु सी सह्यो, दोय पछेवडी उपरांत।
और पछेवरी परहरी, सुखे थेट तांइ चित शांत॥
१२ सुजश घणो शासण मझै, दृढ आज्ञा ऊपर एकधार।
गणपति नी मर्यादा में, त्यारै तन मन प्रीति अपार॥
१३ क्रोध मांन माया लोभ पातला, 'करड मरड'[1] ने 'वंक'[2] रहीत।
निर अहंकार चित निरमलै, पूरण गणपति सेती प्रीत॥
१४ उगणीसै चवदे समै, थया सिरदाराजी री नेश्राय।
वहु हठ कर जन वृंद में, ऊंडी आलोचना मन मांय॥
१५ गणपति नी सेवा थकी, अति हरख हीयै अधिकार।
विचरत-विचरत आविया, सैहर सुजानगढ सुखकार॥
१६ कांयक आसाता ऊपनी, सती सम परिणांम सहंत।
सेवा माहि सत्यां हाजर घणी, सहु सुखदायक चित शांत॥
१७ जय गणपति दर्शन नित्य दियै, चढावै सती रा परिणांम।
अहो अहो भाग भलो दिन मांहरो, मौने दर्शण दीधा स्वाम॥
१८ सिरदारांजी सहाज अधिको दियो, म्हा सतियां जी मोनै मोटी कीध।
म्है तो सरणो लीधो मोटको, इम गावत गुण सु प्रसीध॥
१९ म्हारै माय समांन है म्हा सती, इत्यादिक गुण ग्राम सुमंड।
दिक्षा मांहि आप पोतै वडी, तजियो मांन घमंड॥
२० दिवस वारै रे आसरै, रही वेदन उदर नी पीड।
वले तृपा अतुल दिन रात्रि मैं, सहै समचित साहस धीर॥
२१ जय गणपति मगदू सती भणी, आरोपाया महाव्रत उदार।
आलोवणा आछी तरै, खमत खांमणा वांरूवार॥
२२ चरम रात्रि विशेख वेदन नही, सवा पोहर रात्रि तांइ सोय।
पछै उलटी थइ दोय तिण समै, दोय दशतां लागी जोय॥
२३ पछै वेदन 'वलत'[3] री कालजे, सिरदारां जी चढावै परिणांम।
गजसुखमाल नें खंदक तणां, नांम लेई-लेई नैं ताम॥
२४ वले नरक निगोद नी वेदना, वारूंवार वताय-वताय।
दृढ परिणांम छै अति मांहिरा, वोलै मगदू सती इम वाय॥
२५ वारू वात करतां सती थकी, गइ दौढ पौहर जाभी रात।
संथारो करावूं आपनैं, सिरदारांजी पूछै वात॥

---

१. अकडाई।
२. कुटिलता।
३. ऊष्मा।

२६ मगदू कहै म्हा सतियांजी भणी, संथारो करावो सुखदाय।
अणसण जावजीव उचरावियो, तीन आहार ना त्याग सोभाय॥
२७ आसरै एक मुहूर्त पछै, सतियां नैं आखै उदार।
मोनै बैठी करो इण अवसरे, सतियां बैठा किया तिणवार॥
२८ ततक्षिण पुद्गल हीणा पड्या, आफेइ सूता सुभ जोग।
इम आसरै पाव मुहूर्त्त मझै, अै तो जाय पौहता परलोग।
२९ सतियां तन वोसिराय नै, चिउं लोगस काउसग कीध।
मगदू जन्म सुधारे जश लियो, यां तो जीत नगारां दीध।
३० चरण वर्स छतीस सु पालियो, ऊपर पट दिन अधिक उदार।
उगणीसै पनरै चैत मास मे, कृष्ण पख छठ गुरुवार॥
३१ प्रात सातम नव खंडी मंढी करी, गाजा वाजा ने अधिक हगांम।
सावद्य किरतब ए संसार ना, यामें धर्म तणो नही कांम॥
३२ तिहां सत पचीस सुहामणा, आसरै छन्नु सतिया सार।
मगदूजी रै अणसण अवसरे, सुजानगढ मे हरष अपार॥
३३ सती मगदू तणा गुण गावता, दल विघ्न टलै ततकाल।
सुख संपति हरष होवै घणो, सुध समरण मंगल माल॥
३४ उगणीसै पनरे समै, चैत विद आठम शनिवार।
सती मगदू तणा गुण गाविया, कांइ जय जश संपति सार॥

साध्वी मयाजी

(ख्यात सं० १०६।३-६)

ढाल

दोहा

१ मयाजी मोटी सती, जाति गगुर नी छन्न।
पियर खेरवे जाणजो, जाति कोठारी तन ॥
२ संजम वरजूजी कन्है, लीधो संवत अठार।
वर्ष गुण्यास्ये जेठ सुदि, तिथि बीज सुखकार ॥

*सतीय मयाजी सोभताजी कांइ, निन एहनो अवतार ॥ध्रुपदं॥

३ ऋषराय तणी आज्ञा थकी जी कांइ, सती रहै वरजूजी पै जांण।
विनयवंत गुण आगली जी कांई, धार प्रकृति वखांण ॥
४ चौथ छठादिक तप करै, शीत सीयाल विचार।
सुगुरु आण में रम रही, दिन दिन अधिको प्यार ॥
५ पछै छोटा चन्नूजी कनै, किया घणा चउमासा।
उगणीसै तीए समै, ऋषिराय 'टोलो'[1] कियो तास ॥
६ ग्रांमा नगरां विचरती, सती च्यार तीर्थ सुखकार।
सूरत मुद्रा सोभती, सरल भद्र अधिकार ॥
७ जयगणि ना वरतार मे, चवदा रै वर्षं विचार।
नेश्राय सिरदारा जी तणी, बहु हठ कर थइ सार ॥
८ तीन वर्ष छेहडै करी सती, तपसा विविध प्रकार।
सोलै वर्ष चौमास मे, षट चोला इक सत सार ॥
९ सतरै वर्षं चौमास में, तीस किया तंत सार।
ग्यारै तेरै अठ ओपता, पंच चोला सुविचार ॥

---

१. सिघाडा

* लय—मारी सासूजी रे पांच पुत्र कांई······

१० चरम चौमासो सुजाणगढ में कियो, विद श्रावण एकम सार।
वतीस दिन तपसा करी, पारणे विगय ले आहार॥

११ त्रिण दिन आहार करी सती, तेलो कियो तंत सार।
पंच दिवस किया परवडा, दोय अठाई उदार॥

१२ प्रथम अठाई रै पारणे, एक विगय सती लीध।
दूजी अठाई रै पारणै, विगय रहित प्रसीध॥

१३ नव दिन कीधा निरमला, पारणे इम अधिकार।
अन्न जल नै सती आचरयो, विगय व्यंजण परिहार॥

१४ द्वादश कीधा दीपता, पारणे अन्नजल आहार।
चोलो कियो चित चाव सूं, आंणी हरप अपार॥

१५ पांणी माहै रोटी चूर नै, छाणी कूचा नो आहार।
इण रीते कियो पारणो, जलते पिण पी गया सार॥

१६ दूजै दिन अन्नजल लियो, प्रथम आठ पचखाण।
पछै काती पूनम तांइ पचखिया, पारणो न कियो जाण॥

१७ पछै अभिग्रह कियो एहवो, जयगणि कर सूं आहार।
मृगसिर विद बीज आय नै, जय दर्शण दिया तिणवार॥

१८ चौविहार तिणदिन हूं तो, महाव्रत आरोपाय।
पाप अठारै आलोविया, विविध परिणाम चढाय॥

१९ अन्न जल सेती मन नही, वहु हठ कर नै ताय।
पारणो मूल कियो नही, दृढ परिणाम अथाय॥

२० तेतीसमो दिन आवियो, इक मुहुर्त रात्रि उन्मान।
परभव मांहै पागरचा, जीत नगारा जांन॥

२१ सिरदाराजी साहज आछो दियो, वतीस चौमोतर सार।
एकसो छ साधु साधवी, मेल्यो मंड्यो तिण वार॥

२२ तेरै खंडी मंडी करी, वहु वाजंत्र नगारा नीसांण।
ए किरतव संसार ना, नही संवर निर्जरा जांण॥

२३ शेषे काल तपसा तणो, अछै अधिक विस्तार।
एकसौ अठावीस दिन में किया, चवद दिवस कियो आहार॥

२४ उगणीसै अठारे समै, मृगसिर विद अष्टम सार।
सती मया तणा गुण गाविया, सुजाणगढ मुखकार॥

साध्वी दोलांजी (छोटा)

(ख्यात स० १०८१-३८)

ढाल

दोहा

१ दोलांजी दिल पाक सूं, सती सिरोमणी सार।
सजम लेइ सुध पाल नैं, कर दियो खेवो पार॥

*सतियां २ होय रही रे, काई सती दोलांजी सार रे॥ध्रुपदं॥

२ संमत अठारै वयासिये रे, सती संजम लियो सयांण रे।
सती गुण गाइये रे।
विनय व्यावच विध २ करै रे, कांइ खिम्यावती गुणखांण रे।
सती गुण गाइयैं रे।

३ सैणी सुगणी महासती, सती सिरोमण सार।
सुखदाई सहु गण भणी, उद्यमी अधिक अपार॥

४ सुमति गुप्त में सोभती, सरल घणी सुवनीत।
समणी मुद्रा सुहामणी, पकी ज्यांरी प्रतीत।

५ पीउ छांड व्रत आदरचा, धीर पणो चित धार।
सील सरोवर संभरी, तन मन तजी विकार॥

६ सीतकाल बहु सी सह्यो, एक पछेवडी आधार।
वर्स घणे इम विचरिया, वारु जश विस्तार॥

७ चोथ छठादिक चूप सू, वीस तांइ उपवास।
अंतिम पंच मासरै आसरै, हिवडै अधिक हुलास॥

८ पुत्री मूलां प्रेम सू, संजम लीधो सोय।
मात सुता जोडी मिली, दोलां मूला दोय॥

९ दिल उजल दोला सती, पाल्यो संजम प्रेम।
सतरै वर्स रे आसरै, निरमल धारचो नेम॥

---

*लय : मालण मोगरो……।

० संमत अठारै अठाणुवे, जैपुर सैहर मझार।
वेला में चलता रह्या, सुध परिणामां सार॥
१ दीपांजी दिल पाक सूं, सती साझ दियो सुखदाय।
धिन-धिन जन धिन-धिन करै, जिन मार्ग जश छाय॥
२ संमत अठारै नीनाणूए, विद चौथ रविवार।
गुण गाया सती दोलां तणां, सवलपुर गांम मझार॥

साध्वी रायकंवरजी

(ख्यात सं० ११८।३-१८)

ढाल

दोहा

१ माहढे पीहर सासरो, रायकुंवरि अभिधांन।
भामासाह नी 'दीकरी'[1], सैणी चतुर सुजांण ॥
२ वरष सोलै रे आसरै, वरजू माह सती पास।
चारित लीयो चूप सू, पामी परम हुलास ॥

*धिन धिन धिन रायकुंवर मोटी सती ॥ ध्रुपदं ॥

३ वरजूजी नांथाजी कलूतणी जी, सेवा करी रूडी रीत।
चढते परिणाम चित निरमले जी, पूरण पाली प्रीत ॥
४ पंच महाव्रत पालती, दश विध जती धर्म धार।
पंच सुमति सुमता सही, गुप्त तीनू गुणकार ॥
५ दोष अतिचार नै जाण नै, डरपै घणी दिल मांय।
ततखिण आलोवण करी, मन रलियायत थाय ॥
६ सूत्र सिद्धंत वहु वांचिया, वलि वहु सीख्या वखांण।
हेत वहु राखै सतियां थकी, कर्मां तणी करै हाण ॥
७ मास सौलैरै आसरै, व्रजूजी नी करी सेव।
भक्ति करी भली भांत सू, अलगो करी अहमेव ॥
८ वर्स बारै रै आसरै, नाथांजी री सेव तन मन्न।
जाझा पनरै वर्सा लगै, कमलूजी नै किया प्रसन्न ॥
९ कमलूजी पुर में परभव गया, अधिक चिहुं पौहर संथार।
विद पख भाद्रवे अष्टमी, या हीर तपसी नी थी नार ॥
१० तठा पछै नव मासरै आसरै, रायकुंवर रूडी रीत।
चारित्र पालियो चूप सू, साहसीक पणा सहीत।

१. वेटी।

*लय : धिन-धिन कलूजी मोटी सती……।

११ विचरत विचरत आविया, चिरपटिया गांम मझार ।।
कारण दशत नो ऊपनो, सूर पणै मन धार ।।

१२ ऋषि जीत आवी नै दर्शण दिया, सती मन हरषत थाय ।
सती मन अधिक सूरा पणो, चढता परिणांम सवाय ।।

१३ ओषध पांणी आगार सू, दिन तीन पचख्या तिणवार ।
दिवस चोथो हिव आवियो, पारणो नही कीयो धार ।।

१४ शक्ति घटी जांण सती भणी, ऋष जीत करायो संथार ।
कह्यो सरधो तो हाथ जोडो तुम्है, इम सुण कर जोडिया तिणवार ।।

१५ वार दूजी वले पूछियो, थे सरध्यो ह्वै तो जोडो हाथ ।
फेर दोनूं कर जोडिया, इमज तीजी वार विख्यात ।।

१६ सांन करी समजावता, एहवी सावचेत सुजांण ।
घडी रै आसरै नीकली, सास अधिकाइ रो जांण ।।

१७ ऋष जीत कहै वेदन देखनैं, थोडी वेलां री असाता जोय ।
सुख भारी पांमता दीसों तुम्है, इम परिणांम चाढै अवलोय ।

१८ गजसुखमाल सिर उपरै, अग्नि वेदन अधिकाय ।
इण थी नरक अनंत गुणी सही, रहिजो समभाव सवाय ।।

१९ संमत उगणीसै वीए समै, जेठ विद दशमी बुधवार ।
रायकुंवरी परलोक पधारिया, पंडित मरण श्रीकार ।।

२० सोलै वर्स जाझो संजम पालियो, रायकुंवरि सती सुखकार ।
तन मन आत्म वस करी, कर गया खेवो पार ।।

२१ ए गुण गाया रायकुवरि सतीतणा, संवत उगणीसै वीए धार ।
जेठ सुदि अष्टमी दिन भलो, आबेट सैहर मझार ।।

साध्वी ऋधूजी

(ख्यात सं० १३०।३-३३)

ढाल

*धिन-धिन ऋधूजी मोटी सतीजी ।। ध्रुपदं ।।

१ ऋधूजी रलियामणी जी, सुजांणगढ सुखदाय ।
जाति धारीवाड सासरचा, पीयरचा कठोतिया ताय ।।
२ अठचासीये व्रत आदरचा, सुमति गुपति सुखकार ।
आज्ञा में सती विचरती, सरल भद्र प्रकृति विचार ।।
३ साझ घणी सतियां भणी, दियो निज छांदो जी रोक ।
वर्स घणे इम विचरती, टालती आत्म दोख ।।
४ उगणीसै नवके काती मास में, पाली पोहता परलोग ।
जन्म सुधारे जश लियो, वरताविया वहु सुभ जोग ।।
५ चित समाधि मांहै चलता रह्या, धिन-धिन करै नर नार ।
उगणीसै नवे मृगसर सुदि पंचमी, गुण गाया जोवनेर मझार ।।

---

*लय साधजी भलाई पधारिया जो

साध्वी तुलछांजी

(ख्यात स० १३२।३-३२)

ढाल

दोहा

१ महियल मोटी महासती, तुलछां जी तंत सार।
कर तपसा काया कसी, नाम लियां निस्तार ॥

*धिन-धिन-धिन तुलछां जी मोटी सती ॥

२ संवत अठारै एकाणूंवे, जेठ विद हो चौथ में शनिवार।
उपवास कियो उचरंग सूं, संलेखणा री हो मन गाढी धार ॥

३ छठ भक्त कियो वलि चूप सूं, चोलो करी हो वलि कियो उपवास।
षट दिन पचख्या सती खंत सूं, तपसाकर वा हो हीये हरख हुलास ॥

४ अठम भक्त तप उजलो, पंच पचख्या हो वलि तेलो तंत सार।
दिन सात किया सती दीपता, अणसण उपर हो दिन-दिन अति प्यार ॥

५ उपवास करी सोलै किया, दिन ग्यारा हो पचख दिया तीनू आहार।
तप दिन बारै किया निरमला, धिन-धिन हो सती नो अवतार ॥

६ सती पनरै दिवस वली पचखिया, तेलो कीधो हो दिवस इग्यार।
दश दिन तप आठ किया वली, चित ऊजल हो तप विचित्र प्रकार ॥

७ सतियां कहै उतांवल न कीजियै, विगै लीजै हो करै घणी मनुहार।
सती कहै तप थी मन मांहरो घणो, पारणे हो लियो लूखो आहार ॥

८ दिन वीस किया दीपता, दिवस पनरमें सतियां करायो संथार।
सावचेत पणे सुध भाव सू, जन्म सुधारचो हो कर दीयो खेवो पार ॥

९ आठ पौहर सागारी अणसण आसरै, तीन महूर्त्त नो हो आसरै चौविहार।
दिन सौलमें परभव पागरचा, इह भव हो पाम्या जै जै कार ॥

१० धिन-धिन-धिन सतीरा वैराग नै, धिन-धिन हो सती रो सुभ ध्यान।
धिन-धिन सती रा परिणाम नै, मन कीयो हो सती मेर समांन ॥

---

*लय : भव जीवां तुम्है जिनधर्म ओलखो"।

११ सती जिण रीते संजम आदरचो, तिण हिज रीते हो कीयो आत्म किल्यांण।
जिन मार्ग कलस चढावियो, जग जश छायो हो पाली अरिहंत आण॥
१२ च्यार वर्स मठेरो चारित्र पालियो, काती सुदि हो चौथ में रविवार।
साढा पंच मास संलेखणा करी सती, आहार कीधो हो तिण में दिवस अठार।
१३ वडी चत्रुजी साझ 'अजरो'[1] दीयो, विनय वेयावच हो कीधी विविध प्रकार।
सती रा परिणाम चढाविया, जश लीधो हो वीदासर सैहर मझार॥
१४ संमत अठारै वाणूंए, मृगसर विद हो वारस मंगलवार।
सती तुलछांजी तणा गुण गाविया, सैहर वीदासर हो थली देश मझार॥

---

१. अधिक।

साध्वी चंपाजी

(ख्यात सं० १४०।३-४०)

ढाल १

*चित चूप करी भज चंपकली ।।
चंपा अकन कुमारी चातुर-२, दसमेंवरष घर सू निकली ।।ध्रुपदं।।

१ नंद तात माता दोलां दे, आगन्या दीधी मनरली ।
ओसवंस अरु जाति तलेसरा, श्रीजीदुवारो जन्मभूमि भली ।।
२ बाल ब्रह्मचारी बुधि नी सागर, आत्म नै कीधी उजली ।
बहु सूत्र भणी सैणी ने सुगुणी, लज्यावंती सुवनीत भली ।।
३ नव वर्स आसरै चारित्र पाल्यो, पूज प्रशादे मन नी आस फली ।
कृष्णगढ में कारज सारचा, आलोई निंदी हुई निसली ।।
४ पूज महाराज साझदियो अजरो, छैहलै अवसर करी रंग रली ।
दीपांजी दिल पाक सती ना, परिणाम चढाया तसु कीरत भली ।।
५ संवत अठारै सौ वर्स निनांणूंए, पिंडत मरण कीयो सफली ।
अनोपचंद सहोदर सखरो, संजम पालै रंग रली ।।
६ चंपा सती तणा गुण गाया, सैहर पादू में मन आस फली ।
संवत उगणी सै फागुण सुदि नवमी, समरण बंछत वस्तु मिली ।।

ढाल २

†भजलै चंप कली २ । हारे आतो सती सत्यां में विरली ।
भजलै चंप कली २ । हारे आतो ग्यांन ध्यांन धुन सरली ।।ध्रुपदं ।।
१ चंपा अकन कुमारी किन्या, धर चित संजम धारचो ।
सती सिरोमणि सैणी सुगुणी, आत्म कार्य सारचो ।।
२ लघु वय नव वर्स आसरै, चारित्र थी चित ल्यायो ।
बुधि प्रवल वहू सूत्र सिद्धांत भणी, जश कलश चढायो ।।

*लय : जै जै सांवरिया नै नमू.... ।
† लय—जै जै सांवरिया नै नमू..... ।

३ वाल व्रह्मचारी गण सुखकारी, गुण हद चंप कली का।
मनुष मात्र की कवण चली, सुर दरसण कर जश टीका ॥
४ समरण थी सुख संपत कीरत, ऋधि वृधि मंगल माला।
हरष विनोद आनंद हुवै, अरु कटै कर्म ना ताला ॥
५ श्रीजीदुवारा थी संजम, दश वर्स आसरै पाल्यो।
'हरि दुर्ग'[1] मे कार्य सारचौ, जिन मार्ग उजवाल्यो ॥
६ तन मन वस कर चंप कली भज, समरण ए हद नीको।
चंपक लता पुष्प सम चंपा, सुगंध सील समणी को ॥
७ संवत उगणीसै तीए, पोह सुद सातम दिन सारो।
मंगल माला चंप कली समरचां, हुओ हरप अपारो ॥

१. किशनगढ़।

साध्वी सदांजी

(ख्यात सं० १५०।३-५०)

ढाल

दोहा

१ सदांजी संजम लियो, सैहर वोरावर मांय ।
तप कर कारज सारिया, ते सुणजो चित ल्याय ॥

*सदांजी सुधारचा हो कार्य आपरा रे ॥ ध्रुपदं ॥

२ सदांजी सुधारचा हो कार्य आपरा रे, संजम तप तन ताय ।
विनय विवेक विचार वारू घणी रे, सतिया नै घणी सुखदाय ॥

३ सुमति गुप्त सावचेत पणै सही, लज्यावंत कुलवत ।
परभव नी चिंता घणी, तपसण नें चित शांत ॥

४ अंतकाल सती करी संलेखणा, पिंडत मरणो धार ।
उपवास करी नै दोय बेला किया, तेला तीन उदार ॥

५ वीर रसे सती कर्म विणासवा, पेचख्या दिन बावीस ।
सात तणा कीधा च्यार थोकड़ा, तप कर पूरी जगीस ॥

६ एक अठाई कीधी ओपती, नव नव किया दोय वार ।
चौला पांच किया चित ऊजलै, धन मन हरख अपार ॥

७ षट-षट ना कीधा छ थोकडा, तप करवा अनुराग ।
दिन चवदै पचख्या सती चूप सू, वाह-वाह सती नो वैराग ॥

८ दिन-दिन सती परिणांम तीखा घणा, सतीं रा भाग रे पाण ।
सरूपचंदजी स्वामी पधारिया, दर्शण दीधा आंण ॥

९ विविध प्रकार वैराग चढावियो, सती मन हरषत थाय ।
संता ना दर्शण करि नैं सती, तन मन बहु विगसाय ॥

१० दिवस इग्यारमे अणसण आदरचो, सावचेत पणे तिण वार ।
आसरै पौहर च्यार रो आवियो, संथारो सुखकार ॥

---

*लय : साधूजी नगरी आया" " "।

११ छोटा चत्रूजी साहज आछो दियो, व्यावच रूडी रीत ।
विविध पणैं परिणाम चढाये नै, पूरण पाली प्रीत ।।

१२ मास अठावीस आसरै पालियो, संजम महा सुखकार ।
जन्म सुधारचो महासती आपरो, धिन-धिन सती अवतार ।।

१३ सैहर वोरावर में संजम लियो, त्यांहीज पाम्या पार ।
चढतै चित जश कलश चढावियो, पचाणूंए वर्स अठार ।।

१४ संवत अठारै नै वर्ष छन्नूंए, जेष्ठ सुदि दशम भोमवार ।
सती सदांजी रा गुण गाविया, वीलाडा सैहर मझार ।।

साध्वी लिछमांजी

(ख्यात स० १५३।३-५३)

ढाल

१ *लिछमांजी मोटी सती, पियर चंडाल्या जात।
सामसुखा जाति सासरचा, बालक वय विख्यात ।।

२ चौराणूए व्रत आदरचा, छांडी निज भर्त्तार।
चंदणाजी पास चारित्र लियो, आंणी हरष अपार।।

३ अद्भुत करणी आदरी, सुध प्रकृति सुखदाय।
गुरु आज्ञा मे चालती, रमती समता मांय।।

४ सुमति गुप्त सूरा पणे, पालै व्रत पचखाण।
गण सुखदायक महासती, सखर कंठ सुविहाण।।

५ विचरत विचरत आविया, रत्नगढ सुभ जोग।
उगणीसै नवके आसोज में, जाय पौहता परलोग।।

६ जन्म सुधारे जश लियोजी, धिन-धिन करै नर नार।
बालक वय मन वस करी, छाडचो विषय विकार।।

७ संवत उगणीसै नवके समै, मृगसिर सुदि पंचम सार।
लिछमी जिसी लिछमा रटी, जोवनेर मझार।।

लय—प्रभवो मन में चिन्तवै.........।

साध्वी जैतांजी

(ख्यात स० १५६।३-५६)

ढाल

*धिन-धिन २ सतीय सुहामणी ।।

१ सतीय जैतांजी सोभती, जात कोठारी जांणी जी ।कांइ ।।
मेघ-सुता महिमा निली, पोरावल पहिछांणी जी ।कांइ ।।
२ पियर गोघूदे पेखिए, सासरियो श्रीजीदुवारे ।
छजमल सुतन बहू सही, उभय पख अधिकारे ।।
३ भाग प्रमांणे गुरू भेटिया, रायचंद ऋषरायो ।
सवत अठारै पचाणूवे, चरण लियो चित ल्यायो ।।
४ पढी गुणी प्रज्ञा भली, सतगुर नी सुविनीतो ।
सरस समय रस वांचती, निर्मल जेहनी नीतो ।।
५ सखर जांण अवसर तणी, वारु सरस वखांणो ।
कंठ कला वर देख नैं, हरषै जन सुविहांणो ।।
६ एक मास सीम अति भलो, तप कर नै तन तायो ।
चौथ छठादिक बहु किया, सहु गण नै सुखदायो ।।
७ इम बहु वरसां लग विचरती, सती दीपांजी पासे ।
सैहर गंगापुर आविया, वारू मन विसवासे ।।
८ अर्घ रात्रि नैं आसरै, उठ्यो कारण अचांणो जी ।
करी आलोवणा सोभती, खमत खांमणा जांणो जी ।।
९ सती वारूंवार मांगियो, च्यारूं आहार तणो संथारो ।
सागारी उचरावियो, अणसण अधिक उदारो ।।
१० समत उगणीसै बारे समै, आसाढ सुध सारो ।
एकम दिन उग्यां पछै, चाली जनम सुधारो ।।
११ संवत उगणीसै तेरे समै, सावण मास मझारो ।
एकम सती गुण गाविया, पाली जय जश सारो ।।

*लय : हेम-हेम भरजुन जिसा ......।

साध्वी गंगाजी

(ख्यात स० १५६।३-५६)

ढाल

दोहा

१ देश मेवाडे दीपतो, राणाजी रो राज।
गंगा गढ चीतोड नी, सारचा आतम काज॥

*काइ धिन धिन गंगा महासती ॥
॥ध्रुपदं॥

२ बहिन भाई दोनू जणा, संजम लियो तज ऋद्धजी।
कांइ टीलो जी भाई भलो, गंगा भगनी प्रसिद्धो जी।

३ सरल भद्रीक सुहांमणी, निरमल गंग समानो।
गंगा समणी सोभती, तप करिवा बहु घ्यानो॥

४ परिग्रह हजारा नो तज्यौ, लीधौ संजम भारो।
छठ अठमादिक तप बहु, कीधौ विविध प्रकारो॥

५ मास खमण पांच जू जूआ, निरमल चित सू ठाया।
गांमा नगरां विचरता, श्रीजीदुवारे आया॥

६ कारण कांयक ऊपना, चोलो कीधो चोखो।
पारणो कर वले पचखियो, चौथ भक्त निर्दोखो॥

७ चौथ भक्त रै पारणे, छठ भक्त श्रीकारो।
छठ भक्त रै पारणे, अठम भक्त उदारो॥

८ साध सती श्रावका भणी, कहै संथारो मोने करावो।
बहु दिन अणसण मांगियो, निरमल चढता भावो॥

९ अठम भक्त दिन तीसरै, चढिया अधिका भावो।
हेम जीत ऋष नै कहै, संथारो मोनैं करावो॥

---

*लय : कुशल देश सुहामणो...... ..।

१० हेम जीत ऋष हरष सूं, अणसण सती नैं करायो।
मन उचरंग हीये सती, थिर चित अणसण ठायो॥
११ महाव्रत फेर आरोपिया, आलोवण कर सम भावै।
हेम जीत ऋष आदि दे, विविध परणांम चढावै॥
१२ अणसण पनरै पौहर आसरै, तीन पौहर चौविहारो।
सात वर्स रै ऊपरै, पाल्यो संजम भारो।
१३ संवत उगणीसै वीए वर्स, सातम सुदि आसाढो॥
परलोके पौहती सती, राख्यो संजम तप रौ गाढो॥
१४ जिण रीते संजम लियो, तिम हिज पाम्यां पारो।
जन्म सुधारे जश लियो, ज्यांरा गुण गावैं नर नारो॥
१५ संवत उगणीसै तीए वर्स, सांवण विद एकम दिन सारो।
गुण गंगा ना गाविया, श्रीजीदुवारा मझारो॥

साध्वी सिणगारांजी

(ख्यात सं० १६०।३-१०)

ढाल १

*धिन-धिन सती सिणगारा स्यांणी ॥

१ सिणगारां सुगुणी सैणी, सुखदायक सम केहणी रैहणी ।
विध लायक वारू वांणी ॥

२ सुतां कुंवारी किन्या साथे, सती संजम लीयो ऋषराय हाथे ।
जाभी कीरत जग जांणी ॥

३ अठारैसै निनांणूए चारित्र लीधो, व्यावच करिवा तन मन दीधो ।
चाडवास में प्रथम चौमासो जांणी ॥

४ दूजो चोमासो वोरावड मांह्यो, आछ आगारे मास खमण ठायो ।
तपसा सतिया नै सुखदाणी ॥

५ तीजे चोमासे अजमेर जश लीधो, ऊंन्हा पाणी सू मास खमण कीधो ।
जन चिमत्कार पाया जांणी ॥

६ चोथो चौमासो गोघूदे न्हाली, किया आछ आगारे दिवस चाली ।
चढतै परिणांमें गुण खांणी ॥

७ श्रीजीदुवारे होय धोइंदे आया, थोडा दिवस खेद तन में पाया ।
नवलांजी आदि सेवा में जाणी ॥

८ नाथदुवारा थी वंदना करणआयो, फोजमलजी दर्शण कर सुख पायो ।
सिणगांरां रै खेद अधिक जांणी ॥

६ स्वामी हेम विराज्या कोठारयो गांमो, तत खिण पहुंचावी खवर तांमो ।
शीघ्र विहार कर दर्शण दिया आणी ॥

१० परिणांम अधिक चढाया हेम, सिणगारां सती पामी खेम ।
मुनि वाण सुणी हीये हरषाणी ॥

---

*लय—पायो मिनख जमारो मत हारो...... ।

११ स्वामी हेम करायो संथारो, धिन-धिन सती नों अवतारो।
सावचेत अणसण कर हुलसांणी ।।

१२ भाग्य प्रमाणे जोग मिल्यो नीको, स्वामी हेम चढायो जश टीको।
एहवो जोग विरलां रै मिलै आंणी ।।

१३ ज्यांरै भाग्य दिशा होवै भारी, जशवंत उत्तम जे नर नारी।
त्यारै ऐसो जोग्य मिलै आंणी ।।

१४ परिणांण चढाया संथारां मांह्यो, सती वांण सुणी वहुसुख पायो।
चिमत्कार पाया भव प्रांणी ।।

१५ दस पौहर आसरै संथारो आयो, पौह विद वीज जगजश छायो।
संवत उगणीसै तीए जाणी ।।

१६ हरखूजी री माता सिणगारां साची, तप जप खप ग्यांन गुणी जाची।
नित भजन करो भवियण प्रांणी ।।

१७ संवत उगणीसै तीए फागुण मासो, विद नवमी गुण गाया तासो।
सैहर जैपुर में हरख आंणी ।।

ढाल २

*धिन-धिन २ सिणगारां सती ।।ध्रुपदं।।

१ सिणगारां मोटी सती, सुखदायक सार २।
वैरागण तपसा भली, सफल कियो अवतार ।।

२ माता हरखूजी तणी, पुत्री अकनकुमार।
संजम धारयो दोनू जणी, साहसीक उदार ।।

३ मास खमण दोय जू जूआ, एक वार चालीस।
व्यावच विनय विवेक में, सूरवीर सुजगीस ।।

४ अठारैसै नीनांणूए, लीधो संजम भार।
उणणीसै तीए सती, धारयो सखर संथार ।।

५ भगनी टीला मुनि तणी, गंगाजी गुणधार।
गंगाजल सम निरमली, श्रीजीदुवारे संथार ।।

६ वहु हठ सू अणसण कियो, पांम्या भवनो पार।
सरल भद्रीक सुंहामणी, ज्यारी हूं वलिहार ।।

---

*लय पद्म प्रभू नित समरियै ..

७ उगणीसै साते समै, बडा नरांणा मझार।
गुण गाया सतियांतणा, पाया हरख अपार ॥

ढाल ३

*बंदो सती सिणगार ॥ध्रुपदं॥

१ सिणगारा मोटी सतीरे लाल, धारचो चरण चित धीर।
व्यावंच विनय विवेक में रे लाल, साचेली सूर वीर। भवजीवा रे।

२ मास, चालीस महिमागरु, तप कीधो तंत सार।
सेव सखर सतियां तणी, आंणी हरख अपार ॥

३ सुता हरखूजी सोभती, किन्या अकन कुमार।
संजम प्रथम समापनै, धीर आप व्रत धार ॥

४ अठारैसै निनांणूंए, संजम लीधो सार।
उगणीसै तीए भलो, हेम हाथ संथार ॥

५ सुखदायक लायक सती, नायक गुणा नी न्हाल।
आणा श्री गुरुदेव नी, परम प्रीत कर पाल ॥

६ समरण सुख संपत सही, हरख प्रमोद सु होय।
आणंद अति घन ऊपजै, जयजश वृद्धि सुजोय ॥

७ उगणीसै साते समै, जेठ सुक्ल जयकार।
सातम तिथि सुख पांमियो, सुजांणगढ सुविचार ॥

ढाल ४

†भविकजन! भजरे सती सिणगार, तेहथी लहियै भवदिध पार ॥ध्रुपदं॥

१ सती सिरोमणि सोभती, सिणगारा सुखदाय।
माता हरखूजी तणी, संजम धारचो रे अधिक ओछाय ॥

२ समत अठारैसै निनाणूवे, चरण लियो चित धार।
मास खमणादिक तप करी, उगणीसै रे तीए कियो संथार ॥

---

*लय—सीयाले खाटू भली रे ...।

†लय : रावणराय म्रासा अधिकी ...।

३ विनयवंती नी वारता, काह कहिये अधिकाय।
गुणग्राही सुखदायिनी, पंचम काले रे प्रगटी गुणिजन चाय ॥
४ याद आयां मन हुल्लसै, वारु तुझ विश्वास।
भजन चिंतामणि सारिखो, ओ तो देखो रे प्रत्यख पूरण आस ॥
५ उगणीसै आठे आसाढ में, विद बीज अनें शनिवार।
परम हरष सुख पांमियो, तुझ गुण गावत रे वरत्या जैजैकार ॥

साध्वी हरखूजी

(ख्यात सं० १६४।३-६४)

ढाल

दोहा

१ हरख करण हरखू सती, वर वाला ब्रह्मचार।
जन्म सुधारी जश लियो, हरखू हरख दातार।।

२ सखरो सैहर सुजानगढ, हरिसिंघजी तात।
जाति वोथरा जाणज्यो, वर सिणगारां मात।।

३ नव वर्षा रै आसरै, किन्या अकन कुंवार।
मात साथे लेवा चरण, तत्क्षण हुय गइ त्यार।।

४ जय ऋषि सिरदारां सती, जीवादिक नो सार।
जाण पणो सीखावियो, वारू कर विस्तार।।

*धन्य-धन्य-धन्य हरखु सती ।।ध्रुपदं।।

५ संवत अठारै निनांणूए रे, वीदासर चउमास २।
राय ऋषि ग्यारै संत सू, अज्जा अठ गुण रास २।।

६ आसोज सुदि सातम दिने, राय ऋषि जय साथ।
सामायक उचरावियो, वारू चरण विख्यात।।

७ सूंपी सिरदारांजी भणी, परम पूज करि मैहर।
विनयवंत वर किन्यका, गुण गिरवा गैहर।।

८ मृगशिर मासे मात नै, लीधो संजम भार।
सूंपी सिरदारांजी भणी, परम पूज्य धर प्यार।।

९ मात सुता महिमानिली, वारू विनय विचार।
आंण अखंड आराधती, पालै चरण उदार।।

१० हरखू वालक वेश मे, इणरै विनय नो कोड।
कार्य भलाया उचरंग सू, करती वे कर जोड।।

११ महाव्रत भार मोटो लियो, वालपणा में सार।
धर्म उपधि नों पिण घणो, लीयै हरख अपार।।

---

*लय : दृष्टि पड़ी सो माही पड़ी रे, बीजो कछु न सुहाय......।

१२ परम प्रीति सिरदारांजी थकी, रहै मुरजी प्रमाण।
सेव करै साचे मने, अति उज्जम आण॥
१३ उगणीसै तीए समै, हेम हाथ संथार।
माय सिणगारां महासती, कर गई खेवो पार॥
१४ आठे जयगणि पद लह्यो, पडिलेहण पेख।
हरख धरी हरखू करै, वारू दृष्टि विसेख॥
१५ सर्व पुस्तक इणरै तालखै, न्यारी सार संभाल।
चौकस अधिकी चातुरी, उपयोग विशाल॥
१६ आठ तांई तपसा करी, पतली च्यार कषाय।
प्रकृति भद्र उपशांत ते, गण दृढ सवाय॥
१७ भिक्खू गण री आसता, इणरै अधिक विसेख।
परम प्रीत गणपति थकी, ऊंडी दृष्टि उवेख॥
१८ सिरदारांजी रै संग रह्या, सर्व चौमासा सार।
चरम चौमासो चूरू कियो, जयगणि पै उदार॥
१९ सोलै संत सुहामणा, अज्जा वर पैंतीस।
दोय बायां दिक्षा ग्रही, सर्व तेपन जगीस॥
२० अधिक कारण छेंहडे ऊपनो, कांयक सास नो जोय।
चौथ संवच्छरी नो कियो, चौथ भक्त अवलोय॥
२१ पांचम छठ भेली थई, पारणो ते दिन्न।
रुचि विशेष तो ना हुंती, लियो अल्प सो अन्न॥
२२ सातम सूं ग्यारस लगे, नाम मात्र लियो आहार।
बारस रै दिन धारियो, चौथ भक्त सुखकार॥
२३ उपवास माहै बेलो कियो, छठ में तेलो कीध।
षट मांहै सात पचखिया, बीच आहार न लीध॥
२४ नर नारयां रा वृंद आवता, दर्शण करिवा देख।
मुख सूं त्याग करावती, बैठी थकी विसेख॥
२५ साता में अणसण आदरयो, सागारी सार।
महूर्त्त अढाई आसरै, दिन चढियो तिणवार॥
२६ सावचेत घणी सती, धर्म ध्यांन री जोय।
विविध प्रकारे वारता, करती अवलोय॥
२७ जय गणपति तिण अवसरे, वले सती सिरदार।
विविध परिणाम चढावता, दे उपदेश उदार॥

२८ वहू नर नारी तिण समै, आवै दर्शण काज।
जाणक मेलो मंडियो, जाणै भवदधि पाज॥
२९ एक महुर्त्त रै आसरै, रह्यो दिवस तिणवार।
वार २ मागै सती, जावजीव संथार॥
३० जय गणपति कहै थांहरै, सागारी छै सोय।
तो पिण चित तीखो घणो, जावजीव थी जोय॥
३१ तव जयगणि उचरावियो, अणसण जावजीव।
वर मुनि रीत विशेष थी, आणी हरष अतीव॥
३२ वलि जय मुख सू उच्चरै, थौडी वेलांरो जाण।
वाकी कष्ट रह्यो अछै, वारू राखजो ध्यान॥
३३ सुख भारी देवता तणा, पामता दीसो सार।
पंडित मरण तणा भला, फल अविक उदार॥
३४ मनुष्य थकी अनत गुणा, नरक निगोद ना दुख।
वार अनंती भोगव्या, याद करजो प्रत्यख॥
३५ गजसुखमाल वेदन सही, वले खंधक शीस।
खाल उतारी खंधक तणी, समभाव सहीस॥
३६ तिणविध समभावे करी, वेदन मरणांति।
सहीजो हरष विशेप थी, चित्त राखजो शांति॥
३७ इत्यादिक वचने करी, चढावै परिणांम।
भाग्य प्रवल हरखू तणों, मिल्यो जोग्य अमाम॥
३८ सैठा परिणाम छै थांहरा, वलि पूछा करी ताम।
वार वार सती उच्चरै, मुझ दृढ परिणाम॥
३९ दिन आथमता सती कहै, आप पधारो स्वाम।
सावचेत इसडी सती, मन हरख अमाम॥
४० पंडित मरण तणों घणो, सती रै उछाय।
किंचत मन में भय नही, मत्यु महोछव ताय॥
४१ हिवै सिरदारां महासती, चढावै परिणाम।
व्यावच विविध प्रकार थी, सती नी करै ताम॥
४२ किण वेला सास अधिको वधै, धीरो पडै किण वार।
वर परिणाम चढावती, सतियां सुखकार॥
४३ पुणा दोय पौहर आसरै, इह विध आई रात।
सावचेत अधिकी सती, अचरज वाली वात॥

१२ चरम चौमासो पिछांड, जीत ऋषि जांण।
सरदारांजी रै मुख आगले ॥
१३ पनरै संत पिछांण, सुगणी तीस सुजांण।
पैंतालीस ठाणां गुण निरमलै ॥
१४ सूरवाल थी आय, चारित्र लीधो ताय।
'दोय कुमारी किन्या सही ॥'[1]
१५ ठाणां सैताली ठाट, विहार कियो गहघाट।
जिन धर्म नी महिमा हुई ॥
१६ सती जैतांजी सार, सुखे सुखे करै विहार।
मालव देस साजी करी ॥
१७ आवै देश मेवाड, मंदसोर सूं कियो विहार।
नरांणगढ आया वही ॥
१८ अल्प दिवस रे माय, कर आलोवणा ताय।
परभव नी चिंता घणी ॥
१९ नरांणगढ मे विमास, सिरदाराजी रै पास।
करी आलोवणा आछी तरै ॥
२० नरांणगढ सू सोय, विहार करी अवलोय।
पारसोल आवि विचरतां ॥
२१ आहार करी नैं सोय, विहार करचो अवलोय।
सुखे समाधे रंगरता ॥
२२ खांधे पोथी सिराणो उदार, आया वामणीया गाम तिवार।
त्यांथी विहार करी आगा चालिया ॥
२३ आया पावकोस उनमांन, अचितो आयो अवसान।
सतिया साथे सोभावियां ॥
२४ सक्ति घटी तिणवार, महितल बैठा जिवार।
दृढ प्रणाम सती तणा ॥
२५ सती खेमांजी धर खंत, खाधा सू जोडो लेवत।
कहै म्हारो जोडो लो मती ॥
२६ न्याय नीत रूडी रीत, नही बोज देवणरी नीत।
अंत समाताई सती ॥
२७ पाछो उभो होणी आयो नांहि, एक महुर्त रे माहि।
चटकै परभव में पागरचा ॥

१. साध्वी वृद्धांजी (२९३), साध्वी हरवगसांजी (२४४)।

२८ सतियां तन वोसिराय, चिउं लोगस काउसग ठाय।
आया गांम कोरी मझै ॥

२९ काया तणो संस्कार, साचवी रीत तिवार।
संग हुंता ज्यां सहु करचा ॥

३० ब्रामण्या गाम में आय, पीपल काष्ट ते ताय।
सीताराम आदि लेइ आविया ॥

३१ गाडा में खाली काष्ट तिवार, आवतां मारग मझार।
धुरी भारी उजार मे ॥

३२ पाछो आवी 'कलेवर'[1] पास, पीठी स्नान करायो तास।
'डोल'[2] तणी रीत साचवी ॥

३३ मांहै वेसाण उपाड, आया काष्टक नै तिणवार।
दहन क्रिया विध सहु ठवी ॥

३४ संवत उगणीसै इग्यार, जेठ सुद नवमी सार।
पवर चित्त कर पालियो ॥

३५ चरण लियो गृह त्याग, वर मन तिमज वैराग।
जिन मारग उजवालियो ॥

३६ संवत बारै सुखकार, उदियापुर सैहर मझार।
श्रावण विद सातम गुण गाविया ॥

३७ भीखू भारी माल ऋटपराय, जयसुख हरष सवाय।
परमानद वरताविया ॥

---

१. शव। २. डोली।

साध्वी हस्तूजी

(ख्यात सं० २०६।३-१०६)

ढाल

*चरण रंग राच रही।

या तो वड तपसरण सुविनीत, कीर्त्त जग मांहि कही ।।ध्रुपदं।।

१ हस्तूजी हरष धीर लीधो, सखरो संजम सार।
उगणीसै एके समै जी, ऋषराय कनै व्रत धार ।।

२ गांम चीवरे सासरो, पियर ताल पहिछांण।
लहुडै साजन 'लघुक्रमी'[1], ओस वंस सुविहांण ।।

३ मास खमण वहुला किया, दोढ मास दोय मास।
उगणीसै नवके समै, एकसो तीस विमास ।।

४ दशे इग्यारे वारे समै, कीधो तप उदार।
सैंतीस अरु सोभता जी, एकसौ तरांणूं सुसार ।।

५ माघ मास में पारणो, वैसाख मास लग जांण।
कष्ट में वेदन सही, निर्मल भाव निध्यांन ।।

६ सात पौहर नै आसरै, अणसण अधिक उदार।
वैसाख सुक्ल नी पंचमी, कर गई खेवो पार ।।

७ सासण में सोभा घणी, हस्तू नी हद जांण।
महियल मोटी महासती, कीधो जन्म किल्यांण ।।

८ 'नव का तांई न हुई, आर्य्या मांहै सार।
पवर एकसौ तीसनो, तप हस्तू अधिकार।'[2]

९ संजम साज दीयो भलो, सती दीपांजी सोय।
संसार लेखे छै सही, 'कलूवै'[3] भतीजी होय ।।

१० उगणीसै तेरे समै, सावण विद पक्ष सार।
नवमी दिन गुण गावियाजी, जय जश हरष अपार ।।

---

१. हलुकर्मी।

*लय : वलाली लालन की ··· ।

२. स० १९०९ तक साध्वियो मे इतनी वड़ी तस्पया नही हुई थी। साध्वी हस्तूजी ने आछ के आधार से १३० दिन का तप कर नया कीर्त्तिमान स्थापित किया।

३. कौटुम्विक।

साध्वी उमेदांजी

(ख्यात सं० २१६।३-११६)

ढाल

दोहा

१ सैहर फलोधी नैं विषै, ओसवंस अवतार।
पीरदांन ढढां घरे, नाम उमेदां नार॥

२ सिरदारांजी सू घणी, सरस प्रीत संसार।
संवत अठारै नैउवे, श्रावक ना व्रत धार॥

३ संवत अठारै चोराणूंवे, पिउ नो पड्यो विजोग।
'आरत न करी आकरी'[1], धर्म ध्यान सुभ जोग॥

४ सामायक पोसा करै, वर वैराग्य विशेष।
वर्स घणा इम वीतिया, चरण तणी चित्त 'लैश'[2]॥

५ संवत अठारै सताणूवे, सिरदारांजी सार।
अति हठकर आग्या ग्रही, लीधो संजम भार॥

६ कियो सिंघाडो राय ऋषे, करता उग्र विहार।
सैहर फलवधी आविया, सतियां नैं परिवार॥

७ तांम उमेदा नै थयो, चारित्र तणो 'उमेद'[3]।
अनुमति ले त्यारी थई, मेटण चिहुं गति खेद॥

*सुगण जन सांभलो रे॥ ध्रुपदं॥

८ उगणीसै एकै समै, पोस मास विख्यात।
चारित्र लीधो चूप सू, सती सिरदारां हाथ॥

९ 'उपचय'[4] नही वहु कर्म नो, पुन्यवंती सु प्रयोग।
प्रवल भाग थी पामियो, जवर सती नों संजोग॥

१० ईर्या भाषा एषणा, पूजण परठण पेख।
मन वच काया गोपवै, वारु विनय विसेख॥

---

१. अधिक आर्त्त ध्यान नही किया।
२. लगन।
३. उमंग।
४. संग्रह।

*लय—राजग्रही नगरी भली.........।

११ पंच महाव्रत पालती, भद्रीक सरल सभाव।
वर सुवनीत सुहामणी, सखरो संजम साव॥
१२ उगणीसै आठे समै, राय ऋषि परलोक।
पद आचार्य पामियो, जय जश प्रवर सुयोग॥
१३ जय गणपति रै आगले, सतिया में सिरदार।
पवित्रणी ज्यू ओपती, संत सत्या सुखकार॥
१४ सिरदारांजी आगले, अधिक उमेद अमोल।
जवर विनय व्यावच थकी, तीखो वाध्यौ तोल॥
१५ संत अनें सतिया तणी, सखर साचवै सेव।
औषध भैषध आंण दै, अलगो तज अहमेव॥
१६ गोली किण नै आंण दै, किण नै सूठ लवंग।
हरडै बैहड़ा आमला, किण नैं चूरण चंग॥
१७ अचित्त मिरच किण नैं दियै, किण नैं दियै सोनाय।
कुली धाणां नी किण भणी, मिश्री मिरच मिलाय॥
१८ पचायो जायफल किण भणी, बले जैवंतरी जांण।
गुलकंद मधुपक आंमला, किण नै दियै फुन आण॥
१९ इत्यादिक ओषध घणा, ओसा विविध प्रकार।
संत सत्यां नै आंण दै, आलस अंग निवार॥
२० उदक तणी तो आकरी, सारै सेव सवाय।
'रखे'[1] कोई तिसियो रहै, 'चटक'[2] अधिक चित मांय॥
२१ गांम अनें परगांव थी, उदक समापै आंण।
वली अन्य पास मंगाय लै, एह हवालो जांण॥
२२ इम बहु वरसां लग लियो, दांन धर्म नों लाभ।
सील सिरोमणि झूलती, अधिकी गण में आब॥
२३ पुर जोधाणां में कियो, चरम चौमासो चंग।
पग में वेदन परगटी, चित निर्मल जल गंग॥
२४ हिवै चौमासो उतर्यो, सतियां संग विहार।
अधर उठाई आणिया, प्रगट सैहर पीपार॥
२५ इम लोटोती ल्याविया, आणंदपुर में आंण।
इमहिज पादू ईडवे, वलि वाजोली जांण॥

---

१. कदाचित्। २. तड़फ।

२६ चांदारूण खाटू लघु, सैहर लाडणूं सार।
होडाहोड उमंग थी, आण्या सतियां उपार ॥
२७ सरूपचंदजी स्वाम ना, दर्शण कर हरषंत।
आंणी मुज नैं उपाड नै, वलि वलि गुण गावंत ॥
२८ सैहर लाडणूं थी हिवै, सतीयां संग विहार।
सुजानगढ़ होय आविया, वीदासर सैहर मझार ॥
२९ वलि लाडणूं ह्वै करी, सुजानगढ़ मझार।
आंण्या अति उचरंग सू, सगलै सतियां उपाड ॥
३० त्रिहुं सैहरे दिन नै विषै, भजन करै सुखदाय।
वहुल पणै वैठा थकां, ए अचरज अधिकाय ॥
३१ आलोई निंदी करी, निसल थई मन मांय।
साध साध्वी आदि दै, रूडी रीत खमाय ॥
३२ वीदासर नैं लाडणूं, सुजानगढ मंझार।
दर्शण देता जयगणी, आया उमेदा पास ॥
३३ म्हैली मुझ नै आंण दे, नंदन वन रे मांय।
वार वार मुख उच्चरै, गुण ग्राही अधिकाय ॥
३४ कोस एकसौ ऊपरै, पंच आसरै सार।
सिरदारांजी रा जोग सू, आणी सतियां अपार ॥
३५ सिरदारांजी नो घणो, जवर साहाज सुखदाय।
चित समाधि सती भणी, विध विध सूं उपजाय ॥
३६ छेहडे कारण दस्त नों, पिण चित्त में हुसीयार।
सखर सचेत पणै सती, मन में हरष अपार ॥
३७ चैत सुक्ल दसमी दिनें, जयगणी दर्शण दीध।
महाव्रत आरोपाविया, सखरी रीत समृद्ध ॥
३८ सहु जीव रास खमाय नै, पाप अठारै आलोय।
वर परिणाम चढाविया, विविध पणैं अवलोय ॥
३९ पांच सुमति तीन गुप्ति में, पंच महाव्रत मांय।
अतिचार आलोय नैं, निसल थई जिम न्हाय ॥
४० सिरदारांजी महासती, दियै सखर उपदेश।
सागारी उचरावियो, अणसण हरष विशेष ॥
४१ वार-वार मुख उच्चरै, हिवै मुझ कतीयक जेज।
पंडित मरण करिवा तणो, सती मन अधिको हेज ॥

४२ नाड़ी ठिकांणो छोडियो, के नहीं छोड्यो ताय।
एम सती मुख उच्चरै, हरष सचेत सवाय ॥
४३ 'धमनी'[1] देखै महासती, सखरी रीत सिरदार।
नाडि ठिकांणो छोडियो, जांण लियो तिणवार ॥
४४ इतलै किंचित काल में, पोहता परभव मांय।
वार विसेख लागी नहीं, ए अचरज अधिकाय ॥
४५ पोहर आसरै आवियो, सागारी संथार।
जन्म सुधारचो जग में, नांम लियां निस्तार ॥
४६ नव खंडी मंडी करी, ए जग नो ववहार।
धर्म पुन्य नही एह में, धर्म जिन आग्या मभार ॥
४७ जिण परिणांमा चारित्र लियो, तिमहीज पांम्या पार।
धुर दिन थी छैहरा लगै, सखर सहाज सिरदार ॥
४८ सिज्यातर रूडो मिल्यो, साताकारी ताय।
जबर लाभ जायगा तणों, कह्यो सिद्धांत रे मांय ॥
४९ उगणीसै पणवीस मै, विद वैसाख मभार।
तीज तिथ गुण गाविया, जयजश हरष अपार ॥
५० समण सोल फुन महासती, पंच असी अधिकार।
एकसौ इक रै आसरै, सुजानगढ मभार ॥

---

१. नाडी

साध्वी रुखमां जी

(ख्यात सं० २१८।३-११८)

ढाल

दोहा

१ चतुरभुज ऋषछोग री, रुखमांजी वर मात।
उगणीसै एके वरस, चरण उभय सुत साथ।।

२ अज्जा जीऊ प्रतिवोधिया, वोरड रत्नगढ वास।
नाथदुवारे ऋषराय पै, चरण महोछव तास।।

*धिन-धिन-धिन रुखमां सती ।।ध्रुपदं।।

३ संजम पालै निर्मलो, सुमति गुप्त सोभाय २।
विनय विवेक विचार में, रुखमां गण सुखदाय २।

४ चौथ छठा दिक तप कियो, वारु नीत विशाल।
शीतकाले वहु सी सह्यो, मोटी महिमा गुणमाल।।

५ भद्रीक सरल प्रग्या भली, शासण आसता सार।
सुमति सरोवर भूलती, आछी रीत उदार।।

६ उभय सुत गणि आगले, पालै आंण अखंड।
आंण अराध्या जश हुवै, महिमा मही मंड।।

७ भाग्य प्रवल रुखमां तणा, गणि आंण रमंत।
सुत विहुं सुगुरु रीझावता, हीये हरष अत्यंत।।

८ साहाज अधिक सिरदार नो, अति पूरण आस।
जीऊ अज्जा आदि सेवा करै, दियै सुगुरु स्यावास।।

९ कारण छेहडै ऊपनो, सुणियो सुगुरु सुजांण
दर्शण देवा कारणे, मेल्या सुतन पिछांण।।

१० छोग चतुर मुनि पंच सूं, लाडणू सूं विहार।
सैहर वोरावड नी दिशा, कीधो छै तिणवार।।

---

*लय : पद्म प्रभु नित समरिये......।

११ एक मजल जइ आविया, छोग सुगुरु पाय।
चतुरभुज त्रिहु संत सूं, आया बोरावड मांय ॥
१२ दिवस बावीस रै आसरै, वर परिणांम चढाय।
विविध वैराग री वारता, सुण-सुण सती हरषाय ॥
१३ परम पूज कृपा करी रे, सुत मेल्यो स्वाम।
अधिक हरष मन ऊपनो, वर चित विश्रांम ॥
१४ परम संतोष उपजाय नैं, महाव्रत आरोपाय।
सुगुरु समीपे आया मुनि, सहु विरतंत सुणाय ॥
१५ संवत उगणीसै सोले समै, वस्त पंचमी सार।
पौहर अढाई आसरै, अणसण आयो उदार ॥
१६ सेव करी साचे मने रे, जीऊ अज्जा सुवनीत।
सखरो साहज समापियो, पाली पूरण प्रीत ॥
१७ अधिक हरष थी आदर्यो, वारु चरण विशाल।
तिमहिज पार पौहचावियो, संजम भार संभाल ॥
१८ उगणीसै सोले समै, विद आसाढ तेरस।
सती रुखमा नां गुण गाविया, जाझो सुख जय जश ॥

साध्वी कुनणांजी

(ख्यात सं० २३४।३-१३४)

ढाल

१ *माधोपुर नी महासती, कुनणाजी कहिवाय।
संवत उगणीसै तीये समै, चरण लियो चित ल्याय॥

२ सरल भद्रीक सुहामणी, सतियां नै सुखदाय।
सुमति गुपति सुध रीत सूं, वहु तप कर तन ताय॥

३ आचार्य री आगन्या, अराधी सुध रीत।
विनय विवेक विचार में, निर्मल जेह्नी नीत॥

४ विचरत विचरत आविया, मुरधर देश सुधाम।
नगर कंटाल्यो सोभतो, ज्या जनम्यां भिक्खू स्वाम॥

५ कारण अचिंत्यो ऊपनों, अणसण अधिक उदार।
सवा पौहर रै आसरै, संमत उगणीसै वार॥

६ सती सेरांजी आदि दे, सखरो दीधो साज।
जेठ कृष्ण तिथ पंचमी, सारचा आतम काज॥

७ संवत उगणीसै तेरे समै, सावण राखी सुदिन्न।
महासती गुण गाविया, जय जश हरष प्रसन्न॥

*लय : प्रभवो मन में चितवै.......।

साध्वी वनांजी

(ख्यात सं० २७०।४-२)

ढाल

दोहा

१ सैहर विदासर नैं विषै, ओसवंश अवतार।
वेगवाणी 'पूरण' घरे, पवर वनांजी नार ॥

२ सुत मघराज सुहामणो, पुत्री अकन कुवार।
नांम गुलावां निर्मली, सरल भद्र सुखकार ॥

३ देश व्रत धर्म दीपतो, पालै वनां उदार।
कर्मचूर तप आदि वहु, कीधो विविध प्रकार ॥

४ संत सत्यां रा जोग सूं, वाध्यो मन वैराग।
चरण लेण त्यारी थया, सखरो शिवपुर माग ॥

५ उगणीसै आठे समै, वीदासर सुखवास।
ऋषिराय तणी आज्ञा थकी, कियो जीत चउमास ॥

६ चउमास में चूंप सू, जाणपणो सुविचार।
सीख्यो सुत मघराज अति, सुता गुलावां सार ॥

७ मृगसर विद वारस दिने, सैहर लाडणूं मांस।
चरण लियो मघराज वर, आंणी अति ओछाह ॥

८ माह विद चउदश नी निशा, रायऋषि परलोग।
जय पट महोच्छव अति पवर, महा सुध पूनम जोग ॥

९ सुता सहित वन्नां सती, तीजी हस्त ताय।
फागुण विद छठ चरण धर, वीदासर सुखदाय ॥

१० इम सुत नें पुत्री भणी, चरण आंण नो लंभ।
लीधो वन्नां अति भलो, पालै चरण अदंभ ॥

११ सती सिरदांराजी भणी, जय गणी घर अहलाद।
सूंपी समणी सोभती, वनां गुलावां आद ॥

*वनांजी सुधारे हो कार्य आपणा रे ॥ध्रुपदं॥

१२ जय गणपति पासे सीखै भणै रे, सुमति गुप्ति सुखकार।
पंच महाव्रत पालै प्रेम सू रे, आणो हरख उदार।

*लय : भला नै पधार्‍या हो.......।

१३ विनय वियावच्च विध सू करै, सतगुरू नी सुवनीत।
अमल चित्त अति सासण आसता, निर्मल चारित्र नी नीत॥
१४ शीतकाल माहे बहु सी खम्यो, एक पछेवडी उपरंत।
बहुल पणे करि ओढी नही, आणी हरष अत्यंत॥
१५ सुत मघराज गुलावा जी सती, अति सुवनीत अमोल।
हर्ष सहित भण गुण परिपक्क हुवा, च्यार तीर्थ में तोल॥
१६ उगणीसै वीसे चूरू मझै, जय गणपति सुख साज।
कृष्ण आसोज त्रयोदशी स्थापियो, वर युव पद मघराज॥
१७ चौथ छठ अठम दशम भला, पाच सात नव पेख।
दश द्वादश तेरै चवदै बली, किया वनाजी विसेख॥
१८ पनरै अठारै मास खमण भलो, जय गणपति रे पास।
प्रथम चरम चौमासा विण सहू, भेला कीधा तास॥
१९ छेहडे कारण दस्त तणो हुवो, अन्न अरुचि अधिकाय।
आलोइ निंदी निसल्ल हुवा, संत सत्यां नै खमाय।
२० पंच महाव्रत आरोपाविया, पाप अठारै आलोय।
सुमति गुप्ति में जे अतिचार नै, आलोई निंदी सोय॥
२१ सागारी अणसण उच्चराविया, तेरस सांझ विचार।
ऊंचै स्वर सती मुख उच्चरै, आणी हरख उदार॥
२२ जयगणी आया वनांजी भणी, दर्शण देवा काज।
सरुपचंदजी स्वांम पधारिया, वली आयो सुत मघराज॥
२३ विवध परिणांम चढाया सती तणा, सुण सुण सती हरषत।
भाग प्रमाणे जोग मिल्यो भलो, अति हितकारी अत्यंत॥
२४ सिरदाराजीसाहाज दियोसतीभणी, व्यावच विविध प्रकार।
विविध परिणांम चढाया चूंप सू, लीधो लाभ अपार॥
२५ पचीसै द्वितिये वैसाख मे, कृष्ण पक्ष कहिवाय।
चउदश तिथ पाछली रात्रि में, पहुता परभव माय॥
२६ तेर खंडी मांडी करी श्रावकां, वाजंत्र विविध प्रकार।
सावज कार्य संसार ना, नही धर्म पुन लिगार॥
२७ उगणीसै पणवीसे वैसाख मे, शुक्ल बीज गुरुवार।
गुण गाया वनाजी तणां, जय जश हरष अपार।

साध्वी गुलाबांजी[1]

(ख्यात सं० २८७।४-१९)

ढाल

दोहा

१ समरूं जिन चउवीसमा, गोयम ना गुण गाय।
भीखू भारीमाल ऋषराय नैं, प्रणमूं मन वच काय॥

२ मुनि भीखू ना गण मझै, संत हुआ सुखदाय।
बड़ी बड़ी सतियां थई, दिन दिन सोभ सवाय॥

३ दिन दिन दीसै दीपतो, जिन मग जय जश कार।
सासण स्वाम सुहामणा, वारु गण वृद्धि कार॥

४ सती सयाणी सोभती, नांम गुलावां सार।
चारित्रावर्णी खयोपसमे, आयो चरण उदार॥

५ उत्पत्ति तेहनी आखियै, सांभलजो सहुकोय।
गुणवंत ना गुण गावतां, हरष सुजय जश होय॥

*सती गुलावां तणा गुण गाइयै रे॥ ध्रुपदं॥

६ देश मुरधर मांहि दीपायो रे, लाडणूं सहर सोभायो रे।
श्रीजिन धर्म नी महिमा सवायो॥

७ दूगड जाति डाह्मलजी सुजांणी, शिवजीरांम पुत्र पहिछांणी।
तस नार 'गुलां'[2] सयाणी।

८ वारु वैराग अधिक विसेखो, पोसा पडिकमणा सखर संपेखो।
दया सील गुणे दिल देखो॥

९ घणां थोकडा चरचा ना जांणी, पवर झीणी रहिसां पहिछांणी।
वारु बोलै विचार नैं वांणी॥

१० विविध प्रकारे तप कियो भारी, तन खंखर कियो तिवारी।
ध्यांन समरण अधिक उदारी॥

---

*लय : प्रभू नेमीनाथजी मुंज प्यारा जी……।

१. देखिए परिशिष्ट २, सं० १०

२. गुलावांजी।

११ सत्यासीया वर्ष पहिलां ताह्यो, चद्रभाणजी री सरधा मांह्यो।
पछै मिलिया पूज ऋषरायो ॥
१२ चौराणूंए वर्स पिउ साथे, सील आदरियो हेम हाथे।
वारु सोम मुद्रा सुविख्याते ॥
१३ वहु वर्स श्रावक धर्म पाल्यो, वर श्रावक धर्म उजाल्यो।
वहु आरंभ थी मन टाल्यो ॥
१४ सामायक पोसा ते वहु कीधा, लाभ धर्म ना लीधा।
समता रस प्याला पीधा ॥
१५ दिख्या लेवा रा चढता परिणांमो, आज्ञा नो कागद अभिरांमो।
पिउ पास लिखायो तांमो ॥
१६ तेह नीं नकल लिखाई ताह्यो, मूल कागद हाथ न आयो।
पछै आया मेवाड रै माह्यो ॥
१७ ऋष जीत नैं कागद दिखायो, पूछा विविध पणै करी ताह्यो।
पिण नकल रो भेद नही वतायो ॥
१८ इकवीस दिवस उनमांनो, तठा पछै दिख्या दीधी जांनो।
जांण्यो सुध ववहार प्रमाणो ॥
१९ चारित्रावर्णी खयोपसम ताह्यो, तिण कारण चारित्र आयो।
वीजूं आवणो कठिण अथायो ॥
२० तीन मास दिवस तीन जानो, पाल्यो है चरण प्रधांनो।
ओ तो आय लागो अवसानो ॥
२१ छेहडे चौथ भक्त वहु कीधा, तीन छठ भक्त प्रसीधा।
दोय अठ भक्त जश लीधा ॥
२२ तेला में अणसण मांग्यो उदारो, करावो जावजीव संथारो।
वार वार मांग्यो तिणवारो ॥
२३ सागारी अणसण उचरायो, दोय महूर्त्त आसरै आयो।
पौहता परलोक रै मांह्यो ॥
२४ संवत उगणीसै दशे विचारो, भाद्रवा विद दशम सारो।
श्रीजीदुवार मांहै सुखकारो ॥
२५ जीत दर्शण नित्य दियै आयो, सिरदारांजी दियो साहाज सवायो।
प्रसिद्धपणैं पंडत मरण पायो ॥
२६ संवत उगणीसै दशे दीपायो, काती सुदि चौदश गुण गायो।
सती जयजश करण सुहायो ॥

साध्वी सेरांजी[1]

(ख्यात सं० ३०६।४-३८)

ढाल

दोहा

१ सेरां सती सुहांमणी, ग्रहस्थ पणा रे मांय।
पियर सैंहर हरसोर में, जाति कटारचा ताय ।।

२ नवानगर में सासरचा, जाति मुणोत सुजांण।
गजमल श्रावक दीपतो, तास वहू पहिछांण ।।

३ श्रद्धा भेष धारचां तणी, हुंती प्रथम अयांण।
पछै तास छिटकाय नैं, थइ जीवादिक नी जांण ।।

४ तप वहुलो घर में कियो, घणां वर्स लग जोय।
पाछै पिउ आज्ञा लई, संजम लीधो सोय ।।

*धिन-धिन सेरांजी सती ।।ध्रुपदं ।।

५ संवत उगणीसै तेरे समै, मृगसिर सुद पक्ष मांह्यो जी कांइ।
नवमी दिन नीकी परै, थया दिक्षा महोछव अधिकायो जी कांइ ।।

६ सरल भद्रीक सुहांमणी, सतगुरु नी सुवनीतो।
चोथ छठ अठमादिक, अठाई तांई सुरीतो ।।

७ गणपति पासे महागुणी, सखर चौमासा दोयो।
प्रथम चौमासो वीदासरे, दूजो लाडणूं जोयो ।।

८ विचरत विचरत आविया, सैंहर वीदासर मांह्यो।
कारण तन में ऊपनो, तिणसूं विहार कियो नहीं जायो ।।

९ तीजो चौमासो वीदासरे, चौमासो उतरचां जांणी।
जय गणपति दर्शण दिया, वहु संत सती पहिछांणी ।।

१० सिरदारांजी आदि दे, अधिक परिणांम चढावै।
जयगणी विविध प्रकार सूं, संवेग अति उपजावै ।।

*लय : प्रभू वीनतड़ी अवधार……।

१. देखिए परिशिष्ट २, सं० ६

११ आलोवण आछी तरै, गणपति आप कराई।
महाव्रत आरोपाविया, सखर सती रे सैंठाई॥
१२ अणसण सागारी भलो, अंत समय उचरायो।
सावचेत चित सती तणो, पौहर दोय आसरै आयो॥
१३ पोसी पूंनम परभवे, अधिक चरण नै पोखो।
उगणीसै सोले समै, तप कर आतम सोखो॥
१४ तीन वरस सवा मासरै, आसरै संजम पाल्यो।
जय जय जय जन उच्चरै, जिन आत्म उजवाल्यो॥
१५ धन धन सती ना वैराग नै, धन धन सती नो सुभ ध्यांनो।
उत्तम चरण अराधियो, कीधो जन्म किल्यांनो॥
१६ सती सेरां ना गुण गाविया, वर्स सोले उगणीसो।
महा विद चवदश सनि दिने, गणि संपति विसवावीसो।

साध्वी रत्नांजी[1]

(ख्यात सं० ३२७।४-५६)

ढाल

दोहा

१ रत्नांजी रूडी सती, पियर कोठारी पेख ।
सासरिया वर चोरडचा, सैहर मेडते देख ॥
२ मेघ गुरांणा ऊंचवे, तास दोहिती ताम ।
चंदणा सिणगारां कनै, चरण अमोलख पाम ॥

३ असाढे सुदि दशमी चरण, फागुण सुदि संथार ।
नव महिना में रह्या सती, कर गइ खेवो पार ॥
४ मृगसर मे सिणगार ले, आपी गणि नै आंण ।
गणपति ने सिरदार पै, पालै चरण प्रमाण ॥

*सुभग सुगणी सती, रत्ना हद रूडी रे ।
पवर अधिक कीरती गुध सखर सनूरी रे ॥ध्रुपदं॥

५ गणि विहार कियो लाडणू थकी, डीडवांणा सैहर मझार ।
'मालव'[2] थी आय चरण लियो, रतनेस थकी सुखकार ॥
६ पछै विचरत २ आविया जी, जयपुर जयगणि पास ।
आण अखंड आराधती जी, रत्नांजी गुण रास ॥
७ मास सवा मांहि वाहिरै, जवर थया अति झंड ।
तीर्थं च्यार तीखे मने, जांणै मेल्यो रह्यो मंड ॥
८ दर्शण काजे आविया, देश देश ना देख ।
पछिम थली मेवाड ना, हरियांणा नें चूरू विसेख ॥

---

*लय : अभड भड रावणा इंदा सूं·····।

१. देखिए परिशिष्ट २, सं० ११

२. इसके स्थान पर मेडता होना चाहिए ।

९ संत सती भेला थया, एकसौ ग्यारै सुजांण।
संत गुणतीस सुहामणा, समणी वयासी पिछांण॥

१० मुनिवर 'मांणक बागथी'[1], विहार कियो तिणवार।
हरियांणां रा रामनाथ नै, दीधो संजम भार॥

११ रह्या रात्रि बाग रतीरांम रै, विचरत गणि मुनिवृंद।
जोवनेर जाभा थया, थट तीर्थ परमानंद॥

१२ रत्नां रूडी महासती, कर सात कोस नो विहार।
समणी संग आवी सती, फागुण सुदि छठ उदार॥

१३ नवमी तिथि सुणी हाजरी, सुखे समाधे सुतन्न।
आथण रा 'तप'[2] ऊपनो, पिण सती मन अधिक प्रसन्न॥

१४ दशम आहार न आचर्यो, ग्यारस दिन परभात।
किंचित असन अंगी कर्यो, उतरियो तप 'निजात'[3]॥

१५ आथण रा दर्शण दिया, जय गणपति तिणवार।
बे कर जोडी वंदै सती, बैठी थइ अज्जा आधार॥

१६ महाव्रत आरोपाविया, आलोवणा अधिकार।
सुमति गुप्त व्रत नै विषै, आलोवाया अतिचार॥

१७ तन नीं चेष्टा देखनै, अणसण सागारी उदार।
जय गणपति उचराविंयो, सती सावचेत सुखकार॥

१८ अधिक परिणाम चढाविया, वारू वैराग नी वांण।
तहत वचन सती ऊचरै, पवर विवेक पिछांण॥

१९ जीयां तो लाभ चरण तणो, आयु आयां सूं अमर विमांण।
तिहां असंखकाल सुख साहिवी, इम जय गणपति कहै वांण॥

२० सखर सहाज सिरदार नो, आछो वर उपदेश।
सती कहै सरणो आपरो, वर वचन विनय विशेष॥

२१ इम परिणांम चढावतां, अर्द्ध रात्रि उन्मांन।
परभव मांहै पांगर्या, कीधो जन्म किल्यांण॥

२२ अणसण अढी पौहर आसरै, आयो सखर सुजांण।
भाग्य दिशा भारी घणी, जोग मिल्यो हद आंण॥

---

१. माणकचदजी के बाग से।
२. बुखार।
३. तेज।

२३ अधिक अचेत हुवा नही, वेदन बहुल न दीस।
जोवनेर मांहे जश लियो, उगणीसै सतरे जगीस॥
२४ प्रातः महूछव बहुला किया, मांडी जबर मंडाण।
सोना रूप रा फूल उछालिया, कार्य संसार नां जाण॥
२५ उगणीसै सतरे समै, फागुण सुदि वार शनिवार।
गुण गाया रत्नां सती तणी, जयजश संपति सार॥

परिशिष्ट-१

१. मुनि थिरपालजी

(ख्यात सं० १)

[—श्रावक नेमीदास]

ढाल १

दोहा

१ शासण नायक समरियै, चौबीसमा जिनराय ।
मोख पोंहतां महावीर जी, आठूं करम खपाय ।।
२ पदवी पाया मोटकी, तीर्थंकर ते सार ।
नर नारी तारया घणा, दे दे संजम भार ।।
३ ओहिज संजम पालसी, टाली सगला दोख ।
तो वासो देवलोक में, निश्चै जासी मोख ।।
४ ओ तो आरो पांचमों, साधू विरला जाण ।
सांमी थिरपालजी रा गुण कहुं, ते सुणज्यो समता आण ।।

५ *तीर्थंकर चक्रवर्तादिक, इण खंड में लियो अवतारो जी ।
तिण खंड में सांमीजी जनमिया, मरुधर देश मझारो जी ।।
६ लांबीया नगर सुहामणो, त्यां ऊंचे कुल अवतारो ।
पूर्व पुण्य पसाय थी, लह्यो मानव भव सारो ।।
७ आय ओसवाल घर जनमिया, साहा राहासिहजी घर जामो ।
पांच इन्द्री पाया निरमली, ज्यांरो थिरपालजी है नामो ।।
८ ज्यांरै घरे फतेहचन्दजी अवतरया, हुवा काकड़ाभूतो ।
माता एहवा पुत्र जनमियां, त्यां दिया मुगत रा सूतो ।।
९ किता दिन तो गृहवासे वस्या, पछै आदरयो संजय भारो ।
ते तो दरबे संजम जाणियै, हिवे लेवै सुध आचारो ।।
१० धरम केवलियां रो भाखियो, श्री अरिहंत री सुध आज्ञा ।
तेरे जणा मतो करे, सांमी मोह नीद सू जाग्या ।।

*लय : जोयजो अंधारो भेख मे [अथवा सुणज्यो गुण मुनिराजना] ।

११ महाव्रत पालै मोटका, सांमी छः काया रा पीरो।
पांचे सुमते सुमता सदा, तीने गुपत सधीरो॥
१२ बारै भेदे तपस्या करै, संजत सतरै प्रकारो।
बाईस परिसा जीतणा, गुण सताईस भण्डारो॥
१३ बयालीस दोपण टाल नैं, निरदोषण आहार ल्यावै।
बावन अणाचार 'मूकं'[1] नैं, सुध आचार चलावै॥
१४ ऐ तो आवंता कर्मा नैं रोकिया, हिवे पूर्व करम खपायो।
किण विध तपस्या आदरै, ते सुणज्यो चित ल्यायो॥
१५ श्री भगवंत भाख्यो इण विधै, धर्म हुय हुय नैं मिट जासी।
भेषधारी हुसी घणा, सुध साधू विरला थासी॥
१६ सूत्र दशवीकालक साख छै, अध्येन सातमें चाल्यो।
गाथा अड़तालीसमी देख नैं, इण साख सूं ओ पद घाल्यो॥
१७ सुध आचारी एहवा साध छै, श्री भीखणजी आद दे जाणो।
धर्म केवलियां रो भाखियो, इण मे शंका मत आणो॥
१८ साध नै वले साधवी, विचरै गामां नगर मझारो।
देखो जी आरे पांचमें, ओ सांमीजी को धर्म सारो॥
१९ घणा जीवा नैं प्रतिबोधिया, घणा जीवां नैं समकित आपी।
केई तो व्रतधारी हुआ, केई तपस्या री इच्छा थापी॥
२० इण विध विचरे लोक में, इण विध ओ धर्म पालै।
महाव्रत पालै मोटका, सांम दोषण सगला टालै॥
२१ विचरतां विचरतां लोक में, आया खैरवा शहर मझारो।
हिवे धरम दीपावै किण विधै, ते सुणज्यो विस्तारो॥

ढाल २

दोहा

१ किणविध तपस्या आदरै, किणविध काटै कर्म।
किणविध करै संलेखणा, ते सुणजो छोडी भर्म॥
२ रण संग्राम में संचरै, वेरया देवण बाढ।
ऊभा देखै राजवी, तो रहै लोकां में 'गाढ'[2]॥

१. वर्ज कर। २. प्रतीत।

३ संजम रूपी ढाल कर, तप रूपी तरवार।
करमां नैं काट्या इण विधै, धन मोटा अणगार॥
४ प्रसंस्या परलोक में, ए संत सादूला सीह।
जीत नगारा वजाविया, अमर हुआ 'अवीह'[1]॥

*धन-धन स्वामीजी मोटका ॥ध्रुपदं॥

५ आसाढ विद पख आदरै, तपस्या तणी तरवार।
चवदै तो दिन सामीजी पचखिया, अमावस दिन रविवार॥
६ पूनम दिन कीधो सामी पारणो, पारणे कीधा छै दोयो।
श्रावण विद तीज 'सनी'[2] दिने, वेला रो पारणो होयो॥
७ आठ तो दिन वले पचखिया, पारणे वले कीधा आठ।
तोहि संघेण सेठो घणो, दिन दिन आणंद गहघाट॥
८ सावण सुद सातम दिने, सो सही छै ओ वारो।
पारणो कीधो स्वामी उण दिने, वले वेलो कियो अणगारो॥
९ दोय दोय स्वामी जी दोय किया, पारणे पचख्या छै वीस।
देखो जी साध सेठा घणा, छोड्या छै राग नें रीस॥
१० नर नारी आवै वहु वांदवा, स्वामी चरचा करण सधीर।
चवदै तो नेम सीखावता, देही कर दीधी 'जंजीर'[3]॥
११ वीस दिनां रै स्वामी पारणे, तेला कीधा छै दोय।
भादवा सुद पख पूनमी, गुरुवार पारणो होय॥
१२ प्रथम भादवो पूरो थयो, तपस्या कीधी मुनिराय।
वीजे भाद्रवे वली तप उच्चरै, ते सुणज्यो चित्त ल्याय॥
१३ दस षट दिन वली पचखिया, पारणे अन्नादिक नही लीधो आहारो।
सोलै दिना रै स्वामी पारणै, पचख्या छै वली च्यारो॥
१४ तपस्या तणी 'तेग'[4] बांध नै, मदमत्त गज चढिया छै एम।
च्यार दिन वली तप पचखिया, पारणे नव दिन रो वली नेम॥
१५ काया रो गढ आप वस कियो, 'भोमिया'[5] कर लीधा भीड।
तपस्या करी कर्म काटिया, सुद्ध गति घाल्यो सीर॥
१६ नौवां दिनां रे स्वामी पारणे, पचख दिया वलि पांच।
विरला तो जीव इसी आदरै, विरला री जांणो एहवी पोंच॥

*लय : संलेखणा री तपस्या री।

१. अभय।
२. पहले पीछे की तिथि व वार को देखते हुए यहां गुरुवार होना चाहिए।
३. जर्जर।
४. तलवार।
५. अंतरग शत्रु।

१७ पांच तो दिन वली पचखिया, आठ दिना रा किया पचखांण।
इसडी कीधी संलेखणा, साची तो पाली जिन आंण॥
१८ आसोज सुद पख आवियो, चवदस सनीसर वारो।
आठ दिनां रै स्वामी पारणे, थोड़ो सो लियो सुध आहारो॥
१९ इणविध कीधी संलेखणा, इण विध काटिया कर्म।
सर्व पारणा सतरै किया, वली वधारै स्वामी धर्म॥
२० धन धन साधूजी आपनें, धन धन आपरो ज्ञान।
साधूजी संथारो कियो, मन कियो मेरू समान॥
२१ सखरी तो कीधी मह्वा साधजी, तीनूंइ त्यागे दीया आहार।
कने साध सुखोजी तिलोकजी, विनै वियावच रे इधकार॥
२२ नर नारी केइ इचर्य थया, धन धन स्वामीजी अणसण कीध।
वृन्द रा वृन्द आवै वांदवा, स्वामीजी रे मूढै व्रत लीध॥
२३ केइक चोथो व्रत आदरै, केइ वारै व्रत आदरै सूर।
समायां तणो विरहो नही पडै, तिथ पखी पोसां रो पूर॥
२४ केइ एक श्रावक करै अभिग्रहो, सचितादिक छोडै मन हूंस।
संथारो न सीझै स्वामी आपरो, त्यां लगे मैथुन रो करे सूस॥
२५ केइ एक बाई भाई इम कहै, काचा पांणी रा मोनें त्याग।
केइ तपस्या करै अति घणी, दिन दिन अधिक वैराग॥
२६ शहर में सूंस व्रत हुआ घणा, ते किम कहुं विस्तार।
इवरत मेटी घणा जीव री, ते सांमीजी तणो उपगार॥
२७ आछीतो करणी स्वामी आपरी, ते घनां नी परै जांण।
जीभ तो एक नै गुण घणा, ते किम करूं वखांण॥
२८ मिथ्याती जीव केइ इम कहै है, एहवा साधू कांइ वंदो जाय।
ते नर टोला जी वाजता, चलिया नरक में जाय॥
२९ समगती जीव केइ इम कहै, चालो साधूजी रा वांदा पाय।
इव्रत घटावो इण जीव री, ते नर सुध गति जाय॥
३० इग्यारै दिन अणसण रह्यो, छटके छोडी स्वामी देह।
नगर में आणंद ओछव हुवो, दूधां वूठा छै मेह॥
३१ मंढी तो कीधी श्रावगां बडी, खंड बण्या 'नव चार'[1]।
घणा बाजंत्र सोभा अति घणी, ओ गृहस्थ तणो ववहार॥
३२ साध तो सुधगति संचरया, श्रावक लीधा पालै नेम।
इण धर्म मांहै सेठा रहै, तिण घर कुशल नें खेम॥

---

१. तेरह।

३३ पातल सुत इंद्रसिघजी, त्यारै बडभागी वली पूत ।
त्यांरै गाम में साधू चोमासे रह्या, करणी कीधी करतूत ॥

३४ समत अठारै तेंतीस में, कातिक मास वखाणो ।
विद पख ग्यारस गुरु दिने, स्वामीजी रो अवसर जांणो ॥

३५ धन धन स्वामी म्हारा गुरु भणी, ओ धर्म समकित दीध ।
श्रावक नेमीदास इम भणै, म्हारो सफल जमारो कीध ॥

३६ जेहवो धर्म जिन भाखियो, एहवा गुरु मिलिया आण ।
मन सुध राखी धर्म पालसी, जिण घर कोड कल्लाण ॥

४० जोड कीधी सतगुरु तणी, खैरवा शहर में जाण ।
श्रावक नेमीदास इम भणै, त्यांरी भवियण करज्यो पिछाण ॥

२. मुनि सुखरामजी

(ख्यात सं० ६)

[—श्रावक चन्द्रभाण]

ढाल १

दोहा

१ वांदूं श्री व्रधमान नैं, कर जोडी सिर नाय।
तीन काल री वात त्यां, दीधो सर्व वताय ॥

२ समंद रूप संसार में, लख चौरासी जीव।
कर्म तणै वस पच रह्या, भुगते कष्ट अतीव ॥

३ दुखिया देखी जगत में, भगवंत श्री व्रधमान।
भव जीवा नैं भाखियो, सांचो समकित ज्ञान ॥

४ वाणी सुण विरक्त हुवा, अथिर जाण संसार।
हलुकर्मी हर्षित हुवा, लीधो संयम भार ॥

५ मुनिवर चवदै सहंस सर्व, 'आर्जियां'[1] सहस छतीस।
पंच महाव्रत परवडा, अदराया जगदीस ॥

६ प्रभुजी मुगत पधारिया, सारै भवि जन काज।
वहु जीवां नै तारिया, तारण तिरण जिहाज ॥

७ लारे आरो पांचमो, लागो भरत मझार।
वरस किता वीतां पछै, हुवो घोर अन्धार ॥

८ 'आगिया'[2] ज्यूं धर्म ऊजलो, झवको हुय मिट जाय।
शुद्ध संतां विन सांच मत, कवण वतावै न्याय ॥

९ अठारेसै सतरोतरे, महापुरुष अणगार।
भीखणजी प्रगटया भला, महा ज्ञान भण्डार ॥

१० निरवद धर्म परूपियो, दे निरमल उपदेश।
भव जीवां नें प्रतिवोध नैं, काटया कर्म कलेश ॥

---

१. आर्यिकाएं (साध्वियां)। २. खद्योत।

११ पाट तिणारै प्रतपै, वडा शिष्य भारीमाल।
पाखंड मत पिछाडतां, रहै धर्म में लाल॥

१२ छोटा साध सुखरामजी, कहुं त्यांरो विस्तार।
श्रावक जन सुणजो साहू, हरप धरे अणपार॥

*धिन-धिन साध श्री सुखरामजी ॥ध्रुपदं॥

१३ जम्बुदीप रा दिखण भरत में, आरज खेतर सिरताज हो। भविकजन।
देश मुरधर कहियै दीपतो, जठे राठोडां रो राज हो। भविकजन॥

१४ लोहावट नामें गांव तिहा वसै, परगने फलोदीरे पिछाण।
नैणसुखजी नाम महाजन दीपता, श्री श्रीमाल वखाण॥

१५ गंगा माता री कूख मे अवतरया, सुखरामजी तिण ठांम।
मात पिता पोप मोटा किया, सतरेसै नियासै तांम॥

१६ पांचूं ही पांम्पा इन्द्री परवडी, विनैवंत वडभाग।
जैन धरम सुण्यो मन दिढ थके, लागो धरम सू राग॥

१७ भारी संत भीखणजी भेटिया, आई समकित सार।
वैरागे वाईसे वरसे खैरवे, लीधो संजम भार॥

१८ संयम लेईनै सुध पालता, करता उग्र विहार।
धर्म दिपावे श्री जगदीश रो, आतमा रो करत उद्धार॥

१९ घणा जीवां नै समभावता, देता समकित सार।
अज्ञान मिथ्यात उडावता, करता पर उपकार॥

२० मारवाड नें मेवाड देश में, हाडोती ने ढूंढार।
वीर तणी आज्ञा मांहे विचरता, करता करमा सू राड॥

२१ नगर पिसांगण रा श्रावका मिले, अर्ज कराई इण भात।
कीजे चौमासो नगर पितम्वरी, म्हांनैं दरसण री मन खात॥

२२ मानों अर्ज सुणो मोटा मुनि, अठारैसैं वासठे जाण।
नगर पीसागंण चौमासे पधारिया, मुनि गुण रतनां री खान॥

ढाल २

दोहा

१ साधु पिसांगण शहर में, आया सुध अणगार।
दया धर्म दीपावता, मोटा मुनिवर च्यार॥

*लय—पूजजी पधारो हो नगरी सेविया......"।

२ साध वडा सुखरामजी, ज्ञानवंत भद्रीक।
सरल सभावे शोभता, त्यां सूं मुगत नजीक।।
३ ज्ञान ध्यान कर नांनजी, डाहा चतुर सुजाण।
त्यागी वैरागी तेकरे, आठ करमां री हाण।।
४ वेणीदास जी दीपता, त्यांरी कला बुध वखाण।
नर नारी हरषत हुवे, सुण सुण निरवद वाण।।
५ डूगरसीजी नहीं डिगै, डूंगर जेम अडोल।
वालक वय वैरागिया, त्यांरो भारी तोल।।
६ गुण साधां में अति घणां, पूरा केम कहाय।
नहीं पहुंचै नर नारियां, इन्द्र केहत थक जाय।।
७ साध कहै सुखरामजी, तप रूपी शमशेर।
'हुई जोजरी झूंपडी'[1], नाखूं ताह विखेर।।
८ साध करै सहु वीनती, करो उतावल कांय।
विहार करो विचरो सुखे, मारवाड रे मांय।।
९ विरक्त हुवा संसार थी, सुखजी साचा सूर।
'तेग'[2] भाल तप रूपणी, करै कर्म चकचूर।।
१० किण विध तपस्या आदरै, किण विध करै संथार।
धर्म दीपावै किण विधे, ते सुणज्यो विस्तार।।

*सुखजी स्वामी नैं नित्य वंदियै ।।ध्रुपदं।।

११ केई दिन कीधी अणोदरी, अन्न तणी रुचि उतार।
सावन सुद एकादशी, लगता किया सामी च्यार।।
१२ चवदश रै दिन 'चूप'[3] सूं, चोला रे दिन अणगार।
मन में न डरिया छै मौत सूं, थाप दियो छै संथार।।
१३ धिन-धिन सांमी आपरा गुण भणी, धिन सांमी आपरो ज्ञान।
धिन २ स्वांमी आपरा नाम नैं, मन कीधो मेरू समान।।
१४ पांचू ही पद सांमी वादिया, नमोथुणं कियो सिर नाय।
साध श्रावकां नैं खमायनैं, तीनूं आहार दिया वोसराय।।
१५ पांचूं ही महाव्रत आदरया, नही लागो कोई अतिचार।
वरस गुनतालीस जाभा विचरिया, संयम पाल्यो खडगधार।।

---

१. शरीर रूप झौपडी जर्जर हो गई।
*लय—देशी—एहवा मुनिवर वांदियै जी………।
२. तलवार। ३. उमंग।

१६ करली तपस्या सांमी आदरी, करला कीधा घणा सूंस।
नही राखी आश संसार नी, मन धरे मोक्ष तणी हूंस ॥
१७ धिन तके साध सेवा करै, विनै भगत करै वहु भांत।
धिन तके श्रावक दरसण करै वाणी सुणै कर-कर खांत ॥
१८ धिन तके श्रावक श्राविका जी, सावज कामा देवै त्याग।
सांमी जी कनें हाथ जोड़नैं, सूंस करे आण वैराग ॥
१९ केइक तपस्या आदरै जी, केइक पालें छै शील।
केइक समायक पोसा करै, रहै वैराग मै 'लील'[1] ॥
२० अठाईस दिन अणसण रह्या, ध्याया सामी निरमल ध्यान।
उत्कृष्टी तपस्या करी भली, रह्या घणा सावधान ॥
२१ 'खुधादिक परिसा'[2] वहु भांत रा, समे परिणामां खमो आप।
'टसको'[3] 'सिसकोइ'[4] सामी नही कियो, जप रह्या जिण जी रो जाप ॥
२२ इचरज आवै सांमी आपरो, सेठां रह्या जेम सुमेर।
दीन वचन नही दाखियो, राग द्वेष कर दियो 'जेर'[5] ॥
२३ भादवा सुद नवमी दिने, वांदिया सिद्ध भगवन्त।
हाथ जोड़े मन हरष सूं, सगला ही वांदिया सन्त ॥
२४ पोहर एक दिन रह्यो पाछलो, कर दियो सांमीजी काल।
मारग दिपायो सांमी मोक्षरो, तोडे घणा कर्मा रा जाल ॥
२५ साध तो सद्‌गति संचरया, नही कीधो राग नें रीस।
मोटे मंडाणे कर श्रावका, माडी कीधी खंड पचीस ॥
२६ श्रावक री अरज सांभलो, कर जोड़े कहै चन्द्रभाण।
भव-भव सरणों सामी आपरो, मेट दीजै 'आवा जी गमण'[6] ॥
२७ अंत काले सांमी मांहरो, मन रहज्यो चरणा रे माय।
जिन धर्म कवहूं नवि वीसरूं, अरज करूं सिर नाय ॥
२८ अरिहंत देव आराधसी, गुरु निग्रंथ अणगार।
धर्म अहिंसा जिण भाखियो, तिण घर मंगलचार ॥
२९ मुझ बुद्ध तुच्छ जल बूंद ज्यूं, आप गुण समंद समान।
फूल री जायगां पांखड़ी, अर्ज हमारी लीजै मान ॥

---

१. लीन।
२. भूख आदि परीषह।
३. टसकना।
४. सिसकना।
५. परास्त।
६. आवागमन।

३. मुनि सामजी रामजी

(ख्यात सं० २१, २३)

[—मुनि हेमराजजी]

ढाल

दोहा

१ देस हाडोती दीपतो, दवलाणा गाम मझार।
त्यां नगजी साहा श्रावगी वसै, तिण रै रंभा नामें नार॥

२ त्यारै दोय पुत्र आय ऊपनां, युगल पणै सुखदाय।
साम राम सुहामणा, दीठा हर्षत थाय॥

३ अनुक्रमे मोटा हुवा, पछै बूंदी वसिया जाय।
किण विध समजै धर्म में, ते सुणज्यो चित ल्याय॥

*सुणज्यो साम राम री वारता रे लाल॥ ध्रुपदं॥

४ तिण काले ने तीण समै, स्वामी थिरपाल जी अणगार।
विचरै आतम भावता, त्यांरै सुत फतैचंद श्रीकार॥

५ त्या बूंदी शहर चोमासो कियो, घणी महिमा हुई सहर मांय।
नर नारी आवी दर्शण करै, मिलिया तपस्वी साध अपूर्वआय॥

६ साम राम साधां नैं देख नै, वन्दणा करी सनमुख वैठा आय।
वांणी सुण चरचा करी, त्यां ग्यान अपूरव पाय॥

७ कूल रूढ कांइ राखी नही, साचो लियो श्रीजिन धर्म।
गुरु किया पूज भीखणजी भणी, छोड दीयो सर्व भर्म॥

८ काल कितो एक वीतां पछै, भेटिया भीखू अणगार।
मेडता शहर मांही मिल्या, दीठां हुवो हर्ष अपार॥

९ त्यांरा वचन सुणी हीये धार नैं, पाछा आया हाडोती चलाय।
मन भागो संसार कारज थकी, संजम लेवा हर्ष ओछाय॥

१० साध पणो लेवा नीकल्या, मतो करी दोनूं भाय।
आया शहर केलवे चलाय नैं, वांद्या श्री भीखनजी ऋषराय॥

*लय : धीज करै सीता सती रे लाल.......।

११ सामजी दिख्या पहली ग्रही, पछै रामजी लीधी लार।
समत अठारै अडतीस में, करवा आत्म नो उद्धार ॥
१२ घणा वर्षा लग विचरिया, दोनूं भायां री पूरी परतीत।
वोल थोकडा ग्यान सीखावता, उदमी घणा सुवनीत ॥
१३ गामां नगरा विचरतां थकां, पाली शहर चोमासो कियो आण।
तिहां महिमा घणी जिन धर्म री, त्यांरे साथे छै साध सुजांण ॥
१४ त्यां तपस्वी भोपजी अठावन किया, तपस्या कर छोड्या प्रांण।
महिमा हुई जिन धर्म री, नर नारी कर रह्या वखांण ॥
१५ ओछग मोछव हुवा घणा, लारे वधियो घणो वैराग।
सूस व्रत पचखाण वधिया घणा, त्यारो धर्म ऊपर वहु राग ॥
१६ हिवै अवसर आयो सामनों, कांइ एक असाता उठी आय।
साधा उपवास करायो सही, उपवास में छोड्या प्राण ॥

ढाल २

दोहा

१ समत अठारे छासठे, मृगसर बिद पांचम जाण।
साम परभव पहुंता पाली मझै, हिवै राम रा सुणो वखाण ॥

*सोई सयाणा अवसर साधै, अवसर साधी नैं स्वाम आराधै ॥ध्रुपदं॥
२ हिवै रामजी बिचरया आसरै वर्ष च्यार, साध साधविया स्यूं राख्यो प्यार।
हिवै सतगुरुजी नी आग्या पाया, छेहले चोमासे इंद्रगढ आया ॥
३ च्यार मास एकातंर कीधा, तिणमें केइ पारणा लूखा लीधा।
देही नै क्षीण पाडी छै सोधी, भव जीवा नै रह्या प्रतिवोधी ॥
४ वर्ष वतीस आसरै प्रवरज्या पाली, छेहले अवसर सूरत संभाली।
संथारो कियो सम भाव, कर्म काटण रो ओहीज डाव ॥
५ श्रीरामजी मुख स्यू इम फरमाई, साध साधव्या नैं दीज्यो खमाई।
किण स्यूं राग द्वेष कीधो हुवै किणवार, मिछामी दुकडं मांह रै इणवार ॥
६ आलोवणा कीधी सल्य काढी, जिनमार्ग नै सोभा चाढी।
पांच महाव्रत नै फेर आरोपी, संवर कर आतम नै 'गोपी'[1] ॥

*लय : देखो रे मोहकर्म ना चाल।.....।
१. वश मे की।

७ चोरासी लाख जीवा नैं खमाय, आलोवी निंदी निसल्य थाय।
पाप अठारा आलोया आप, टाल्या भव भव नां संताप ॥
८ श्रीरामजी लीधा मोटा सरणा, कर्म वैर्‍यां नैं दूरा करणा।
श्री अरिहंत सिद्ध साधु सुध धर्म, ए चार सरण उत्कृष्टा पर्म।
९ कितरा एक दिवस असाता पाई, दिवस तीन पाव रोटी खाई।
पछै साधां कराय दीयो संथारो, तिण मांहि वरत्या छै पोहर चारो ॥
१० सुध परिणामां स्यू सुध गति लेसी, देवतणा सुखमें गेह गहसी।
पछै बेगा जासी मुक्त मंजार, सुध संजम पाल्या सुखकार ॥
११ कूसालांजी तप करडो कीधो, छेहले अवसर अणसण लीधो।
श्रीरामजी रो होय गयो साथ, आही इचरज वाली वात ॥
१२ समत अठारै सितरै वर्ष, इंद्रगढ चौमासे उपगार सर्स।
काति सुद दशम नें बुधवार, श्रीरामजी खेवो कर गया पार ॥
१३ श्रीरामजी रो संथारो सीधो, भायां मिल नैं मोछव कीधो।
सूस पचखाण हुवा सम भावो, इंद्रगढ में हुवो हर्ष उछावो ॥
१४ साहा मोजीरामजी अगरवालो, सेज्यातर मिलियो सुद्ध रसालो।
साधां सुखे चोमासो कीधो, त्यां श्रीरामजी संथारो लीधो ॥
१५ श्रीरामजी रो संथारो सुणीज्यो, संगती सारु वैराग करीज्यो।
स्वाम नें राम दोनूंई भाई, साधां मांय हुवा सुखदाई ॥
१६ समत अठारै सितरो जाण, सांम राम रा किया वखांण।
काती सुद तेरस सनेसरवार, साम राम नै नमो नर नार ॥

४. मुनि खेतसीजी

(ख्यात सं० २२)

[—मुनि कर्मचन्दजी]

ढाल १

*जनक भोपोसाह दीपतो रे, माता हरु नो नंद।
भीक्षु समीपे संजम लियो रे, खेतसीजी सुखकंद ।।ध्रुपदं।।

१ साताकारी सतजुगी स्वामी, गण में लही शोभ अमामी।
विनय गुण आतमा नामी, हुवो जग अंतरजामी ।।

२ गुरु भक्ता गिरवा घणा, सुमत गुप्त सुध नीत।
सुविनीतां सिर सैहरो, च्यार तीर्थ मे वदीत ।।

३ वृद्ध गिलाण तपसी भणी, वालक साध जुवान।
व्यावच साहज देवे करी, स्वामी जनक समान ।।

४ गण हितकारी गुवाल जू, संजम तप में सूर।
गंगा समुद्र पूर ज्यूं, ग्यान गुणे भरपूर।

५ सरल भद्रीक सुहामणो, जिनमत में धोरी जाण।
खिम्यावंत ऋषिराज ना, भीक्षू रिख किया वखांण ।।

६ भीक्षू ऋष भारीमालजी, तीजे पाट ऋषिराय।
तीन आचार्य नी वार में रह्यो, सतजुगी नो वहु साज ।।

७ उगणीसै चौके समै, सहर कांकडोली मांय।
गुण गाया सतजुगी तणा, पूज तणै सुपसाय ।।

---

*लय : राजनगर भणता थका ....।

ढाल २

[—मुनि जीवराजजी]

१ *सतजुगी संत सुजाण रे, गुणधारी रे गिरवा,
श्रीजीदुवारे संसार तजी संजम लियो रे लो।
विविध विनय गुण पूर रे, गुणधारी रे गिरवा,
भीखू गुरु पासे ज्ञान अभ्यासियो रे लो ।।ध्रुपदं।।

२ जनक भोपोसाह सुजाण, जाति सोलंकी माता हरू नो जाइयो।
खेतसीजी गुण खांण, गण माहै साची शोभा पावियो ।।

३ सुवनीतां सिरमोर, कार्य भलायां उचरंग अधिको पावता।
साताकारी स्वाम, मन गमता उपधादिक गुरु नै धामता ।।

४ उपसम रस ना भंडार, दीन दयाल कृपाल दसावंत दीपता।
च्यार तीर्थ नो आधार, ग्यान गुणा करिवै वेरी इंद्री जीपता ।।

५ भद्र गुणे भरपूर, विनय विवेक विचार आचारी आकरा।
तप जप खम गुणधाम, सतजुग सरीखा सतजुगी गण में था खरा।।

६ लेता सासण सार, संत सत्या नैं 'छोरू'[1] जेम संभालता।
जनक मावीत समांन, लघु वृद्ध तपस्यां ने पोते पालता ।।

७ झीणी रहिस ना जांण, दान दया नैं दीपाय मिथ्यात उडावता।
सतगुर किया रे वखांण, करडी काठी प्रकृति साध निभावता ।।

८ दरसण सोम दीदार, गुरुकुल वासे वसिया वैराग वधावता।
तपसा करण करुर, सतगुरु नी सेवा में साता पावता ।।

९ इम गुण-सिंधु अतोल, ज्ञान दृष्ट दातार घणा नैं उद्धरचा।
कीधो जीव किल्याण, अणसण कर अराधक होय ने संचरचा ।।

१० पुज नै प्राण समान, मातुल वाज्या जन मांहि गाज्या हेज थी।
धर्म धुरंधर धीर, चित माहि वेदी साता भल भाणैज थी ।।

११ श्री पूज परसाद, कीरत जोड कहूं छू मस्तक नाम जी।
अव धारो अरदास, चेतन ऋष सुनिजर मांगै स्वामजी ।।

१२ च्यार तीर्थ ना आधार, पुज हेम ऋषराय पधारचा थाट सूं।
दीक्षा लीधी दीपचंद, गाम धोइंदे गूज्या गुण गहघाट सूं ।।

१३ समत उगणीसै संभाल, वर्स चोका रो 'आंगण'[2] मांसज आवियो।
सुद सातम सुखकार, राजनगर में सुजश जोड सुणावियो ।।

*लय : जोधाणा री वाड़ी ।
१. संतान ।
२. अगहन (मृगसर)।

५. मुनि हेमराजजी

(ख्यात सं० ३१)

[—मुनि कर्मचन्द]

ढाल १

१ *हेम रिषी चिंतामणि सो भज, प्रात समै सुखदाई।
वैर विघन दुख सोग मिटै सहु, आणंद अधिक वधाई॥

२ सासण वन में कलप फल्यो मुनि, किरपा दृष्टि दिखलाई।
आगम न्याय अमर फल आप्या, समगत रैस धराई॥

३ तीर्थ मंदिर में दीप जग्यो है, ज्ञान जोत रही छाई।
तत्व सरूप प्रकाश करी नैं, शिवपुर वाट दिखाई॥

४ लेह कंचन पारस फरस्या थी, तिनकी क्या अधिकाई।
परम पारस हेम गुण समरो, शिवपुर सुख नी साई॥

५ सीतलचन्द समो गुणसागर, थविर नी पदवी पाई।
हेमाचल सा धीर गुण उज्जल, जोग मुद्रा दीपाई॥

६ संजम तप सज्झाय में सूरा, ध्यांने धुन लगाई।
अतिशयवंत दिदार देखवैं, नैंन कमल विकसाई॥

७ सूरज समो तप तेज चमकै, चन्द ज्यू सीतलाई।
अगाध खिम्यां संतोष कोमल गुण, रह्यो जगत जस छाई॥

८ धरम मुरत हेम गुण गहरा, निपुण बुधी लिव ल्याई।
ध्यान धरी चित में जो समरै, ते अनुभव सुख पाई॥

९ पाली सैहर प्रसिद्ध चोमासो, संत नवै सुखदाई।
समत उगणीसै छ का नैं वरसे, हेम कीरत गुण गाई॥

ढाल : २

१ सांमी ऋषिराज हेम, समरो सुखदाई।
उजागर सांम केरो रह्यो, जगत सुजश छाई॥

लय : प्रभाती……।

२ जिनमत सिर भार भयो, धोरी ज्यूं ध्याई।
उजल आचार खीम्या, गुणी जिनवर दाई ॥

३ सूरज संमो तेज तप, चन्द ज्यूं सीतलाई।
गंभीर दरियाव नी परै, वारु धीरज ताई ॥

४ निरमल व्रत सुमत गुपत, शिव सुख नो चाहि।
भव समंदर तारवा नै, जहाज सो सहाई ॥

५ देसना वैराग वाण, मेघ ज्यूं वरसाई।
भवीजन मन सुणत चक्खु, देखत विकसाई ॥

६ आगम 'पाखर'[1] पहरसूर, सिंध सो दिखाई।
चरचावाद अड्या पाखंड, 'अजा'[2] ज्यूं पुलाई ॥

७ दीर्घ देह किरिया चाल, गुरु ज्यू दिपाई।
गजराज समांन गमन सोहै, इरज्या धुंन छाई।

८ सरणागत भक्त-वच्छल, चरण रयण तांई।
काम किरोध जीतियो चित, वीर रस ल्याई ॥

९ संमत उगणीसै छके, पोस मास मांही।
सुखवास सिवास गांम, हेम कीरत गाई ॥

ढाल ३

१ दो०: सिव सुखदाता स्वांमजी, भव सायर नी पाज।
निज पर तारक जांणियै, हेम महा मुनिराज ॥

२ *होजी हेम महा मुनिराज, गुणां रा सागरु,
म्हारा सांम गुणा रा सागरू।
होजी धाम धुरंधर धीर कै, अधिक ओजागरू,
म्हारा सांम अधिक ओजागरू ॥ध्रुपदं॥

३ दो०: मधु मकरंद तणी परै, सेवत वहु नर नार।
दरसण प्यासी देखतां, वदन कमल दीदार ॥

४ होजी बदन कमल दीदार कै, भविजन निरखता।
होजी चन्द चकोर तणी परै, तन मन हरखता।

---

१. कवच। २. बकरी।

*लय : इण सरवरियारी पाल उभा दोय राजवी हो लाल ....।

५ दो० वारुं विचित्र प्रकार ना, पर उपगार विचार।
हेम दियै भव जीव नैं, देसना वांण उदार॥

६ होजी देसना वांण उदार, कै वरसै सुधा मेहड़ो।
होजी अन्तर तपत मिटाय, लहै भव छेहड़ो॥

७ दो० समगत वोध पमाय नैं, साध श्रावक व्रत सार।
हिवड़ां भरत में हेम ऋषि, कियो जगत उद्धार॥

८ होजी जगत उद्धारक भरत में, हेम था ऐहवा।
होजी खेत्र विदेह रै मांहि, सीमंधर जेहवा॥

९ दो० आगम रहस्य सिखाय नैं, वारू कला विज्ञान।
सिंधू सम किया सांमजी, (जे) हुंता विंदु समान॥

१० होजी विंदु रा सिंधु समान, कै किया संता भणी।
होजी ग्यांन ध्यान दातार, नी महिमा जग घणी॥

११ दो० नीत निपुण बुध चातुरी, पंडित सरोमण जांण।
जय जश चर्चा वाद में, गीतारथ गुण खांन॥

१२ होजी गीतारथ वहु जांण कै, दीर्घ चक्षु देखवो।
होजी सकत खिम्यां गुणसूर कै, पर गुण पेखवो॥

१३ दो० गुरुकुल वासो सेवतां, लह्यो गण में वहु आघ।
ग्यान ध्यांन गुण वाधिया, भीखू सिष महाभाग॥

१४ होजी भीखु सिष महा भाग, कै तीरथ सिर सेहरो।
होजी दीपतो ऋषि गणमांहि, ज्यूं सुर गिर देहरो॥

१५ दो० परिसा वाय डोलाविया, सुर गिर जेम सधीर।
राग धेष मल जीतवा, कर्म विदारण वीर॥

१६ होजी कर्म विदारण वीर, कै सील जस झलकतो।
होजी समण मुद्रा सोभाय, गयंद गति मलकतो॥

१७ दो० नियम अभिग्रह निरमलो, सिव सुख सेती हांम।
घोर गुणे तप आचर्यो, वहु वरसां लग स्वाम॥

१८ होजी वहु वरसां लग स्वांम, कै संजम सुध पालियो।
होजी जिनवर वचन दीपाय, सासण उजवालियो॥

१९ दो० क्रिया चाल संजम तणी, वपु अतिसय दीपंत।
मुक्ति मारग में संचरया, ज्यूं पूरव काले संत॥

२० होजी पूरव काले संत, कै पुरस जे पंथ संचरया।
होजी तिण हीज पंथ हेम, रिषीसर विचरया॥

२१ दो० पूरण पंचाचार में, उपसम रस भरपूर।
चरण करण आराधता, संजम तप में सूर॥

२२ होजी संजम तप में सींह, कै विक्रम होय ध्याविया।
होजी पिंडत मरण सिरियारी, परलोक सिधाविया॥

२३ दो० चिंतामणि सुरतरू समो, सरणागत विसराम।
मन वंछत फल साधवा, सुखदायक गुणस्वाम॥

२४ होजी स्वाम तणा गुण नाम, कै हीया विच संभरै।
होजी चित्त सरोवर भूर, आनन्द रस थी भरै॥

२५ दो० उदधि नीर तणी परै, उजल गुण है अथाय।
वांनगी मात्र गुण वरणव्या, उगणीसै ओच्छाय॥

२६ होजी उगणीसै नेछके वरस, कै फागुण मास आविया।
होजी सैहर आउवा मांह, हेम गुण गाविया॥

६. मुनि डूंगरसीजी

(ख्यात सं० ४३)

[—श्रावक नाथूराम]

ढाल

दोहा

१ पहिला अरिहन्त नैं नमूं, दूजा सिध निरवाण।
आयरिया उपाध्याय साधुजी, ए पाचू पद प्रमाण॥
२ जिण सासण ना अधिपति, महावीर जिणराज।
साध मुनीसर दीपता, चवदै सहंस मुनिराज॥
३ सासण वरतै महावीर नो, पांचमा काल मझार।
धर्म जिनेसर भाखियो, आज्ञा तणो चमत्कार॥
४ पाखण्ड वधियो आरे पांचमें, वधियो मिथ्यात अंधार।
हिंसा धर्म परूपियो, श्री जिन आज्ञा बार॥
५ भवजीवां ने तारिवा, स्वामी भीक्खु लियो अवतार।
तीरथ च्यारूं थापिया, सूतर अर्थ विचार॥
६ भीक्खु पाटे भारीमालजी, गुण ज्ञान तणा भण्डार।
सासण मांहे सोभता, पाखण्ड 'पेलणहार'[1]॥
७ सासण माहे साध साधवी, गुण रतनां री खाण।
चारित पालै निरमलो, ध्यावै निरमल ध्यान॥
८ केई तपस्या करै छै अति घणी, केई संलेखणा संथार।
केई धूप में लेवै आतापना, केई भणै सूतर विस्तार॥
६ वधियो वैराग साध आरज्या, पांचूं ही वोल प्रमांण।
तपस्या करणी करे निरमली, करै कर्मा री हांण॥
१० सांमी भीखू काल गयां पछै, दस अठ हुवा संथार।
अठारवो अणसण रिष डूंगर तणो, शहर आमेट मझार॥

---

१. पराजित करने वाले।

११ किण विध तपस्या बंधो कियो, किण विध कियो संथार।
किण विध करी संलेखणा, ते सुणज्यो विस्तार ॥

१२ चवदै दिन एकांतर कियां, एक बेलो कियो फागण मास।
बंधो कियो चेत मास थी, आणे मन हुल्लास ॥

१३ बेला धारचा चेत मास में, तेला प्रथम वैसाख।
चोला दुतीक वैसाख में, पांच ज्येष्ठ अरिहंत सिध साख ॥

१४ छव बेला पांच तेला किया, दोय चोला किया वुधवान।
दोय पांच किया बंधा तणा, मुनि गुण रतनां री खान ॥

१५ आठ पांच च्यार छव किया, पांच पांच दस बंधा उपर जाण।
मरण साहमा पग रोपिया, मारग लियो निरवाण ॥

*डूंगर रिष जीतो रे ॥ ध्रुपदं ॥

१६ समत अठारै अडसठे हो, कातिक मास मझार।
डूंगर रिष मुनि चैतिया हो, करवा आतम नो उद्धार ॥

१७ फागण सुद पूनम पछै हो, विघे ओषघ रा त्याग।
आगे बंधो करस्यू तपस्या तणो, लेस्यूं मुगत रो माग ॥

१८ फागण मास आयां थकां, झाली तप तरवार।
एकन्तर धारचा भाव सूं, काया तोलण तिवार ॥

१९ चवदै दिन एकन्तर किया हो, सात किया उपवास।
चवदस पूनम रो बेलो कियो हो, तपस्या कीधी फागण मास ॥

२० पडवा कीधो पारणो, आयो वैराग मन मांय।
हाथ जोड़ी साधा नै कहै, मास खमण द्यो पचखाय ॥

२१ बेणीदासजी कहै डूंगर! सुणो, मास तणो नहीं काम।
पालो बंधा री संलेखणा, ज्यूं सीझै आतम काम ॥

२२ वचन सुणी साधा तणा, इम बोल्या मुनिराय।
मास खमण पचखावो नहीं, तो अठाई तो द्यो पचखाय ॥

२३ आठ करि कियो पारणो, छव बेला किया कर्म काट।
चैती पूनम लग मोटा मुनि, कीधा पारणा आठ ॥

२४ तेले तेले धारचा पारणा, प्रथम बैसाख रे मांहि।
बंधा ऊपर तपस्या तणी, हूंस घणी छै ताहि ॥

२५ तेला पांच किया बंधा तणा, पांच च्यार नो अधिक वैराग।
पारणा सात बैसाख में, लीधो मुगत रो माग ॥

*लय : रघुपति जीतो रे……।

२६ दुतीक वैसाख धुर छव किया, पांच पांच किया दोय वार।
चोला दोय पांच पारणा, दुतीक बैसाख मंझार ॥
२७ पांच पांच किया ज्येष्ठ मास में, वद वारस लग मुनिराय।
तेरस कीधो पारणो, फेर पांच दिया पचखाय ॥
२८ पांच पचखे वैराग सूं, चवदस रै दिन मांय।
छव पचखे सात पचखिया, नव दिया पचखाय ॥
२९ एक दिन अधिक लेवा भणी, अमावस रे दिन मांय।
साधां नैं कहै दस पचखिया, मन रलियायत थाय ॥
३० दस दिन रा तीजा दिन मझे, साधां नैं लिया बोलाय।
मन उठ्यो सामी मांहरो, संथारो द्यो पचखाय ॥
३१ सूरपणे संथारो कियो, चढियो पोरस पूर।
वचन निभावे आपरो, ते साचेला सूर ॥
३२ समत अठारै अडसटे, जेष्ठ सुदी बीज बुध मांय।
दिन सवा पहरआसरै चढताथकां, दियो संथारो ठाय ॥
३३ महिमा हुई संथारा तणी, गुण गावै नर नार।
धिन धिन डूंगर रिष मुनि, सफल कियो अवतार ॥
३४ सुणियो संथार रिष डूगर तणो, गावां नगरा जांण।
वादण आवै नर नारियां, करै वैराग पचखाण ॥
३५ क्षत्री कुल 'करषाण'[1] में, आड़ी 'पूण'[2] रे मांहि।
'कसब'[3] छोडचा संथारा लगे, सांचे मन लिव ल्याय ॥
३६ श्रावक आया लावा सैहर ना, वाद्या साधां रा पाय।
वैराग कियो मन भाव सू, हरष धरे मन माय ॥
३७ आद दे श्रावक श्राविका, वाद्या साधां रां पाय।
उपवास बेला तेला आद दे, आठ दस दिन लग पचखाय ॥
३८ सीझ्यो संथारो दिन सात में, जेठ सुद सातम मंगलवार।
दिन डेढ़ पहर चढ़तां आसरै, प्राण छोडचा हुवा जय जयकार ॥
३९ तपस्या कीधी दिन सवासै मझे, पारणा किया गुणतीस।
छिन्नूं उपवास किया भला, पूरी मनरी 'जगीस'[4] ॥
४० तपस्या कीधी जिण दिन थकी, संथारा लग मुनि सूर।
अडिग रह्या तपस्या ऊपरे, कर्म किया चकचूर ॥

---

१. किसान।
२. जाति।
३. धधा।
४. चाह।

१० सूत्र तीस वाच्या घणा हर्ष सू, वारुवार विख्यात।
गोचरी उठवा नैं उद्यमी अति घणो, सतजुगी भारीमाल रै साथ ॥
११ विचरत-विचरत मुरधर ने मेवाड़ में, वले मालवे देश ढुंढार।
'मढियो'[1] गुजरात जावा नैं गुणनिलो, पिण आय पहुंतो काल ॥
१२ कोचला सू रायचन्दजी पाछो मोकल्यो, आप आगा गया गुजरात।
जीवै मुनि सैहर गोघुदे चौमासो कियो, सरुपचन्दजी रे साथ।
१३ कारण पडियो सरीर में 'चकेरा'[2] तणो, अणोदरी कीधी अथाय।
ओषध भेषध पिण कीवा घणा, पिण आयु नेडो लागो आय ॥
१४ पाचू साध सेवा कीधी प्रेम सू, सरुपचन्दजी भलो दीधो साज।
सागारी अणसण कीधो अति सोभतो, जीत नगारा रह्या वाज ॥
१५ परिणांम चढ़ते आयुष्य पूरो कियो, वधियो नगर में वैराग।
भाया वांया हर्ष सूं तप अति आदर्यो, जीवो मुनि वड भाग।
१६ समत अठारै तैउ वर्ष जाणजो, आसोज सुद आठम जणाय।
सुध संजम पाल्यां पंहुचै सिध गति मझै, देवलोक में संका नही कांय।
१७ संसार नी सोभा कीवी घणी श्रावक श्रावका, रुपया अनेक लगाय।
तीस तुरा वणाया माडी त्यारी करी, मेल्या तिण रै माहि ॥
१८ वरतै सासण श्री वृधमान रो, भिक्खू भारीमाल कियो अंगीकार।
जीवै मुनि जन्म सुधार्यो जुगत सू, वरतै 'ब्रह्मचारीजी'[3] री वार ॥
१९ संमत अठारै नें वर्ष एकांणूवे, चेत सुध आठम सोमवार।
गुणं गाया जीवा मुनि साधु तणा, खेरवा सैहर 'मझार'[4]।

---

१. तैयार हुए।
२. चक्कर।
३. तृतीयाचार्य ऋषिराय का उपनाम।
४. इस गीतिका का रचनाकाल और स्थान को देखते हुए लगता है कि यह मुनि श्री हेमराज जी द्वारा रचित है क्योंकि मुनि हेमराजजी उस वर्ष उधर विचरते थे और जयाचार्य थली के क्षेत्रों मे विहार करते थे।

८. मुनि भगजी

(ख्यात सं० ४७)

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

१ *हांरे मुनिवर भगजी सामी गुणा रा भंडार रे, संजम हो संजम पाल्यो वहु वरसां लगे।
हांरे कीधो कीधो आतम रो उद्धार रे, कार्य हो कार्य सुधारचो लागो शिव मगे ।।

२ भणिया गुणिया कंठ कला मे एन, प्रश्न हो प्रश्न पडुत्तर विध जाणे घणी।
पायो पायो चारित गुणा में चैन, सुरत हो सुरत मुद्रा अधिक सुहामणी ।।

३ दीधो दीधो भव जीवां नै साज, विवध हो विवध गुण वगस्या कीधा समझणा।
उतपत बुध की जोड़ कला कवीराज, साताज हो साताकारी साधा ने गुण घणा ।।

४ चरचा पद सीखावण अधकी चूप, तवन हो तवन सज्झाय 'खजीनो'[1] थो खरो।
ओपै गत मत आछी भांत अनूप, मार्ग हो मार्ग वतायो मुनिवर मोख रो ।।

५ मूसलमान महेसरी ने ब्राह्मण जाट, साधुज हो साध् साधवी श्रावक श्रावका।
भूप कुलादिक भोजक चारण भाट, वारूज हो सीखाया चरचा पद जात सभावका ।।

६ पाया महाव्रत पूज भीखू रिष पास, भारीज हो भारीमाल सरीखा गुर भेटिया।
रंग रंगीला रायचन्द गुण रास, तीनूज हो तीनूइ पूज प्रगट दुख मेटिया ।।

७ जिण धर्म सू वहुरागी कीधा जीव, गैहराज हो गैहरा गंभीर गुणा में गाजिया।
आलोच्यो ए ऊंडो अर्थ अतीव, गुणेज हो गुण नीपन नाम 'ग्यानजी'[2] वाजिया ।।

८ सिवजी सामी सरल सभावी सूर, सेवाज हो सेवा कीधी सचे मन बंदकी।
थेट निभाया कर्म किया चखचूर, कीरत हो कीरत कीज्यो भवियां सिवचंद की ।।

९ चरम चाकरी मै पिण साजी आय, प्रसन्न हो प्रसन्न होई नैं मुनिवर पांगरचा।
संत ऋषी नो सरणो भव भव मांय, मौनेज हो मौने होइज्यो मुनिवर 'लांवरधा'[3] ।।

१० विचरत विचरत सैहर भीलोड़े जाय, देखत हो देखत सटको कर चलतो रह्यो।
वसियो म्हांरा हिरदा विचै आय, तिणसूज हो तिणसू गुण गाता मुज मन गहगह्यो।।

---

१. खजाना (भंडार)।
२. भग (ज्ञानजी)।
३. लम्बे समय तक।
लय : हांरे म्हारी करेल बाई रे कींको ...।

९. मुनि भागचन्दजी

(ख्यात स० ४८)

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

१ *मुनि भागचन्द गुण भरियो, संसार संमुद सू तिरीयो।
सद मारग संचरियो, चित धरियो चारित निरमलो॥

२ सैहर वीदासर नो वासी, मुनि हिवड़ै आण हुलासी।
मेटी आरत उदासी, भल पिंडतमरणज पांमियो॥

३ जात जोगड जोर हद कीधी, मुनि जग में शोभा लीधी।
नीव मुक्त री दीधी, अति कीधी आतम ऊजली॥

४ घणी सोम प्रकृति सुखकारो, भरपूर खिम्या गुण भारी।
सुमति गुपत आचारी, साताकारी सहु सत नैं॥

५ गुर आग्या मे चित घाल्यो, सुवनीत मारग सुध चाल्यो।
खम्या खडग कर झाल्यो, मुनि चावो तीर्थ च्यार मे॥

६ नित ज्ञान ध्यान चित ध्यातो, नवकार समर सुख पातो।
गुणवत ना गुण गातो, साध वंदणा नित चीतारतो॥

७ 'ईसको'[1] 'खेदो'[2] नही गमतो, चित्त शान्ति गुणा मे रमतो।
चाल्यो संता सू नमतो, मन मान बडाई मेट नै॥

८ मुनि असल संत आकारी, भल गुण था भारी भारी।
तपसा चौमासा री, उन्हाले ताप सह्यो घणो॥

९ वहु प्रमाद मे नही परतो, मुनि पाप पंथ सू डरतो।
कर्म कटक सू लरतो, गुण धरतो समता सायरू॥

१० मुनि तप रस प्याला पीधा, भारी भारी थोकड़ा कीधा।
ए लाभ मुगत ना लीधा, गुण दीधा तस सेवा करी॥

११ श्रावकां नै घणो सिखातो, उपगार करण नैं जातो।
लाभ कमावी ल्यातो, मुनि मधुर वचन मुख भाखतो॥

---

*लय : मुनि भारीमाल गुण......।

१. देखा-देखी। २. विग्रह।

१२ श्री मुख सूं पूज सरायो, सहु संता रै मन भायो।
रिष भीम घणो सुख पायो, जांणें मुनिवर सतजुग मांहिलो॥
१३ संजम वहु वरसां पाल्यो, कचपच नो कादो टाल्यो।
मुनि तपजप कर तन गाल्यो, जूनो जोगीसर वाजियो॥
१४ मुनि विचरत विचरत आयो, थली देश न्यातीला मांयो।
वीदासर में सुख पायो, सिधायो चूरू सैहर में॥
१५ मुनि भीम गुणा मे भारी, भागचन्द भीम रिष लारी।
पूंजोजी नन्दोजी ए, च्यारूंही संत पधारिया॥
१६ चूरू में दरसण देई, रामगढ तणो जश लेई।
पछै वीसाउ में आया, चूरू चौमासो ठायवा॥
१७ अणचित्यो आउ आयो, ऋष भीम वीसाउ मांयो।
परभव ना सुख पायो, चितसटको कर चलतो रह्यो॥
१८ विद आसाढ़ अष्टमी आई, ऋष भीम वस्यो मन मांई।
जाणें सेवा करूं सदाई, ओ पिण चटके चलतो रह्यो॥
१९ भीम भागचन्द नी जोरी, एहवी मिलणी जग में दोरी।
त्यांरी प्रीत न तूटै तोरी, रिष भागचन्द नें भीम री॥
२० थया परलोके वडभागी, तो पिण दीखै वैरागी।
ज्यांरै चूप घणी चित लागी, जांणे कीजै सासण चाकरी॥
२१ वांछै सासण की साता, जांणे दीसै आपो जणाता।
वले और घणा संग ल्याता, कहै च्यार तीर्थ रिख्या करै॥
२२ ते वात केवली जाणै, छदमस्थ भणै अहलाणै।
कोई मूढ मती हठ ताणै, ते करणी जासी आपरी॥
२३ संता नै साची भासै, मत श्रुत अकल अभीयासै।
कहै दिन दिन जोत दिखासै, ते पिण विध जाणै केवली॥
२४ श्री पूज हुकम फुरमायो, तिण सू मैं मुनिवर गायो।
कोई इधको ओछो आयो, तो मिच्छामिदुक्कडं मांहरै॥
२५ आसाढ मास लाडणू आया, सुद तेरस दिन गुण गाया।
हरष हिलोला मन आया, मुज समत अठारै सताणूंए॥

१०. मुनि भोपजी

(ख्यात स० ४६)

[—मुनि हेमराजजी]

ढाल

दोहा

१ श्री वीर नमू व्रद्धमानजी, मस्तक हाथ चढाय।
अंतर ज्ञान आराधिया, जन्म मरण मिट जाय।।

२ अरिहत सिध ने आयरिया, जपता खपै कर्म पास।
तपस्वी भोपजी रा गुण गावस्यू, मन में आण हुलास।।

३ कोसीथल में जनमिया, पिता लालजी पिछाण।
पाली मे संजम लियो, गुरु मिलिया आण।।

४ गुणसठे संजम लियो, छासठे कियो संथार।
बिचे तपस्या कोधी घणी, तेहरो सुणो विस्तार।।

*ओ तो भारी तपस्वी भोपजी ।।ध्रुपद।।

५ ओ तो भारी तपस्वी भोपजी, प्रगटचो पंचमें आर रे।
तिण तपस्या कीधी दीपती, तिण रो साभलज्यो विस्तार रे।।

६ प्रथम चोमासो पीसांगणा कियो, तठे तेरा कीधा ताम रे।
बलि पांच किया जाणज्यो, ए तो सारण आत्म काम रे।।

७ बीजो चोमासो पीसांगण सैहर मे, एक मास कियो अखंड।
वली वीस किया वैराग स्यू, ओ तो जिन मार्ग रो मंड।।

८ तीजो चोमासो पाली सैहर में, चालीस किया अमाम।
पूज भारीमालजी साथे रह्या, तपस्या ऊपर घणा परिणाम।।

९ उपवास बेला चोला किया, तेला चोला मे पाच वखाण।
छ सात आठ नव दस चढ्या, इग्यारै बारै तेरै जाण।।

*लय : जीव मोह अणुकंपा न आणिए……।

१० चोथो चोमासो मांढे कियो, एक मास ने इकतीस दिन्न ।
वाणुवैं दिन अन्न नही भोगव्यो, सेंठो राख्यो तिण मन्न ॥

११ सीयाले सीयाले पनर किया, उन्हाले लेता आतापना आप ।
उष्ण सिला तथा रेत नी, पूर्व संच्या काटण पाप ॥

१२ पांचमों चोमासो ल्हावा सैहर में, साम राम नें तपस्वी भोप ।
च्यार मास में सतरै पारणा, आछो कियो कर्मां स्यू कोप ॥

१३ वलि एक अभिग्रह इसडो कियो, किया अन्न तणा पचखांण ।
पूज रा दर्शण न करूं ज्या लगै, पूगो गुणतीसमें दिन आंण ॥

१४ छठो चोमासो सिरियारी सैहर मे, छांसठ दिन पचख्या एक साथ ।
तिण री महिमा हुई घणी शहर मे, आ तो इचरज वाली वात ॥

१५ पछै दर्शण किया पूज रा, सर्व साध साधवियां नै खमाय ।
हिवे आग्या छै स्वामी आप री, पाली देऊं संथारो ठाय ॥

१६ आमेट में लीधी आगन्या, साधां साथे कियो विहार ।
विचरत विचरत आविया, पाली शहर मजार ॥

१७ धुर स्यू तो अठावन पचखिया, तिण में पांणी रो आगार ।
वेदना ऊठी अति आकरी, ओ तो अडिग रह्यो अणगार ॥

१८ संथारो मांग्यो साधां कनें, कह्यो पारणो करो एक वार ।
पछै तो केवली देखी रह्या, थांनै कराय देस्यां संथार ॥

१९ कह्यो मान नैं कीधो पारणो, छमधरी रे दूजे दिन्न ।
तीजे दिन अन्न थोडो लियो, तिण रो संथारा ऊपर मन्न ॥

२० हिवै संथारो पचख्यो भोपजी, आंणी नै अधिक वैराग ।
सातम पाछली रात रा, जावजीव कीधा त्याग ॥

२१ नर-नारी हजारां आवता, सूस कींधा विवध प्रकार ।
वैराग वध्यो घणो सैहर में, जद भोपजी कीधो संथार ॥

२२ समत अठारै छासठे, भादवा सुद आठम विचार ।
सांढा च्यार पौहर रै आसरै, संथारो आयो श्रीकार ॥[1]

---

१. यह गीतिका मुनि हेमराजजी द्वारा बनाई गई मालूम देती है । अन्तिम तीन गाथाएं (२३-२५) किसी अन्य द्वारा रचित है और बाद मे प्रक्षिप्त की गई लगती है ।

२३ अणसण षट त्यां कनैं हुवा, वैराग चढायो भरपूर।
जन्म मरण मिटायवा, हद उपगारी वड सूर॥

२४ ए तो उपगारी जीव छै, पर जीवां स्यूं करै उपगार।
यांरी जश महिमा कीर्ति घणी, त्यां नै नमो-नमो नर नार॥

२५ श्री स्वामी हेमजी सोभता, ते गुण रतना री खांण।
त्यां कनें साधां संथारा किया, साज दियो चतुर सुजांण॥

११. मुनि जीवणजी

(ख्यात स० ५१)

[—श्रावक पनजी]

ढाल १

दोहा

१ पेहलां अरिहन्त नैं नमूं, दूजा सिध समरथ।
आचारज उपाध्याय नमूं, नमूं साध निग्रन्थ ॥

२ चौथे आरे प्रगट थया, तीर्थङ्कर मोटा देव।
पांचवें आरे प्रगट्या, पूज भीखनजी सयमेव ॥

३ गुण गाऊं भीखू तणा, त्यां मारग काढ्यो तंत सार।
वांका नर पाधरा किया, परिसा सह्या अपार ॥

४ भव जीवां नैं प्रतिबोधिया, भीखू भलेज भाव।
और कारण त्यांरै को नहीं, तारण तिरण उपाव ॥

५ श्री वीर रे पाट विराजिया, सुवनीत सुधरमा सांम।
ज्यूं पूज रे पाट विराजिया, भारमलजी सामी त्यांरो नाम।

६ त्यांरै साध साधवी हुवा घणा, सगला ही मोत्यां री माल ॥
जाप जपै जगनाथ रो, सुखे गमावै काल।

७ त्यांनै भाव सहित वनणां कियां, कटै कर्मां रा वृन्द ॥
नीच गोत रो क्षय करै, पडै ऊंच गोत रो बन्ध।

८ संका नही इण वात में, हिरदा मांहें लीजो पिछाण।
उतराधेन गुणतीश में, भाख गया चतुर सुजाण ॥

९ आहिज विध गुण गावतां, भाख गया जगनाथ।
संका मत राखो सर्वथा, झूठ नही तिलमात ॥

१० गुण गाऊं गुणवंत ना, चोखे चित लिव ल्याय।
चित लगाय नै सांभलो, मन में घणा सुहाय ॥

११ छोटा साध जीवण जी, दिक्षा लीधी हेमजी सामी रे पास।
ते जथातथ प्रगट करूं, सुणजो आण हुलास॥

*सुणज्यो जीवणजी री वारता रे ॥ध्रुपदं॥

१२ तिण काले नें तिण समै, पांचमो दुषम काल रे। सोभागी।
जम्बू द्वीप भरत खेत्र में, मुरधर देश रसाल रे। सोभागी।
१३ मुरधर देश रे पिछम दिशे, साचो गांव साचोर।
तिहां जीवण जी आय अवतरया, त्यांरो भागज कीधो जोर॥
१४ त्यांरो कुल ओसवाल जाण जो, साह सतीदासजी तात।
लोहडे साजन श्री श्रीमाल छै, उगरादे रा अंगजात॥
१५ अनुक्रमे मोटा हुवा, पछै खारो जाण्यो संसार।
काल कितोयक वीतां पछै, जाण्यो लेणो संजम भार॥
१६ साधपणा री मन में वसी, सुध सरधा लागा जोय।
'ठीक'[1] कीधी सुध साध री, पिण नेडा न दीठा कोय॥
१७ इतलायक में सांभल्या, तेरापंथी साध।
भोला लोकां नैं समझ पडै नही, यां चित मांही लीधा आराध॥
१८ मन मांही कीधी विचारणा, मोने जाणो वेग चलाय।
जेज करणी जुगती नही, संजम लिया सुख थाय॥
१९ मतो करे नैं नीकल्या, खवर करवा साधारी तिणवार।
चाल्या-चाल्या आविया, जोधाणा सहर मझार॥
२० आय स्थानक मे चरचा कीधी घणी, जैमलजी रा साधा सू तिण वार।
त्यांरी सरधा तो दिल बैठी नही, नही जाण्या त्यांनैं तंत सार॥
२१ क्रिया में काचा घणा, ते कह्वो कठे लग जात।
कारखानो दीखै त्यारै घणो, सुध सरधा न आई त्यांरै हाथ।
२२ उठा सू तो ऊठिया, मन में करवा लागा विचार।
सतगुरु करणा देख नै, चोखो पालै जे असल आचार॥
२३ जोधाणा सेहर सू नीकल्या, आया पाली सेहर मझार।
श्रावका नै पूछा करी, कोई साधू वताओ तंतसार॥
२४ श्रावकां त्यांनैं वताविया, पूज भीखणजी रा साध।
भारमलजी सांमी त्यारो नाम छै, लीधा अरिहंत वचन आराध॥

*लय : धीज करै सीता सती रे लाल......।

२५ त्यां चौमासो भोलावियो, पाली सैहर मभार।
हेमराजजी सांमी त्यांरा नाम छै, ते साधु छै श्रीकार ।।
२६ तिके चौमासे पधारसी, थानैं समभावसी तहतीक।
त्यांमें कला चतुराई छै अति घणी, जब जीवणजी कह्यो ठीक ।।

ढाल २

दोहा

१ दिन केता बीतां पछै, असाढ़ महीना मांय।
चौमासो करवा भणी, आया साधु चलाय ।।
२ नर नारी हरख्या घणा, मन में इधक अपार।
रोम-रोम त्यांरो हुलसियो, साव आया तिणवार ।।
३ हाथ जोड़े सीस नमाय नैं, वनणा करै वारम्वार।
मस्तक पग रे लगाय नैं, गुण बोलै विविध प्रकार ।।
४ गुण गावै किण कारणे, किण कारण शीश नमाय।
त्यांरा गुण प्रगट करूं, ते सुणज्यो चित ल्याय ।।

*धिन-धिन स्वामी हेमराजजी ।।

५ महाव्रत पालै स्वामी मोटका, दीपावै श्री जिण जी रो धर्म।
संसार ना कामा सामी त्यागिया, तोड़ै छै आठूं ही कर्म ।।
६ वारै भेदे सांमी तप तपै, संजम सतरै प्रकार।
वाईस परिसा सांमी जीतिया, शील पालै नव वार ।।
७ दोष बयालीस टालता, टालै बावन अणाचार।
सताइस गुण करी सोमता, असल पालै छै आचार ।।
८ निरलोभी निरलालची, संसार ना त्यागी पिछाण।
प्रीत करै सांमी मोक्ष सूं, एहवा छै चतुर सुजाण ।।
९ पूठ दीधी छै संसार नैं, मोक्ष सूं सांमी विचार।
सचित्त त्यागी सांमी सर्वथा, अचित्त रा भोगण हार ।।
१० सर्व सावद सांमी त्यागिया, अधिक वैरागी छै ताम।
आण दियो सामी ले नहीं, 'नेहतियां'[1] न जावै तिण ठाम ।।
११ कनक कामणी त्यागी खरी, तिण सू न करै परचो न प्यार।
पांच इन्द्री सामी वस करे, संजम पालै खड्ग धार ।।

*लय : मन करो काया माया कारमी......।

१. निमंत्रित करने पर।

१२ एहवा गुण कर सोभता, असल साधू री छै चाल।
नरनारी समभावता, रहै छै धर्म में लाल ॥

१३ त्यां में कला चतुराई छै अति घणी, किम कहूं बुद्ध रो परमाण।
सूत्रां मां सू सामी जोय नै, कीधो वीरचरित वखाण।

१४ तिण में भाव ने भेद छै अति घणा, सुणिया ही उपजै वैराग ॥
सूस वरत लेवै आकरा, तिण सू पामै छै सुख अथाग।

१५ त्यारी वाणी छै अमृत सारखी, सकर दूध 'नीवात'[1]।
दीयां थकां तृपत हुवै ज्यू भविक, सुण मगन हुय जात ॥

१६ मन बचन काया वस करी, नही करै राग ने रीस।
जिण मारग जमावै सामी जुगत सूं, ज्यू आगे हुता जगदीस ॥

ढाल ३

दोहा

१७ कर्म काटण नै सूरमा, दिन-दिन इधको पेम।
संतां में दीपै भला, मोटा मुनिसर हेम ॥

१८ गुण साधा मे अति घणा, पूरा कह्या न जात।
चित लगाय नै सांभलो, जीवण जी री वात ॥

१९ साधा नै भला जाणिया, चित माहे आयादाय।
जीवण जी इसरी कहै, मोने संजम देवो सुखदाय ॥

२० स्वामी हेमराजजी इम कहै, जाणपणो सीखो ठीक।
आगन्या मांगे लेवो, पछे दीक्षा देस्यां तहतीक ॥

२१ जीवण जी भाखै भलो, मोने आगन्या देवै जेम।
मोने आप लेवो तरे, घर में रेहण का छै नेम ॥

*जीवणजी हुआ संजम ने त्यार ॥ध्रुपदं॥

१ जीवण जी तिण अवसरे रे, मन में आण हुलास।
आज्ञा आय मागी सही, मात पिता रे पास ॥

२ आगन्या देवा नही, भाई मात पिता कहै एम।
जीवण जी तिण अवसरे, वचन वदै छै केम ॥

---

१. मिश्री।

*लय : सुण भाई थिवरां रे करणो कुण विचार ···।

४ हिवे आज्ञा ऊपर आदरी, जीवण जी अणगार।
जनम सुधारयो जुगत सू, कर दियो खेवो पार ॥

५ किण विध करी संलेखणा, किण विध कियो संथार।
भाव धरी भवियण सुणो, आलस अंग विचार ॥

*सांमी जीवणजी संलेखणा आछी करी ॥ध्रुपदं॥

६ सांमी पहली तो सोलह किया, पाछै किया हो स्वामी दोय उपवास।
कितरायक दिन पछै छव किया, एक बेलो हो कीधो समछरी रोतास।

७ छठ सातम आहार कियो सही, आठयू ठाया हो मुनि सात उपवास।
मन वचन काया नैं वस करी, मन मे आण्यो सामी इधक हुलास ॥

८ पूनम रे दिन सात पूरा हुवा, साधां कह्यो हो मुनि करो नी आहार।
सांमी कहै भाव नही मांहरा, 'अचित अजमो'[1] हो थोरो आण दो हमार ॥

९ अचित अजमो लीधो अणाय नै, पाछा पचख्या ही तीनू आहार तिणवार।
करतां करता सोलै किया, पछै वोल्या हो म्हारै करणो संथार ॥

१० साधां श्रावकां कीधी वीनती, नही करणो हो मुनि तुरन्त सथार।
वीनती मानी साधां श्रावकां तणी, सोला ऊपर हो सामी पचख्या च्यार ॥

११ करता करता इकवीस किया, बाईसमें दिन हो वोल्या इमरत वाण।
आगन्या लेई अरिहन्त सिद्ध साधा तणी, मुनि कीधा हो जावजीव पचखाण।
सामी जीवणजी संथारो कियो सोभतो ॥

१२ श्रावक ऊभा था कने मोकला, त्या पिण लीधा हो सूस व्रत नें नेम।
खबर हुई संथारा री सेहर में, बहु नर नारी हो कहै धिन धिन ऐम ॥

१३ घणा नर नारी आवै वांदवा भणी, सूस लेनै हो पूरै मन तणा कोड।
गुण ग्राम करै मुख सू घणा, लुल लुल नै हो वादे दोय कर जोड ॥

१४ केई कहै सथारो सीझै सामं रो, जठा ताहि हो राते पाणी रा पचखाण।
केई कहै कुसील रा त्याग छै, केई छोडै हो स्नान समता आण ॥

१५ केई कहै नीलोती रा त्याग छै, दूध दही हो केई छोड़ै धर प्रेम।
केई दरसण रो बंधो करै, केई करै हो 'बारे'[2] राते रहिवा रो नेम ॥

१६ केई बेला तेलादिक तप आदरै, केई करै हो राते भोजन रा त्याग ॥
केई सामायक व्रत आदरै, इत्यादिक हो वधियो वैराग ॥

---

१. प्रासुक अजवायन।
२. मकान के बाहर अछाया मे।

*लय : सहेल्यां ए वांदो रूड़ा साधजी ।

१७ गांवा गांवा रा श्रावक श्रावका, दरसण करवा हो आया बहु थाट।
ते चरम उच्छव करै चूंप सूं, इसड़ा हुवा हो जैतारण में गहगाट॥
१८ गुण ग्राम करै मुख सूं घणा, धिन धिन कहै हो आप मोटा अणगार।
चोथा आरा री हिवड़ा बानगी, देखाई हो सामी पारसै आर॥
१९ हेमराजजी सामी उपेदेश दे, थानै हुयजो हो मुनि सरणा च्यार।
अरिहन्त सिद्ध साधां तणो, धर्म भाख्यो हो केवली रो तंत सार॥
२० वनणा कीधी सर्व साधा नै, हाथ जोड़ी हो मस्तक रै लगाय।
परिणाम चोखा घणा माहरा, छेहलै अवसर हो इसको कीधी अथाय।
२१ छेहलै दिन इसड़ी कही, पचखावो हो सामी च्यारूं ही आहार।
साधा श्रावका वरज्या पिण सेठां घणा, च्यारूं आहार हो पचख्या तिणवार।
२२ सर्व साधा नै वनणा करतां थकां, सब जीवां नै हो खमावता बारंबार।
इण रीतै आऊखो पूरो कियो, समत अठारै हो बरस बासठे विचार॥
२३ काती वदी एकम रे दिन, वार जाणो हो बुधवार विचार।
पाछला दुघड़िया में चलता रह्या, जीवणजी हो सैहर जैतारण मझार॥
२४ मांडी तो श्रावका कीधी भली, खण्ड वणाया हो सैंती ने वले च्यार।
वले अनेक विध मोछव किया, ते तो जाणो हो गृहस्थ नो व्यवहार॥
२५ गुण ग्राम किया जीवण जी तणा, समत अठारै हो बरस बासठे विचार।
वलुन्दा सैहर मांहे सामी हूं वसूं, जोड़ कीधी हो सामी जैतारण सैहर मझार॥
२६ कोई आखर आघो पाछो कह्यो हुवै, इधको ओछो हो कह्यो हुवै ताय।
हाथ जोरी श्रावक यनो कहै, ज्ञानी वदै हो ते तो जाणो सतवाय।

मुनि मोजीरामजी

(ख्यात सं० ५४।२-५)

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

१ श्री पूज तणा मुख आगले, हांरे मुनी टोला धारी थातीखे तोल रे।
निरमल अकल बुध गुण निरमला, हांरे मोनै देता चतुराई दिल खोल रे ।
मन का प्यारा मोजीराम जी, मेरा दिल का प्यारा साचा सांमजी ।।

२ मुनी वासी गोघूंदा ना वाजिया, तरुणपणा में व्रत धार ।
वाल ब्रह्मचारी बुध आकरी, हुवा-हुवा गुणा रा भंडार ।।

३ सुसंवादो वखांण मीठो घणो, वाली लागंती त्यारी वांण ।
धर्म कथा कहिता धून सू, वैराग विचै बिचै आण ।।

४ ग्रंथ मूहढ़े त्यांरै अति घणो, आगमना असखलत पाठ ।
तुष्ट मान हुंता करता तेहनै, ग्यान गुण रौ वहु गैहघाट ।।

५ मंत्री"[1] सूं 'मंत्राइ'[2] निभावता, गाढ़ा गुणा सूं भरचा 'ठूस'[3] ।
अवचल प्रीत असी ओपमा, म्हारै दरसण देखण री रही 'हूंस'[4] ।।

---

*लय : "कानूड़ो रे गोक लगां"........।

१. मित्र । २. मित्रता ।

३. भरपूर । ४. उमंग ।

मुनि हीरजी

(ख्यात सं० ७६)

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

दोहा

१ पट भिखू छाजै भला, भारीमाल भलकंत।
रायचन्दजी रूड़ा रिखी, तीजे पाट पिण तंत।।

२ पूज तणा मुख आगले, तपसी हीरजी संत।
विवध विनय रस गुण भरयो, सुखकारी सोभंत।।

३ श्री मुख पूज सराइयो, च्यांरूं तीर्थ सधीर।
कुरब वढ़ायो कायदो, हीर साचलो हीर।।

४ जनक नानजी जस धरु, वाई नाथी रो नंद।
जात कोठारी जाणियै, रिणधीरोत अमंद।।

५ चंगेरी घर छोड़ियो, सजोड़े सुध रीत।
कमलू कमला सारखी, नार निभाई प्रीत।

६ समत अठारै चीमंतरे, भारीमाल अणगार।
सनमुख चरण समाचरयो, भामण नें भरतार।।

७ विचित्र प्रकारे तप बुहो, संक्षेपे विस्तार।
किण विध काज सुधारियो, निसुणो थे नर नार।।

८ *प्रथम षोडस दिन पचखिया, मुनि कांकरोली चौमास।
'आंबापुरी'[1] में अठावन किया, मुनि 'इगतीस'[2] पूरी आस।
हद तप ठायो २ हद, तप ठायो हीरजी।
जग जश पायो २ जग, जश पायो हीरजी।।

लय : ऐसा नहीं जांण्या रा नाथजी.........।

१. आमेट।

२. यह ३१ दिन का तप श्रीजी द्वारा मे किया था।

९ श्रीजीद्वारे तप तप्यो, तप रस गुण नी खांण।
आठ किया उचरंग में, ऊपर बियांसी आंण॥
१० गाम कैलवे तप तप्यो, इगतीसो एक मास।
सैहर पाली सतसठ किया, ए पांचमो चौमास॥
११ जैपुर 'वीस चतुर'[1] किया, सैहर वीलाड़े वास।
इगसठ दिन तप आकरो, तप सूं पूरो प्यास॥
१२ पादू सैहर में पचखिया, एक पख नें च्यार मास।
राजनगर तप रस भरचो, ठाय दीया षट मास॥
१३ दसमों कानोर दीपावियो, चौमासे 'चोमास'[2]
गाम गोघूंदे गुण वध्या, 'इगतीसा षट मास'[3]।
१४ उदीयापुर इग्यारै किया, एक सौ नें छावीस।
वले कानोर वखाणियै जी, पातक नाख्या पीस॥
१५ बीदासर वासट किया, थली देस में थाट।
आंबापुरी में एकावन किया, काटचा कर्मा रा काट॥
१६ उदीयापुर आणंद में, तपसा विविध विमास।
वारै तेला पांच वहु किया, विविध तप उपवास॥
१७ पुर के चौमासे पचखिया, एक पख नें दोय मास।
इग्यारा तेला पांच वहु किया, 'षट दसमें चोमास'[4]॥
१८ जैपुर सैहर में जुगत सूं, दिवस अठारै ठाय।
तेला चोला पांच पचख नै, चित नैं लियो समभाय॥
१९ उगणीस वरस के आसरै, पाल्यो संजम भार।
चरम चौमासो 'पोहपावती'[5], आप कियो अगगार॥
२० सेषेकाल तप बहु कियो, कहितां किम लहुं पार।
चौमासे रो संक्षेप में, आण दियो इधकार॥
२१ सातूं ही संत आणंद सूं जी, म्हांरा पूज परम गुरु पास।
विविध विनय में मन वस्यो, हीर नै हीये हुलास॥
२२ अंग असाता ऊपनी, भादवी पूनम भाल।
तेला में चलता रह्या, खैरवे सैहर सुगाल॥

---

१. २४ दिन का तप।
२. चारमासी तप।
३. १८६ दिन का तप।
४. उक्त चातुर्मासों की गणनानुसार यहां सतरहवा चातुर्मास होना चाहिए।
५. पाली (आचार्य श्री ऋषिराय के साथ)।

२३ च्यार तीर्थ सनमुख मिल्या, हुवा हगांम विसेख।
चमतकार चढ्यो श्रावकां, तपसी ना गुण देख ।।

२४ पूज चरणारविंद सेविया, त्यांरो तीखो वधियो तोल।
पूज प्रगट गुण पोरसो, 'आध'[1] वधारै अमोल ।।

२५ श्रीमुख पूज फुरमावियो, तपसी ना गुण गाय।
अंतेवासी विण ना लगै, म्हांरो मनडो रह्यो रे लोभाय।।

२६ संमत् अठारै त्रांणूअे जी, आईकृष्ण आसोजी तीज।
जीवो कहै कर जोर नैं, मौने कांयक दीजै रीज ।।

२७ चंदपनंती रीज में, मौने पूज करी बगसीस।
ग्यान बधारै गुणनिला, त्यांनै नमाऊं म्हारो सीस ।।

ढाल

[—मुनि हेमराजजी]

१ *उपवास बेला वहु कीधा चोला पांच षट लग लीधा रे। हीरजी तप भारी।।
सात आठ नव दश इग्यारै वारै तेरै चवदै पनरै धारै रे। हीरजी तप भारी ।।

२ मास दोय मास तीन नें च्यार, वले मास किया साढी च्यार।
छमासी तप राजनगर में ठायो, रायचंद ब्रह्मचारी पारणो करायो।।

३ पांच मास जांणीजै वले बीजो छमास, त्यांरै मन में मुगत री आस।
वले और ही तपसा कीधी नजीक, तिण री पूरी नही ठीक ।।

४ सीयाले सी खमता उनाले आताप, काटिया विध विध पाप।
विनय भगत मांहे दिन दिन वारू, सतगुर सीख सुधारू ।।

५ भारीमाल गुर री भली भात, सेवा कर-कर पूरी मन खात।
स्वामीजी आप श्री मुख सरायो, हीरजी तपसी जश पायो ।।

६ केलवे सैहर अरु कांकडोली, भारीमाल सेवा जस बोली।
सतजुगी री सेवा सैहर पीपाड़, मन वचन काया सुद्ध धार ।।

७ केतला एक चउमासा मोजीरामजी कनै कीधा, त्यां पिण वोहत जस लीधा।
घणी वायां भायां नैं ग्यान सीखायो, च्यारूं तीर्थ में जस पायो ।।

८ तपसा में तीखो नें व्यावच में नीको, जोर पायो जस टीको।
तप जप में 'करला'[2] नें व्यावच में करला, इसड़ा साधु केइ विरला ।।

९ भरतार अस्त्री दोनूं संजम पालै, जिण मार्ग उजवालै।
आरा चोथा जिम कीधी पंचम आरे, दोनूं नीकलिया लारे ।।

---

*लय : समझू नर विरला ....।

१. सम्मान। २. तेज।

१० पाली सैहर चौमासो कियो पूज साथो, रूडी सेवा करै दिन रातो।
संवत अठारै तिराणूंअे वरसो, 'जाजो'[1] हीर रो जसो ॥

११ कारण पडियां सैहर खैरवे आया, शरीर कारण जाणी तेलो ठाया।
तेला में तपसी परभव पोहतो, देव हुओ होसी गहगहतो ॥

१२ च्यार तीर्थ मिलिया सुखकारी, तपसी रा गुण गावै भारी।
काया रो काम संसारियां कीधो, हीरजी मोटो जस लीधो ॥

१३ वर्स तराणूओ नें समत अठारो, भाद्रवा सुध पूनम शनेसर वारो।
हीरजी रो वैराग सुणे नर नारो, साध श्रावक रा व्रत धारो ॥

१४ संवत् अठारै चौराणूअे वरस, सैहर लाडनू उपगार सरस।
काती विद आठम सनेसर वारो, तपस्या थोकड़ा लीजै थारो ॥

---

१. अधिक।

मुनि शिवजी

(ख्यात सं० ८२)

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

दोहा

१ संवत अठारै छीहतरे, सुरगढ सैहर विख्यात।
तीन जणां संजम लियो, हेम रिपी नैं हाथ॥
२ रत्न शिवजी 'सुन्दर'[1] तजी, कुंवार पणै कर्मचन्द।
पढी गुणी पिडत भया, मोटा वण्या मुणन्द॥
३ आखूं इहां संखेप थी, शिवजी रिष नी वात।
किण विध काज सुधारिया, ए सुणज्यो अवदात॥

*शिवजी सांमी वस्या रे वैराग में॥

४ सैंतीस वरस के आसरै, पाल्यो संजम भारो रे।
विचरत विचरत आविया, नृपपुर नगर मझारो रे॥
५ तीन ठाणां सूं चौमासो कियो, आपस मांहि अति प्यारो।
भादवा विद तिथ द्वादशी, चित में वसि यो संथारो॥
६ दीसां जई नै डेरे[2] आविया, ततखिण जीव रिषी नैं तेड़ी।
गिरवा संता ना गुण गाविया, वातां संथारा नी छेड़ी॥
७ रखे[3] संथारा विना हूं रहूं, अणसण वेगो करावो।
अवसर आयो दीसै मांहरो, चारित कलश चढावो॥
८ प्रतीत राखो थे मांहरी हूं, 'वाजे नैं'[4] काम आऊं।
मारग दीपाऊं मुनिराज नों, पिण जो अनुमत पाऊं॥
९ कहै चेतन रिष चूप सूं, साहज देवा रा भावो।
आतुर म थावो उतावला, विविध तपस्या वधावो॥

---

*लय : शंकर वसै रे कैलाश में ···।

१. पत्नी।
२. स्थान।
३. कदाचित्
४. डके की चोट।

१० एतलो कह्यां 'सुंसता'[1] थया, पेली उपवास पचखायो।
वेलो कराय तेलो कियो, चवदश छेली निश मांयो ।।
११ अणसण मांग्यो मन ऊजलै, घणी हुठ सूं हुलासो।
चेतन रिष पंचखावियो, जावजीव लग जासो ।।
१२ किण ही कह्यो तिण अवसरे, कीजै पारणो तेला नो।
परभव हुं तो दीसै पारणो, वचन सुमत रेला नो ।।
१३ तीन पाव जल उपरंत का, च्यारू आहारां नां त्यागो।
पंच दिन अल्प उदक लियो, चढतो चढतो वैरागो ।।
१४ गुण मत गावो कोई मांहरा, गुण यां सता ना गावो।
म करो कची वात मो कने, चोखी वातां सुणावो ।।
१५ ए मांसू उरण हो गया, हूं तो उरण न हुओ।
ए उपगार किम वीसरूं, हिव तो जातो दीसूं जूओ ।।
१६ सीवणो मांग्यो संता कन्है, वली पडिलेहण मांगता।
उपदेश देता भवजीव नै, वारू पाना वांचता ।।
१७ दश विध आराधन करी, सर्व जीवां नै खामी।
चौविहार अणसण पचखियो, आछो अवसर पांमी रे ।।
१८ किण ही कह्यो पांणी मांगिया, पावा नौ छै आगारो।
तुरन्त बैठा थई वोलिया, इम स्यूं वोलै . असारो ।।
१९ हूं पांणी मांगू किण विधै, मैं तो कर कर नैं सिलामो।
आज्ञा सहित अणसण लियो, पावां कर-कर प्रणामों ।।
२० दरसण करवा कारणे, गामा गामां ना वृंदो।
करेड़ो कोसीथल मोखणदा तणा, आया धरता आणंदो ।।

२१ काकरोली गंगापुर ताल का, इत्यादिक वहु आया।
त्याग वैराग वधारिया, सेवा कर-कर सिधाया ।।
२२ वारस दिन वहुजन मिली, मोछव कीधा मंडाणो।
सावज कांमा संसारचां तणा, ज्यां में धर्म म जांणो ।।
२३ धिन-धिन हो सिवजी थारी धीर्य नै, सांचो जनम सुधारचो।
जिन मत जोत जगाय नैं, वारू सुजस वधारचो ।।
२४ उवास वेलादिक वहु किया, मास दिवस पैंतीसो।
ओर एकावन दिन किया, सरल भद्र रिषी सो ।।

---

१. आश्वस्त।

२५ संवत उगणीसै तेरोत्तरे, वरसे कीधी चिमाली ।
जीव रपी गुण जोड़िया, भादवी पूनम भाली ॥
२६ अधिको ओछो कोई आवियो, तो मिच्छामिदुक्कडं मांगो ।
साचा संता ना गुण गावियां, कर्म निर्जरा होगो ॥
२७ देश विदेश विचरया घणा, करता पर उपगारो ।
कुण कुण ठाम चोमासा किया, अनुक्रमे अवधारो ॥
२८ उदैपुर आमेट पीपार में, पाली जैपुर गोगूंदे ।
आमेट पुर पालीद चालोतरे, माधोपुर में मन मूंदे ॥
२९ भगवतगढ जैपुर वालोतरे, गंगापुर में जोड़े दोगो ।
काकरोली जोजावर कंटालिये, पाली गुरगट जोयो ॥
३० आमेट गंगापुर सुरगढ वली, कियो मोखणदे आमेटो ।
सरियारी रायपुर सुरगट में, श्रीजीद्वारे सुरेटो ॥
३१ सीसोदे दुधवार देवगढ वली, आंबावती में पूरो आसो ।
मोखणदे आमेट छतीसमो, नृपगुर छेहलो चौमासो ॥
३२ चेतन रिप (६६) रिप खूबजी (१४५), सेवा करता सनूरो ।
प्रसन्न होई नै पांगरया, वारू वंछत पूरो ॥
३३ अणसण आयो एक पख तणो, सात दिवस चोविहारो ।
ग्यारस चानणी रात में, पोंहता 'कुल जुग[1]' पारो ॥
३४ माणकचन्द (६६) मुनिसरू, साहज दीघा सवाया ।
एक कोस के आसरै, ग्वाघे ऊंनाय ल्याया ॥
३५ चेतन रिप नै भलाय नैं. कोसीथल में चोमासो ।
कीधो अढाई मास तप करी, पूरी वंछित आसो ॥

१. कलियुग ।

मुनि सतीदासजी

(ख्यात सं० ८४)

[—साध्वी प्रमुखा गुलाबांजी]

ढाल १

*भजो शांति महा सुखकारी हो ।।ध्रुपदं।।

१ वासी गोघूंदा तणो, सतीदास सुखकारी हो।
चरण लियो स्वामी हेम पै, ज्ञान गुणां रा भंडारी हो ।।
झींणी चरचा रहिस धारी हो, भजो शांति महा सुखकारी।
भण्या अधिक सुविचारी हो, गैहर गंभीर गुणधारी।
दृष्ट आण पर भारी हो, हूं ज्यांरी बलिहारी ।।

२ शांति रसे कर सोभतो, शांति मुद्रा प्यारी।
शांति खड्ग खिम्या धरी, शांति वडो जश धारी।
शांति-शांति दातारी ।।

३ गण वच्छल गिरवो गुणी, महा बुद्धि नो भंडारी।
शांति गुणां रो सागरु, शांति दिशा अति भारी।
मिल्यो जोग जयकारी ।।

४ जेष्ठ सहोदर सामनो, सरूपचन्द सुखकारी।
शांति नै साज दियो भलो, मुनी महागुण धारी।
शिव सुख नो तारी ।।

५ गुण गूथ्या मुनि शांति ना, सुजानगढ सुखकारी।
आनन्द स्वाम प्रसाद सुं, हुओ हरष अपारी।
शाति रटचां सुखभारी हो, मंगल सुख सहचारी।
उगणीसै पनरे सारी हो, महाविद अष्टम धारी।
मुझ वरत्या जय-जय कारी ।।

*लय—सो ही तेरापंथ पावै........।

ढाल २

[—मुनि हरखचंदजी]

*महिमागर महीमंड नैं, मुझ प्यारा शांति मुणिद ।।ध्रुपदं।।

१ सकल गुणागर शोभतोजी, शांतिकारी सतीदास ।
जग वच्छल जश छावियो, तूं मुझ पूरण आश ।।

२ संवेग रस ना सागरुजी, पिंडत सिरोमणि मोड ।
उज्जवल चरण आपरोजी, ब्रह्मचर्य महाघोर ।।

३ ओजागर गुण आगला जी, सोभै सुर गिरि जेम ।
'सारंग'[1] शब्द मोर हूलसै जी, अमृत वाण छै एम ।।

४ परम उपगारी तूं मांहरो जी, वसियो मुझ मन मांय ।
अहोनिश तुझ गुणसंभरयांजी, हीये हरष हुलसाय ।।

५ संवत उगणीसै एकादशे जी, मास भाद्रवा मांह ।
'रत्नपूरी'[2] में गुण गाविया, हरष आणन्द ओछाह ।।

---

*लय—रूपाला रूपजी मनै……।

१. मेघ ।

२- रतलाम ।

मुनि दीपोजी

(ख्यात सं० ८५)

[–मुनि जीवोजी]

ढाल १

गुणधारी सुखकारीउपगारी पूज पधारिया जी ।।ध्रुपदं।।

१ विचरत विचरत पूज पधारिया जी, गंगापुर सहर मझार रे।गुणधारी।
हलुकर्मी तो सुण हरख्या घणाजी, तन मन नैण उलसिया सार रे।गुणधारी।

२ गामां नगरां रा श्रावक श्रावका, आया दर्शन करवा नर नार।
वखाण वाणी रा हगांम हो रह्या, दिन दिन हुवो घणो उपगार ।।

३ हीरजो चावत रो बेटो दीपजी, चत्रू भोजाई नैं जीवराज।
ए तीनूं ही वखाण सुणी वैरागिया, लघु बंधव सुधारै काज ।।

४ बे कर जोडी कहै भारीमाल नैं, हूं लेस्यू संजम रसाल।
जे खिण जावै ते आवै नही, इम वोल्या पूज भारीमाल ।।

५ सतगुरु वादी घरे आवी कहै, उठो भोजाई 'सुरत संभाल'[१]।
आपै दोनूंई संजम आदरां, पामां परलोक सुख रसाल ।।

६ भोजाई भाखै ढील करो मतीजी, म्हारै मन में पिण आईज वात।
थांरा बंधव रो आग्या मांगलो, आपें करस्यां कर्मा री घात ।।

७ वले भोजाई भाखै देवरजी सुणो, पेली लो काया नैं तोल ।।
पछै संजम लेस्यां वैराग सू, थे राखो अविचल प्रीत अडोल।

८ पछै मांहोमां 'लोच'[२] कियो दोनू जणा, धोवण पीधो वहु दिन छांण।
ए देवर भोजाई मनसोवो कियो, भाखी पहली ढाल वखांण ।।

ढाल २

१ आय बंधव नै इम कहै, हूं लेस्यूं संजम भार ।
अनुमत मुझ नै आपियै, म करो ढील लिगार ।।

१. सावधान होकर। २. केश लुंचन।

२ बंधव तूं बालक घणो, संजम झींणी चाल।
स्यूं जांणै साधु पणो, श्रावक ना व्रत पाल ॥

३ हूं जग में नहीं रहूं।
वारंवार कहूं सुण वीर, जग में नहीं रहूं ॥
हूं लेस्यूं भवजल तीर, जग में नही रहूं।
ए संसार असार, जग में नही रहूं ॥
हूं तो लेस्यूं संजम भार, जग में नही रहूं ॥

४ वड बंधव भाखै भोला रे, आवै नयनां नीर झखोला।
घर में किम घाल्या रोला रे। संजम दोहिलो ॥
तूं तो मान बंधव म्हारी वात। संजम दोहिलो रे।
दोयली सियाली री रात। संजम दोहिलो ॥
किहां पाणी किहां भात। संजम दोहिलो रे ॥

५ म्हारै वरजवारा त्यागो, थारो बालक बुध वैरागो।
था सूं केम निभै 'व्रत-वागो'[1] ॥

६ लघु बंधव भाखै भाई, थे तो बालक वेस बताई।
आगे कुण कुण दीख्या पाई ॥

७ आगे बाल पणै घर त्यागी, रिष भारीमाल वडभागी।
रायचंद रूडी मत जागी ॥

८ रिष जीतमल बुध भारी, तीनूं ही सुखकारी।
थया बालपणै उपगारी ॥

९ थई आमो सामी 'झखजोलो'[2], श्रावकां मिल कीधो कोलो।
पट मास पछै आज्ञा नो बोलो ॥

१० इम कागद में लिख वाची, फतैहचंद श्रावक बुध सांची।
साधां लियो कागद नैं जांची ॥

११ तिहां हुवो घणो उपगारो, दूजी ढाल मझारो।
साधां कियो तिहां थी विहारो ॥

ढाल ३

१२ *मुनिवर रे! पहुंचावण जाता थकां रे, बोलै एहवी वाय हो लाल।
करायदो मुझ सामजी रे, परणवा रा पचखाण हो लाल ॥
सत संगत भल एहवा रे ॥

---

१. व्रत रूप वागा (विवाह के समय पहनने का विशेष परिधान)।
२. तकरार।

*लय : हेम ऋषि भजियै सदा रे।

१३ मुनिवर रे ! शील अदरियो चूप सू, पहुंचावी शिर नाम हो लाल।
त्याग वैराग वधाय नैं, आया घर अभिराम हो लाल।।
१४ मुनिवर रे ! सीखे चरचा वारता, भाई भोजाई तीन।
हलुकर्मी छै जीवडा, हेत मिलाप लहलीन ।।
१५ मुनिवर रे ! चत्रू भोजाई तणो, देवर सूं दिन जाय।
एक घडी अलगा रह्यां, दोय जणा दुख थाय ।।
१६ मुनिवर रे ! कवुयक रंग में रूसणो, कवुयक करै कितोल।
कवुयक जीमै एकठा, वात करै दिल खोल ।।
१७ मुनिवर रे ! काल कितोयक वीता पछै, सरूपचन्द अणगार।
गंगापुर में आविया, पंच साध परिवार ।।
१८ मुनिवर रे ! लघु बंधव तिण अवसरे, लीधो संजम भार।
वधव नै न जणाइयो, कर दियो खेवो पार ।।
१९ मुनिवर रे ! भाई भोजाई वात साभली, आणी मोह अथाय।
अनुक्रमे त्यां पिण लियो, साध पणो सुखदाय ।।

ढाल ४

दोहा

१ आदि मूल उपगारिया, इण संसार मझार।
एहवा अवर दीसै नही, वर्णवू जश विस्तार ।।
२ भाई भोजाई बेहूं भणीरे, जग जाण्या रे लो, संजम देई सुवनीत।
कीधा तपसी मोटका रे, जग जाण्या रे लो, गया जमारो जीत।
मुज मन माण्या रे लो ।।
३ षटमासी तप त्यां कियो, 'जोडायत'[1] दोय मास।
अठाई आदि वहु थोकडा, विविध विनय चित्तवास ।।
४ तेरै वर्ष के आसरै, पाल्यो संजम भार।
शासण में शोभा लही, सरल भद्र सुखकार ।।
५ चरम संलेखणा सांभलो, पंच तेला सुप्रसन्न।
ऊपर चार चोला किया, पछै पचख्या पंच दिन्न ।।
६ चोला रै दिन निश मे कियो, संथारो चोविहार।
साढी च्यार पोहर आसरै, सीज गयो श्रीकार ।।

१. मुनि दीपोजी की पत्नी साध्वी श्री चत्रूजी (१००)।

७ ए उपगार सहु आपको, थइ सुवनीत सुजांण।
आप लगाई वेलडी, जेहनां ए फल जांण।।

८ हिवै भाई नी तपस्या भणूं, अल्प मात्र इधकार।
कार्य सुधारचो किण विधै, ए सुणज्यो विस्तार।।

९ इगती वती छती दिन किया, मास खमण पंचवार।
च्यार पंच मास जूजूवा, दोढ मास दिलधार।।

१० पूणीतीनसौ आसरै, वेला वहु चौविहार।
साढी आठ महिना आसरै, एकांतर एकधार।।

११ आठ वर्ष आतापना, 'तेतरे'[1] सियाले सीत।
एक चोलपटो ओढता, त्रिहुंकाले तप नी रीत।।

१२ औषध करिवा 'आखड़ी'[2], एक पोहर की मून।
'मणजल नो महिनो कियो'[3], ध्यान करता धरधून।।

१३ सोलै वर्ष के आसरै, पाल्यो संजम भार।
तिण मांही तप दिनसोधिवा, जाझेरा वर्ष च्यार।।

१४ नित प्रते ध्यान विचारता, संत व्यावच चित्तधार।
अणसण आराध्यो आसरै, वावीस पोहर संथार।।

१५ भाई भोजाई अम तणी, प्रतक्ष पूरी आश।
'ढालभणी इहां इग्यारमी'[4], चेतन चरणा रो दास।।

ढाल ५

दोहा

१ आप उपगारी एहवा, तारचा जीव अनेक।
वली संक्षेपे वर्णवूं, प्रतख अतिशय पेख।।

२ षटमासी तप त्या कियो, च्यार वर्ष इक मास।
सौलह वर्ष में सोधता, तप दिन लाधा तास।।

३ सुविनीत नो पद पामियो, त्रिहुं काल नो तप धार।
वावीस पोहर के आसरै, सीज गयो संथार।।

---

१. उतने ही वर्ष।
२. अन्तिम वर्षों मे।
३. एक महीने की तपस्या मे केवल एक मन पानी पिया।
४. इस पद्य से लगता है कि मुनि जीवोजी ने मुनि दीपोजी के गुणों की ढालें और भी बनाई लेकिन इतनी ही उपलब्ध हुई है।

४ चतुजी नो तप साभलो, तेरै वर्ष के मांय।
छोटा थोकड़ा वहु किया, वासट किया सुखदाय॥
५ संलेखणा नी विध सांभलो, पांच तेला कर तंत।
जोड़े पांच चोला किया, अंतर रहित धर खंत॥
६ पंच किया वले प्रेम सू, चर्म रात संथार।
जुग मोहरत जाभो कियो, च्यार पोहर चौविहार॥
७ ढाल भली इहा इग्यारमी, ए तुज ना उपगार।
आप लगाई बेलड़ी, तसु फल ए विस्तार॥

मुनि कोदरजी

(ख्यात सं० ८६)

ढाल

१ तपसीजी षटमासी तप थां कियो, तपसीजी आछ नें उदकआगार।
होजी दुक्करकारीजी तप गुण धारी हो, तपसीजी थांमें गुण घंणा।
मैहमा थांकी भारी हो कोदर रिष गाबियै ॥
तपसीजो विकट कर्म विणासवा, तप कियो विविध प्रकार।
होजी दुक्करकारीजी ॥

२ तपसीजी छठ-छठ निरंतर धारियो, तपसीजी षट विधै नो परिहार।
तपसीजी अठम-अठम इम आदरचो, तपसीजी पारणे आमल धार ॥

३ तपसीजी रो विनै भगत थी वधियो घणो, तपसीजी रो चार तीरथ मांह तोल।
तपसीजी परिसहा उपसरग जीपवा, तपसीजी सुरगिर जेम अडोल ॥

४ तपसीजी उपसम रस ना सागरु, तपसीजी संवेग रस गलतान।
तपसीजी बंछत सुखदायका, तपसीजी चरण कमल परधान॥

५ तपसीजी संजम भार धुरंधरू, तपसोजी वियावच करण वजीर।
तपसीजी पर उपगारी सूरमा, तपसीजी करम काटण वडवीर।

६ तपसीजी मुकत सामा दिसट धार नैं, तपसीजी हट सूं कियो संथार।
तपसीजी रो कारज सीधो दिन सातमे, तपसीजी कर गया खेवो पार ॥

७ तपसीजी चूरू सैहर में कियो चानणो, तपसीजी धन धन करै नर नार।
तपसीजी रो भजन चिंतामणि सारखो, तपसीजी भवजल तरण आधार ॥

१८. मुनि उदयचंदजी

(ख्यात सं० ६५)

ढाल

दोहा

१ भिक्षू गण में अति भला, संत हुवा श्रीकार।
संक्षेपे भवियण सुणो, उदयराज अधिकार।।

*मुनि प्यारा, उदयाचल जाप जपीजै।। ध्रुपदं।।

२ अठारैसै वीयांसिये अहमंद, उदयारज भणी सुखकंद।
दीक्षा दीधो पूज्य रायचद रे।।

३ हेमराजजी स्वामी पास, रहै उदयचंद गुणरास।
हद दिन दिन अधिक हुलास।।

४ सुमति गुप्ति मांही सावधान, वारु विनयवान गुणखान।
सम शांति रसे गलतान।।

५ प्रकृति सरल भद्र अधिकाई, सहु समण भणी सुखदाई।
तसु जग मे शोभ सवाई।।

६ सीत उष्ण सह्यो चित्त शूर, उदयाचल संत सनूर।
तप कीधो अधिक करूर रे।

७ किया वहु उपवास सुरेख, वेला तेला चोला तप पेख।
पंच षट सप्त वार अनेक।।

८ अठ नव दश वहुवार, वलि कीधा दिन इग्यार।
दोय वार पनरै सुखकार।।

९ चवदै डीडवाणे सीतकाल, मुनि सह्यो शीत विकराल।
सतरै कंटालिये सुविशाल।।

१० तेरै मासखमण तप सार, सोलै उगणीस एक वार।
कीधा मुनि हर्ष अपार।।

११ इकवीस तेतीस पैंतीस उदार, सैंतीस किया वे वार।
अड़तीस उणचालीस तप सार।।

---

*लय—राणी भाखै सुण रे सूडा……।

१२ इकतालीस पैंतालीस आछा, सैंतालीस दिवस तप साचा।
किया मुनि पचास सुजाचा ॥
१३ तप तेपन दिन तणुं तायो, छप्पन दोय वार तप ठायो।
वलि सितंतर सुखदायो ॥
१४ चारु चित्त संवेग वसाई, रिपु कर्म नी सेना हटाई।
मुनि तप तरवार वजाई ॥
१५ तपसी उदयराज अति नीको, तप कीधो सुन्दर तीखो।
गुण गावै गुणि जश टीको ॥
१६ जयगणि जिन वयण सुणाया, वारू वचनामृत वरसाया।
तपसी सुण सुण हियै हुलसाया।
१७ चोथा आरा जिसो तप ठायो, अणसण पैसठ दिन नू आयो।
चढ़ता परिणाम सवायो ॥
१८ जन पाया घणूं चमत्कार, हुवो धर्म उद्योत अपार।
धन्य-धन्य करै नर नार ॥
१९ दुक्कर तप करी मुनि तन तायो, वारू वैरागी ऋपिरायो।
जिन शासण कलश चढ़ायो ॥
२० अति घोर दिप्त तप कीधो, मनुष्य भव नूं लाहो लीधो।
मुनि सुजश नगारो दीधो ॥
२१ उगणीसै वावीस मांयो, उदयराज तपसी गायो।
हिये मुझ आणन्द हर्ष सवायो ॥

ढाल २

धन्य धन्य मुनिवर उदैचन्द ऋषिराय ॥ध्रुपदं॥

१ उदै सुधारस सारिखा हो, मुनिवर, उदैचन्द ऋषिराय।
संजम तप गुण निर्मला हो, मुनिवर, सुजश रह्यो जग छाय।
२ विनय व्यावच काम में हो मु०, हेम तणो सुविनीत।
परम समाध देई करी हो मु०, गण मांहै सुवदीत ॥
३ सियालै वहु सी सह्यो, उन्हाले आताप।
दुक्कर वर तप साथ मैं, काटण संचित पाप ॥
४ मेघ मुनि नी ओपमां, दोय नेत्र ए सार।
शेष शरीर संतां भणी, छती शक्ति संथार ॥

५ पूज्य साहाज्य आछो दियो, पक्को उतारचो पार।
एकवीस दिन तपसा मझे, पछै कियो संथार॥
६ दिन चमालीस में सीजियो, तप पैंसठ दिन सुविचार।
उपसम रस ना सागरु, धन्य परिणाम उदार॥
७ जिन मारग कियो दीपतो, एक वंछा शिव नी ताय।
परम चिंतामणि सारिखो, समरण महा सुखदाय।
साचे मन कर सेविया, मन वंछित फल पाय॥

१६. मुनि गुलहजारीजी

(ख्यात सं० १०३)

[—श्रावक लच्छीरामजी मथेरण]

ढाल १

१ इणहिज जम्बू भरत क्षेत्र में, देश हरियाणो भारी।
गांव ऊमरो वसै तिण काले, उपना गुलहजारी।
फूलां की सी शोभा भारी, तपसी गुलहजारीजी भारी॥

२ साधां मांही साध शिरोमणी, ज्ञान ध्यान हितकारी।
श्री जिन वचन रुच्या हृदय में, साची वुद्ध विचारी।
भला हुआ पर उपगारी तपसी, गुलहजारीजी भारी॥

३ गृहस्थ पणै जौवन में समकित, वाईसपथ्यां री धारी।
अव मिलिया गुरु रायचन्द ऋषि, तेरापंथी सुखकारी।
भीखणजी री सरधा भारी, तपसी गुल हजारीजी भारी॥

४ पञ्च महाव्रत निर्मल पालै, जीव दया सुखकारी।
निर्मल शील अखण्डित पालै, भविकां नै धर्म आधारी।
भलां नव तत्व का धारी, तपसी गुल हजारीजी भारी॥

५ पट रस मीठा रस भोजन त्यागा, आम्विल तपस्या धारी।
इग्यारै द्रव्य लगावत रस विन, परभव वात सुधारी।
भलां ज्यारी जोत करारी, तपसी गुलहजारीजी भारी॥

६ स्मरण करतां कारज सीझै, दूर हुवै दुःख 'दंतारी'[1]।
दर्शन करतां दुर्गति न्हासै, सूरत की वलिहारी।
मूरत शीतल जश प्यारी, तपसी गुलहजारीजी भारी॥

७ विचरत जग में सिंह तणी पर, पाखंड दियो विडारी।
थली मारवाड़ मालवो जयपुर, प्रतिवोध्या घणा नरनारी।
देशां में जय जश कारी, तपसी गुलहजारीजी भारी॥

---

१. कठोरतम।

८ उगणीसै पनरे जेठ विद, रीणी शहर अधिकारी।
कर जोडी लिछमण गुण गावै, भव भव शरण तुम्हारी।
कीज्यो म्हांरी भव निस्तारी, तपसी गुलहजारीजी भारी ॥

ढाल २

१ *गुलहजारी तपसी धारयो अभिग्रह, पंचम काल करूरो रे।
द्रव्य इग्यारै राख्या मुनिश्वर, चित चोखे मन रूडो रे।
२ खाटो[1] आलण[2] दाल[3] चौथो राइतो[4] रे, पापड़[5] आटो[6] खल[7]कोरी चाण री दालो[8]।
आछ[9] छाछ[10] नें दश दश उदकै आगारे, सुमता लेई नैं मेटी मन री 'झालो'[1] ॥
३ तपस्या एकंतर करै निरंतर, 'मंढियो'[2] मन मतवालो।
आपरो संजम जीतब धिन है मुनिश्वर, जिन मारग उजवालो ॥
४ ममता उतारी सामी सर्व द्रव्य पर, सकल कार्य सिध कीजो।
अरज हमारी मानी लीजो, म्हांनै वेगो मुगत गढ दीजो ॥

ढाल ३

†भजो भाई ! तपसी गुलहजारी, दरस कर हरसित नर-नारी ॥
॥ध्रुपदं॥

१ इण ही जम्बू भरत में, देश हरियाणो भारी।
गांव ऊमरो वेश्य तणै कुल, उपन्यो गुलझारी।
देख कुल की शोभा न्यारी ॥

२ गृही थकां जौवन में, समकित वाईसपंथ्यां री।
अव मिलिया गुरु रामचन्दजी, तेरापंथी सुखकारी।
भीखणजी की सरधा धारी ॥

३ साधां में साध शिरोमणी, ज्ञान ध्यान सुविचारी।
श्री जिन वचन रूच्या हिरदै में, अंतर आंख उघारी।
निकलिया वण पर उपकारी ॥

४ पांच महाव्रत पालता, जीव दया हितकारी।
निर्मल शील अखंड अराधै, मेट घट मे अंधारी।
भली बुध तत्त्व परखवा री ॥

---

*लय : जिन कल्पी कष्ट ……।
†लय : नेमजी की जान बणी भारी ……।

१. लालसा।
२. वश मे किया।

५ षट रस भोजन त्याग कर, अमल तपस्या धारी।
ग्यारह दरब लगावत रस विन, परभव वात सुधारी।
भली आतम ज्योती जारी ॥

६ स्मरण करत कारज सरै, सव सुख दातारी।
दरसन करतां दुर्गंत न्हासै, सूरत की वलिहारी।
मूरत शीतल ज्यांरी प्यारी ॥

७ विचरत जग में सिंह ज्यूं, पाखंड दियो विडारी।
थाली मारवाड़ मालवो जैपुर, प्रतिवोध्या नरनारी।
देश देशां में जसकारी ॥

८ उगणीसै पनरै जेठ विद, छठ रीणी अधिकारी।
कर जोड़ी लिछमण गुण गावै, भव-भव शरण तुम्हारी।
कीजियै मुझ भव निस्तारी ॥

ढाल ४

*संत जिन तेरापंथ मांई ॥ ध्रुपदं ॥

१ गुलजारीजी महाराज तुम्हारी, सदा जोत सवाई।
गुण रत्नागर बुध के सागर, सुध सरधा पाई ॥

२ शरद पूनम शशि जियां, इण भरत क्षेत्र मांई।
पारस चिंतामणि की शोभा, इण सम नहीं काई ॥

३ भव-भव के दुख जाय भेटतां, आतम सुखदाई।
गांव सिसाय चोमास कियो रिष, भवी जीव समझाई ॥

४ ज्ञानचंद हरष्यो सुण वाणी, निरवद सुणवाई।
ज्ञानीराम वैराग ऊपज्यो, दया दिलमें आई ॥

५ सादीराम का साज सनूरो, वात सिरे थाई।
नथमल कूडामल सुध श्रावक, सदीराम भाई ॥

६ सव पंचा मिल रच्यो महोत्सव, शुभ वेला मांई।
दीक्षा मोच्छव नोपत वाजी, दुनियां वहु आई ॥

७ पाप अठारह तन स्यूं त्यागी, सव सावज पचखाई।
आश्रव तज मन अम्वर कर धर, संवर चित्त ल्याई ॥

८ जे जे कार हुयो जस मंगल, घर-घर में गाई।
गांव सिसाय दीपतो कीन्हो, चोमासा मांई ॥

*लय : लावणी……।

९ चोमासो उतरियां स्वामी, शेषकाल तांई।
आवै भिवाणी नगरी सुख थी, दुनियां सुख पाई।।
१० गुलजारी तपसी संत मोटो, शोभा कही न जाई।
लछमीराम मन हरष लावणी, सुजश तणी गाई।।

ढाल ५

१ *स्वामीजी थांरै दर्शन री वलिहारी, स्वामीजी थांरी सूरत री वलिहारी।
हुंतो वारी जाऊं वार हजारी, स्वामीजी थांरै दरसण री वलिहारी ।।ध्रुपदं।।
२ देश हरियाणो सव में दीपत्तो, गांव नगुरो भारी।
पिता रामधन पुरुषां मे उत्तम, कडिया मात उदारी।।
३ पूरव पुन्य प्रताप मुनीसर, आय लियो अवतारी।
माता-पिता सुत नांव दियो, गुण-निघन ओ गुलजारी।।
४ वालपणै मुनि चतुर विचक्खण, सीखी कला अति प्यारी।
वाल रामत संत संग मिली, जिहां नित आवै नर नारी।।
५ धर्म अंकुर प्रगट्यो कुल माही, स्वारथ की चितधारी।
आग्या कारण वहु दुख देख्या, तोही गरहा निरधारी।।
६ गृहस्थ थकी मन अलगो कियो, सुगुरू धरम दिल धारी।
दृढ़ संघयण ज्ञान का सागर, क्षमा दयादि विचारी।।
७ रायचन्द गुरु साचा मुनीश्वर, जोत क्रान्ति तपकारी।
पांच महाव्रत निर्मल धारै, भव-भव में सुखकारी।।
८ विद्या मंत्र सिद्धांन्त तणो मुनि, पाठ करै अधिकारी।
पर उपकारी ज्ञान समन्दर, नोवत नय हितकारी।।
९ देश देशान्तर धर्म दिपायो, भविक जीव निस्तारी।
दिख्या दे शुभ मारग हलावै, उत्कृष्टा उपकारी।।
१० अनमति प्रश्न पूछवा आवै, सहज प्रश्न प्रतिकारी।
जैसी जिनकी प्रकृति देखै, तेसी करै उपरारी।।
११ उगणीसै उगणीस आसू वदी, अष्टमी मंगलवारी।
कहै लिछमण, मुनिवर गुण गावत, निश दिन शरण तुम्हारी।।

लय : नाथ! कैसे कर्म रो फन्द छुड़ायो.....।

ढाल ६

धन-धन तपसी गुलजारी ।।ध्रुपंद।।

१ देश हरियाणै रा उपन्या, वेश्य तणै कुल जाव ।
तत्त्व समझ भल भाव स्यू, लागी सुध गत चाव ।।

२ जव लय लागी धर्म थी, चित आयो शुभ ध्यान ।
रायचन्द गुरु पामिया, मोटा मेरु समान ।।

३ सेंठी समगत आदरी, सव सावज पचखाण ।
सर्व थकी त्यागन किया, जावज्जीव प्रमाण ।।

४ सेव करी ऋषि जीत की, सीख कला अभ्यास ।
आग्या विलसत गुरु तणी, मन में अधिक उल्लास ।।

५ साधपणो पालै निर्मलो, निर्मल चारित नेम ।
मन लागो शिव रमणी थकी, परहरियो सव प्रेम ।।

६ गांवां नगरां विचरता, पालै श्री जिनधर्म ।
आप तिरै तारै भवी, तोड़ै आठूइ कर्म ।।

७ मन में करी विचारणा, आय गुरां रे पास ।
तप किरिया सेंठी धरै, कर्मा रा काटण पाश ।।

८ कोरी दाल चिणा[1] तणी, खल[2] पापड़[3] कणक रो चून[4] ।
[5]"तरकारी" न्यारी करूं, साग दाल[6] विना सव सून ।।

९ वड़ी[7] रायतो वड़ा तणो[8], पाणी[9] आछ[10] नै [11]"सीत"[12] ।
भारी अभिग्रह आदर्‌यो, साची तप परतीत ।।

१० धर्म सुणावै जीवा भणी, करता पर उपकार ।
चारित दियो वहु जीवां भणी, उत्तारण भव पार ।।

११ अढाई मास फिरता मुनि आविया, चौथे आरे सम जाण ।
अभिग्रह पालै मुनि मन रली, इम वौलै गुरु वाण ।।

१२ एहवा मुनिवर भेटतां, अघ जावै सव पूर ।
कोइक रसायण नीपजै, जावै दरिदर दूर ।।

१३ उगणीसै सतरे समै, काती विध बुधवार ।
नवमी तिथि दरसण करया, मन में हरख अपार ।।

---

१. आलणी ।   २. छाछ ।

१४ गांव सिसाय सुहावणो, चोमासे सुखदाय।
ज्ञानीराम[1] दिख्या लिये, श्रावक सब मन ल्याय॥
१५ हठ कीन्हो हाजरी मझे, एकान्तरे अम्बू हजूर।
और द्रव्य पालो गुरु आगन्या, थे साचे ला सूर॥

ढाल ७

स्वामीजी म्हांनैं दरसण वेगा दीज्यो, म्हांरी वीनतड़ी सुण लीज्यो॥ध्रुपदं॥

१ स्वामीजी थे तो रायचंदजी रा चेला, थारै घणा धरम रंगरेला।
पूज जीत ऋषि गुरु थारां, वांछित कारज सारा॥
२ थां मिल्यां स्यूं मन म्हांरो राजी, गई अन्तराय सहु भाजी।
मुंहमांग्या पासा ढलिया, म्हारा अन्तर नैन उघड़िया॥
३ थांस्यू लागो धरम रो नेहो, जाणै दूधां बूठो मेहो।
पांगरिया म्हारै गुरुराया, मन वांछित कारज थाया॥
४ स्वामी निरवद धर्म सुणावै, अनमत म्हांरै दाय न आवै।
सागर जिम गहर गंभीरा, वाणी खीर समन्दर नीरा॥
५ छोडया काम क्रोध मद लोभा, पारस चिन्तामणि जिम शोभा।
पारस कंचन करै लोह भेटै, स्वाम जलम मरण दुख मेटै॥
६ चिंतामणि जग कारज सारै, स्वामी दुरगति दुक्ख निवारै।
मैं तो निजरां स्वाम नै दीठा, म्हारै लाग्यो रंग मजीठा॥
७ लाग्यो साधां सेती नेहो, दिन-दिन म्हारै अधिक सनेहो।
तेरापंथी सकल मुनिन्दो, जाणे शुक्ल पक्ष ना चन्दो॥
८ स्वामी देश देशान्तर जावै, हिरदै थी नही विसरावै।
हुंतो 'आर्त्त'[2] न चूको थारी, नित लागी रहै आशा तुम्हारी॥
९ था आया स्यूं देश सुरंगो, लाग्यो रहै घणो धर्म रंगो।
भीवाणी आप पधारो, सेवग मन हर्ष अपारो॥
१० मिगसर विद एकम आवै, मुनि विहार करे सुख पावै।
मोस्यू विरह खम्यो नही जावै, आज्ञा लोपी पण न सुहावै॥

---

१. शासन प्रभाकर, ८। सो० ५३ :
ज्ञानी सतरे साल, दीख्या लेई तप कियो।
कर्मा कीध हवाल, इकतीसे चूरू टल्यो॥
२. याद।

११ लाग्यो संत जना स्यूं हेतो, जाणूं परभव नो संकेतो।
हम पाप धरम उजवालो, तज्यो पाखंड कैरो दिवालो ॥

१२ उगणीसै उगणी वासो, सुखे भिवाणी करी चोमासो।
फेरूं दरसण वेगा पाऊं, हुंतो हुलस-हुलस गुण गाऊं।

ढाल : ८

तपसी गुलजारी नित उठ वंदियै रे ॥ध्रुपदं॥

१ नमो नमो गुलजारीजी मुनि रे, तपसी गुण रतनां केरी माल रे।
पुरुषां में उत्तम साध सुहावणां रे, साचा श्री जिन आज्ञा प्रतिपाल रे।

२ उत्तम कुल में मुनिवर ऊपन्या, जाणै ओ काचो अथिर संसार।
ममता ने माया त्यागी मन तणी, साचै मन लीन्हो संजम भार ॥

३ नमो नमो तपसी निग्रन्थ नै, त्रिकरण सुद्ध करी तहतीक।
चढता परिणामां ध्याऊं ध्यान में, जाणू गति पांचमी होय नजीक ॥

४ पांच महाव्रत निर्मम पालता, करता साचै मन उग्र विहार।
पांचे समिति कर तपसी शोभता, तीन गुपती नैं हरदम धार ॥

५ सुपने ज्यूं सुख सगला संसार ना, जाणै विष ने विष-कूप समान।
काया माया सब जाणी कारमी, गुण निष्पन्न निपट गुणां री खान ॥

६ मारग दीपायो मुनिवर मोख रो, आगम अर्थ तणै अनुसार।
चरचा में बोल वचन अटकायवा, पाखंड हटावण खड्ग दुधार ॥

७ नव तत्त्व साते नय परकासवा, श्री जिन आज्ञा छै अगवाण।
चालै जद ईरज्या पंथ निहालता, जिण विध भाख्यो श्री भगवान।

८ एहवा तपसी रा नित गुण गाइयै, तेरापंथी इण भरत मझार ॥
आगम वचन उलांघै वीर . नां, त्यांरै गुण विन सूतर इधकार ॥

९ मीठी तो वाणी इमरत वागरै, चारुं परिषद रे हेत रचाय।
बाके टेढे अणमती आवै घणां, सुण-सुण ने सूधा हुय-हुय जाय ॥

१० पनरै रे जेठ मे रीणी पधारिया, मुनि वच्छ सागे रामदयाल।
राते तो रतन मुनीसर शोभतो, गुलाबोजी मोत्यां केरी माल ॥

११ एहवा सन्ता नै नित नित गाइयै, शुद्ध समगत री करी पिछाण।
रामचन्दर महातमा वीनवै, चाहूं भव-भव में परम कल्याण ॥

ढाल ९

[—संतों द्वारा रचित]

*भविक कहूं रायऋषि संबंध ।।ध्रुपदं।।

१ गुल हजारी गुण आगला, अग्रवाल देश हरियाण।
ग्राम नगुरा ना वासिया, जीत हस्ते दीक्षा इठयासीये 'गहाण'[२]।

२ भण गुण नैं पंडित थया, हिम्मत घर गण-सिणगार।
हजारां पानां लिख्या हाथ थी, सम्यक्त देई घणा नैं दिया तार ।।

३ तप बेला चोला पंचोला छव आदि देई, सात आठ किया घणी वार।
नव दश किया दोय वार ही, इक वारज किया इग्यार ।।

४ संवत बाणवा रे टांकडे, जावजीव एकान्तर धार।
तैयालीस वर्ष आसरै एकान्तर किया, तिण में उगणीसै वीस थकी श्रीकार।।

५ अन्य द्रव्य सहु परिहरया, भोगविवा राख्या इग्यारा खंध।
यावत चवदा वर्ष मठेरा आसरै, इग्यारा खंध भोगव्या तस नाम कथंद।।

६ खंध खाटा रो[१] वड़ी रो[२] आलणी[३] तणो, राईता[४] नो रांधी दाल[५] नो खंध रखांण।
पापड़[६] आटा नो[७] कची चणा री दाल[८] नो, आछ[९] छाछ[१०] पाणी नो[११] खंध पिछाण ।।

७ ए इग्यारा खंध चंवदै वर्ष भोगवी, कर्म निर्जरा कीध।
घणा नैं स्हाज वलि दीक्षा देई नैं, जग में यश बहु लीध ।।

८ सिंघाडाबंध विचरया घणा, हरियाणा में घणो कियो उपगार।
शासण वृद्धि कीधी घणी, रायऋषि थी जय लग मुरजी रही अपार ।।

९ गुण केता तास वर्णवै, कहितां नावै पार।
सुध-आचार पाली करी, अन्त कियो संथार ।।

१० दोय दिन लग सागारी रह्यो, पिण औषध न लिवाय लिगार।
आठ प्रहर मठेरो जावजीव आवियो, संवत उगणीसै चोतीसे श्रीकार ।।

११ आसोज वदि वारस काम समारिया, गुलहजारी गुणवंत।
नाम लियां भव निस्तरै, सुर शिव सुख पावंत।

---

१. *लय : राम पूछे सुग्रीव नै रे ....।
२· चुरु मे नोकरी करता जद वैराग्य आयो।

२०. मुनि अनोपचंदजी

(ख्यात सं० ११४)

[—मुनि श्री जीवोजी]

ढाल १

दोहा

१ सासण भीखू सांम को, चावो इण संसार।
जिण मत जमियो जुगत सूं, जग जीवन जयकार॥

२ श्री गछ भार धूरंधरू, भारीमाल अणगार।
पट थापी परलोक में, पहुंता कुल जुग पार॥

३ रायचंद तीजे पटे, एहवो थयो उपगार।
अनोपचंद रिष पद लह्यो, ए सुणज्यो इधकार॥

४ *समत अठारै वरस वांणूंअे, चेत मास विध रे।
तिथ आठम नें गुरवार अनोपजी, चारित ले सुध रे।
आतम नै उजल करिवा रे।
धिन अनोपचंद अणगार, उठ्यो अमरापद वरिवा रे॥

५ जनक नंदोजी नीको श्रावक, श्रीजी दुवारै रे।
माता दोलां अंगज अनोपचंदजी, वंस उद्धारै रे॥

६ अनोपचंदजी कहत काका सूं, आग्या दिरावो रे।
तो हूं मान सूं तुझ उपगार, मोंने भव सिंधु तिरावो रे॥

७ हूं नही राचू संसार असार, सुपन की माया रे।
म्हारै वर्स जिसो दिन जाय, एता दिन 'ऐल'[1] गमाया रे॥

८ आग्या विना उघारै मुख बोलण, घर को धंधो रे।
विणज काचा पांणी रा नेम, म्हारै छै एहवो बंधो रे॥

९ धीर्य घर इम कहै काकोजी, ए म्हांरो वचन छै रे।
तोनें जुगत सू दिख्या दिरावू, 'मुकर'[2] जो थारो मन छै रे॥

लय : बीणा बजावै नें........।

१. व्यर्थ।

२. निश्चित।

दिराई रे।
१० कीधी दलाली कुसालचंदजी, आग्या
जुगते जनक काको समजाय, भाव सूं लीधी भलाई रे॥
११ मात पिता मन उजल भावै, अनुमत दीधी रे।
कर ओछव महोछव आडंवर, जग सोभा लीधी रे॥
१२ कर सिणगार हयवर चढ लाल बाजार में आया रे।
बाजा बाज रह्या भिणकार सुणी, जन खलक मिलाया रे॥
१३ हलूअै हलूअै गयवर घूमता, पावटे आया रे।
मिल्या नर-नारयां नां वृंद, 'गोरी'[१] मिलगीतजगाया रे॥
१४ अनोपचंदजी आया संता रे, चरणे लागै रे।
पछै पेहर मुनि नो वेस, विनां सूं, उभा आगै रे॥
१५ कर नैं उलाली कहै नंदो जी, साम सुणीजै रे।
अब तार तार मुनीराय चूप सूं, चारित दीजै रे॥
१६ सरुपचंदजी साम को 'पंचो'[२], सिर पर लागो रे।
अनोपचंदजी 'अगंज'[३] भया, दुख दोहग भागो रे॥
१७ देख रह्या वहु चारित देता, धिन धिन भणता रे।
हर्ष हिलोलै नर नार कर जोरी, कीरत करता रे॥
१८ वृध (विरद) धारी वरसंजमलीधो, 'मृगपती को'[४] रे।
चमतकार चढायो सुजस नों, तलेसरां नैं कुल टीको रे॥
१९ त्याग वैरांग करता केइ चरणा में सिर धरता रे।
कहै धिन थारो अवतार लुललुल नै लटका करता रे॥
२० चढता जोवन में सुंदर जीवत, सील आदरियो रे।
एक चारित चित्त माहै वसियो वैरागी, तप स्यू तिरियो रे॥
२१ कहता जसी हद कर नै वताई, इम गुण गाता रे।
केइ आता केइ संग जाता जाचक नै दांन दिराता रे॥
२२ छता भोग छिटकाया सुग्यानी, कुटंव कवीलो रे।
जके जोवन मांहै 'मदन'[५] दमै सो, 'विहाणै'[६] वंदीलो रे॥
२३ चतुर विचक्षण भगनी चंपा, वालकवय में रे।
सती संजम लीधो वहन भायां री, कीरत मही में रे॥

---

१. महिलाए।
२. पजा।
३. अजेय।
४. सिंहवृत्ति से।
५. कामदेव।
६. प्रातःकाल

२४ नमो नमो नर नार वैरागी, एहवा वंदो रे।
विद आठम रो उपवास करी, निज पाप निकंदो रे॥
२५ 'समत अष्टादस वरस, नारायणनयण'[1] सुस्वर में रे।
जोर कीधी चैत विद अष्टमी रे दिन, 'कृष्टानपुर'[2] में रे॥

ढाल २

दोहा

१ श्रीजी द्वारा शहर में, जात तिलेसरा जाण।
अनोप ऋषि अति दीपतो, तपसी गुणां री खाण॥
२ संवत अठारै बाणवे, चेत वदि आठम ताय।[3]
रायऋषि रे आगले, संजम लियो सुखदाय॥
३ सुवनीतां शिर सेहरो, आज्ञाकारी सुखदाय।
विविध प्रकारे तप करै, सुणज्यो चित लाय॥

४ बाणवै साल आछ रा रे, मुनि इकवीस ने नव जाण।
छिनवै साल वलि आछ रा रे, मुनि त्रेसठ दिन पहिचाण॥
अनोप अणगारी रा, तपसी जश धारी रा।
खीम्यां गुण भारी रा, संत सुखकारी रा साधजी॥ध्रुपदं॥
५ उदक आगारे अठाई करी, साल सताणवे तास।
अठाणवे साल वलि आछ रा, सात दिन नें एक मास॥
६ तीये साले तप कियो, आछ आगारे आठ।
एकसौ नव पांचे किया, आछ आगारे कर्म काट॥
७ छके साल चोलो कियो, उदक आगारे जोय।
साते साले पिण आछ रा, सितंतर दिन सोय॥
८ आठे साल तेरे किया, आछ आगारे जाण।
एकसौ सत्यासी वलि आछ रा, नव की साल पिछाण॥
९ दश की साले तप आछ रो, एकसौ त्राणवै दिन जोय।
इग्यारै साल वलि तप तप्या, षट मासी एक दिन होय॥

---

१. स १८९२ २. नाथद्वारा।
३. प्रकाशित पुस्तक नित्य नियमावलि पृ. २१५ मे चैत्र शुक्ला ८ है पर मुनि जीवोजी कृत प्राचीन ढाल के अनुसार चैत्र कृष्ण ८ ही सही है।

१० द्वादश साले तप तप्या, दो सौ अठारै धार।
नर नारी धिन-धिन कहै, मु० धन्य थांरो अवतार॥
११ तेरै साल नें चवदै रै साल, त्रेपन अडतालिस जाण।
दोनूंइ साले उद करा, मन लागो निरवाण॥
१२ पनरै रे साल किया प्रेमसू, एकसौ त्राणवै तास।
सोलै सालै तीस उद करा, वलि किया सात हुलास॥
१३ सतरै साल अड़तीस किया, चोलो पंचोलो सात।
सतरै पांच वलि तें किया, उदक आगारे इण भांत॥
१४ अठारै रे साल तप तप्या, दश किया चौविहार।
इग्यारमें उदक आचरचो, वारमे तीन तेविहार॥
१५ उगणीसै उगणीस एकवीस किया, तिण में दश चौविहार।
सात में दोय पाणी पियो, वलि थोकडा च्यार॥
१६ एक दिवस आछ आचरी, वाकी उदक आगार।
उगणीसे वीसे सोलै किया, तिण में नव चौविहार॥
१७ पनरै चवदै अठारै किया, वलि उगणवीस विचार।
उदक आगारे तप तप्या, सफल कियो अवतार॥
१८ इकवीस साले तप तप्या, वीस वावीस तेवीस श्रीकार।
वावीसे साले वलि जाणज्यो, वलि इकतालिस धार॥
१९ उगणीसै तेवीसे समै, पैंतीस किया इम जाण।
तीनूंई साले उदक रा, मन लागे निरवाण॥
२० चौवीसा सूं छवीसा तांई जी, फुटकर तप विचार।
सतावीसे तुम्हें किया, पांच दिन चौविहार॥
२१ अठावीसे सतावन किया, उन्हा पाणी आगार।
उणतीसे पनरै किया, तप एह चौविहार॥
२२ सोलमें दिन पाणी पियो, चोखै चित्त हिव धार।
सतरमें दिन महा मुनि, पोंहता परलोक मझार
२३ गुण गातां मन गहगहै, हर्ष उत्कृष्टे एय।
गुणवन्त रा गुण गावतां, तीर्थङ्कर पद लेय॥
२४ समत उगणीसै पैंतीस समै, काती विद तेरस बुधवार।
तपसीजी रा गुण गाविया, चूरू शहर मझार॥

ढाल : ३

[—आचार्य श्री मघवा गणी]

*सुगणा सांभलो, हो गुणिजन अनोपचंद अधिकार ।।ध्रुपदं।।

१ वासी श्रीजीद्वार ना हो गुणिजन, नन्दराम नो नन्द ।
जाति तलेसरा जेहनी हो गुणिजन, अनोप नाम गुण वृन्द ।।

२ सरूप शशी ना वच सुणी, पायो चित्त वैराग ।
त्यारी थयो व्रत लेणनै, अनोपचंद वडभाग ।।

३ सुमति गुप्ति ना गुण भला, धरता ऋष श्रीकार ।
वलि लाखां ग्रंथ लिख्यो मुनि, वारु उद्यम अधिक उदार ।।

४ समत अठारै वाणुवे, 'चेत शुक्ल'[1] श्रीकार ।
अष्टमी संयम आदरचो, तजी ऋद्धि परिवार ।।

५ चौथ भक्त थी लेइकरी, तेवीस लग सुविचार ।
एक चवदै विना मुनि तप कियो, कोई एक वार वहुवार ।।

६ वे वार मास खमण किया, वलि किया दिन पैंतीस ।
सैंतीस दिवस तप थोकडा, बे अडतीस सुजगीस ।।

७ फुन दिन इकतालीस थोकडो, वियालीस फुन कीध ।
पैंतालीस अड़तीस करी, तप रस प्याला पीध ।।

८ वलि तेपन पचपन तप कियो, सतावन सुविचार ।
तेसठ दिन फुन थोकडो, सितंतर श्रीकार ।।

९ वलि दिन चोराणु तप कियो, किया पिचाणुं फुन दिन्न ।
वलि एकसौ नव दिनना थोकडो, करचो करी दृढ मन्न ।।

१० षट मासी फुन सवा षट मासी, बे वार साढे षट मास ।
सवा सतमासी तप कियो, आछ आगार हुलास ।।

११ मोटा तप वहुल पणै किया, आछ तणै आगार ।
वलि नव दश इग्यारै तप कियो, चौविहार एक वार ।।

---

*लय : सुण तूं साधजी ! हो मुनिवर मन चलियो तू घेर......।

१. यहां चैत्र कृष्ण होना चाहिए ।

१२ वलि चौथ छठ अठम वहु किया, सह्यो सियाले सीत।
वलि ज्ञान ध्यान वहु विध कियो, निर्मल चरण नी नीत॥

१३ पछै समत उगणीसै सही, गुणतीसे गुणकार।
पनरै दिन लगतो सही, तप कीधो चौविहार॥

१४ सोलमें दिन अल्प जल लियो, सतर में दिन श्रीकार।
तपसी तपस्या नैं विषै, चाल्या जन्म सुधार॥

१५ शहर देवरियो दीपतो, पण्डित मरण उछाह।
अनोप तपसी हद लियो, पद आराधक लाह॥

१६ वारु वर्ष वतीस नें ऊपरै, पाल्यो संजम भार।
दुक्कर तप कारक भलो, सरल हृदय सुखकार॥

१७ संवत उगणीसै पैंतालीस में, सरदारशहर चौमास।
गुण गाया तपसी तणा, हुवो चित हुलास॥

२१. मुनि शिववगसजी

(ख्यात सं० १२८)

[—आचार्य श्री मघवा गणी]

ढाल १

दोहा

१ शिववगस तपसी सरवर, अगरवाला जात।
वासी माधोपुर तणा, जोवन वय सुविख्यात॥
२ संवत अठारै निनाणूंए, ऋषिराय महाराज।
तास हाथ लीधो चरण, करवा सिद्ध निज काज॥
३ आषाढ विद वर तीज दिन, सैहर हरिगढ मांह।
बहु मोछव लीधो चरण, आंणी मन ओच्छाह॥
४ तसु तपस्या रु गुण विविध, संक्षेपे सुविचार।
श्रोता चित देई सुणो, जिम कियो जीव उद्धार॥

५ *संवत उगणीसै अठारै ए, आसाढ मास मे सु विचारी।
जावजीव इक मासे छठ चिहुं, करणां धारचा गुणकारी॥
धिन-धिन तपसी शिववगसजी, गुण निष्पन नाम जसु भारी।
बोधिव्रत शिव मार्ग जन नै, वगस तारचा बहु नर नारी॥
६ उगणीसै चोके सेषे काल थी, च्यार विगय मुनि तज दीधी।
दूध दही मिष्टांन तेल ए, जावजीव त्यागन कीधी॥
धिन-धिन तपसी शिववगसजी, जबरी तपस्या ज्यां कीधी।
विनयादि गुण विविध आराधी, जग में सोभा बहु लीधी॥
७ वली खुला वास बेला रु तेला, करी लाभ लीधो भारी।
फुन आठै वर्ष थी दीवाली नां, लिया थेट सीम अठम धारी॥
८ उगणीसै गुणतीस वर्ष थी, जावजीव लग सुविचारी।
सेलडी नी वस्तु बहु त्यागी, ओषधि विण मुनि कीधी भारी॥

*लय : चेत चतुर नर कहै तोनै ......।

९ चोला आठ इक छनो थोकडो, सात अठाई श्रीकारी।
नव नव कीया तीन थोकडा, दशनो एक कीयो भारी॥
१० तेर दिवस नो एक थोकडो, बे चवद चवद नां गुणधारी।
पख पख ना किया तीन थोकड़ा, हियै धरी अति हुसियारी॥
११ सोल सोल दिनना मुनि कीनां, च्यार थोकडा चित्तधारी।
सतर अठार नां बे बे मुनिवर, किया थोकडा गुणकारी॥
१२ इकवीस दिन ना दोय थोकडा, काटण कर्म किया भारी।
कइ वरसां लग सावण भाद्रवे, कियो छठ छठ तप मुनि सुखकारी॥
१३ वरस तेतीसे इकतीसो वर, मास खमण कियो श्रीकारी।
तिणमें आठ दिवस लगो लग, तेवीस दिन तप तिविहारी॥
१४ एक पछेवडी उपरंत न ओढी, सीतकाल में श्रीकारी।
घणा वर्ष पिण सूती तंतू[1], उपरंत कियो मुनि परिहारी॥
१५ ते पिण पर नो ओढचो मेलो, धारचो निरजरा दिलधारी।
कर्म काटण री दृष्टि घणी तसूं, मन सुमता ग्रही मुनि भारी॥
१६ वरस वयांले सुजानगढ में, तीज वैसाख नी तंत सारी।
तिण दिन थी एकंतर तप मुनि, करणो धारचो गुणकारी॥
धिन धिन तपसी शिववगसजी, सुजानगढ में सुविचारी॥
संलेखंणा तप अणसण प्रमुख, करो अराधना हद भारी।
१७ चमालीसे काती विद लग, तप कीधो मुनि धर हुंसियारी।
वर्ष अढाई तणै आसरै, तिण मे मास मास छठ चिहुं भारी॥
१८ हिवै सुद पक्ष थी छठ छठ निरंतर, तप करणो मांडचो जशधारी।
पछै वयालीसे कारण तनुं उपनां, करी तपस्या अति भारी॥
१९ माघ मास वर दिवस छवीस नू, कियो थोकडो अति तीखो।
तिण में अल्प उदक लीधो अरु कीधो, पारणो सुद पंचमी नीको॥
धिन धिन तपसी शिववगसजी, कर्म काटण मुनि अति नीको।
सज्झाय ध्यान वखांण वाणी में, उद्यमी अति वर जस जीको॥
२० पारणो कर छठ अठम सू मुनि, कियो षट दिन लग लगतो आहारी।
पछै माहसुद चवदस थी तप, करणो धारचो श्रीकारी॥
२१ पछै सरीर सूकाय कियो अति खंखर, उष्णकाले पिण तप धारी।
बहुल पणै पिण छठ छठ तप, कियो मुनिस्वर चौविहारी॥

---

१. वस्त्र।

२२ पहिला मास में चिहुं पछै निरंतर, सगला छठ कीधा भारी ।
सोलसै इकवीस आसरै, किया बेला तसु बलिहारी ॥
धिन-धिन तपसी शिववगसजी, जवरी तपस्या ज्यां कीधी ॥

२३ पछै सैतालीसे भादु विद तृतिया, दशम भक्त पारणो कीधो ।
अल्प आहार ले चौथ तणो हिव, छठ भक्त पचख्यो सीधो ॥

२४ पंचम दिन सवा पोहर आसरै, दिन चढचा संथारो सागारी ।
तपसी हुंकारे पचखायो संता पछै, पूछचो तृतिय पोहर मुनि गुणधारी ॥

२५ म्है जाव जीव संथारो आपने, पचखावां हिव सुविचारी ।
जल मांगो तो आगार आपरै, नहि तो जावजीव लग चौविहारी ॥

२६ पछै त्रिखा लागी तोही जल नही पीधो, सवा छ पोहर लग चौविहारी ।
सहु आठ पोहर तणो संथारो, सीझयो छठ तणै दिन श्रीकारी ॥

२७ चिहुं सरणादि ज्ञान विवध पर, मुनि संभलायो तिहवारी ।
सावचेत परिणांम समै मुनि, सुणि आतम निज निस्तारी ॥

२८ सरल भद्र सुविनीत मुनिहद, भद्र प्रकृति अतिहि भारी ।
क्रोध मानादि छा तसु पतला, गावै गुण वहु नर नारी ॥

२९ चिमन अमरचंद आदि मुनि हद, सेव वहु वर्षं कीधी ।
काम वियावच्च भक्त करी नै, विवध परै साता दीधी ॥

३० इकवीस खंडी मंडी प्रमुख, कियो मोछव जन तिहवारी ।
वलि गाजा वाजा प्रमुख घणे रा, ए अरिहंतनी आग्या बारी ॥

३१ अडतालीस वर्ष बे मास जाझेरो, चरण रयण पाल्यो भारी ।
जवर तपस्वी सुजस लह्यो वहु, काकडा भूत थया इह आरी ॥

३२ संवत मुनि[७] रस[६] निधि[९] रवि[१] वर्षे, सुजानगढ में सुविचारी ।
मृगसर सित तपसी गुण गाया, ठाणां सताणू सुखकारी ॥

२२ .मुनि तेजपालजी

(ख्यात सं० १२९)

ढाल १

दोहा

१ शहर लाडनू में वसै, जाति गुलेछा जान ।
शाह डूगरसी शोभता, सुतन पंच सुविधान ।।

२ बालक वय वैराग्य अति, समण तणी वहु सेव ।
तेजपाल अति उद्यमी, धर्म करण स्वयमेव ।।

३ तिण अवसत ऋषराय शिष्य, जवर जीत युगराज ।
शहर लाडनू समवसरचा, पूज्य भवोदधि पाज ।।

४ जय वचनामृत हिय धरि, तेजपाल तिहवार ।
परम संवेग लेई हुवा, संयम लेण सुत्यार ।।

५ ग्रन्थ हजारां सीखिया, गृहस्थ पणै रै माय ।
चरण लेण चित्त चूंप अति, पिण पिता आण दे नांय ।।

६ युगराजा जे जनक नै, समझाया वहु भात ।
गोत गुलेछा बेहुं तणो, तुझ मुझ एक ही जात ।।

७ समझाया इम युक्ति सू, पुत्र पांच तुझ जोय ।
जाणी एक पुत्र मुझ नै दियो, 'खोले'[1] ही अवलोय ।।

८ *सूरिजन रे ! तेजपाल अति दीपतो रे, संवत उगणीसै जाण हो लाल ।
मिगसर वदि एकम दिने रे, चरण लियो शुभ ध्यान हो लाल ।।
तेजपाल मुनि वंदियै रे ।।

९ मात पिता नै परहरचा, तजि चिहुं बंधव 'आथ'[2] ।
चरण लियो चित चूप सू, जुग राजा जय हाथ ।।

१० जय पासे सीख्या भण्या, समय सार सुविचार ।
सूत्र तणी वहु धारणा, करता अधिक उदार ।।

---

*लय : हेमऋषि भजिये सदा रे ......।

१. गोद । २. सपत्ति ।

११ जुगराजा पासे सही, हेतु दृष्टंत अवलोय ।
कथा वखाणादिक नी कला, सीख्या सखर सुजोय ।।
१२ उगणीसैं आठै महा महिने, श्री जयगणि पद धार ।
जठे पीछे पिण तेजसी, करी सेव श्रीकार ।।
१३ परम प्रीति अति गणी थकी, हद नीत चरण हुंशियार ।
रीत मर्याद शुद्ध पालता, सुवनीत सुगुण श्रीकार ।।
१४ सूत्र पांच मुख सीखिया, आवसग्ग अवलोय ।
दशवैकालिक उत्तराध्ययनही, वलि नन्दी वृहतकल्प जोय ।।
१५ वार-वार सुणतां थकां, संस्कृत प्राकृत जोय ।
प्रकरण पईन्ना वहु ग्रन्थनी, वहुत धारणा होय ।।
१६ केइक चौमासा मुनि किया, दीर्घ मोती मुनि पास ।
जय गणपति आणा थकी, आणी चित हुलास ।।
१७ तेजपालजी मुनि तणो, उगणीसै अष्टादश वास ।
कियो सिंघाड़ो गणपति, फुन प्रथम जोधाणे चौमास ।।
१८ वर्ष घणा गणिराज री, सेव करी शुभ ध्यान ।
चरण पुष्ट निज हियै धरचा, जय वचनामृत पान ।।
१९ सूत्र वतीसूं बहु वार ही, वांच्या ऋषि तेजपाल ।
सज्झाय करण अति घणो, उद्यमी मुनि गुणमाल ।।
२० चरचा करण अति चातुरी, वचनकला अधिकाय ।
अन्यमति स्वमति साभली, हृदय-कमल हुलसाय ।।
२१ सिंघाडावंध वहु वर्ष लगे, विचरचा मुनि गुणधार ।
समकित व्रत देई करी, तारचा वहु नर-नार ।।
२२ वर्ष पैंतीसे जयगणी, तेज ऋषि नै ताय ।।
चौमासो भोलावियो, शहर पाली सुखदाय ।
२३ सुद आसोज सूं ऊपनें, ताव कारण तन मांय ।।
समण तीन तस सेव में, करत विविध पर सहाय ।
२४ कार्तिक तन कारण वध्यो, सोजो ने वलि श्वास ।।
समभावे सही वेदना, अति शूरवीर सुविमास ।।
२५ कार्तिक वदि ग्यारस दिने, वेदना रही अति व्याप ।
एक मुहुर्त आसरै दिन छतां, चिहुं आहार ना त्याग किया आप ।।
२६ निशा पाछली मुनि पूछियो, जावजीव संथार ।
उचरावां हिव आपनैं, तव भरियो हूंकार ।।

२७ तब मुनिवर उचरावियो, संथारो सुखदाय ।
एक मुहूर्त पछै आसरै, पहुंता परभव मांय ।।
२८ सूर्य उदै श्रावक मिली, कियो महोछब जबर मंडाण ।
इकसट्ठी खंडी मांढी करी, जाणंक देव विमाण ।।
२९ ए कारज संसार ना, तिण में धर्म पुन्य न होय ।
हुई जिसी जे बारता, कहितां दोष न कोय ।।
३० वर्ष पैंतीस रै आसरै, पाल्यो चरण प्रधान ।
तपजपकरि विविध प्रकार ना, सारचा कारज शभ ध्यान ।।

[—श्रावक लिछमणजी मथेरण]

ढाल २

*स्वामीजी थांरे दरसण नै जी चावै ।। ध्रुपदं ।।

१ दरसण कारण भमता जग में, नही जी लागै कोई दावै ।
दरसण कर होवै मन परसन, पातक दूरा पलावै ।।
२ संता मांही सन्त शिरोमणी, तिरण तारज जिम नावै ।
तेजपाल मुनि मोटा ऋषीश्वर, सीतल सहज स्वभावै ।।
३ पांच महाव्रत निर्मल पालै, तीन गुप्ति चित्त ल्यावै ।
बालपणै में मुनिवर चेत्या, संजम लियो सोच्छावै ।।
४ समगतधारी पर उपकारी, 'सुरता'[1] नै समझावै ।
सूतर बांच उवाच परुपै, अरथ में अरथ लगावै ।।
५ पुन्य प्रताप मुनि भान भज्यां स्यूं, हिरदै हरख न मावै ।
भान ऋषि बाल ब्रह्मचारी, गुलाबजी संत सुहावै ।।
६ अब को चोमासो स्वामी रीणी जी थांरो, पूरो म्हारै मनडा रा चावै ।
उगणीसै सत्ताइसै महा विद, लिछमण मोद मनावै ।।

कलश

७ सिरदारगढ़ स्वामी पधारचा श्रावक धर्म सुहावणो ।
हीरालाल बुधजी परम भगत घरे रंग बधावणो ।।
कुंभकरण चतुर विचित्र साचो समझकर रलियावणो ।
ताराचंद सरधा मांय सेठो प्रश्न पूछण चित घणो ।।

*लय : आसावरी……।

1. श्रोताजन ।

ढाल ३

†जीव रे तूं तेजपाल रिख वान्द ।। ध्रुपदं ।।

१ स्वामी तेजपाल मुनि वंदियै रे, उत्तम निग्रन्थ बुध ।
ज्ञान कला स्यूं शोभता रे, निर्मल लेश्या सुध ।।

२ शहर लाडणू रा वासिया, ओसवंश अनूप ।
मात-पिता कुल निर्मलो, लागी मुगती स्यूं 'चूंप'[1] ।।

३ पाच महाव्रत पालता, टालै दोष बंयाल ।
गुण सत्ताइस शोभता, गुण रतनां री माल ।।

४ तरुणपणै संजम लियो, भलो पाया जिन धर्म ।
सावज निर्वद ओलख्या, जाणै नव तत्त्व मर्म ।।

५ समता सागर शोभता, दया सिन्धु मोटा ऋषिराज ।
शील क्षमा गुण ओपता, तारण तरण जिहाज ।।

६ सूत्र सिद्धान्त सीख्या घणां, भाषा अरथ विचार ।
हेतु कथा वर जुगत स्यूं, शंका न रहै लिगार ।।

कलश

७ इण नगर गढ सिरदार मांही तेजपाल मुनिन्द ए ।
दया सागर ओपमा अघ-तिमिर हरण दिनन्द ए ।
रिषभान की भगती इग्या आराधक गुलाब सुरिन्द ए ।
तस चरण रज मुझ सीस लागै झडत अघ ना वृन्द ए ।।
(सं० १९२७ फागण)

†लय : जीव रे तूं शील तणो कर संग ''।
१. लगन।

२३. मुनि बीजराजजी

(ख्यात सं० १३५)

[—मुनि पूनम चन्दजी]

ढाल १

दोहा

१ शहर बाजोली अति भलो, जात बोथरा जांण।
शाह भूरोजी गुणनिला, सुत बींजराज शुभ ध्यान ॥

२ पांच वर्ष रे आसरै, करी सगाई ताम।
समण तणी सेवा करी, वैराग्य नित्त पाम ॥

३ काल कितोक बीतां पछै, आया जीत रिखी जुवराज।
शहर बाजोली परवरचा, तारण तिरण जहाज ॥

४ मुनि वचन हिवड़े धरी, हुई संजम री चाव।
आय माता नै इम कहै, म्हांरै दीक्षा लेवण रा भाव ॥

५ समभाता अति जुगत स्यूं, काका काकी नैं तिह वार।
मॉं बेटा दोनूं जणा, हुवा संयम नैं तैयार ॥

६ *स्वामी थे तो उन्नीससी एके व्रत धारी, माघ वदी बारस त्यारी।
रा गुणिवर जी।

७ मुनि प्यारा जी स्वामी थांरी, मात शृंगारां सारी महा गुणधारी।
रा गुणिवर जी ॥

८ मुनि थे तो किशनगढ व्रत लीधां, जीत रिखी कर दीधो।

९ मुनि थे तो ज्ञान ध्यान गुण भरिया, विनय गुण आदरिया।

१० स्वामी थे तो जीत तणी सेवा जगीसं, करी वर्ष इकवीसं।

११ मुनि थे तो पांच सूत्र किया मुख पाठं, लीधी सुमत री बाटं।

१२ मुनि थे तो उष्ण तप भल लीधो, वर्ष सोलह कीधो।

१३ मुनि थे तो तपस्या कीध सारं, आखूं धर प्यारं।

१४ मुनि थे तो उपवास अति कीधा, साठी बारह सौ गुण लीधा।

१५ मुनि थे तो बेला कीधा बयालीसं, तेला अट्ठावन जगीसं।

१६ मुनि थे तो चोला कीधा मन्ने वीसं, पंचोला इकवीसं।

---

*लय : भिक्षु थे तो बाल पणं बुद्धि

१७ मुनि थे तो छव कीधा बार चारं, सात कीधा पंच वारं ॥
१८ मुनि थे तो आठ कीधा चवदह वारं, नव तीन वारं ॥
१९ मुनि थे तो दश किया तीन वारं, इग्यारह एक वारं ॥
२० मुनि थे तो द्वादश किया तीन बारं, तेरह पन्द्रह एक बारं ॥
२१ मुनि थां रों इक्वीसे कियो सिघाड़, पंच भद्रा सुखकारं ॥
२२ मुनि थे तो चारित्र दीयो वहु जन नै, नाम कहुं गिण नै ॥
२३ मुनि थां नै जील मेल्या सारं, वाग वस्ती वारं ॥
२४ मुनि थे तो गोबिन्द रिखी नैं संजम दीधो, प्रथम जश लीधो ॥
२५ मुनि थे तो सिरेमलजी नैं सुखकारं, संजम दियो धरहुसियारं ॥
२६ मुनि थे तो चतरभुज नै कियो त्यारं, दीक्षा दीधी धर प्यारं ॥
२७ मुनि थे तो परभव पर भरोसो कीनो, संजम देई जस लीनो ॥
२८ मुनि थे तो फकीर नैं संजम दीधो, गण मांही नही सीधो ॥
२९ मुनि थे तो चरण दीयो दूलिचन्द नैं, साता कारी आनन्द नैं ॥
३० मुनि थे तो सातमो साध कीधो तारो, निकल गयो वारो ॥
३१ मुनि थे;तो फोजमलजी पर कर धरिया, तिण स्यूं पाखंडी डरिया ॥
३२ मुनि थे तो संत कियो रिखबदासं, हुयो मन हुलासं ॥
३३ मुनि थे तो साध कियो एक हीरो, परो गयो अधारी ॥
३४ मुनि थे तो सदा सुख नैं संजम आप्यो, संसार नो दुख काप्यो ॥
३५ मुनि थे तो संत किया इग्यारं, समणी बलि चारं ॥
३६ मुनि थे तो बड़ी तीजां जैकुंवार जांणी, सिरेकंवर पिछांणी ॥
३७ मुनि थे तो लघु तीजां नैं त्यारी, संसार स्यूं करी न्यारी ॥
३८ मुनि थे तो श्रद्धा घणां नैं पमाई, सैकड़ां नैं ताई ॥
३९ मुनि थे तो बखाण देवो जाणै सिंह गूंजै, सुण पाखंडी धूजै ॥
४० मुनि थे तो मुरुधर मेवाड़ विचरिया, कच्छ गुजरात संचरिया ॥
४१ मुनि थे तो मालवा देश भिवाणीं, ढूढाड़ थली जांणी ॥
४२ मुनि थे तो विचरता आया तिण काले, वर्ष सैंताले ॥
४३ मुनि थे तो पंच भद्रा में आया, हलुकर्मी नैं सुहाया ॥
४४ मुनि थे तो चौमासो तिहां ठायो, मन उचरंग पायो ॥
४५ मुनि थांरै सावण तांई रही साता, पछै हुई असाता ॥
४६ मुनि थांरो गोडो दुख्यो अति भारी, मास लग इकसारी ॥
४७ मुनि थांनै मास आसोज वगरी, निकली 'उदरी'[1]

1. ओरी (मोतीभरा की तरह होने वाला रोग विशेष)।

४८ मुनि थांनै ताव चढी नित जाणी, सकती घटाणी ।।
४९ मुनि थांरै ताव रही दिन सतावीसं, वेदन एक सरीसं ।।
५० मुनि थांनै आराधना की दश ढाल सुणाई, मन हुलसाई ।।
५१ मुनि थे तो चौरासी लाख जीवां नैं ही, खमाया नाम लेई ।।
५२ मुनि थे तो आलोयण हृद कीधी, मिच्छामि दुक्कडं लीधी ।।
५३ मुनि थे तो काती सुदी छट दिन स्यूं, बोल्या नही किण स्यूं ।।
५४ मुनि थांनै सागारी संथारं, करायो धर हुसियारं ।।
५५ मुनि थांनैं सातम पाछली पोरं, चोविहार कर गौरं ।।
५६ मुनि थांनै सगलो ही आयो संथारं, पोहर इग्यारं ।।
५७ मुनि थांरो संथारो भलो सीधो, जग में जश लीधो ।।
५८ मुनि थे तो प्राण छोड़ हुवा दूरा, ध्यान धरां अति रूडा ।।
५९ मुनि थांरो पद्मासन कीधो मन रंगो, माथे तिलक सुचंगो ।।
६० मुनि थांरी मंडी घट बीसं, ऊपर कलश जगीसं ।।
६१ ए किरतव संसार ना जांणी, धर्म पुण्य नही जांणी ।।
६२ गुणी जन हुई जिसी वात कहता, पाप नही लगता ।।
६३ मुनि थांरो सिंघासन वलि जाणी, आण देव विमाणी ।।
६४ मुनि थे तो सैंतालीश वर्ष संजम पाली, आत्म उजवाली ।।
६५ मुनि थे तो मोसूं उपकार कियो भारी, केणी नही आवै इकसारी ।।
६६ मुनि म्हांनै नव तत्व ज्ञान भणाया, बले सूत्र बंचाया ।।
६७ मुनि थांरा कोड़ जीभ कर गुण गाऊं, पार नही पाऊं ।।
६८ मुनि याद आयां तन हुलसै, सिमरूं रात दिवसै ।।
६९ मुनि थांनै शहर अजमेर में रटिया, उपद्रव मिटिया ।।
७० मुनि म्हारा भिक्षु भारीमाल रिखराया, जीत गणी सुखदाया ।।
७१ मुनि म्हारा मघवा गणी प्रसादं, पूनम रे हुई सुख समाधं ।।
७२ मुनि थांरा वरस सैताले गुण गाया, हुवा हरख सवाया ।।
७३ मुनि म्हांरा जोड़ करी सुदि सारं, बैसाखे अष्टम शनिवारं ।।
७४ मुनि म्हांनै विरुद्ध वचन आयो ते वारं, मिच्छामि दुक्कडं सारं ।।

२४. मुनि कालूजी

(ख्यात सं० १६३)

[—सरदार शहर के श्रावक]

ढाल १

दोहा

१ पंच परमेसर नित नमूं, नमूज जिन चौवीस।
वर्तमान अरिहंत नमूं, सीमंधर जिन वीस॥

२ विदेह खेत्र में छै सही, अनंत गुण सुखकंद।
ज्यांरी चोसट इंद्र सेवा करै, वले सुर नरकेरावृंद॥

*संत सेव्यां उत्कृष्टो चैन ए ॥ध्रुपदं॥

३ शीस नमाय कर जोड ए, सुध संत नमूं कर कोड ए।
ज्यांरी सेवा वंछू दिन रैन ए॥

४ स्वामी कालूजी गुणां रा भंडार ए, ज्यांरी वुधरो न आवै पार। ए
ए तो जीव छव काय रा सैण ए॥

५ कर निर्मल ग्यान उद्योत, आ तो पाखंड मेटचो वहोत।
जांणी जिण मग ऐन॥

६ सासण में सूरवीर जूंझार, एतो खिम्या तणा कोठयार।
ज्यां सिद्धांत रो कीधो 'तैन'[1]॥

७ सासण साह्मी दिष्ट अपार, पालण जती धर्म जोधार।
ज्यारे कंठ कला री खैंन॥

८ गुरां नें साता देवण सुवनीत, ज्यारै स्वामी स्यूं उत्कृष्टी प्रीत।
ऐ तो छ गणपति रा सेण॥

९ उत्कृष्ट विनयवान शिप तास, एकंत अविचल सुखां री आश।
ऐ तो शील तणी छैं खैन॥

१० ज्यांरी सोम छटा सुखकार, मुनि तारचा जीव अपार।
त्यां नैं भज्यां सुख सैण॥

---

१. चन्द्रवा।

*लय : सुपारस सातमां जिणंद ए...।

११ मुज तारयो साल सैंतोस, ज्यांरा गुण गाऊं विसवावीस।
मुज हीये वस्या दिन रैन ।।

१२ जांरा गुण अनन्त अथाग, एक जीभडी केम लहुं थाग।
कोड़ जिम्या गावै दिन रैन ।।

१३ तो पिण न आवै पार, ग्रहण कीधो छै धर्म सार।
शुभ शुभ वस्तू नो कीधो 'तैन'[1] ।।

१४ मोस्यूं कृपा कीधी इण साल, देई ज्ञान कीधो निहाल।
हूं तो ध्यान ध्याऊं दिन रैन।

१५ हूं छ तुमारो दास मुज आज पूरी सहु आस।
आप छो गुणां री खैन ।।

१६ रिष रामसुख रलियामणो, संत गणेशलाल सुहामणो।
त्यांरी सेव करो दिन रैन ।।

१७ ज्यांरै घणी तपस्या री पीक, आं तो कीधी छै मुगत नजीक।
ऐ तो भव जीवां रा सैण ।।

१८ मुनि छविल चतुर विशाल, गुण गाया समत चौमाल।
कृष्ण मृगसरा एकम ऐन ।।

१९ कोई हुयो अविनौ 'तकसीर'[2] स्वामी खमज्यो गहर गंभीर।
आप सकल जीवां रा सैण ।।

२० सती नवल वंदू आद सात, ऐ तो प्रसिद्ध लोक विख्यात।
ज्यांरा सोम सीतल छै नैन ।।

२१ घणा जूनां गुणां रा भंडार, त्यां नैं सेवै वहु नर नार।
ए तो शील गुणां री खैन ।।

[—मनि अमरचंद जी]

ढाल २

१ *मुनिवर रे। देस मेवाड़ में जाणज्यो रे, रेलमगरो पिछांण रे लाल।
जात सरावगी ते सही रे, देवीचंद सुत जांण रे लाल।
स्वांम कालू नित समरियै रे लाल ।।ध्रुपदं।।

२ वाल पणै बुध आगला, सीख्या जांण पणो सार।
मां बेटा मतो करै, लेणो चरण सुखकार ।।

---

१. विस्तार। २. अपराध।

लय : पुन्य प्रवल नृपचंद ना रे ...।

३ गणपत आप पधारता, चरण देवण नैं तांम।
सांस तणा कारण थकी, मेल्या दीधं भवान नैं स्वांम ॥

४ मां बेटा नैं दिख्या दीधी, दिया गणपत चरण लगाय।
बालक साधु देखनैं, गणी लाड राख्यो बहुताय ॥

५ सुमत गुपत सुध पालता, विनैवंत गुणधांम।
सरूपचंद जी सांम नै, सूंप्या जय गणी तांम ॥

६ पढचा भण्या गुण आगला, कला विविध पर जांण।
गणपत रा नेतर तणी, कारी करी सुजाण ॥

७ बीज काम छोडचो सहु, मांगी वस्तु नी आग्यां जांण।
च्यार संता सू सिंघाड़ो कियो, दीधी सरूप पोथ्यां पिछांण ॥

८ देश-प्रदेस विचरचा घणा, बोहत कियो उपगार।
सम्यक्त दीधी हजारां जन भणी, कैहता किम आवै पार ॥

९ लाखा ग्रंथ वांच्यां लिख्या, हजारां कंठ केवावै।
अनमती सनमती सुण-सुण, गुण थांरा बहु गावै ॥

१० गणपत कृपा बहु करी, चतरमास बीदाणे धराया।
कम सकती कारण बहु, तिण सूं छापर सहर में आया ॥

११ व्याख्यान पिण दीधो तिहां, वली सीखावण बहु फरमावै।
उद्यम घणो भायां वायां तणै, सुण-सुण बहु सुख पावै ॥

१२ सभाय ध्यांन करता बहु, वेदना सेवै समभाव।
हुंसियारी अति जाणज्यो, मुगत जावण रो चाव ॥

१३ अणसण कर सुरग सिधाविया, द्वितीय सावण तीज तांम।
ओछव-मोछव बहु किया, ते संसारचा रा कांम ॥

१४ आठे चरण लियो सही, अठावने अणसण सार।
इकावन वरस रै आसरै, पाल्यो संजम भार ॥

१५ घणा वर्स लग जाणज्यो, सामी गणेस सुखकार।
विनै व्यावच करता घणी, वरत्या मुरजी परमांण ॥

१६ पुज तणा परसाद थी, वरत्या जय जयकार।
गुण गाया गिरवा तणां, ऋषि अमरचंद हरष अपार ॥

१७ द्वितीय श्रावण एकादसी, सहर छापर रै मांय।
जोड करी ए जुगत सूं, उगणीसै अठावने कहि वाय ॥

२५. मुनि दुलीचन्दजी

(ख्यात सं० १९७)

[—लूणांजी कोठारी]

ढाल

१ शहर पटलावदना वासी ब्रह्मचारी हो पिता आपरा छै माणकचन्दजी भंडारी हो।
वाह वाह हो दुलीचन्दजी तपसी आछो तप कीधो हो।
पांच पांच करी सर्व तन ताय लीधो हो ॥ ध्रुपदं ॥
२ श्री जीहजूर का शासण ऐसा हो, इण शासण मांही तो तपसी दुलीचन्दजी जैसा हो।
३ नसा जाल दीसै जुई-जुई, हाड सूकानें सूको मांस रु लोही ॥
४ चौथे आरे में तपसी धनजी भइया, छठ-छठ तप करी सर्वार्थसिद्ध में गइया ॥
५ पांच-पांच रा तो पारणा करता, विगै ऊपर बहु चित नहीं धरता ॥
६ दुषमी काल ए पंचमो आरो, तपस्या मांही तो तपसी नाम चाल्यो थारो ॥
७ धन्य-धन्य जननी तपसी जाणी, कूख में उपनो रतन समाणी ॥
८ लूणाजी कोठारी उपर कृपा करणा, भव-भव में होज्यो तपसी तुम तणा शरणा।
९ हूं सेवक ताबेदार तुम्हारो, तू पृथ्वीनाथ दीनदयाल हमारो ॥
१० उगणीसै चमालीस के जेठ महीने आया, तिथि वारस बृहस्पति तपसी रा गुणगाया ॥

२६. मुनि पृथ्वीराजजी

(ख्यात स० २१६)

[मुनि नथमल जी (रोछेड़ वाला), हेमराजजी (आत्मा वाला)]

ढाल १

सोरठा

१ पृथ्वीराज मुणिन्द रे, जाति पोरवाल जाणियै ।
गुणकरी ज्ञान समन्दरे, पोह उगन्ते समरियै ॥

२ *नाम रटो भव्य प्राणी जी, चित्त ठाणी मुनि पृथ्वी राजनो,काइ नाम सदा जयकार ।
गुण ओलखनै गावै जी, सुख पावै दुख दूरा हुवै, कांइ नाम लिया निस्तार ॥
महिपति मुनिवर भारी जी, सुखकारी तीरथ च्यार नैं, कांई भजन कियां भय जाय ॥
ध्रुपदं ॥

३ सुखकारण भवतारण जी, हद समरण साचो आपरो,
कांई विघ्न विडारण हार ।
विस्तार बात अति जाणी जी, गुणखाणी त्यांरी छै घणी,
कांई अल्प कहूं अधिकार ॥

४ उदैपुर सुखकारी जी, अति भारी देश मेवाड़ में,
कांई साह जीतमल जी जाण ।
लिछमां जी सुत जायो जी, सुख पायो देसुरी शहर में,
कांई पांचे जन्म पिछाण ॥

५ वाल्यपणै वैरागी जी, नव त्यागी सगाई नै उमह्या,
कांई संजम नै तिणवार ।
न्यातीला उपसर्ग कीधा जी, दुख दीधा रोक्या राज में,
कांई मास चार अवधार ॥

---

*लय : उमादे भटियाणी...... ......।

६ पछै अनुमति आपी जी, थिर थापी छावीसे पोस में,
काई कानोड शहर मझार।
नाथ मुनिवर संगेजी, मन रंगे संजम आदरचो,
कांईवरत्या जय जय कार।।

७ सुमति गुप्ति अघहरणी जी, कहूं करणी कां वली आपरी,
कांई सरल भद्रिक सुखदाय।
संग अवनीत नो छंडी जी, विहंडी कुमति करूर नै,
कांई अधिक विनय सवाय।।

८ समता रमता खमता जी, मन दमता इन्द्रिय पांच नै,
काई करता भ्रम भय दूर।
नमता जमता न्हाली जी, चित गमता तीर्थ च्यार नै,
काई कर्म कारण नैं शूर।।

९ प्रवल गुणे पाखरियाजी, हद क्रिया निरमल आपरी,
कांई लागी मुक्ति नी चाय।
शासन आसता तीखी जी, नीत नीकी गुरू आणा मझे,
काई परख लियागणिराय।।

१० सताईसे सिंघाड़ो कीधो जी, प्रसिद्धो जय जश गणपति,
कांई सन्त वड़ा देई लार।
गणपति नी मरजी भारीजी, उपगारी ते वहु देश मां,
कांई याद करै नरनार।।

११ वहु जन नैं समकित दीधी जी, प्रसिद्धि उपदेश देई करी,
कांई देशव्रत वहु नै कीध।
किया संजम नैं त्यारी जी, हितकारी त्या तेतीस नै,
कांई वावीस निज में दीध।।

१२ मुनिवर वहु वैरागी जी, रस त्यागी आतम वश करी,
कांई अडतीसे पय परिहार।
वयालीसे सेलडी वस्तु जी, चमालीसे पंच विगै तजी,
कांई करवा आत्म उद्धार।।

१३ तप चौविहार कीधो जी, जश लीधो नवतांई लड़ी,
कांई थोकड़ा विविध प्रकार।
तप तेले-तेले ठायो जी, तनु तायो वर्ष सवा लगे,
कांई झेली तप तरवार।।

१४ माघ वदी दशमी धारीजी, सुखकारी, वर्ष अठंतरे,
काई एकान्तर जावजीव।
कर्म काटण अति शूरा जी, वडवीरा आप उजागरु,
कांई लेवा मुक्ति अतीव ॥

१५ सीत काले सी खमता जी, मन दमता एक पछेवड़ी,
कांई जावजीव लगधीर।
उष्ण काल मे जाणी जी, चित ठाणी तप्त सही घणी,
कांई काटण कर्म जंजीर ॥

१६ आवसग दशवैकालिक जी, वृहत्कल्प उत्तराध्ययन नां,
कांई आप कंठस्थ कीध।
वीर वत्तीसी वांची जी, रस खांची सहु सिद्धांत नो,
कांई भीणी रैसां पीध ॥

१७ अधिक सज्भाय करता जी, मन धरता ध्यानज निरमलो,
कांई गाथा हजारां जाण।
पश्चिम रजनी सजता जी, भल तजता आलस्य नींद नैं,
कांई उपयोग अर्थ में आण ॥

१८ इम ज्ञान ध्यान वहु करताजी, विचरता, देश विदेश में,
कांई वर्ष इकोतरे मांय।
गंगा शहरे आया जी, मन भाया भवियण जीव रे,
कांई गहरा ठाठ जमांय ॥

१९ गणि कालू जयधारी जी, अति भारी देव जिणन्द ज्यू,
काइ लेता सार सम्भाल।
प्रभु मरजी अति जाणी जी, हित आणी आप पधारिया,
कांइ दोय वार सुविशाल ॥

२० संत चाकरी में रहता जी, सुख लहता आप प्रसाद थी,
कांई देता ज्ञान रसाल।
संत सत्यां वहु आवे जी, सुख पावै दर्शन देखनैं,
कांई आपै सीख विशाल ॥

२१ सुदी अष्टमी धुर श्रावण आयोजी, करायो आप पारणो,
काई अल्पसो कारण जाण ।
सन्ध्या उपवास पचखायो जी, फुरमायो आयु आविया,
काई जावजीव पचखाण ।।

२२ आलोवणा पिण कीधी जो, प्रसीधी निरमल नीत सूं,
काई कर्म उडावण तोप ।
छाती में अष्टम राती जी, थोड़ो सो कारण रह्यो,
कांई महाव्रत प्रति आरोप ।।

२३ नवमी प्रभाते तायो जी, मसलायो तेल भली परे,
कांई कारण थयो उपशंत ।
वीकाणै सू सन्त आया जी, भल पाया दर्शण आपरा,
काई हिवडो अति हरषंत ।।

२४ विशेष कारण नही तन मे जी, इम मुख थी आप फरमावियो,
काई सन्त सेवा मे जाण ।
आयु अर्णाचित्यो आयो जी, सुणायो नवकारादिके,
काई परभव कीध प्रयाण ।।

२५ पिच्यासिये श्रावण धुर मासेजी, गुण रासे सुदी नवमी दिने,
काई कियो अर्णाचित्यो काल ।।
आप जीत नगारा दीधा जी, सहु सिद्धा वंछित आंपरा,
काई महामुनि गुण माल ।।

२६ संत तनु वोसरायो जी, भरायो हिवड़ो तिण समै,
काई काल आगे जोर न कांय ।
उपगार कीधो अति म्हासू जी, कह्या सू पार पड़ै नही,
कांई याद आया हियो हुलसाय ।।

२७ पथ्वी नाम प्रसीधो जी, अति पीधो, गुण क्षमा तणो,
काई पृथ्वी जिम गम्भीर ।
याद आवै दिन राते जी, सुण साते चाते आपरा,
काई जाणे श्री महावीर ।।

२८ लोक हजारां हुआ भेला जी, तिण वेला वहु शहरां तणां,
कांई उत्सव कीधा ताम।
ए संसारना कामज जी, नहीं नामज धर्म पुण्य नो,
कांई लोक करै गुण ग्राम।

२९ राम नाम ज्यू ध्यावै जी, चित चावै सहू आपनै,
कांई जिन गोप्यां मन कान।
चकोरा जिम चन्द चावै जी, मन भावै मेघज मोरनै,
कांई तिम धरुआपरो ध्यान।।

३० नाम आपरो रटतां जी, अघ कटतां जीव हुवै ऊजलो,
कांई सहु दुख दूरा जाय।
गुणवन्तरा गुण गातां जी, सुखपाता कह्यो सिद्धान्त में,
काई पद तीर्थङ्कर पाय।।

३१ प्रवल पुन्यवन्त भारी जी, सुखकारी भिक्षू तख्त पै।
काई मूलचन्द शोभन्त।।
तसु शासण मे भारी जी, गुणकारी उपशम सेहरो।
कांई एहवा जवर सुसन्त।

३२ श्रावण दूजी वदी दशमी जी, भलसाल पिच्यासिये जाणियै।।
कांई गंगाशहर मझार।
नथमल हेम गुण गावै जी, सुख पावै आप प्रसाद थी,
कांई भजन करो नर नार।।

ढाल २

[—गंगा शहर के श्रावक गण]

१ *"पाट मेद"[1] बखाणियै हो, गुणिजन उदियापुर श्रीकार।
साह जीतमल सुत निर्मलो हो, मुनिवर, पाचे जन्म उदार।।

२ छवीसे संयम आदरयो होमुनिवर, ज्ञान ध्यान गलतान।
विचरत विचरत आविया हो मुनिवर, गंगाशहर गुण खान।।

३ उगणीसै इकोतरे हो मुनिवर, पोस मास मझार।
छव ठाणा सू पधारिया हो मुनिवर, वरत्या जय जयकार।।

४ गंगाशहर रही करी हो मुनिवर, विहार कियो सुविलास।
और गाम में चिचरनै हो मुनिवर, गगांशहर चौमास।

*लय राजुल इण पर वींनवै हो ।

१. मेदपाट (मेवाड़)।

५ विहार कियो मिगसर मझे हो मुनिवर, 'महिनृप'[1] विचर तिवार।
जवान मुनि नै मेलियो हो मुनिवर, गैरसर मझार।
६ तन में कारण ऊपनो हो मुनिवर, आया गगांशहर।
त्यां महिपति मुनि भेटियो हो मुनिवर, फागन में करी महर॥
७ फेर विहार हुवो नही हो मुनिवर, कियो घणो उपगार।
याद आयां हियो हुल्लसै हो मुनिवर, नाम रटो नर नार॥

ढाल ३

१ *गगाशहर मे आप विराजने, गहरा ठाट जमाया हे।
सुलभ वोधी किया वहु प्राणी, समकित वोध पमाया हे॥
२ श्रावक श्राविका वहुला कीधा, युक्ति न्याय समझावी हे।
ज्ञान ध्यान वहु घट में घाल्यो, झीणी रैस वतावी हे॥
३ वर संजम नै कीधा त्यारी, एकादश नर नारी हे।
मूलाजी ने चाद कुवारी, निज हाथे भल तारी हे॥
४ च्यार मुनि नै कीधा अराधक, वर साझ आप दरायो हे।
आप जोग सू महर करी नै, 'गणि चौमास करायो हे'[2]॥
५ मोहनी मुद्रा याद कियां थी, रोम राय विकसाया हे।
आप तणा गुण छै अति भारी, अल्प मात्र मै गाया हे॥

ढाल ४

१ नाम प्रसिद्धो रे मुनिवर, पृथ्वी थारो रे।
पृथ्वी जिम गुण धारी मोरा, मुनिवर आप वैरागी रे॥
आप वैरागी रे मुनिवर, रसना त्यागी रे॥
†वहु जीव हुवा अनुरागी मोरा मुनिवर॥ ध्रुपद॥
२ साल चौरासी कार्तिक मास, कृष्ण तीज नैं तायो।
कारण तनु हुवो अणचित्यो, सम परिणामे सहायो॥
३ चौथ नैं साता कियो उपवासो, पाचम पारणो करायो।
पछे कारण हुवो अति भारी, रात नै साता थायो॥

१. पृथ्वीराज जी। २. कालूगण नें स० १९८३ का चातुर्मास किया।
*लय—चालो हे सहेल्यां आपां भेरूं नें मनास्यां हे।
†लय—मोरा भाईडा हूं परदेशी रे।

४ छठ उपवास पारणो सातम, फेर तप हुवो अधिकायो।
फेर हुई साता अष्टम प्रभात, अधिक सगती सवायो ॥
५ नवमी बेलो आप करायो, सी लागी नैं तप अति आयो।
तेलो पचखायो संथ्यांनी वेलां, पछै वेहोरा थायो ॥
६ 'हुवो उलकापात'[1] नवमी राते, शब्द प्रचण्ड सुणायो।
तिण वेलां तनु तप नाह्यो, शरीर गुस्त जणायो ॥
७ पच्छिम रजनी जन वहु बैठा, जाणे के आयु आयो।
संत कहै पडिक्रमणो करावां, तव आप बैठा थायो ॥
८ स्वमेव कीधो ऊंचे स्वर सूं, लोक गुण इचरज पायो।
तनुनी तो काती भली देखी शक्ति, जन मन हर्ष सवायो ॥
९ वेदन सहिता समचित धरता, तुम गुण छेह न आवै।
एक जीभ सूं हूं किम गाऊं, क्रोड जीभ सूं पार न पावै ॥

ढाल ५

१ *धिन धिन पृथ्वी मुनिराय, जग जश छायो रे।
त्यांरो भजन करो चितलाय, भव दुख जायो रे।
२ सुख साता सूं रहता स्वाम, भवि मन भायो।
स्वामी उर उपदेश दिराय, जन समझायो ॥
३ उगणीसै चौरासिये साल, कार्तिक मांयो।
जद कष्ट थयो अथाय, आयु नही आयो ॥
४ पिण साल पिच्यासिये मांय, श्रावन धुर आयो।
शुक्ल नवमी तीजे पोहर, स्वर्ग सिधायो ॥
५ स्वामी तुम गुण आवै याद, हियो हरषावै।
तुम नाम लियां निस्तार, आनन्द थावै ॥
६ अहो निश आवे याद, तुम वच मेवा।
हूं तो जपूं आपरो जाप, शिव सुख लेवा।
७ मो सूं कियो घणो उपगार, ते किम विसरावै।
अन्य मति स्वमति जाण, तुम गुण गावै ॥
८ उगणीसै पिच्यासिये साल, भाद्रव मासो।
सुदी नवमी रविवार, जोग शुभ तासो ॥
९ राजू नथू गुण गाय, फतेह आणन्दो।
स्वामी गगांशहर मझार, छगन सुखकन्दो ॥

१. आकाश मे तारा टूटा। *लय : धिन-धिन भिक्षु मुनिराय धर्म चलायो रे।

मुनि गणेशलालजी

(ख्याल स० २२०)

[श्रावक जोरावरमलजी बैद (रतनगढ़]

ढाल १

'गजानंद'[1] ध्याऊं ऊठ सवेरे, मै तो चरन कमल हूं तेरे ।।ध्रुपदं।।

१ गाव सवाई माधोपर है, सुत शिवलालजी के रे।।
२ मातवरजूजी रे उदर ऊपना, पोरवाल वंश ते रे।।
३ उगणीसै सताईस वर्षे, उर वैराग्य धरे रे ।।
४ हीरालालजी स्वामी समीपे, दीक्षा व्रत गहें रे ।।
५ जयमघ माणकलाल डालगणि, सब ही की सेव करे रे।।
६ कालूराम गणाधिप की अव, था पर मेहर घने ।।
७ नीत निरमल शुद्ध सयम पालो, शिर गुरु आण धरे ।
८ वास बेला तेला इत्याधिक, बहु विध तप तपे रे ।।
६ मुझ ऊपर कृपा अति कीनी, बहु विध ज्ञान दिये रे ।।
१० तुम प्रसाद एह शासन पायो, दिन दिन रंग वढे रे ।।
११ हाथ जोडकर करु विनती, रखो सुनिजर घणेरू रे।।
१२ सडसठ साल वैसाख कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथ रुडे रे ।।
१३ जोरावर तोरा गुण गावै, कलकत्ता शहरमझे रे।।

---

१. गणेश ।

आचार्य श्री कालूगणी

ढाल १

दोहा

१ वासी सूरवाल नों, जाति नों पोरवाल ।
गणेशलाल शिवलाल सुत, मन वैराग्य विशाल ।।

२ स्वामी हीरालाजी, तास हस्त लही दीख ।
उगणीसै सतावीस में, वरविनयादि शीख ।।

३ जयगणी पगां लगाविया, पछै जय कृपा थी जोय ।
कालूजी स्वामी कने, रह्या वहु वर्ष अवलोय ।।

४ *मुनि थे तो कालु मुनि रै पासै, रह्या चित्त हुलासै रा ।तपस्वीजी।
मुनि ऐ तो जिम जिम कालू विचरिया, तिम जय चित्त वरिया रा। तप।।

५ मुनि थे तो गणपति गण रै कामे, राख्या चित्त इक ठामें ।
मुनि अे तो टालोकर वहु 'गलिया'[1], इत उत फिरिया ।।

६ मुनि जद थे पिण परिसह सहिया, जय आण में वहिया ।
मुनि करी कालु री सेव सवाई, अठावन तांइ ।।

७ मुनि पछै गणी सेवा मे रहिया, सुद्ध चित्त वहिया ।
मुनि थे तो वर तप वहुलो कीघो, जग जश लीधो ।।

८ मुनि थे तो छवसै सित्तर करिया, उपवास आदरिया ।
मुनि किया दोय सै छैंयालीस वेला, छिहंतर तेला ।।

९ मुनि थे तो चोला छिन्नवै धरिया, पचोला छिहंतर वरिया ।
मुनि छव सात पांच आछा, आठ नव तीन तीन जाचा ।।

१० मुनि थे तो दश दोय इग्यारा तीन, वारा दोय तेरा इक लीन ।
मुनि थे तो जाव वीस ताइ इक एक, वावीस एक पेख ।।

११ मुनि थे तो इत्यादिक तप करिया, अघ अपहरिया ।
मुनि थे तो अविनीत संग परहरिया, विनीत सग वरिया ।।

१२ मुनि थे तो उगणीस वहोतर वरसे, चेत विद पांचम दिवसे ।।
मुनि थे तो ग्राम मुसालियै माह्यो, स्वर्ग सिधायो ।।

१३ मुनि थे तो उगणीसै तैयासे, श्रावण सित मासे ।
मुनि ऐ तो तीज गंगासर गुण गाया, गणी चित्त हुलसाया ।।

---

*लय : भिक्षु थे तो वालपणै ....।

१. स्वच्छदाचारी ।

२८. मुनि छबीलजी

(ख्यात सं० २३०)

(स्वर्ग सं० २००२)

[—आचार्य श्री तुलसी]

ढाल २

दोहा

१ पन्द्रह अष्टादश दिवस, तप अनशन अनुशील।
फतै आकाशी ते करी, वाह वाह मुनि छवील ॥

*मुनिवर तेरापंथ मे जी, इम सारै निज काज ।भलाजी काई रे मुनि।।
।।ध्रुपद।।

२ वासी वगडी सहर नों रे, छाजत नाम छवील ।भलाजी काई०।
चहुत्तर वर्ष विनोद मे रे, झूल्यो सजम झील ।भला०।।

३ उगणीसै उगणीस में, जेहनो जन्म विख्यात।
अठावीसे आदरचो, सयम जयगणी हाथ ॥

४ कालूजी स्वामी वडा, तेहनै संग सुप्यार।
विचरत सिंघाडो थयोजी, माणकगणी वरतार ॥

५ वहुजन ने प्रतिवोधियाजी, उपजायो वैराग।
भिक्षु शासन नों हतो, अविचल जस अनुराग ॥

६ वृद्ध अवस्था योग सू, चाडवास स्थिरवास।
कालूगणि करवावियो, संयम साझ विमास ॥

७ दर्शक छव आचार्य ना, वर्ष सप्तदश प्राय।
रहिया मुनि समुदाय नी, आदिम संख्या माय ॥

८ अन्तिम दिन तेतीस नो, तप तपियो इक धार।
पन्द्रह दिन संलेखना, अनसन दिन अठार ॥

९ दो युत दोय हजार मे, श्रावण शुक्ला दूज।
प्रात समय सीझयो सही, दृढ परिणामा सूज ॥

१० हीरो मुनि करी चाकरी, तुलसी गणपति रीझ।
डूगरगरढ में गुण ग्रथ्या, श्रावण शुक्ला तीज ॥

---

*लय : अनंतनाथ जिन चवदमां... ।

परिशिष्ट-२

१. साध्वी नगांजी

(ख्यात स० २६)

ढाल

दोहा

१ नगांजी निरमल करी, करणी इधक करुर।
सांभलतांई सुख लहै, जे हुवै वैरागी सूर॥

२ सतजुगी सुहामणो, निरमल एहवो नाम।
पूज दियो परगट पणै, जिसाहिज रह्या परिणांम॥

३ कोमल सरल सभाव सू, गमती घणी गण माय।
साताकारी सतियां भणी, साधा नै घणी सुखदाय॥

४ वेरागण विरकत हुवा, झाली सत समसेर।
हुई जोजरी झूपरी, नाखू ताह विखेर॥

५ साची करी सलेणा, अणसण नो इधकार।
भाववरी भवियण सुणो, आलस अग निवार॥

*सांभल हो भवियणी! एहवी सतवंती हो आरे पाचमे॥ध्रुपदं॥

६ पख तो आयो छै हो सुकल सुहामणो, कातिक मास रै मांय।
परिणाम उठचा हो पख सारिखा, चित नै लियो समझाय॥

७ आरजीया नै कहै छै हो आय नै, मै मन मे लीधी सैठी धार।
साचे मन करसू हो सुध सलेखणा, काची वात न मानू लिगार॥

८ महासतियां जी मया करो मो उपरै, आगन्या द्यो इणवार।
संका मत राखज्यो सर्वथा, हूं करसू आतम नो उद्धार॥

९ सहु आरज्या वरजै हो आछीतरे, थे विचरो गामांणुगांम।
सुखे हो सजम पालो सदा, हिवडा काइ संलेखण, रो काम॥

१० आज्ञा लीनी छैहोअनेकउपाय सू, पिण सुरीत राखी समभाय।
'भाई'[1] वरजी हो भली तरै थे, धीरज राखो मन मांय।

---

*लय : महिला में बैठी हो रांणी कमलावती····।

१. मुनि वैणीरामजी।

११ पूज पधारसी प्रगट पणै, दरशण देसी हो दयाल।
सती कहै छै ए साच छै, हूं काटसूं करमां रा जाल॥
१२ सती तो संलेखणा हो मंड गई, गाढी वात हीया मांहे धार।
चोथ भगत हो चवदस कियो, पूनम पारणो विचार॥
१३ एकम उपवास हो आछो कियो, हिवे छठ भगत सूं चित लाय।
हिवे वेला करै छै हो अतही हरष सूं, ममता न आणै मन माय॥
१४ हिवे भाई पिण आया हो भली परै, पूज पधारचा घर पेम।
दरसण देवा हो आया उतावला, सगला वरजै छै एम॥
१५ सकत छती छै हो विहार करण तणी, सुखे पालो संजम भार।
उतावल अवारूं करो किण कारणे, पिण सतिय न मांनै लिगार॥
१६ नव वेला हो निरमल किया, एक उपवास विच में आंण।
अरज मानी हो अन्न दोय दिन इधको लियो, नही छोडी संलेखणा जांण॥
१७ पट दश तेला हो तीखा किया, इधको पारणो न घाल्यो विच में एक।
चित चोखे हो सात चोला किया, इधका सूं इधको वैराग विसेख॥
१८ अठाई कीधी छै हो उज्जम आंण नै, अलप सो लियो पारणे आंहार।
षट तो कीधा छै इधकी खांत सूं, सैंठो सरीर नीकल्यो श्रीकार।
१९ वले चोलो पचख्यो छै हो चित चोखे करी, एक टंक लियो अलप सो आहार।
अणोदरी कीधी हो इधकी जांण नै, वले तेलो पचख्यो तिणवार॥
२० पारणो कीधो छै पहली रीत सूं, अठम भगत कियो उज्जम आण।
वले तीजो तेलो कियो तिण अवसरे, पिण परिणांम चढता पिछांण॥
२१ तीन उपवास वेला हो नव नीका किया, अठम भगत किया उगणीस॥
आठ चोला उठाई हो वले छव किया, आ सरव संलेखणा विसवावीस॥
२२ काया रूप्यो हो किलो वस कियो, वले मन तुरंग वस कीध।
करम कटक हो दल मोडवा, हिवै किण विध अणसण लीध॥
२३ वले तेलो कीधो छै हो तीखा भाव सूं, तिण में वीजे दिन उठी उज्जम आण।
संथारो कीधो छै हो अरिहंत साख सूं, डर नही आंण्यो चतुर सुजांण॥
२४ थांनै भाई वरजै छै हो वाई भगत सूं, वले वरजै छै सतियां नें नरनार।
सती कहै अणसण आवै दोय मास रो, तो ही डर नही आणूं लिगार॥
२५ हिवे अरज करै छै हो सती इण विधै, मौनै आगन्या दो अणगार।
ज्यूं सुख पामै हो जीव मांहरो, मत संको मन मझार॥
२६ इम करतां पांच दिन पचखिया, आयो सातमो दिन श्रीकार।
दशम रै दिन दुघरीये पेहलरे, सोमवार करायो संथार॥

२७ पोते उपदेश देवै आछीतरै, वले सुणै सावांरो वखाण।
परणाम पक्का हो इसडा रह्या, देखो पांचमें आरे पिछांण ॥
२८ अणसण रह्यो छै हो दसदिन दीपतो, पोता रो पचख्यो छव दिन संथार।
च्यार दिन चावे साधां री साख सू, इण विध कीधो आतम नो उद्धार ॥
२९ हिवे पख तो आयो छै सुकल शोभतो, मास वैसाख विचार।
पोहर दिन मठेरो रह्यो पाछलो, तीखी तिथ तेरस विषपतवार ॥
३० उत्तराधेन सुण्यो हो आछी तरै, छेहला दिन लग जांण।
पूरो हुवै छै हो प्रगट पणै, पछै चट दे छोड्या प्राण ॥
३१ अन्न तो लीधो छै हो तयालीस दिन मझै, एकसौ चोतीम आया उपवास।
एकसौ सितंतर दिन सथारो संलेखणा, रह्यो दिन दिन इधक हुलास ॥
३२ वीर थकां हो मुनिवर वडवडा हुवा, सूरा सुभट अणगार।
त्यांनै नैणा न निरख्या हो सत सती तणो, देख्यो प्रत्यख पांचमें आर ॥
३३ जो चोथो आरो हुवै चतुर नरां, अलप कर्म हुवै एहवा जीव।
तो केवल पामै ने सिद्ध हुवै सासता, या दीधी मुगत री नीव ॥
३४ विचे फंद उठ्या हो फोजा रा घणा, 'आरत'[1] करै नर नार।
पिण तपसण रा पुन हो तीखा घणा, ते पिण ताता हुई श्रीकार।
३५ संजम पाल्यो छै हो सुधी रीत सू, जुगत सू जाझो वरस वावीस।
भद्रिक पणै हो भल भाव सू, सती तज दिया राग नें रीस ॥
३६ महिमा हुई छै हो माडी आद दे, धिन धिन करै सैहर मझार।
देवगढ में दीप्या हो गुण सती तणा, देखी इचरज पाम्या नरनार ॥
३७ संवत अठारै छासटे समै, वडा हीरा जी हाजर विचार।
कुसालाजी दोनू कुनणा दोलाजी, सतिया सेवा कीधी श्रीकार ॥

१. चिंता।

२. साध्वी बीजांजी 'बडा'

(ख्यात सं० ४०)

[—मुनि हेमराजजी]

ढाल

दोहा

१ पांच पद परमेसरु, मोटा महा गुणखांन ।
भवजीवां भजो भांव सूं, ऊजम मन में आण ।।

२ भिक्खू गुर मन भावता, महा पुरुप मुनिराज ।
संजम दे भव जीव मैं, सारचा आतम काज ।।

३ साध सती हुवा सोभता, जिण सासण में जोय ।
गुण गाऊं गुणवंत ना, हरखत मन में होय ।।

४ भिक्खू शिषणी अति भली, वड़ी वजांजी जांण ।
तपस्या कर तन सोखव्यो, विद सू करूं वखांण ।।

वजांजी तपस्या कीधी अति वारू ।।ध्रुपदं ।।

५ जंबूद्वीप रा भरत खेत्र मे, मुरधर आर्य देशो रे ।
पादु गांम 'रूपा रेल'[1] रूडो, पूज भीखन जी कीधो परवेसो रे ।।

६ वरजूजी वजाजी तीजी वनांजी, एक दिन संजम लीधो ।
भीखनजी स्वामी गुर मिलिया भारी, संजम अमृत रस पीधो ।।

७ मेणांजी भणाया ग्यांन भल पाया, हुई भिक्खू गुर री भगता ।
गामां नगरा उपगार करंती, स्वामीजी सूं चोमासा कीधा ।।

८ वनाजी संथारो कीधो कुसलपुरा में, तपस्या कर तन तायो ।
समत अठारै सतसठा वर्षे, जिन मारग पीपायो ।।

९ भिक्खू भारीमाल सतजुगी साधां री, सेवा कीधी सुखकारी ।
वजांजी चारित्र पालता विचरै, घणा प्रतिवोध्या नरनारी ।।

१० नव वर्ष आसरै भिक्खूनी सेवा, अठारै वर्ष आसरै भारीमालो ।
सतजुगी वालब्रह्मचारी सेव्या, पाप करण 'पेमालो'[2] ।।

---

१. आनदकारी ।। २. परास्त ।

११ सलेखणा मंडिया चित चोखे, उपवास वेला वहु कीधा।
तेला चोला पांच षट लग, सात आठ लग लीधा॥
१२ छीहंतर उपवास किया चित चोखे, एकसौ वावन वेला।
अडतीस चोखा नें चवदै पंचोला, तीस नें दोय किया तेला॥
१३ छठ ना थोकड़ा षट कीधा, सात कीना तीन चोखा।
एक अठाई अमोल आछी, खेर कर्म किया 'खोखा'[1]॥
१४ सातसौ तेसठ दिन तपस्या रा, तीन वर्ष मांहै तांमो।
काया कीधी खंखर सारखी, सारचा आतम कांमो॥
१५ तिणमें चोवीहार तपस्या घणी कीधी, कदेयक पांणी पीधो।
विगै लीधी तो अल्पमातर, अरस विरस अन्न लीधो रे॥
१६ अल्प आहार दिन पचीस आसरै, पछै संथारो ठायो।
चोखा परिणांम हरष सहित कर, जिन मार्ग जश चढायो॥
१७ भजन किया भगवंत रा भारी, धर्म ध्यांन मन ध्यायो।
नवकार लाखाँ गुणिया अति नीका, नवदिन अनशन आयो॥
१८ सरियारी कंटाल्ये कार्य सारचा, तपस्या कर देही तोडी।
जोतांजी व वनांजी नंदुजी नोजाजी, सेवा कीधी कर जोडी॥
१९ 'जाजो'[2] साज दियो संजम तप रो, चित्त समाधि उपजाई।
कष्ट पड्यो पिण न हुई अलगी, च्यार तीर्थ में सोभा पाई॥
२० आलोवण पडिक्कमणो सुध कीधो, जग माहै सोभा लीधी।
च्यार तीर्थ में हुई सुखकारी, सुध गति पांमी सीधी॥
२१ सवत अठारै वर्ष सत्यासे, दूजे विसाख सुद चोथ सीधो।
गांम कंटाल्ये भिक्खू जनम्या ज्यां, जिनमार्ग जस लीधो॥
२२ समत अठारै वर्ष अठयासे, चेत सुद चवदश शनिवारो रे।
गुण गाया वजांजी सती रा, 'लावा गांम मझारो रे'[3]॥

---

१. नष्ट।   २. अधिक।

३. यह गीतिका जयाचार्य द्वारा रचित गीतिकाओं मे लिखी हुई है पर सवत् और स्थान को देखते हुए लगता है कि उनके द्वारा वनाई हुई नही है क्योंकि जयाचार्य उस समय हरियाणा और दिल्ली के वीच विहार कर रहे थे। ऐसा जय सुजश ढाल १४ मे उल्लेख है।

मुनि हेमराजजी उस वर्ष मेवाड मे विचर रहे थे अतः उनके द्वारा वनाई हुई हो सकती है।

३. साध्वी कुसालांजी

(ख्यात संख्या ४६)

[—मुनि हेमराजजी]

ढाल

दोहा

१ दानशील तप भावना, ए च्यारूं मार्ग तंत।
त्यानैं मोटा मुनिश्वर आदरै, त्यांनै मुक्त जावण री खंत।।

२ स्वाम भीखू रा साध साध्वी, घणा किया संलेखणा संथार।
चोखी करी आराधना त्यांरो, घणो कियो विस्तार।।

३ कुसालाजी मोटी सती, पूज कनें लीधो संजम भार।।
कुटंब कवीलो छोडनैं, मन मे सुमंता धार।।

४ दस वर्ष संजम पालियो, शूर पणो मन आण।
आछी णरी संलेखणा, ते सुणज्यो चतुर सुजांण।।

५ छेहले अवसर चूंपस्यूं, कर संलेखणा संथार।
कार्यं सुधारै तेहनैं, धन्य-धन्य कहै नरनार।।

*सती मन तपस्या में वस रह्यो ।।ध्रुपदं।।

६ कुसालाजी मन चिंतवै, अवसर आय लागो जी।
देही तो जांणी कारमी, आहार करवा स्यू मन भागो जी।।

७ 'भाई'[1] 'सुत'[2] दोनूं आविया, दर्शन करवा काजो।
पूज पधारया चूप स्यू, फलिया मनोरथ आजो।।

८ सूरो चढै संग्राम में, कर केसरीया पूरो।
ज्यू सती रो मन तपस्या थकी, कर्म करण चकचूरो।।

९ संता पिण वरज्या मोकला, उतावल मत करो कांई।
विहार करो विचरो सुखे, गामां नगरा मांहि।।

१० वलता कुसाला जी वोलिया, म्हारे जोग मिल्यो छै रूडो।
भाई सुत नें पूज जी, तिणस्यू आयो वैराग पूरो।।

*लय : मुनि मन नावां में बस रह्यो.....।

१. मुनि श्री खेतसीजी। २. मुनि श्री रायचंदजी (ऋषिराय)।

११ चौथा आरा मांहे चूपस्यूं, वडा-वडा मुनिराया।
बीर जिनद मुख आगले, वाज वाज काम आया ।।
१२ पंचमा आरा रै मझै, भिक्खू भारीमाल ऋषराया।
त्यांरा केई साध साध्वियां पिण, जीत रा डंका वजाया ।।
१३ कुसालाजी मोटी सती, तपसा भारी कीधी।
परिणाम राख्या निर्मला, नीव मुक्त नी दीधी ।।
१४ फागुण सुद तेरस दिने, उपवास कियो श्रीकारो।
वीजी तेरस पारणो, लियो अल्प सो आहारो ।।
१५ चवदश स्यूं ले चोथ तांई, आहार अल्प सो लीधो।
पांचम दिन अल्प आहार ले, तत्क्षिण त्याग न कीधो ।।
१६ चेत वदी छठ नै दिने, वैराग उपनो भारी।
अधिकी तपस्या आदरी, ते सुणज्यो विस्तारी ।।
१७ उपवास कर बेलो कियो, तेलो कियो तांमो।
तेला में पाच पचखिया, पांचा मे आठ अभिरामो ।।
१८ अठाई मैं इग्यारैं किया, इग्यारै में तेरा कीधा।
तेरा मे पनरे किया, विचे पारणा न लीधा ।।
१९ पनरा मांहे संथारो पचखियो, कियो तीन आहार ना त्यागो
उचरंग घणोइज ऊपनो, धन धन सती नो वैरागो ।।
२० साधपणो पाल्यो चूप स्यूं, खरो रंग लगायो।
संथारो कियो सोभतो, संजम कलश चढायो ।।
२१ भजन करतां अरिहंत नो, दूजे पद भगवंतो ।।
आचार्य उपाध्याय नैं, पाचमें पद सव संतो ।।
२२ च्यार सरणां मुख उच्चरे, पांच परमेश्वर ध्यावै।
वैरागे मन वालियो, कर्मा री कोड खपावै ।।
२३ पंचमे आरे मझे, एहवी सतियां शूरी।
तपस्या कर ल्हावो लियो, चढिया घोडा मुक्त पुरी ।।
२४ सूंस 'आंखडी'[1] हुवा घणा, वैराग हुवो भारी।
आउवा में इचरज हुवो, धन्य धन्य कहै नर नारी ।।
२५ धन्य धन्य सती रा गुण भणी, धन्य धन्य सती रो ज्ञानो।
धन्य धन्य सती रा ध्यान ने, मन कियो मेर समानो ।।

१. अन्तिम समय मे।

२६ संथारो आयो जावजीव रो, आठ पोहर मझारो।
वेल्यां दोपांरा रो जाणज्यो, इचरज पाम्या नर नारी॥
२७ अनशन आयो तेतीस भक्त नो, तिण में तीन भक्त संथारो।
चेत सुदी सातम दिने, कर गया खेवो पारो।
२८ गुरु मिल्या भिखु स्वाम सारिखा, त्यांरै शिष्य भारीमाल जी भारी।
त्यांरो जोग मिल्यो छै सती तणै, धन्य धन्य सती रो अवतारी॥
२९ भाई खेतसी जी भली परै, दियो घणो उपदेशो।
सती सुण सुण नैं मगन हुई, उपनो वैराग विशेषो॥
३० सुत पिण कीधी चाकरी, सूंस सरणादिक दीधा।
परणाम ऊंचा चढाविया, आतम कार्य सीधा॥
३१ भगवती सूत्र सुणियो भलो, तिण में विविध प्रकार नी पूछा।
सुण वैरागज ऊपनो, परणाम रह्या घणा ऊंचा॥
३२ वखाण सुणावता पूज जी, सिंह नी परे गाजै।
साधां मांहे शोभता, चंद जेम विराजै॥
३३ उज्जवल धर्म जिनराज नो, उजला गुरु भारी।
उज्जवल परिणाम सती तणा, ए तीनूं तंत सारी॥
३४ सती गण में घणी सोभती, सगला नैं हुंता हितकारी।
भंडारी नाम दियो हुंतो, वनीत हुवा श्रीकारी॥
३५ अठाईस साध साधवी, दर्शण करवा आया।
षट साधु इग्यारै साध्वी, संथारा ऊपर मन भाया॥
३६ जीता मनोरथ मांडिया, ते सगला हुवा तंतो।
संलेखणा संथारो पिण हुवो, पूरी मन री खंतो॥
३७ पुन्य भारी सती तणा, पांमी भली वेलां।
थाट लाग्या मोकला, साध साध्वियां रा मेला॥
३८ सुख मांहे चारित्र आदरचो, सुख मांहे आय वेठा।
सुख मांहे करणी करी, सुख मांहे जाय पेठा॥
३९ तीन चौमासा पूज कनें किया, धर्म ध्यान वहु करिया।
सूत्र सिद्धांत सुणिया घणा, जाडा पातिक झडिया॥
४० पंडित मरण करचो मुनिश्वरां, मन में वैराग आंणो।
मुक्त में जावै पाधरो, देवलोक में शंका मत जाणों॥
४१ साध साध्वियां पिण सूंप स्यूं, विनय वैयावच कीधो।
सेवा भक्त कीधी सती तणी, भारी ल्हावो लीधो॥

४२ घणा ग्रामना श्रावक श्राविका, दर्शण करवा आया तासो।
हर्ष संतोष पाम्यां घणा, वनणा कीधी हुलासो ॥
४३ मांढी कीधी सोभती, खंड वण्या नव च्यारो।
वाजंत्र अनेक वजाविया, संसारिक शोभा विचारो ॥
४४ बड़ी वहन कुसाला जी शोभता, लघु वहन रूपां जी जांणो।
चारित्र पाल्यो नव वर्षा लगै, सिरियारी माय संथारो ॥
४५ सेज्यातर शोभाचंद श्रावक, जायगा निर्दोषण दीधी।
सेज्यातरी पिण वनीत घणी, सेवा वंदकी कीधी ॥
४६ समत अठारै सतसठे, आउवा शहर मझारो।
चेत सुदी सातम रवी दिने, गुण गाया श्रीकारो[1] ॥

---

१. यह गीतिका मुनि श्री हेमराज जी द्वारा रची हुई लगती है। उनका स० १८६७ का चातुर्मास खेरवा था और शेषकाल मे उधर ही विहार करते थे। भारीमालजी स्वामी आदि साधु आउवा पधारे तब मुनि श्री भी वहा पहुचे हों।

४. साध्वी कुसालांजी

(ख्यात सं० ५०)

[—मुनि हेमराजजी]

ढाल

दोहा

१ तिण काले नें तिण समै, दुक्खम आरा मांय।
स्वाम भीखनजी रा साधसाध्वी, त्यां कीधी संलेखणा ताय।।

२ स्वाम भीखणजी पाछै किया, संथारा तेवीस।
चौवीसमो संथारो सती तणो, पचीसमो राम जगीस।।

३ पाली शहर सुहामणो, तिण में लीधो संजम भार।
स्वाम भीखणजी रै आगले, सति कुसाला जी तिणवार।।

४ किण विध करै संलेखणा, किण विध करै संथार।
सावधान थइ सांभलो, आलस अंग निवार।।

*सती कुसालाजी रा गुण गावस्यूं रे लाल ।।ध्रुपदं।।

५ विचरत विचरत आविया, करैसंलेखणा मन धार महासती।
ऊपनी असाता आंख्या तणी, माधोपुर पुरमझार रे महासती।।

६ आसाढ मास तिण मझे, पारणा नव कीध।
बीस दिन तपस्या तणा, जीत नगारा दीध।।

७ श्रावण मास सुहामणो, तिण में पारणा कीधा च्यार।
इमहिज भाद्रवो जाणज्यो, आसोज में दोय विचार।।

८ तीन किया काती मझे, सूर पणो मन धार।
सर्व पारणा तैरे किया, चतुरमास मझार।।

९ च्यार तीर्थ सुणतां थका, कियो संथारो जांण।
काती सुद आठम सोमवार में, हर्ष घणो मन आंण।।

---

*लय—धीज करै सीता सती रे.....।

१० साध साधवियां सकल स्यूं, रूडी रीत खमाय।
पंच महाव्रत फेर उचराविया, श्री मुख पूजजी आय।।

११ कुसालांजी मोटी सती, तपस्या कीधी करूर।
केसरीया कर झांखिया, कर्म किया चकचूर।।

१२ वीर जिणंद मुख आगले, धनो सालभद्र मुनिराज।
तपस्या करी भात-भांत स्यू, सारचा आतम काज।।

१३ पांचमा आरा नैं विषे, भीखू सरीखा मुनिराय।
त्यांरा केई साध साधवी, दिया जीत रा डंका वजाय।।

१४ समत अठारै सित्तरे, काती सुदि नवमी मंगलवार।
संथारो आयो पनरा पोहर आसरै, धन-धन करै नर नार।।

१५ एहवी संलेखणा सुणियां थकां, आवै अधिक संतोख।
तो महासती नो कहिवो किसूं, वेगी जाती दीसै 'मोख'[1]।।

---

१. अनुमानतः इस गीतिका के रचयिता मुनि श्री हेमराज जी है। उनका उस वर्ष चातुर्मास इन्द्रगढ था।

५. साध्वी चंदणाजी

(ख्यात सं० ६४)

[—मुनि हेमराजजी]

ढाल

दोहा

१ स्वाम भीखणजी सोभता, भारीमाल झलकंत।
तीजे पट रायचंदजी, गणधारी गुणवंत॥

२ सांसण श्री वर्धमान रो, दीपायो दीन दयाल।
त्यारा सांसण में सतिया हुई, कहुंते 'सुरत संभाल'[1]॥

३ शिषणी भीखू स्वाम री, हीरांजी हृद वेस।
धर्म दिपायो जिन तणो, फिरती देस विदेस॥

४ गुरु भक्ता होई घणी, तिण वोत कियो उपगार।
हस्तूजी कस्तुराजी दो वैनडी, लीधो संजम भार॥

५ लख धन लोकीक में, झल तजिया भरतार।
सतियां दोनूं सोभती, वसती सैहर पींपाड॥

*चनणा सती ए, झलपाया भीखू गुरु भाव सूं॥ ध्रुपदं॥

६ हस्तुजी कस्तुराजी हृद करी, आसूजी नैं दियो उपदेश।
धनमाल तजी भरतार नें, संजम लियो 'वाला-वेस'[2]॥

७ आसूजी उपगार आछो कियो, चनणांजी चन्नूजी समजाय।
पिण अठे अधिकार चनणां तणो, जे भविक सुणो चित ल्याय॥

८ दीपांजी हुई घणी दीपती, तिण रो गण मांहे वधियो तोल।
ए पिण उपगार आछो कियो, गण मांहै काढै वोल॥

लय: वालम मोरा हो……।

१. ध्यान देकर। २. १७ वर्ष की सुहागिन वय मे।

९ बाजोली गाम बखाणिए, पुत्री चनणा गुणखाण।
पिता जगरूपजी जाणिए, पोती सरूपचंदजी री पिछाण ॥
१० सासरो खाटू सोभतो, सूरजमलजी घर नार।
सतरै वर्ष जाजेरी थकी, लीधो संजम भार ॥
११ भारीमाल भणाई भले भाव स्यूं, सिषणी सूंपी आसूजी नै ऐन।
संजम पाल्यो घणो सोभतो, चित मांहै होय गयो चैन ॥
१२ उपवास बेला तेला बहु किया, पांच आठ इत्यादिक जाण।
संजम पाल्यो इकतीस वर्ष आसरै, तिणरी मधुरी निरवदवाण ॥
१३ तीस चौमासा कीया तिहां, बोत कियो उपगार।
विचरत-विचरत आविया, सिरियारी सैहर मजार ॥
१४ सनमुख पूज सेवा करी, मिलिया साध साधवियांरा थाट।
पीच्यावन ठाणा भेला हुवा, हुवो घणो गहघाट ॥
१५ चौमास धार त्यांही रह्या, हस्तुजी तपसण रै हेत।
सात साधविया हेत स्यूं, सुमत गुप्त सावचेत ॥
१६ काती मास में कारण ऊपनों, दीपाजी आया दर्शण काज।
हिलमील हेत जूक्त करी, भले दियो संजम नों स्हाज ॥
१७ मिगसर मास में पूज पधारिया, चनणाजी हुई हर्ष अथाय।
जागादिक कारण जाण नैं, दीधी कंटालिये पोंचाय ॥
१८ सुखे रहतां कांइ कए साता हुई, काल आगे जोर नही कोय।
उठी असाता अणचिंतवी, सासरो कारण होय ॥
१९ पवर कासीद पोचावियो, श्रावकां धरी मन राग।
पूज रा दर्शण किया विना, तीनूई आहार नां त्याग ॥
२० चार पौहर वरत्या अभिग्रह मझै, पछै जावजीव किया पचखाण।
पचखाण संथारो आयो च्यार पोर नो, आसरै चट दे छोड्या प्राण ॥
२१ दर्शण करवा री दिल में हुंती घणी, कब आवै मोटा मुनिराय।
हिवै दर्शण करती दीसै भगवान, महा विदेह खेत्र रे मांय ॥
२२ पचीस खंडी मंढी करी, ए कीरतब संसार नां जाण।
परणाम चढता पूगी होसी, बारूं देवगती विमाण ॥
२३ जीउजी आद साधविया सेवा करी, चितनै उपजाई समाध।
साज देवै तप संजम तणो, ते सुख पामै अगाध ॥

२४ जनम भीखू रो कंटालिये, गाम भीखू रो जाण।
पोस विद नवमी दिनें, चनणाजी रो संथारो पिछाण ॥

२५ समत अठारै छिन्नूंए, पोस सुद बारस वृहस्पत बार।
गुण गाया चनंणा सती तणा, कंटालीए सैहर मजार[1] ॥

भविक जन हो, हियै धरज्यो वैराग विधि करी।

---

१. यह ढाल जयाचार्य द्वारा रचित नही है क्योकि उक्त रचनाकाल के समय वे स्थली देश मे विहार कर रहे थे।

मुनि हेमराजजी उस समय मारवाड़ मे विचर रहे थे अतः उनके द्वारा बनाई हुई हो सकती है।

६ साध्वी कल्लूजी

(ख्यात सं० ७४)

[मुनि हेमराजजी]

ढाल १

दोहा

१ श्री गुरु भिक्षु स्वाम नैं, चरणां सीस नमाय।
भाव सहित भजियां थकां, दुरगत दूर पुलाय॥

२ अनेक उत्तम नर उद्धरचा, मोटा मारग माय।
शासन दीपै वीर नो, भरत खेत्र भल मांय॥

३ भिक्षु पट भारीमाल ऋष, रायचन्द ऋषराय।
तेहना वरतारा मझैं, अधिक धर्म अधिकाय॥

४ साधु सोभै सूरमा, सतियां बड़ी सधीर।
दुखम आरै ऊजली, ज्यूं भाष गया महावीर॥

५ महासती मोटी सती, तीन साधां री माय।
कलजी करड़ी करी, संलेखणा सुखदाय॥

* धिन धिन कलूजी मोटी सती ॥ध्रुपदं॥

६ मारवाड़ देश में जनमीया, दीख्या लीधी जैपर में जोय रे।
तीन पुत्र नैं दीधी आगन्या, हरष सहित मन होय रे॥

७ प्रथम चौमासे पाँच पचखिया, दूजे चौमासे आठ अमोल रे।
तीजे चौमासे पनरै किया, त्यां रो दिन दिन तीखो तोल रे॥

८ चोथे चौमासे सतरे किया, पांच में तप बीस वदीत रे।
छठे चौमासे एक मास थिर थापियो, आ तो चौथा आरा री रीत रे॥

९ सात में तीस पचीस आठ में, नवमें दशमें चौमासे तीस रे।
एक मास इग्यार में, बड तपस्या विसवावीस रे॥

१० पाणी सवा सेर आसरै, दिन दिन प्रते लेता देख रे।
आछ छाछ नही आचरी, तपस्या करड़ी अणलेख रे॥

* लय चंपा नगरी रा······

११ चौथ छठ अठम दशम दुवादश, पांच चौमासा मांहि पिछाण रे।
हिवे सुणो सतरमा वर्ष नो, मोटी तपस्या तणो मंडाण रे॥

१२ सोलै वरस तो इणविध तप कियो, त्यांरी शोभा घणो साधां मांय रे।
भद्रीक परिणाम छै भला, घणी साध्वियां नैं सुखदाय रे॥

१३ कांइक कारण खास नों, पूरी इन्द्रियां प्रवीण रे।
त्यांरो सलेखणा सूं मन वस्यो, करवा देही नैं खीण रे॥

१४ आचारज कनें मांगै आगन्या, धरे संलेखणा सुध ध्यान रे।
वरजै बहु साधु नें साधवी, वैराग्य चढ्यो असमान रे॥

१५ ज्यूं सूरो संभै संग्राम में, ते तो पाछौ न भागै कोय रे।
ज्यांरो मन लागो छै मुगत में, ते तो दिन दिन तीखो होय रे॥

१६ छती जोगवाइ भला भाव सूं, झाली तप रूपी समसेर रे।
मन वचन काया करी, लिया पाप कर्म नें घेर रे॥

१७ आचारज तणी लेइ आगन्या, सुध सलेखणा मन धार रे।
एक मास भारी उणोदरी, घणी भूख खमी तिणवार रे॥

१८ पनरै दिन एकान्तर उणोदरी, आगे छूटा सात उपवास रे।
पछै तेले तेले मांड्यो पारणो, करै कर्मा रो नास रे॥

१९ विचे आठ बेला आछा किया, पारणे उणोदरी पिछांण रे।
तीखा परिणाम वरतै तेहना, करै कर्मा रो हांण रे॥

२० तैले तैले मांड्यो जद पारणो, जल नें एक रोटी जोय रे।
तरकारी नें पापड़ त्यां लियो, पूरो आहार न कीधो कोय रे॥

२१ 'तेलियो'[१] 'रई'[२] वस्तु जाणज्यो, एक रोटी असांण रे।
पारणो कीधो ए रीत सूं, एक दिन दोय रोटी जांण रे॥

२२ इम चढ़ता चढ़ता आगे चढ़्या, आसरै तेला किया पचास रे।
त्यांरो मन लागो छै मुगत सूं, हिवड़े आंण हुलास रे॥

२३ सुणी चोथा आरे धना तणी, तपस्या अति धीर रे।
सती कलूजी आरे पांचमें, तोडै कर्म जंजीर रे॥

---

१. आधे पीले हुए तिल अर्थात जिनमे तेल होता या रहता हो उसे तेलिया कहा जाता है।

२. गेहूं का मोटा आटा (सूजी)।

ढाल २

[ऋषि छोगजी]

दोहा

१ त्यांरो तपस्या ऊपरे, मंडियो बहु मंडाण।
पाली थकी आया पूजजी, दर्शण दीधा आंण॥

२ इगताली ठाणां आसरै, साध साधवी सोय।
ओर ही श्रावक श्राविका, मेलो मंडियो जोय॥

३ मृगसिर मासे मोकला, साध साधवी रा थाट।
ज्ञान सुणो गुण गावता, खैरवे सैहर में घहघाट॥

४ श्रावक श्रावका दीपता, देखै संत दिदार।
पाली ने जैपुर तणा, बोहत मिल्या नरनार॥

५ पोस मास पिछांणजो, अधिकी तपसा ऐन।
अन्न सूं मन उतारियो, चित्त में अधिको व्यापै चैन॥

*कलूजी सुधारे कार्य आपरा रे ॥ध्रु.पदं॥

६ पहिलां तो पांच किया भल भाव सुंजी, पांचा में दश दिन जांण।
दशां में पिण पनरैं किया दीपता रे, पनरा में मास पिछांण॥

७ उदक लियो अध सेर नैं आसरैं रे, कब ही पाव अध पाव सुदीस।
सप्त वलि चौविहार किया सती रे, वर तप विसवावीस॥

८ ए सहु उदक आगारे तप कियो रे, अघ दल करवा अंत।
जिम सूरो संग्राम मांहे चढयो रे, तिम चरण रयण मांहि रमंत॥

९ एकन्तर त्रिण मास नैं आसरैं रे, इम तप विवध सुदेख।
उणोदरी कोधी बहुला दिने रे, सतिय सखर गुण रेख॥

१० इम बहु तपसा कर नै महासती रे, खंखर कीधी काय।
वर वैराग हीया मांहे वस्यूं रे, परिणाम अधिक सवाय॥

११ श्रावण शुक्ल त्रयोदशी नैं दिने रे, 'तन श्रम'[१] बहुली जांन।
सतियां सागारी अणसण सही रे, उचरावियो पहिचान॥

---

* लय : साधुजी नगरी आया……

१. शारारिक खेद।

१२ एक पहर उनमान सुजाणियै रे, वीतो अणसण मांहि।
संवत अठारै वर्ष सत्यासीये रे, सती पहुंती परभव मांहि ॥

१३ धिन सतीयै तणो सूरापणो रे, धिन धिन तपसा धुन्न।
धिन धिन सती तणा वैराग नै रे, धन इकधारा मन्न ॥

१४ चौथा आरानी कीधी सती रे, पंचम आरा मांय।
सुर अपवर्ग दाता सासण सही रे, दीपै सतीयै पसाय ॥

१५ जन्म सुधारचो जग में जस लियो रे, रयण कुक्ष धर मात।
ते सती नो भजन करो भवी रे, उभय भवे कुसलात ॥

१६ करडी कीधी कलूजी सती रे, सांप्रत काल मझार।
अह्नो निस जाप जपो उत्तम नरां रे, ज्यूं पामो भवपार ॥

१७ साप्रत भीक्खू पट चौथे भला रे, जय गणि महाराज।
बड़ी बड़ी सतियां इण गण सही रे, वले वहु संत-सुसाज ॥

७ साध्वी मयाजी

(ख्यात सं० ८६)

[मुनि जीवोजी]

ढाल १

* सयांणा रे मयाजो मोटी सतीरे ।।

१ मयाजो मोटी सती रे, तरुण पणै व्रत धार।
चारित पाल्यो चंप सूं रे, सफल कियो अवतार।

२ पीहर संजम पाइयो रे, सैहर आंमेट मझार।
सुरगढ़ पायो सासरो रे, जात सेलोत सुधार।।

३ जनक होरजी जांणियै रे, चावत जात सुठांम।
बेटी बाबेलां तणी रे, मात खुसालांजी नांम।।

४ चेली भीखू सांम नीं रे, जोतांजी जसवंत।
स्वहत्थ संजम आपियो रे, मयाजी नै मतवंत।।

५ समत अठारै बोहीतरे रे, आवियो "[1]आगण" मास।
वासर विद एकम तणों रे, पूर्ण पूरो आस।।

६ दोनूं कुल उजवालिया रे, सीखी विनय विचार।
तप जप खप करणी करी रे मरद्या मांन अहकार।।

७ सरल भद्रीक सुहांमणी रे, सम दम सुमत सहीत।
संवेग रस नीं हंसली रे, गई जमारो जीत।।

---

* लय—नायका री······

१. अगहन। (मृगसर)

ढाल २

*मयाजी मनडै वसी रे लाल ।।ध्रुपदं।।

१ तवन सजाय बोल थोकड़ा रे, कथा कवित विग्यान ।।गुणवंती ।।
सूत्र सिधंत वखांण में रे, डाही चतुर सुजांण ।। गु० ।।

२ भारोमाल गुर मेटिया रे, बंछित पूरया वीर।
प्रगट रायचंद पूजजी रे, दीधो साहज सधीर ।।

३ मुरधर मेवाड़ ने मालवो रे, थली ढूंढ़ार मझार।
गांमां नगरां विचरी घणी रे, कियो उपगार अपार ।।

४ उपवास बेलादिक बहु किया रे, सतर दिन तप सार।
ओर अठाई आद थोकड़ा रे, कहितां किम लहूं पार ।।

५ सुमत गुपत सुध-पालती रे, नित जपती नवकार।
एक महुरत मून साजती रे, ते पिण दिवस मझार ।।

६ सदा समरण भीखू सांम ही रे, परखी नैं दिल धार।
इम आतम उजवालती रे, जावजीव एक धार ।।

७ कथा कवित नी कोथली रे, बात बात मांहि बात।
चारित पाल्यो सांमठो रे, खांण वांणी विख्यात ।। गु. सतवंतीरे

---

*लय—धीज करै सीता सती रे लाल······

८. साध्वी दीपां जी

(ख्यात सं० ६०)

[सेवग]

ढाल

*हूँ तो वारी जाऊँ रे, सती दीपां री सूरत पर वारी
जांऊ रे ।। ध्रुपदं।।

१ दीपांजी तो दीप रही छै, च्यार तीर्थ रै माहि ।।
सती सिरोमणी सोभ रही छै, कसर नहीं छै कांइ ।।

२ रायचन्द रै साधू सोहै, आरज्यां तो भारी ।।
दीपांजी तो दीप रही छै, थाँरी सूरत री छबि न्यारी ।।

३ पंच महाव्रत चोखा पालै, सती गुणां री खांनी ।
ऋषभनाथ स्यूँ ध्यान लाग्यो छै, रायचन्द जी सनमानी ।।

४ गोप्यां रो मन कृष्ण जी रहै, पारवती मन 'ईश'[1] ।
सती रै मन रायचन्द वस्या रहे, जांण रह्या जगदीस ।।

५ ज्ञान दर्शण चारित्र छै भारी, प्रबल पुन्य अपारी ।
वाणी अमृत धारा वरषै, सुमत गुप्त भंडारो ।।

६ कर जोड़ी नै सेवग बोलै, मन में हर्ष अपारी ।
गुणां उपर निजर देइज्यो, भजन किया जयकारी ।।

---

* लय—वारी रे जांऊ म्हारा चरखा री······

१. महादेव ।

९. साध्वी नन्दू

(ख्यात स० ९२)

[श्रावक लिछमणजी मथेरण]

ढाल

दोहा

१ प्रथम भिक्खू रिष परगटचा, भारीमाल ऋषिराय।
जीत आचारज सोभता, सुजश रह्यो जग छाय ॥

२ सती नन्दूजी जनमियां, पिच्छम देश मेवाड़।
शीलवती साची सती, जयवन्ती जयकार ॥

१ स्यर सती नन्दूजी से समरण कीजै, वरतै परम किल्याण जी ॥ ध्रु०पदं॥
दरसण करतां दुरगति न्हासै, पातक दूर पुलाय जी।
सेवा करतां सम्पत आवै, जन्म सफल हो जाय जी ॥

२ लावागढ मेवाड़ ना वासी, मात-पिता सुखकार जी।
ओसवंश श्रावक-व्रत पालै, सती लियो अवतार जी ॥

३ बाल ब्रह्मचारी साची सती, नव कोटी ब्रह्मचार जी।
दसमों कोट जतन कर राखै, खंडै नहीं लिगार जी ॥

४ सूत्र सिधात तणी बहु पाठक, गुण रतनां री खांण जी।
पंडित-चतुर विचक्षण महासती, नव तत्व न्याय पिछांण जी ॥

५ तहत वचन गुरु आग्या पालै, संजम सतरै प्रकार जी।
द्वादश विध तप किरिया साधै, टालै सर्व अणाचार जी ॥

६ हेतु कथा दृष्टान्त चौपई, वांचै न्याय लगाय जी।
ओछो अधिको अखर उचरै तो, केवल्यां नै देवै भुलाय जी ॥

७ तीन प्रदिखण तन मन ल्याई, त्रिकरण सुध कराय जी।
उत्तरासंग[1] कर शीस नमाई, नमतांइ साता थाय जी ॥

---

*लय—संत भीखणजी रो समरण कीजे……

१. मुख पर वस्त्र लगाकर।

८ नित्य प्रभाते दरसन करतां, चरण कमल चित्त ल्याय जी।
दुख दोहग विष लहर न व्यापै, चिन्त्या रहै न कांय जी॥

९ चरण कमल रज तन फरसंतां, तप तेजरो जाय जी।
बात पित्त कफ रोग न ठहरै, आरत दूर पुलाय जी॥

१० वाटे घाटे नाम जपंता, 'अरिकेहरी'[1] टल ज्याय जी।
चोर चकोर जख प्रेत न दरसै, शीले सूर सुहाय जी॥

११ सन्मुख हो चित्त ध्यान धरतां, कमो रहे नहो कांय जी।
उत्कृष्टा परिणामां स्मरतां, जनम मरण दुख जाय जी॥

१२ उगणीसै वीसे सावण मे, भियाणी शहर चोमास जी।
सती तणा गुण गावै लिछमण, आणंद लाल विलास जी॥

---

१. केसरी (सिंह)।

१०. साध्वी कंकू जी

(ख्यात सं० ११३)

ढाल १

१ सतिय कंकूजी अधिक सयाणी, सैहर उदैपुर जांणी जी रे।
सासरो पोरवाल संकलेचा, पियर आहिड पहिछांणी जी रे।।

* सुगुणी समणी जी रे।। ध्रुपदं।।

२ अनुक्रम मिलियो जोग अनूपम, जय गणपति नी जाची जी रे।
भूआ अजबूजी महासतियां, पवर ज्ञान गुण राची जी रे।।

३ तसुं उपदेश सुणी दिल समरचां, अठारै तयांसै वारू जी रे।
चैत शुक्ल दशमी तिथि लीधूं, चरण उदयपुर चारू जी रे।।

४ सुमति गुप्ति सुध संजम निर्मल, सरल भद्र सुखदाणी जी रे।
तप जप करणी करती हरती, पाप पक पहिछांणी जी रे।।

५ सती कलूजी करी संलेखणा, अजबूजो पै आछोजी रे।
तन मन सेती सेव करी अति, सतो ककूजी साचो जी रे।।

६ कियो सिघाडो सती कंकूं नो, परम पूज ऋषिरायोजी रे।
सतियां सूंपी गुण रस कूंपी, वारू तोल वधायो जी रे।।

७ जयाचार्य री पिण अति मुरजी, गणि बड बंधव जांणी जी रे।
तास सुनिजर पिण अति तीखी, वर सुविनीत वखांणी जी रे।।

८ छैहड़े आठ चौमासा कारण सूं, सैहर चांदारूण मांह्योजी रे।
ओसवाल मेसरी प्रमुख, सतियां नै सुखदायो जी रे।।

९ जयवर स्वामी अंतरजामी, सखरो स्हाज दिरायो जी रे।
सतिया म्हेले वस्त्रादिक फुन, कसर न राखी कांयो जी रे।।

१० उगणीसै चउतीसे आसु सुक्ल, एकादशी सारो जी रे।
हरष धरी निज मुख सूं पचख्यो, चौविहार संथारो जी रे।।

---

* लय—सैणा थइयै जी रे······

११ जन कहै निर्जल एकादशी ए, पहुंती परभव मांह्यो जी रे।
लजवंती पुन्यवंती परगट, स्वर्ग पहुंती जायो रे ॥

१२ सति वगतावर स्हाज दियो अति, वलि चंदणा जी जांणी रे।
सेव करी जन में जरा लीधो, हद हिमत चित्त आणी रे ॥

१३ ठाकुर नी मा नाथावती जी, लोका नैं कहिवायो जी रे।
चाहिए ते वस्तु मंगावो राज थी, मोछव करो सवायो रे ॥

१४ सांसारिक मोछव बहु कीधा, चांदारूण ना भाया जी रे।
ठाकुर रामसिगजी आगे, वहुजन संगे आया रे ॥

१५ रुपिया पइसा सामा मत देखो, मोछव चोखो कोजे जी रे।
मेश्री प्रमुख दीपता ते पिण, इह विधि वयण वदीजै रे ॥

१६ ओसवाल ने बली मेसरी, मोछव में अगवाणी जी रे।
संसारिक मोछव अति कीधा, जग मांहे जश जांणी रे ॥

१७ पाछे सतियां दोय रही ते, कियो चौमासा में विहारो जी रे
गणपति पासे सैहर लाडणूं, आय कह्या समाचारो रे ॥

१८ उगणीसै चउतीसै मृगसर, सुदि तीज अने भृगुवारो जी रे।
श्रमणी कंकू तणी जोड़ ए, कीधी अधिक उदारो रे ॥

११. साध्वीप्रमुखा सरदारां जी

(ख्यात सं० १७१)

ढाल १

१ पीहर चूरू सहर में जी कांइ, पिता जेतरूप जी जांण।
जात कोठारी अति जबर, पुन बहु परिकर ऋधवान ॥

सती गुणवंती जी, प्रबल पुन्यवंती जी।
होजी ज्यांरो सखर नाम सिरदार जबर जशवंती जी ॥
*करण शिवशांती जी ॥ ध्रुपदं ॥

२ सहर फलवधी सासरो कांइ, जात ढढ़ा जशवंत।
सुलतान चंद सुत जोरजी कांइ, तसु बहु अति बुद्धिवंत ॥

३ समत अठारै सित्यासिये कांइ, सुण जय वच सुखकंद।
सम्यक्त व्रत ग्रहि नैं थया, बहु दृढ़ धर्मी गुणवृंद ॥

४ ज्ञान ध्यान उद्यम घणो कांइ, कियो तप विविध प्रकार।
तसु वर्णन करतां बधै कांइ, ग्रंथ तणो विस्तार ॥

५ हिवे समत अठारै सताणुए कांइ, युवराजा जय हाथ।
मृग विद चौथ बहु मोछवे कांइ, लियो चरण वरण शिव आथ ॥

६ अति विनय करी रिझाविया कांइ, सिघाड़ो तिण वास।
कल्प नावै तां लगे कियो, पाडिहारो सुविमास ॥

७ पछै जयगणी पाट विराजिया कांइ, सती तणो सुविचार।
शुक्ल पक्ष ना शशी नीपरै कांई, बधै सुयश विस्तार ॥

८ असन जल औषध करि सती, करती सार संभाल।
पुस्तक वस्त्र पात्रे करी सती, बाल वृद्ध प्रतिपाल ॥

---

* लय—पायल वाली पदमणी······

९ प्रतिक्रमण कियां पछै कांइ, रात्रि समै सुविचार।
बाई भाई सतियां भणी कांइ, देती सुमत उदार ॥

१० सघन विमल गुण अति घणा कांइ, सती वाणी अमृतधार।
सुमत पवर जल पायवा सती, उद्यमी अधिका अपार ॥

११ गणपति अनुग्रह थो सत्यां बहु, रहती आज्ञाकार।
चंदनबाला जिम तिम 'चिहूं'[1] जसू, जांणे अति श्रीकार ॥

१२ 'उगणीसै मृग विद छठै कांइ, नगर जोधाणे जांण।
तिहां मुनि अडताली तिण दिने, सत्यां चिमतर गुणखांण'[2] ॥

---

१. चार तीर्थ।

२. इस गीतिका का रचना समय यथार्थ नही लगता, क्योकि जयाचार्य का उस वर्ष चातुर्मास सुजानगढ था। जयाचार्य का जोधपुर मे हुए बिना इतने साधु-साध्वियो का सम्मिलित होना सभव नही लगता।

सं० १९२१ के फाल्गुन महीने मे जयाचार्य वहां पर पधारे थे और वहा एक महीना विराजे थे। इससे लगता है कि उक्त सवत् १९२१, महीना फाल्गुन और तिथि कृष्णा ६ होनी चाहिए।

१२. साध्वी सेरांजी

(ख्यात सं० १६६)

[श्रा० लिछमणजी मथेरण]

ढाल १

१ *सुखे शहर भिवानी, सुवास बड़े हुलासै,
तपसी गुलजारी महाराज कियो चोमासै ।
मुनि प्रतिबोध्या नर-नार धर्म में रागी,
सुण सरधा सुवनीतां इमरत सी लागी ।।

२ जिहां गांव-गांव रा लोग वांदवा आवै,
करै सेवा भगती भली भांत धर्म नै चावै ।
चोमासो उतर्‌यां लोग संग में ध्यावै,
दरसण श्री पूज महाराज तणां उम्हावै ।।

३ चल आया रीणी नर-नार धर्म के भाये,
उतरया गुरांसा-पोसाल बहुत सुख पाये ।
रीणी नगरी में सुखे वसै नर नारी,
भेटया गुलजारी महाराज परम उपकारी ।।

४ आये संग राम जसराम भिवानी वारे,
उमरो तुसाम सिसाय हांसी के सारे ।
सब रस्ता चूरू का खूबसुरत कर लीना,
आगे श्री सरुपचन्द मुनिन्द चरण चित दीना ।।

५ ज्यांरै सागे मुनिवर सात मोत्यां री माला,
ज्यांकै दरसन से दुख जाय कटै कर्म जाला ।
लागी चाड़वास री ठीक पूजजी विराजै,
सागे सत-सत्यां रा ठाठ धर्म-ध्वज छाजै ।।

---

* लय—लावणी

६ भेटया जीतऋषि महाराज सबन के राजा,
जाके लगी मुगत से सुरत बजे जस-बाजा।
कई संत गुणन की खान ज्ञान का पूरा,
ज्यां कीन्ही मुगत नजीक कुगत स्यूं दूरा ॥

७ कई तपसी शील संतोष तेज तप भारी,
कई मासखमण चोमास अभिग्रह धारी।
कर सिद्धान्तों के अर्थ भेद भिन जाणै,
कवि कंठ कला छन्द गीत शब्दार्थ पिछाणै ॥

८ सति सिरदारांजी महाराज सुजस अतिभारी,
राखै सब सतियां सुविनीत आज्ञा अधिकारी।
बालक 'गरडे'[1] सब संत सती सुख पावै,
पालै श्री श्री जिनधर्म सुजश जस गावै ॥

९ सब संत सत्यां कूं निरख हरख पग लागै,
कर जोड़ वीनती करी पूजजी के आगै।
कोई संत सत्यां को श्री जी आप फरमावो,
हांसी भ्याणी की तरफ चोमास करावो ॥

१० तत्काल अर्ज सुन वचन पूज मन भावै,
कोई संत हुवै हुंसियार चोमासे जावै।
सब हरियाणे के लोग धर्म के रागो,
बाई भाई सुविनीत बड़ा वैरागी ॥

११ जब भरी सभा के बीच पूजजी भाखै,
कोई संत सती हां पर उत्तर नहीं दाखै।
विषम गांव बहु बीच क पाणी खारो,
कांटा कीकर है रेत को रस्तो न्यारो ॥

१२ तेरे मेरे केसै तेसै ऊत उतोड़ बोल न जाणै,
बांके टेढ़े वे लोग धरम स्यूं अजाणै।
जून री 'सांठी'[2] सुनाज चिणां को जाणो,
वादी ग्रह 'मंडा'[3] जल नहर 'सीत'[4] को खाणो ॥

---

१. वृद्ध
२. पुराना मोटा चावल
३. चनों की रोटी, फुलका
४. छाछ।

१३ वाणी सुण के सब संत रहैं चित धरकै,
विखमी भौम भयमान संत सब थरकै :
सब हरियाणै के लोग टुलग टुल देखैं,
हम करी आज लग खेवी लगी न लेखै ।।

१४ सब सतियां में हुसियार सेरांजी बुध मोटी,
सुण चोमासे री अर्ज गिरह में ओटी ।
म्हें हरियाणै के देश थाह ले जावां,
तुम चरण शरण परताप सुजस ले आवां ।।

१५ जिन सरधा री परतीत झूठ नहीं भाखूं,
वांके टेढ़े नर नार धरम में राखूं ।
बोलै हरियाणै के लोग हरख हिय मन में,।
हम आशा सफल सतीजी धन तुमने ।।

१६ हुए लोग घणे हुसियार आप घर आये,
गावा नगरां में सुजस सती के गाये ।
सती कीन्हो उग्र विहार वाट सब चूरी,
अब आयी शहर हिसार गुणां की पूरी ।।

१७ सहर हिसार सुथान छटा अतिभारी,
जैनो विसनी सब लोग वसै सुखियारी ।
तीनू वगत वखाण सती मुख गावै,
भिन्न भिन्न सिद्धान्त को भेद भलो समझावै ।।

१८ 'आलो'[1] श्रा जिन-धर्म नहीं कोई खामी,
अब कियो सतीजी व्यार भिवानी कानी ।
कियो सातरोड़ में आहार बहुत सुख पायो,
अब आखातीज के दिवस ऊमरो आयो ।।

१९ सामा आया नर नार ऊमरे पूगा,
धन धन बोलै नर नार भला दिन ऊगा ।
रागी घणां नर नार धर्म में भींना,
तेरापंथी गुरुदेव बहुत सा कीना ।।

---

१. श्रेष्ठ ।

२० हांसी के हरखै लोग सतीजो आई,
घर-घर से उलटे लोग चरण चित ल्याई।
वाइसपंथी बुध रहित 'सोदागर'[1] आयो,
साधु को आहार विहार पाप में गायो ॥

२१ जव सती सूतर को जाण जाव सुध कीन्हो,
आचाराग को पाठ मुखे धर दीन्हो।
पूछै परसन दो चार जाब नहीं आयो,
गयो भरी सभा में हार घणो पिछतायो ॥

२२ उनकूं गुरु की नहीं प्रतीत धरम किम आवै,
विन प्रीतम कामणगार सुजस नहीं पावै।
अब सती धरयो सुभ ध्यान भिवाणी आयो,
नर-नारी पाया हरख घणो मन मांयी ॥

२३ हालू अरु ल्होड वजार वसै धुर तांई,
जिहा तेरापंथी नर नार श्रावक सुखदाई।
धुर राम रामजस राम धरम उपकारी,
'सादी'[2] सब में हुसियार कला में भारी ॥

२४ सुध रामरतन तुको चिमन भावना भावै,
करै सेवा मंगतू भली भान्त धरग कूंचावै।
भगतू अरु मथुरादास धरम के रागी,
हीरां पन्नां अज मालिनी-पद वैरागी ॥

२५ पालै श्री जिनधर्म कर्म जो खपावै,
श्री जीत आचारज राज तणा गुण गावै।
नित दवै धर्म उपदेश निसंक वर हेतो,
समझो भोला नर नार चेतना ! चेतो ॥

२६ नित वरतै परम कल्याण चोमासो कीन्हो,
तव दीप नैं समझाय सुजस ले लीन्हो।
दीप नैं लेकर साथ वात मन मानी,
तब सती कियो सुविहार पूज जी कानी ॥

---

१. सोदागरमल

२. सादीराम।

२७ लागी चित में बहु चाव शासण में जावां,
श्री जीत आचरज चरण कमल चित चावां।
आगे शहर हिसार सती जी चल आई,
समझ्यो रामलाल सुविनीत श्रावक सुखदाई ॥

२८ गणेशदास अरु संतू समगत कीन्हो,
तज दियो कुमत मिथ्यात समत कर लीन्हो।
छोटे मोटे नर नार धरम में आये,
सब करै जीत ऋषि गुरु बहुत सुख पाये ॥

२९ मिगसर विदा बारस बुद्धवार सुखदाई,
चउरंगणी सेन्या संग मिली सरसाई।
सहंस तीन उन्मान आये संग भाये,
बाजे बाजे बहु भान्त हरख कर चाये ॥

३० सहर हिसार के मज्झ मज्झ सब धाये,
आगे गुलजारी महाराज बाग में आये।
सिध लोग मुहूर्त शुभ इमृत वेलां आई,
दिया दीपोजी[1] नै महावरत पचखाई ॥

३१ बांटे लाडू बहु दरब जाचका लीन्हो,
दीख्या को मोहच्छव सब पंचा मिल कीन्हो।
मैं कही लावणी हरख घणै मन आंणी,
गुणीसै सोलै मिगसर मास बखाणी ॥

---

१. दीपचंद अग्रवाल भिवाणी रो, सौले मिगसर मास।
गुलजारी हस्ते दीख्या लीधी तप तपियो निज खास ॥
एक स्यूं लेइ सात तक लडी, वले खुलो तप कियो सार।
सत्ताईसे सुरपुर रतनगढ मे, अन्तर मुहूर्त संथार ॥
(शा. प्र. ८-५१-५२)

३२ सुधरै हिसार को क्षेत्र धरम में ठीको,
लियो 'रामलाल'[1] उपकार सुजस को टीको।
केई चेत रह्या नर नार साच धर्म जाणी,
कई रह्या कुमति में झूल मिथ्याती प्राणी ॥
३३ आगे होसी सोई वात केवली जाणी,
मत ना कोइ छोड़ो नेम धर्म,की वाणी।
कर जोड़ लावणी लछीराम मुख गाई,
सति सेराजो सुरज्ञानी जगत में चाई ॥
(लिछमण गुटका पाना ७९ ए)

ढाल २

१ *धन सती सेरांजी वंदियै, निपट गुणा रो खान।
शरणो सती सेरां तणो, पामै नव-नव निधान ॥
२ वालपणै चारित लियो, जाण्यो अथिर संसार।
काया माया जाणी कारमी, कारमो सब परिवार ॥
३ सती संसार क्यूं लुब्धी नही, जाण्यो विष समान।
भोग तज्या इन्द्रियां तणा, सुण जिनधर्म सुज्ञान ॥
४ श्री रायचंद गुरु भेटिया, मोटा मेरु स्यं महान्।
धीर क्षमा गुण सभता, धरता निज आतम ध्यान ॥

---

* लय—कर्म भुगतियां ही छूटसी

१. वंशावलि

रामगोपाल — रामलाल
रामलाल → मंगतराय, भिखारीलाल (मगता भिखारी परिवार)
मंगतराय ↓ अग्रसेन
भिखारीलाल → मोलड, दलीप
मोलड ↓ देशराज
देशराज → वलवंत, धन्ना, मुन्ना, देवराज
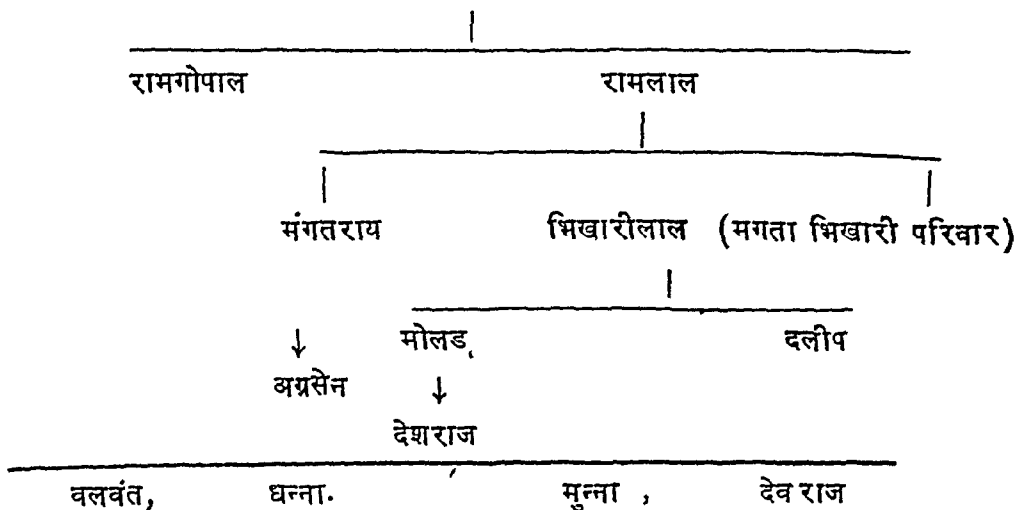
५ आचारज चढ़तो कला, पाट विराज्या ऋष जीत।
ज्यारो सेवा साचे मने करै, पालै पूरी प्रीत ॥

६ ज्यांरी इग्या स्यूं विचारै सती, आराधै सुध आचार।
एक वचन गुरु वागरै, ते पाले वार हजार।

७ चोमासो भीयाणी कियो, चावो ल्होड वजार।
घणा जीव प्रतिबोधिया, धर्म तणो उपकार ॥

८ दीपोजी ने प्रतिवोधियो, सतो दे उपदेश।
काढयो संसार रा दुख थकी, मेट्या सव ही कलेश ॥

९ वाणी इमरत वागरै, सुणतां हरख अथाग।
नर नारी राजी घणां, पामै घट वैराग ॥

१० सूत्र अर्थ सुलभ करै, भिन्न-भिन्न दै समझाय।
हलुकर्मी चित्त उल्लसै, समगतिया सुखपाय ॥

११ पाखंडो परचै नही रे, घट में घोर अंधकार।
सुण वाणी चेतै नहीं, ते गया जमारो हार ॥

१२ उगणीसै सौलह समे, 'गोपाठचू'[१] वुधवार ॥
लिछमण केरी वीनती लीज्यो हिये में धार ॥

ढाल ३

* धन सति जग में सेरांजी भारी ॥ ध्रुव० ॥

१ बालपणै सती संजम लीन्हो, जाण अथिर संसारो।
काया माया विरथा जाणी, रायचन्दपूजसिकोसिर धारयो।

२ सतगुरु सेवा कीन्हीं सीख्या, सूत्र अर्थ अनपारो।
सावज निरवद निरणो कीधो, साधपणा रा सरव आचारो ॥

३ जीव अजीव रो निरणो कीन्हो, पुन पाप पिछाणै न्यारो।
संवर निर्जरा आश्रव निरख्या, बध मोख रो सुध विचारो ॥

४ भिन्न-भिन्न जीवां नै समझावै, कंठ कला 'पिक[२] सीरस जाणी।
श्रोता नै तो सुधा सम लागै, अनमति रीझ रह्या सुण वाणी

५ 'सोलै चोक 'कला'[३] सव जाणै, ए बोहोतर मांही आई।
आछी आछी सब आदर लीन्हीं, माठो परी छिटकाई ॥

---

* लय — सवूरी

१. गोपाष्टमी (कार्तिक शुक्ला अष्टमी)
२. कोयल।
३. ६४ कला।

६ थली मारवाड़ मालवे जैपर, देश हरियाणे मियाणी चोमासा।
दे उपदेस सुखी जीव कीन्हा, दर्शण सेती हरख हुलासा॥

७ पांच सुमत तीन गुपत अराधो, पांच महाव्रत निर्मल धारै।
आ सरधा थ्रो जिनवर भाखी, तेरापंथ वहु चेतन तारै॥

८ काम क्रोध मद मोह निवारै, जीत्या छै राग नै धैख।
सात कुविसन तज्या विष जाणी, आदरै जिन मारण अनेक॥

९ काम विभूपा करै नहीं तन रो, आशा तृष्णा सारी मेटी।
सव विष छोड़ मुगत लव लागी, शीले रतन गुणी री पेटी॥

१० सती रो ध्यान धरता कट ज्यात्रै, मर्म तणां सारा जंजालो।
उत्कृष्टो रसायण आवै तो, वन्धौं तीर्थंकर गोत्र रसालो॥

११ सम्वत् उगणीसै खट दश वासा, छट वैसाख पुख रविवारो।
गांव ऊमरै सती जस गायो, समगति श्रावक लाल विचारो॥

ढाल--४

उठ प्रभात सती गुण गावो॥ध्रु.पदं॥

१ सेरांजी समर्यां सुख उपजै,।
सिरदारांजी समर्यां आयु पावो॥

२ भीभांजी भजतां दुख जावै,
मीनांजी के चरण कमल चित्त ल्यावो॥

३ समता सागर धरम उजागर.
पंचाचार पालै चित्त चावो॥

४ विप सम संसार रा जाणै,
काम क्रोध मद मोह निन्दावो॥

५ दरसण करतां दुरगति न्हासै,
सुमर्यां स्जूं संपत आवै ठावो॥

६ वाटे घाटे सती समरण करतां,
कुशल खेम स्यूं पुनः घर आवो॥

★ लय—वधुश्रा.........!

७ अरि करि केहरी राज तणो भय,

सती शरण स्यूं हुवै सभी बचावो ॥

८ अंतस अरज से सती जस गावो,

जो हुवै सुध गत केरो उम्हावो ॥

९ आज ही संकट सतियां मिटायो,

कहै लिछमण मेरो कर पकर निभावो ॥

१३. साध्वी प्रमुखा नवलांजी

(ख्यात सं० २४०)

[—साध्वी श्री कानकंवर जी]

ढाल

१ पवित्रणी सम पंचम अरके, नवल सती श्रीकार।
समता दमता क्षमता सागर, जबर गुणेदधि धार॥
भजिए नवल सती गुण कार।

२ गूढे सहर में जन्म तुम्हारो, जात गोलेछा जांण।
पिता कुशालजी मात चंदणादे, उरमें उपना आंण॥

३ पाली शहर मांहि परणिया, अनोपचंदजी सार।
जात वाफणा प्रसिद्ध जग में, तसु लघु वहु सुखकार॥

४ पति वियोग थयो अलप काले, सती मन गाढी धार।
संजम लेणो चित थिर करणो, छोड़ देणो संसार॥

५ समत उगणीसै वर्ष चोके, ऋषिराय गणि रै हाथ।
दीक्षा लेता उणहिज बेलां, निज करसूं केश विख्यात॥

६ चरण लेतां पांण सती नो, कुर्ब वधार्यो सार।
पूरण मरजी पुज्य परम नी, कियो 'मांडलियो'[1] धर प्यार॥

७ सुमत गुप्त में सावचेत वर, सासण ऊपर दृष्टि सुधार।
अघ रिपु हरत ज्ञान में रमता, तजिया विषय विकार॥

८ सखर बत्तीसे निर्मल सूत्र, वांच्या उद्यम आंण।
समय तणी वर सखर धारणा, वारूं सुंदर वाण॥

९ झीणी रैस अनें चर्चा नी, जबर धारणा जांण।
कंठ कला नें वचन मनोहर, नीत निपुण गुण खाण॥

लय—सीता आवै रे धव राग········।

---

१. उसी दिन 'साझ' बनाया।

१० चवदै री साल जय गणपति पे, पोथ्यां सत्यां किया भट।
मैं तो गणि सेवा में रहस्यूं, मन को मानज मेट॥

११ जीत कहै वोझ पाती नो, वले पांती नो काम।
पर छांदे रहणो अहोनिश में, कठिन घणो छै ताम॥

१२ कर जोड़ी नें नवल कहै पछै, समरथ हूं छूं स्वाम।
सेवा करस्यूं अघ नैं हरसूं, पूरन करदो हांम॥

१३ चवदै सूं ले अठाइसा तांई, सेवा करी घर प्यार।
पलेवणा गोचरी और प्रमुख ही, करता काम हुंशियार॥

१४ दूजी वार फेर कियो सिंघाड़ो, न्यारा विचराया स्वाम।
दिन दिन मुरजी अधिक वधाई, वगसीस कराई तांम॥

१५ समत उगणीसै वर्ष वीयालिस, मघवा गणी गुणधार।
सरव सत्यां री दी भोलावण, काम सूंप्यो श्रीकार॥

१६ ग र गंभीर धीर गिरिवर सा, अधिक दिदारू पेख।
सरव सत्यां री दी भोलावण, गुलाव सती गुण देख॥

१७ क्रोध को निर्जित मान को वर्जित, पतली चार कषाय।
ज्ञान ध्यान स्वाध्याय नो वारू, उद्यम अधिक सवाय॥

१८ मघवा ने मांणक गणी केरी, डाल गणी की सोय।
दिन दिन मुरजी अधिक वधाई, जांणी गुण - अवलोय॥

१९ संवत उगणीसै नें वर्ष चोपने, कार्तिक मास मझार।
जोर सूं ताव चढ्यो अति ही, तीज दिन तिणवार॥

२० दिन दिन शक्ति घटी तनु नी, आलोवणा निदंणा सार।
दश विध आराधना ढाल सुंणी नै, दियो मिच्छामि दुक्कडं धार॥

२१ आसाड विद चोथ रे दिन, छव वाज्या अवधार।
तीन आहार ना त्याग कराया, जाव जीव तिणवार॥

२२ च्यार पोहर तिविहार संथारो, पांच पोहर चोविहार।
सरव संथारो नव पोर आसरै, धन धन कहै नर नार॥

२३ पांचम दिन दश वज्या आसरै, सीझ्यो तव संथार।
पचास वर्ष आसरै पाल्यो, निर्मल संजम भार॥

२४ चरण रयण नी दाता जननी, ज्ञान ध्यान दातार।
याद आयां हियो हुलसै, तन मन उपजै प्यार॥

२५ चिंतामणि अरु कल्पलता सम, सति नो समरण पूर।
तन मन सेती भजन कियां थी, विघन जावै सब दूर॥

२६ तीन नृप (राय) गणी भेला किया, तेरह जय गणि साथ।
सात मघवा पे तीन माणक पे, वरवा शिवपुर आथ॥

२७ समत उगणीसै वर्ष चौपने, आसाड मास मझार।
हर्ष धरी ने सति गुण गाया, कान कुंवर धर प्यार॥

१४. साध्वी प्रमुखा गुलाबांजी

(ख्यात सं० २७१)

ढाल - १

समरण सुखकारी रे, करो नर नारी रे।
सतिय गुलाव गुण गुल क्यारी रे, फेल्यो जश भारी रे ।। ध्रुपदं ।।

१ सती तणो समरण करो, ऊगंते परभात।
समरण किया सकट मिटै, कांइ विघन दूर टल जात रे ।।

२ मुख सती नो सोभतो, जिम पूनम नो चंद।
जोवतां नयणां ठरै कांइ, उपजै घणो आनंद ।।

३ सती शिरोमण गुणनिला, ज्ञान गुणां री माल।
वीर मुख आगे चंदनवाला जिम, ज्यूं पूज्य मुख आगल भाल ।।

४ एक वार भजन करें सती तणो, भव भव में सुख थाय।
भजन करे नित ऊठ कै, ज्यांरा पाप दूरा झड़ जाय ।।

५ पूज्य तणा मुख आगल रे, सतियां सिरे गुलाव।
गुण जांणी तोल वधावियो रे, कांइ दिन दिन चढती आव ।।

६ गणपति नी आज्ञा भणी रे, सती पालण साहसीक।
भवि जीवां भणी प्रतिवोध नें, कर दई मुक्ति नजीक ।।

७ उगणीसै वयालीये वर्षे, महा सुध वीज गुरुवार।
सती तणा गुण गाविया, आंवापुरी मझार ।।

ढाल - २

१ पहली तो समरू हो गच्छ नायक स्वाम,
जीत आचारज शासण रा धणी जी।
ज्यांरी महिमा हो साची जगत विख्यात,
देश देशान्तर में जश कीरत घणी जी ।।

२ देश सुरंगो हो वीकाणै को राज,
शहर वीदासर विदायत में सिरै जी।
ओसवंश में वेगवाणी सिरताज क,
चाव घणा छै जग मे हो दीपताजी॥

३ तात पूरणमल मात वनादे डाही सुजाण,
धन धन वन नंदन जिसो जी।
ज्यांरे अंग में सती लियो अवतार,
उगणीसे एके कार्त्तिक सुदी जी॥

४ रूपे रूड़ी देवी रभा समान,
लक्षण बत्तीस तन में शोभता जी।
गुण चतुराई पूरव पुन्य प्रमाण,
वालपणै में समकित मन वसी जी॥

५ सजम लीन्हो माता नें वड़वीर,
सागेइ सुमत गुलाबां आदरी जी।
साचे मन स्यूं लीन्हो संजम भार,
उत्तम चारित्र पालै आकरो जी॥

६ सेवा करतां हो जीत रिषी री गुणवन्त,
सती गुलाबां में गुण घणां जी।
सीखी कला सुलिपि आचार-विचार,
सावज निरवद ओलख आगन्या जी॥

७ सूतर वांचै आचारजा रे पास,
विनय भक्ति कर अर्थ लियो खरोजी।
नव तत्त्व निरणो कीधो हरख हुलास,
द्वादश अंगावलि बुद्ध घरी जी॥

८ पालै श्री जिन आज्ञा धर्म अखंड,
किंचित् गुरु वचन लोपै नही जी।
इग्या ओलख भिन्न भिन्न भली भांत,
वांधी मर्यादा पालै खरी जी।

९ तपस्या करतां काटै करमां रा वृंद,
बारै भेदे तप किरिया करै जी।
सतरै भेदे संजम में लयलीन,
सहै परिषह बावीस आकरा जी ॥

१० सुमत गुपत में सती घणी हुसियार,
झूसर प्रमाणे ईर्या निरखती जी।
बोली बोलै निरवद वचन रसाल,
वचन खलावै नही बात में जी ॥

११ विषमी आरो पांचवो भाई भरपूर,
कठिन मारग जिनराज रो जी ॥

१५. साध्वी नवलां जी

(ख्यात सं० २८५)

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

दोहा

१ वले इहां सासण मझै, लघु नवलां गुणवंत।
काज सुधार्‍यो किण विधै, ते सुणज्यो धर खंत॥

२ भैरा वोरा नी दीकरी, पीहर वेमाली पेख।
गंगापुर में सासरो, जात खीवसरा देख॥

३ लघु नन्दूजी निरमलो, दीधो संजम भार।
अमृतांजी नै सूंपतां, सुजस वध्यो संसार॥

★सयाणी महासती नवलां, सतियां नै सुखदाय॥ ध्रुपदं॥

१ अमृताजी नैं आगले हे नवलां, सीखी विनय विचार।
वजांजी नै वाल्ही घणी हे नवलां, तप जप खप चितधार॥

२ तीन वर्ष उणौ सही हे नवलां, पाल्यो संजम भार।
छुटकर तपस्या वहु करी हे नवलां, सरल भद्र सुखकार॥

३ रेलमगरे कांनोड़ में हे नवलां, कोठ्यारे गुणकार।
ए तीन चौमासा तैं किया हे नवलां, कहुं तप नो विस्तार॥

४ च्यार पंच पनरे कीया हे नवलां, तीन थोकड़ा ए तंत।
एक रात नै उपनी हे नवलां, उलटी दस्त अतंत॥

५ कारण अचित्यो अति सुण्यो हे नवलां, सरूपचद अणगार।
सुणत पाण आव्या तिहां हे नवला, संता नैं परिवार॥

६ मुनि महाव्रत उचराविया हे नवलां, सरणा दिराया च्यार।
चित संवेग चढावतां हे नवलां, चाली जनम सुधार॥

७ देश प्रदेशा तूं फिरी हे नवलां, सांवण चांनणी तीज।
कोठ्यारिये चलती रही हे नवलां, साहज संता रो चीज॥

★ लय—नवली चंद नी हे साजन विन ऋतु वरसै मेह

८ जुग बस्ती ना जण घणा हे नवलां, मिलिया वहु नरनार।
चयार तीर्थ ना वृंद में हे नवलां, ओछव थया अपार॥

९ मोतीचंद जी बागरेचा हे नवलां, श्रावक बहु सुवनीत।
धर्म ध्यान कर दीपता हे नवलां, विनौ कियो हद रीत॥

१० तप जप धर्म वध्यो घणो हे नवलां, मेवाड़ देश मझार।
वीस संघाड़ा विचरता हे, श्री सतगुर नी लार॥

११ तंत तेरापथ्या तणा हे नवलां, सिंघाड़ा तेतीस।
प्रगट्या था पंच देश में हे नवलां, जय उदैपुर जगीस।

१२ जेष्ट बंधव श्री पूज ना हे नवलां, सरूपचन्द जी सांम।
नवठांणा[1] सूंनाथद्वारा हे नवलां, चोमासे सुख पांम॥

१३ बड़ चेतन चित में रही हे नवलां, मिलवा री मन मांय।
संक्षेपे जस तांहरो हे नवलां, जोड़्यो जुगत लगाय॥

---

१. नोट—चेतन[८६] उदैचंद[९४] जीव ऋषि[११३], बीजराज[१३५] रूपचंद[१३४]।
भवानजी[१२०] माणक[९९] मन वसियो, कालू[१३६] करै आनंद॥१॥

१६. साध्वी रत्नां जी

(ख्यात सं० ३२७)

ढाल

१ *रत्नां जी गुण रास, संजम लीधो आण हुलास। आछे लाल।
कुल उजवाल्यो आपणो ॥

२ प्रकृति भद्रिक पुन्यवांन, रत्नां गुणां नी खांन। आ०।
विनयवर महासती ॥

३ सुर्ति मुद्रा ऐन, पेखत पामै चैन। आ०।
महि जश कीर्ति विस्तरी ॥

४ रत्नां सती रै जांण, पूर्व भाग्य प्रमाण। आ०।
जोग मिल्यो अति ही भलो ॥

५ जयवर गणपति गुण नी जिहाज, दीधो अति ही स्हाज।
वर परिणाम चढ़ाविया ॥

६ सती सिरदारांजी सार, दीधो साहज उदार। आ०।
चउ सरणा उचराविया ॥

७ सावचेत पणे सती जांण, कीधो वचन प्रमांण। आ०।
तेहत वचन मन उचरै ॥

८ रत्नां रत्न मणी सम न्हाल, जवर गुणा री माल। आ०।
नव महीना में फते करी ॥

९ फागुण सुदि इग्यार सुजाण, कीधो जन्म कल्याण। आ०।
जौवनेर मांहे युक्ति सूं ॥

---

* लय– हंस हंस बांधे कर्म

१७. साध्वी प्रमुखा जेंठांजी

(ख्यात, सं० ३४०)

[—चम्पालाल जी वैद]

ढाल

★ गुणिजन रे ! ज्येष्ठ सती भजियै सदा रे ।।ध्रु पदं।।

१ देश थली रलियामणो, चूरू शहर अति चंग हो लाल।
जाति नाहटा जनमिया, उगणीसै एके मन रंग हो लाल ।।

२ गु० पिता सेवारामजी, माता कानकुंवार हो लाल।
परणाव्या छगनमलजी भणी, जाति वैद सुखकार हो लाल ।।

३ गु० सती पति वियोग थी, जाण्यो अथिर संसार हो लाल।
बीसे जय गणपति कर, धार्‌यो संयम भार हो लाल ।।

४ ग० गणि आणा मस्तक धरी, आणी तन-मन प्रीत हो लाल।
विनय विवेक विचार में, सती अति सुवनीत हो लाल ।।

५ गु० संवेग रस करि झूलता, अधिको मन वैराग हो लाल।
तारन भवदधि पाज सा, भविजन नें सौभाग्य हो लाल ।।

६ गु० साझ मुनि अज्जा भणी, तप संयमादि विचार हो लाल ।।
वलि व्यावच वहु विध करी, काटण कर्म कुठार हो लाल ।।

७ गु० 'सूरी-सेवा'[1] साझी वहु, प्राय निरंतर पणेह हो लाल।
कुरव मान शासन मंहि, दिन-दिन प्रति अधिकेह हो लाल ।।

८ गु० गणनायक संग विचरतां, ग्रीष्म ऋतु मझार हो लाल ।।
ताप सह्यो अति आकरो, प्राय मध्याह्न विहार हो लाल ।।

९ गु० एक दो त्रय आदि करी, वावीस पर्यंत सार हो लाल ।।
सतरा नो थोकड़ो वर्ज नें, ए सहु तप चौविहार हो लाल ।।

---

१. आचार्यों की सेवा।

★ लय—हेम ऋषि भजिए सदा……।

१० गु० अन्य तिविहार चौविहार वहु, थोकड़ा विविध प्रकार हो लाल।
कीधा मन उचरंग थी, तपस्या सूं घणो प्यार हो लाल॥

११ गु० जय मघ माणक सूंपियो, सारण-वारण काज हो लाल।
डालिमगणी योग्य जाणनैं, किया सहु सिरताज हो लाल॥

१२ गु० गण वच्छल गणईश्वरू, कालूगणि गुण खान हो लाल।
तोल वधाव्यो अति घणो, राख्यो वहु सन्मान हो लाल॥

१३ गु० चारित्र पाल्यो चंग सूं, साढ़ा इकसठ वर्ष हो लाल।
त्रेपन चौमासा किया, गणि 'साथे अति हर्ष हो लाल॥

१४ गु० नव चौमासा न्यारा किया, एक शहर सरदार हो लाल।
आठ ठाट राजाण में, कीधो घणो उपगार हो लाल॥

१५ गु० निरन्तर सेवा सती तणी, पामी पुन्य प्रकार हो लाल।
ज्ञान कला आदिक वहु, सीखाव्या धर प्यार हो लाल॥

१६ गु० उगणीसै इक्यासिये, काती नवमी स्वेत हो लाल।
गात्रे ज्वर पीड़ा थकी, सती थई अधिक अचेत हो लाल॥

१७ गु० अर्ध निशा पोछे थया, सावचेत सुविशेष हो लाल।
ज्वर मिटियां सहु गात्र थी, थई उदरे शूल अशेष हो लाल॥

१८ गु० मुहूर्त दिन चढ़िया पछै, 'अमल'[1] लियो द्विवार हो लाल।
अमल वमन हुयां थकां, हुया सथारा नैं त्यार हो लाल॥

१९ गु० दशमी नव वजे आसरै, अमल पाणी आगार हो लाल।
पचख्यो स्वमुख हर्ष सूं, सागारो संथार हो लाल॥

२० गु० सती सथारो सांभली, भेला हुवा नर-नार हो लाल।
खमतखामणा सती किया, ऊंचे शब्द उच्चार हो लाल॥

२१ गु० आराधना आदि करी, उचराव्या व्रत पच हो लाल।
स्वमुख आलोवणा करी, थया न्हाय धोय नैं टंच हो लाल॥

२२ गु० शूरवीर साहसीक थई, खड़ा थई तेह वार हो लाल।
दश वज चीवीस मिनट पै, पचख्यो जावजीव चौविहार हो लाल॥

२३ गु० इग्यारा वजी नैं आसरै, विनवै सती हुलास हो लाल।
आपो हम सतियां भणी, सीखावण मुख खास हो लाल॥

---

१. अफीम।

२४ गु० सती भाखै गणि आणनैं, कीज्यो तुम्हें प्रमाण हो लाल।
तप संयम वृद्धि कारणी, दाता छै गणि आण हो लाल॥
२५ गु० इम सीख आपी सतियां भणी, इग्यारा वजी मिनट चार हो लाल।
देवलोक पधारिया रे, पाम्या सुख अपार हो लाल॥
२६ गु० चालीस मिनट नैं आसरै, संथारो चौविहार हो लाल।
पंडित मरण हृद देख नैं, धन्य-धन्य कहै नर-नार हो लाल॥
२७ गु० हीरांजी सेवा हृद करी, भूरांजी भरपूर हो लाल।
मन वच तनु करी सती तणै, रही हुलास हजूर हो लाल॥
२८ गु० चांदांजी चातुर पणै, संतोकां गुण इष्ट हो लाल।
झमकू नोजां मौज थी, ज्ञानां ज्ञान गरिष्ट हो लाल॥
२९ गु० रूपां इन्दू शोभता, ए दशूं सती सुखकार हो लाल।
अन्त पर्यन्त सेवा करी, कियो सफल अवतार हो लाल॥
३० गु० साम्प्रत आरे पांचमें, चंदनवाला जेम हो लाल।
सारन वारन सतियां तणी, कीधी अति धर प्रेम हो लाल॥
३१ गु० हस्तमुखी हृद सोहता, मोहता तीरथ च्यार हो लाल।
सुधा वच सुणी जन सहु, होवता हर्ष अपार हो लाल॥
३२ गु० प्रवर गुण क्षमा तणों, अरु सरल भद्र सुखदाय हो लाल।
सौम्य दृष्टि भल देख नै, जन मन अचरज थाय हो लाल॥
३३ महासती रे! सुपने में सूरत आपरी, पेख्या हर्ष अतीव हो लाल।
के जाणें जिनरायजी, के जाणें मांहरो जीव हो लाल॥
३४ महा० तुम नामे वंछित मिलै, तुम नामे सुखकंद हो लाल।
तुम नामे संकट टलै, तुम नामे आनन्द हो लाल॥
३५ महा० चात्रक चाहै मेघ नै, गोपियां रे मन कांन हो लाल।
चकोर चाहै चन्द्र ज्यूं, निशदिन धरूं तुम ध्यान हो लाल॥
३६ गु० क्रोध मान माया लोभ नैं, जीत्या करि मन वश हो लाल।
दान दातारी हृद थकी, विस्तर्‌यो अधिक सुयश हो लाल॥
३७ महा० तव गुण अपरंपार छैं, महि रसना केम कहाय हो लाल।
सागर में पाणी घणो, गागर केम समाय हो लाल॥
३८ गु० उगणीसै बंयासिये, धुर ज्येष्ठ तीज हर्ष आण हो लाल।
चम्पालाल चित चग थी, गुण गाव्या शहर राजाण हो लाल॥

१८. साध्वी भूरांजी

(ख्यात सं० ३७८)

[—साध्वी मनोहरांजी]

ढाल

१ ★ प्रसिद्ध देश मारवाड़ में कांई, चंदेरी श्रीकार।
तिहां सुलतानचंदजी श्रावक वसै कांई, जात श्रावगी सार।
विनीत वधाया जी, विनय गुण पायाजी ॥

२ सुलतानचंद घरणी अछै कांई, कांनी नाम कहाय।
तिण री कुक्षे अवतर्‌या कांई, नाम भुरां सुखदाय।
सुणो भवि प्राणी जी, विमल चित आणी जी ॥

३ संमत उगणीसै नो के समै कांई, जन्म लियो परसीध।
दिन दिन प्रते सती वाधता कांई, समकित वोध इम लीध ॥

४ वाल्य अवस्था आयां थकां कांई, करी सगाई सार।
अल्प काल वीत्यां पछै कांई, जाण्यो अथिर संसार ॥

५ खबर हुई मांगेत भणी कांई, रीस चढ्यो असराल।
साहव लेई नें आवियो कांई, फौज घणेरी लार।
चाल तिहां आयो जी, लाडणू मांयो जी।
होजी मैं तो नही द्यूं संजम भार, वात सुणो भारी जी।
मांग छै म्हारी जी ॥

६ वादरसिंघजी ठाकर भला कांई, सुणी वात तिणवार।
सती भणी वोलाय नें कांई, रोक्या गढ़ मझार ॥

७ सती कहै थे मुज भणी कांई, अंतराय देवो किण काज।
जन्म-मरण संसार नो कांई, लिखत करो थे आज ॥

★ लय—पायल वाली पद्मणी·········

वार्त्तिका

तीन दिवस लगै सती नें गढ मझे राख्या। वादरसिंघजी नें मांगेत इम कह्यो—थानैं दोय हजार रूपया देस्यां म्हांरो सगपण कराय दो : तिवारै वादरसिंघजी ताण करवा लगा। सती नें कहै—संजम देवां नहीं। जद सती कह्यो—मैं संजम जद नहीं लेवूं मोने दोय वात नो लिखत करयो, नहीं तर संजम लेस्यूं। ठाकरां कह्यो—कांई लिखत करावसी ? जद सती कह्यो—एक तो मरूं नहीं, वीजो रांड होवूं नहीं। तिवारै वालमुकनजी ब्राह्मण वोल्यो—लिखत हुं करूं। उणरी वहिन रांड हुंती। तिवारे सती बोल्या—तूं कांई लिखत करसी। तूं हीज लिखत करै तो थांहरै घर में थांरी वहिन रांड क्यूं हुई। तूं म्हारो कांई लिखत कर सी। तिवारै घणो लाज्यो। पाछो वोल्यो नहीं जद मांगेत इम कयो—अवाणूं तो नागौर जावां, जिण दिन दीक्षा होसी तिण दिन दीक्षा लेवा दद्यां नहीं। जद जय गणपति वेघो वधतो जाण्यो। सती नें समझाय दीनी। जय गणपति लाडनूं स्यूं विहार कीधो। सुजानगढ़ पधारतां विच में पावोलाई ऊपर सती नें निज हाथ स्यूं चारित्र जय गणपति दीधो।

ढाल

८ प्रवल पुन्याई देख नै कांई, जवाव सुणी तिणवार।
नीचो मुख जोई रह्या कांई, वालक नी वुद्धि सार॥

९ अथिर संसार जांणी करी कांई, लीधो संजम भार।
जय गणपति ना हाथ सूं कांई, साल चोइसो सार।
वैराग वधारी जी, चरण रयणा धारी जी॥

१० सेवा कीधी गणपति तणी कांई, आंणी अधिक उमंग।
दिन दिन उद्यम अति घणो कांई, सति सिरदार नैं सग।
सती पुन्यवंतीजी, प्रवल वुधिवंतीजी।
होजी आ तो सती सिरदार नी महर, लहर सुख ल्यावै जी।
ग्यान वृद्धि थावै जी॥

११ प्रवल बुधि सति नी देख नैं कांई, जांणी नैं श्रीकार।
जय गणपति तिण अवसरे कांई, कियो सिंघाड़ो तिण वार।
सती पुन्यवंती॥

१२ देश-प्रदेश पधार नैं कांई, कियो घणो उपगार।
दीक्षा दीधी दोयें हाथ सूं कांई, हुयो हरष अनपार॥

१३ आठ चौमासा मालव किया कांई, हिम्मत सती नी देख।
बहु वार शास्त्र विलोक नें कांई, काटी कर्म नी रेख॥

१४ विचरत-विचरत आविया कांई, वर्स निव्यासिये ताय।
सात चउमास तिहां किया कांई, पड़िहारा पुर रे माय॥ स०॥

१५ तनु कारण कांईक हुयो कांई, वदि असाढ़ रै मांय।
पग टूट्यो छठ नै दिने आंई, उपनी पीड़ अथाय॥ सती०

१६ सातम आठम दिन कांई, किणहिक दिन नवी लीध।
सावण आदि तेरस दिन कांई, ताव चढ्यो सुप्रसीध॥ सती०

१७ वेदना उपनी अति घणी कांई, रोम राय रे मांय।
समभारां स्यूं सहै सती कांई, मोह रिपु दियो हटाय॥ सती०

१८ पग नैं फालो ऊपड्यो कांई, प्रगटी वेदनां ताम।
करड़ो काम शरीर नो कांई, सती चिंतवै मन आंम। सती०

१९ पछै सावण सुदि तीज नैं कांई, सांस चड़्यो असराल।
सती मन में विचार नैं कांई, उपवास कियो धर प्यार॥ सती०

२० मोहरत दिन चढ़ियां पछै कांई, लिछमांजी सू तंत।
आनंद रंग विनोद में कांई, निसंक पण पभणंत॥ सती०

२१ सती कहै संथारो मैं कियो कांई, लिछमाजी कहे ताम।
इसी वात आप किम कहो कांई, संथारै रो करडो कांम॥ सती०

२२ पाछलो पोर आया पछै कांई, अर्ज करी इम जाय।
संथारो कराऊं आपनैं कांई, जावजीव तिविहार। सती०

२३ भायां बायां अर्ज करी कांई, सती भर्यो हूंकार।
च्यार वज मिनट बारै आसरै कांई, सथारो तिविहार॥

२४ चोथ दिवस ऊग्यां पछै कांई, सवा छ वजे सार।
चौविहार करावियो कांई, जावजीव संथार॥

२५ सतिया मिल तिण अवसरे कांई, दिया सरण शुभ च्यार।
अरिहंत सिद्ध साधु धर्म नो कांई, तुम नैं सरणो वारूं वार॥

---

१. साध्वी श्री फूलांजी (५२९) साध्वी श्री वाल्हाजी (५९८)

२६ पाछिल महूरत दिन रह्यो कांई, प्रदेश खिच्यां तिण वार।
भुजा फरूकी तिण समै कांई, कीधो खेवो पार।
जपो नर-नारो जी, स्मरण सुखकारी जी।
हो जी आतो भुरां सती गुणधार, निमल मन ध्यावै जी।
बंछित फल पावै जी॥

२७ तिहोत्तर वर्ष चारित्र लीधो लाभ अपार।
असंख्याता वर्षां लगे कांई, असाता नहीं लिगार॥ जपो०

२८ पंडित मरण देख सती तणो कांई, दोरी लागी अत्यंत।
काल सूं जोर चालै नहीं कांई, इम जाणी सम रहंत॥ जपो०

२९ म्हां सू उपगार कियो घणो कांई, कह्यो कठा लग जाय।
आप तणा गुण याद आयां कांई, हृदय कमल विकसाय॥ जपो०

३० षट ग्राम ना जन आविया कांई, मोछव देखण काम।
नव खंडो मंडी रची कांई, जाणें देव विमाण॥ जपो०

३१ रुपिया सैकड़ा खरचिया कांई, कीधो अधिक ओछाय।
हुई जिसी बात कही अठे कांई, नहिं धर्म पुन्य तिण मांय। जपो०

३२ उपशम समदम शील में कांई, सती सरीसा 'महमंत'[1]।
चोथै आरे विरला हुसी कांई, सती महा गुणवंत। जपो०

३३ संवत उगणीसै सत्ताणवे कांई, सावण सुद्धि छठ उदार।
'मनोरी' गुण गाविया कांई, पड़ियारा सहर मझार॥ जपो०

---

१. महानुभाव

ढाल २

[साध्वी लिछमांजी]

जपो नर-नारी रे २, सती भुरांजी नो स्मरण महा सुखकारी रे ।।ध्रुपदं।।

१ मरुधर देश-विदेश सुरंगो, चदेरी अति भारी रे।
जात श्रावगी मुलतानचंद घरे, कानी वनित सुखकारी रे।।

२ तसु उर उपनी अति पुन्यवती, आयो वैराग सुविचारी रे।
मांगेत झगड़ो वहु विध कीधो, रोक्या गढ़ मझारी रे।।

३ वादरसिंगजी एम कहै म्हे, नहीं दयां संजम सारी रे।
सती कहै मुज जन्म मरण तणो भय, लिखत करो धर प्यारी रे।।

४ इम वहु उत्तर पडुत्तर सुन नैं, लोक हजारां भारी रे।
धन्य-धन्य वालक नी बुद्धि, इम मुख शब्द उचारी रे।।

५ नोके जन्म चोइसे दिक्षा, जयगणि हाथ सुखकारी रे।
चंदेरी चातुरगढ़ विच में, दिक्षा मोछव भारी रे।।

६ दिक्षा लेतां पांण सती नो, कुर्ब वधायो भारी रे।
पूरण मर्जी परम नी, कियो सिंघाड़ो सुखकारी रे।।

७ मरुधर मेवाड मालव कीधा, आठ चौमासा भारी रे।
देस पंजाव हरियाणा विचर्‌या, ढुंढाड थली मजारी रे,।।

८ समय वतीस वांच्यां वहु बेलां, वले वहु वर्ष विचारी रे,।
छंद कवित्त वहु विध दूहा, हेतु दृष्टांत इम धारी रे।।

९ झीणी रैस अनें चरचा नी, जव धारणां भारी रे।
कंठ कला नें वचन मनोहरू, नीत निपुण गुण क्यारी रे।।

१० समकित पमाई हजारां जन नै, किया द्वादस व्रत धारी रे।
सुलभ वोधि करी दोय दिक्षा आपी, तार्‌या वहु नर नारी रे।।

★ लय—होली खेलो रे·········!

११ अनुक्रमें तनु वेदना वहुली, उदय भई दुखकारी रे।
तो पिण समचित सखरो राखी, सहन करै सुविचारी रे॥

१२ जय मघ माणक डाल कालुगणी, तुलसी गणपति धारी रे।
अधिको तोल वधायो सती नो, किया नव ठांणां सुखकारी रे॥

१३ भिक्षु गण समुदाय सत्यां में, आज लगे सुविचारी रे।
दिसावान पुन्यवान कुंवारी, सती भुरां सुखकारी रे॥

१४ उदय असाता कर्म जोग नें, थई शरीर रे मांही रे।
देख वेदना तनु तणी सती, रंच नही घवराई रे॥

१५ उगणीसै सत्ताणुवे वर्षे, मास सावण मझारी रे।
सुदी तीज नैं लेई अणसण, पहूंता स्वर्ग मझारी रे॥

१६ छावीस घंटानो अणसण आयो, चोविहार वार घंटा तांई रे।
जन्म सुधार्यो सती आपरो, कमी न राखी कांई रे॥

१७ दिन आथमतां तन वोसराव्यो, आऊ तीर्थंकर नो न रहायो।
काल सूं जोर कोई नही चाणै, चिह्न लोगस्स काउसग ठायो रे॥

१८ दिन उग्यां थी जन वहु आवी, नव खंडी मंडी वणाई रे।
लोकिक ओछव वहु विध कीधा, नही धर्म पुन्य तिण मांही रे॥

१९ सतियां मिल सेवा हद कीधी, अंत समै लग धारी रे।
चित्त समाधि वहु विध उपजाई, करी व्यावच विवध प्रकारी रे॥

२० चिंतामणि रू कल्पलता सम, सती नो समरण पूरो रे।
तन मन सती भजन किया सूं, विघ्न जावै सव दूरी रे॥

२१ उगणीसै सत्ताणुवे वर्षे, सावण मास मझारी रे।
पडिहारा में सति गण गावत, 'लिछमा' हर्ष अपारी रे॥

परिशिष्ट ३

१. जयाचार्य का उदयपुर चातुर्मास (सं० १९१२)

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

दोहा

उदियापुर में पूजजी, इसा किया उपगार ।
साहज प्रमुख घणा जणा, प्रतिबोध्या नरनार ।।

१ कामदारादिक समजाव्या सामठा रे, धर्म ना रागी थया अनेक ।
संत सती चित सुख रह्यो घणो रे, वस्ती में वधियो धर्म विवेक ।।
जन मन लागो रे जयवर पूज सूं रे ।।

२ जन वृंद मिल मिल आव्या थाट सूं रे, थेट थल्यां ना झूलरा च्यार ।
एक वायाँ नो रे तीन भायां तणा रे, 'चिर दिन'[1] सेवा करी अपार ।।

३ नर नारी सहु पंच सय आसरे रे, एकठा मिलिया एकण वार ।
वखांण वांणी त्रिहु टक में सांमजी रे, वली वली वरस्या अमृत धार ।।

४ विवध सिधंत हाजरी वारता रे, भिन भिन अमृत वचन वदत ।
भाव रस प्यालां पोखै पूजजी रे, द्रव्य रस दीठा वार अनंत ।।

५ 'जय नगरी'[2] ना जन वृन्द जोत सूं रे, 'जनाना'[3] सहीत कुल रा दोय ।
उदीयापुर आचार्य वंदवा रे, आव्या हुँ सियारी में होय।।

६ घर-घर संत सत्यां नी वारता रे, घर घर पाया परमानन्द
श्रावक श्रावका छाया सैहर में, गलियां गलियां फिरता वृंद ।।

७ अनमती इचरज पाया पेखता रे, अहो अहो तेरापंथ नो तोल ।
धिन-धिन जंपै पंथ जवर घणो ले, दुनियां गुण करती दिल खोल ।।

---

१. वहुत दिनों तक । २. जयपुर । ३. महिलाएँ ।

८ पूज नी पिंडताइ गुण पेख नैं रे, पुनवंत प्रश्नोत्तर पूछंत ।
हलुकर्मी हकीगत सुण सुण हर्षंता, दुनिया देख देख उलसंत ।।

६ मैवाड़ी आव्या गांम अनेक ना रे, श्रावक श्रावका वह रह्या वाट ।
केई आता केई जाता जन घणा रे, संख्या न लही सबलो थाट ।।

१० मेवाड़ देश ना मानवीयां तणी, गुर नी भाव भक्त धर पेम ।
गेह घट गुण पचासमी ढाल में कहो, मुझ केहणी आवै केम ।।

२. संवत् १९१२ के चातुर्मास के बाद का विवरण

[—मुनि जीवोजी]

दोहा

जवर थाट जैंपुर तणो, मास सीम मन धार।
अहोनिश गुर सेवा करै, लेइज नो नो लार ॥

गोघूंदा ना जन घणा, गंगापुर किण ज्ञान।
थलवट जैंपुर सैहर ना, मिल्या मेवाड़ी आंण ॥

दरसण किया दयाल ना, सतगुर कियो विहार।
रत्नपुरी जिम रंगरल्यां, उपना थाट अपार

मेलो मंडियो थांवले, प्रणम्या बंधव पाय।
नर नार्‌या ना वृंद नो, हर्ष हीये न समाय॥

नव दीख्यंत पिण पूजा ना, प्रणम्या पाव प्रधांन।
जुग बंधव नी जन घणा, सेवा करै सुजांण ॥

वासी बीदासर तणा, बैंगाणी वहु दिन्न।
सेवा करी सिधाविया, मुख जपता धिन-धिन्न॥

श्रावक देश विदेश ना, साथे सेवा करंत।
हिवे अनुक्रमे पूजजी, नाथद्वारै आवंत ॥

ढाल

श्रीजीदुवारे आव्या सासण सांमी हो। पुनवंता पूज।
नर नार्‌यां ना वृंद मिल्या सिरनामी। हो मुंणिद॥

मोटै मंडाणे पूज सैहर में आव्या हो।
संत सती वहु सतगुर दरसण पाव्या हो ॥

जयनगरी ना सवल थाट पिण संगे हो।
अहोनिश सेवा करता अधिक उमंगे हो ॥

४ पीसांऊण नो श्रावक अति आदर सूं हो ।
चिर दिन रही नैं सेवा कीधी चित सूं हो ॥

५ चार तीर्थ ना वृंद हाजर्‌या होवै हो ।
नित-नित नवला थाट पूज सुख जोवै हो ॥

६ ठाणां छियासी संग साहिबी सोवै हो ।
श्रावक श्रावका चित ना पातक धोवै हो ॥

७ इहां गुर दरशण नंदूजी कंकूजी हो ।
कीधा सगदू अमृतांजी रंगूजी हो ॥

८ मोतांजी वरजूजी सेरां सरूपी हो ।
ए आठ सिघाड़ा संग गुर सेवा पकरी हो ॥

९ राजनगर नो तपसी आव्यो आई हो ।
ए नव सिघाड़ा निरमल सोभ सवाई हो ॥

१० वले मोखणदा थी जयचंदजी रिख आया हो ।
दोय रात रही सेवा करी सिधाया हो ॥

११ तीन ठाणां सूं टीकम रिष 'तक'[1] देखी हो ।
सेवा कर कर नै चाल्या मारग पेखी हो ॥

१२ ढाल अठावनमी जय जश जग में छायो हो ।
द्वादश वर्षे दूजो थाट दीपायो हो ॥

१३ हूं नितप्रति वांदूं चरणा सीस नमाई हो ।
चेतन रिख पर राखो नजर सवाई हो ॥

१४ मंडल्या दड नो रिण केर हु किम जानूं हो ।
खत वाल्यां सूं चित में साता पासूं हो ॥

१. अवसर ।

३. सं० १९१३ के चातुर्मास

[—मुनि जीवीजी]

ढाल-१

१ ★तेरै संतां सूं पूज, पाली से विराजिया। मुनिराज।
चौतीस सतियां साथ, ग्यान गुण गाजिया ॥

२ वारै संतां सूं जेस्ट, बंधव जैपुर मझै।
जुग ठांणा रिस भवान, सैहर वगड़ी सझै ॥

३ मोतीचंद ठांणा पंच, जसोले जश लिया।
टीकम रिस चउमास, कानोर मांहे कियो ॥

४ कर्मचन्द जीवराज, कवाथल नृप 'पुरे'[1]।
हिन्दू वखतगढ, त्रिहुं-त्रिहु ठांणा सहुंतरै ॥

५ माणक गुलहजारी ने, जयचन्दजी त्रिहुं।
कोइथल वकाणी गोवूंदै, ठाणां त्रिहुं चिहुं चिहुं ॥

६ जोधाणे हीरालाल, चोमासा सत ना ॥
वारे सख्या गुणजीव, गावै गुणव्रत ना ॥

७ माणक तप अढाइ मास, पोखर साठ पचखिया।
इगतीस दिन खूबचन्द, पूंज एकवीस किया ॥

८ इकताली दिन उदैचन्द, उदक आगार सूं।
अनोपजी त्रेपन दिन, एक जल धार सू ॥

९ कर्मचन्द कवाथल में' ग्यान गुन राचियो।
पंचमो अंग अखंड, परषद मांही वाचियो ॥

१० नृपपुर में जीवराज, वैराग वधावतो ॥
शिवजी सांमी ने, पिंडत मरण करावतो ॥

★लय—इण सरवरिया री पाल……।

१ राजनगर

ढाल-२

१ वड़ा चत्रूजी कुनणाजी चनणाजी त्रिहुं जणी।
केलवे उजेण कालूंड पादू अथवा भणी॥

२ चवदै ठाणां सूं दीपांजी गंगापुर गाजता।
वड़ नंदूजी देवगढ़ में नो ठाणे राजता॥

३ लघु मगदूजी रंगूजी मोतांजी महासती।
खेरवे नांदसमैं ठोर, कंटाल्ये वासती॥

४ छ छ ठाणा ना ए तीन सिघाड़ा सुख धरै।
वाजोली वोरावर पंच चत्रू जीउ जश वरै॥

५ रंभा मगदूजी मयाजी कंकूजी लघु नन्दू॥
सेरां नवलांजी ए सात चोमासा सुखकंदू।

६ मांडे नृप नगर डड़वे सिरियारी शोभती॥
पीपार नवैसैहर प्रवर आमेटे च्यार-च्यार ओपती॥

७ अमृतां पनांजी महताव कुंवर ठाणां त्रिहुं-त्रिहुं।
रावल्यां वीलाड़े दूधोर चोमासे सुख लिहुं॥

८ महासत्यांजी नवल सती नें फलोदी मोकली।
छ ठाणां नी हुई सात जातांइ वृद्ध मिली॥

४. तपस्वी साधु-साध्वियां

[—मुनि जीवोजी]

ढाल

१ ★धिन भीखू सांमी, काढ्यो मारग सार।
सासण शोभायो, वीर तणो विस्तार॥

२ धिन अखयरामजी, भोपजी तपसी भाल।
रिय इसरदासजी, उदयचंद गुणपाल॥

३ धिन वर्धमांन तपसी, त्रिहुं काले तप सत।
खटमासी चढ़ियो, गुरभक्ता गुणवंत॥

४ प्रथीराज हीरजी, खटमासी धर खत।
लघु मोती मुनिवर, विविध विनै चित सत॥

५ अमोचंद रिषेसर, चौविहार तप टको।
त्रिहुं काले तप कर, थोकडा किया अनेको॥

६ धिन दीप रिषेसर, छता भोग छिटकायो।
खटमासी कीधी, त्रिहुं काले तन तायो॥

७ धिन कोदर तपसी, त्रिविध पणे तप कीध।
खटमासी प्रमुख, संतां में जस लीध॥

८ रामसुख रिषेसर, विविध विनय गुण धार।
अरस विरस आहारी, उगणीस दिन चौविहार॥

९ सुखरामजी शिवजी, वेणीराम वखतार।
जोगीदास जीवणजी, तारो डूंगर अणगार॥

१० दश दिन नो अणसण, बाप बेटा था दोय।
गगापुर वासी, ए सात संथारा सोय॥

★ लय– नमूं अनंत चौवीसी…

१ १ सुखजी पीथोजी, शिवजी सांमी सूर।
कर सव संथारा, कर्म किया चकचूर॥

१ २ अड़ती दिन अणसण, जोध रिपि जय कीध।
इकवीस दिन अणसण, वखत रिपिसर लीध॥

१ ३ इत्यादिक मुनिवर, तपस्या कीधी तन।
चेतन रिप समरैं, जयकारी जसवंत॥

१ ४ मुनिवर मोखणदे, भाव भक्त भरपूर।
सांचे मन समर्यां, टलियै कष्ट कलूर॥

१ ५ मानकुवर महासती, एकवीस दिन संथारो।
चौविहार करी नै, जीत गई जमवारो॥

१ ६ तेजूजी तपसण, बयांलीस दिन संथारो।
इत्यादिक सतियां, नाम लियां निस्तारो॥

१ ७ धिन लावागढ नो, सिवजी रिप गुखदायो।
खटमासी कीधी, त्रिहुं काले तप तायो॥

५. स्वामी रायचंद राजा

[—हंसराज सेवग]

ढाल

×स्वामी रायचन्द राजा क, स्वामी रायचन्द राजा।
तेरापथ के तखत विराजै, वाजै जस वाजा ॥
रावलियां में रायचन्द, अवतारी आया।
चतुरा साह के चंद सरीखा, जननी हद जाया ॥ स्वामी०॥
सात वरस में समगत आई, दसमें दरसाई।
इग्यारा के मध्य वीच में, दिख्या हद आई ॥
सतरे वरस तो साधपणा में, भारी ब्रह्मचारी।
पूज्य थकांइ वध्यो प्राक्रम, वलभ विस्तारी ॥
साध आर्यां सुणों श्रावकां, सयल लोग दे साखी।
रायचन्द गादी रो मालक, भारीमाल भाखी ॥
कोल क्वन तो किया केलवे, सुत्र बेलां साधी।
राजनगर में रायचन्दजी, गुरु बैठा गादी ॥
गादी बेस नै गजव गूंजिया, देस घणा धाव्या।
गुजरात में जाय 'गजानंद'[1] थाट खूब ठाव्या ॥
मारवाड़ मेवाड़ कहीजै, मझ मालव तांइ।
हाड़ोती ढूंढाड कहीजै, थाट थल्यां मांहि ॥
माणक सुत पर 'मया'[2] राखज्यो, सोभा सवाई।
सेवग हंसो कहै लावणी, पीथल को भाई ॥स्वामी राय०॥

×लय—लावणी...

१. गणेश (गणपति)। २. कृपा।

६. मीठा उलाहना

[—हसराज सेवग]

ढाल

१ □राजनगर किम टालियो जी कांइ, कांकरोली को काम।
आप टाली नें नीकल्या जी, पिण म्हांरो वेली छै राम।
एसी नही जांणी रा पूजजी, हांजी थांनै चाय रह्या सहु देश ॥

२ भीखनजी गुण भाखिया जी कांइ, मारीमाल ज्यांरी भेट।
स्वर्ग मांहे मिलता थकां जी कांइ, थांनै ओलंभो देसी पेट ॥

३ अवही आप पाधारियै जी कांइ, रूड़ी हिरदा मे धार।
भोलेइ भूलो मतीजी कांइ, पाछी आवेला पुकार ॥

४ हंस कहै हजूर नें जी, म्हारे पिंड नहि छै पाप।
ए ओलंभो दीधो आप नें जी कांइ, तिणरोइ गुनो छै माफ जी ॥

□लय—आछो तप ठायो रा हीरजी···

परिशिष्ट ४

आर्या-दर्शन : एक दिग्दर्शन

पृष्ठ भूमिका

१. आचार्य भिक्षु का सं. १८७० मे स्वर्गवास हुआ, उस समय विद्यमान साधु ३५ साध्वियां २७

२. द्वितीयाचार्य भारीमाल जी का सं. १८७८ मे स्वर्गवास हुआ, उस समय विद्यमान साधु ३५ साध्वियां ४१

३. तृतीयाचार्य भारीमाल जी का स. १९०८ माघ वदि १४ को स्वर्गवास हुआ, उस समय विद्यमान साधु ६७ साध्वियाँ १४३

आचार्य ऋषिराय के स्वर्गवास के पश्चात् स. १९०८ माघ वदि १४ से आपाढ सुदी १५ तक दीक्षित साधु-साध्विया

१. मुनि पोखरदास जी (१६५)
१. सा० चनणांजी (२६९)
२. ,, वन्नांजी (२७०)
३. ,, गुलाबांजी (२७१)
४. ,, हस्तूजी (२७२)
५. ,, वरजूजी (२७३)
६. ,, चांदकुंवरजी (२७४)
७. ,, हरखूजी (२७५)
८. ,, मोयांजी (२७६)
९. ,, जेतांजी (२७७)
१०. ,, नाथांजी (२७८)
११. ,, भूमांजी (२७९)[1]

दिवंगत साध्वियां—

१. साध्वी मघूजी (८७)

---

१. ये ग्यारह नाम मूल कृति मे नही है, ख्यात से लिये गये हैं।

२. साध्वी गीगांजी (१२०) बाजोली का,

गरा बाहर साधु—

१. हुकमचदजी (६३)

विशेष विवररा (वर्ष के अन्त का)

सं. १९०८ के अन्त मे साधुओ की सख्या ६७ एवं साध्वियो की संख्या १५२ हो गई थी।

वर्ष आठै रा अन्त मे, इक सौ बावन जोय।
सामणी महा सुख दायनी, साधु सतसठ सोय ॥१०।
(आ. द. प्रारभिक दो. १०)

संवत् १९०९ के चातुर्मास आदि

ढाल १

श्री जयाचार्य संत १४ जयपुर[1]

१. साध्वी चन्नूजी 'वड़ा' (६५) ठाणा ९, वृद्धावस्था के कारण गुरु दर्शनार्थ न स्वयं आ सकी और न साथ वाली सतियो को भेज सकी।

२. साध्वी चन्नूजी 'छोटा' (७०) ठाणा ५, गुरु दर्शन कर ८ दिन सेवा की।

३. साध्वी रंभाजी (७२) ठाणा ५, वृद्ध होते हुए भी गुरु दर्शन कर ९ दिन सेवा की।

४. साध्वी दीपांजी (९०) ठाणा २३, गुरु, पुर दर्शन कर डेढ़ मास सेवा की।

१. साध्वी दीपाजी	(९०)	तप-दिन	९
२. ,, दोलाजी	(९६)	,,	१३
३. ,, रोड़ाजी	(११०)	,,	३०
४. ,, मलूकांजी	(१२२)	,,	५८,३२
५. ,, गेनांजी	(१२४)	,,	११८
६. ,, जेताजी 'वड़ा'	(१११)	,,	१५
७. ,, मगनाजी	(१८१)	,,	१५
८. ,, हस्तूजी	(२०९)	,,	१३०
९. ,, जेताजी 'छोटा'	(१५६)	,,	९,६
१०. ,, सेऊजी	(२१४)	,,	३०
११. ,, रंगूजी	(२१५)	,,	९
१२. ,, रामूजी	(२२४)	,,	३१
१३. ,, किस्तूराजी	(२२७)	,,	१०
१४. ,, वगतूजी[2]	(२३०)	,,	१०९

१. जय सुजश के आधार से। २. हरखगसाजी (२९४) की माता।

१३. साध्वी कुनणांजी (१३३) ठाणा ६, गुरु दर्शन कर ७ दिन सेवा की।

१४. साध्वी मोताजी (१३६) ठाणा ६, गुरु दर्शन कर ७ दिन सेवा की।

१५. साध्वी महताव कवरजी (१४५) ठाणा ३, गुरु दर्शन कर २३ दिन सेवा की।

१६. साध्वी रगूजी (१५४) ठाणा ६, गुरु दर्शन कर १५ दिन सेवा की।

१७. साध्वी नदूजी (छोटा १६७) ठाणा ४, गुरु दर्शन कर सवा मास सेवा की।

१८. साध्वी सरदाराजी (१७१) ठाणा १९[1], (जोवनेर १२; लाडनू ३, पाली ४), जोवनेर चातुर्मास के पश्चात् दर्शन किये और शेप काल मे आठ ही महीने सेवा की।

१. साध्वी चदणाजी	(११५)	तप-दिन	१६
२. साध्वी लछूजी	(२६१)	,,	१६
३. साध्वी कुनणाजी	(२१२)	,,	१०

१९. साध्वी सेरांजी (१९९) ठाणा ५, गुरु दर्शन कर आठ दिन सेवा कर विहार किया।

२०. साध्वी नवलांजी (२४०) ठाणा ४, गुरु दर्शन कर ४१ दिन सेवा की।

विशेष-विवरण

वर्ष के प्रारंभ मे—

सं० १९०९ के प्रारंभ मे साधु ६७ और साध्विया १५२ कुल २१९ थे।

सर्व एक सौ वावन अज्जा, नवके आदि निहालं।
गणपति आणा माहि रमता, सतसठ मुनि सुविसाल ॥
[आ. द. ढा. १ गा. ३१]

इस वर्ष संतो के १५ एव साध्वियो के २३ चातुर्मास हुए। साध्वियो के २० सिंघाड़ो के २३ चातुर्मास का विवरण इस प्रकार है :—

१. समणी तीन लाडणू सेहरे, पाली चिहुं चौमासो।
ए उगणीस अज्जिका, सिरदाराजी सग हुलासो ॥ २८ ॥
[आ. द. ढा. १ गा-२८]

साध्वी श्री चनणांजी का दो क्षेत्रों मे चातुर्मास था। साध्वी श्री सरदारांजी के सिंघाड़ मे कुल १६ साध्वियां थी। उनमे से तीन साध्वियो का चातुर्मास लाडनूं एवं चार साध्वियों का चातुर्मास पाली था। इस तरह कुल चातुर्मास २३ (२०+१+२) हुए।

जयाचार्य सहित साधुओ के चातुर्मास १५ थे। इस तरह कुल चातुर्मास क्षेत्र ३८ (१५+२३) होते है।

पनर तेवीस मुनि अज्जा ना, वर चौमास जगीसं।
विहुं चदणां एक सरूप भेलो, सर्व क्षेत्र 'अड़तीस'[1]॥
[आ. द. ढा. १ गा. ३२]

दीक्षित साधु-साध्वियां—

१. मुनि रामदत्तजी (१६६) 'तुषाम'। जाति—अग्रवाल, पुत्र-पौत्रादि छोड़कर जयपुर मे जयाचार्य द्वारा कार्त्तिक महीने मे दीक्षित।

१. साध्वी सिणगाराजी (२८०) 'लाडणू'। पीहर—राजलदेसर। मुनि स्वरूपचन्दजी द्वारा कार्त्तिक मास मे दीक्षा।

२. साध्वी मघूजी (२८१) 'बीकानेर'। गोत्र—बोथरा। पीहर—लाडनूं मे सहजावतो के। जयाचार्य द्वारा मिगसर मे दीक्षित।

३. साध्वी कंकूजी (२८२) 'सीसोदा'। गोत्र—कछारा। पीहर—कडोली, दीक्षा—माघ मे।

४. साध्वी जसोदाजी (२८३) 'बीकानेर'। गोत्र—डागा, पीहर—देशनोक। माघ मे। जयाचार्य द्वारा दीक्षा।

५. साध्वी नवलाजी (२८५) 'गंगापुर'। गोत्र—खीवसरा। पीहर—वेमाली मे बोहरों के यहां। फाल्गुन मे दीक्षा।

६. साध्वी खेमांजी (२८४) 'वेमाली'। गोत्र—बोहरा। पीहर—मोखंदा मे। दीक्षा—मुनि स्वरूप चंदजी द्वारा, ८ दिन से वड़ी दीक्षा।

७. साध्वी सेराजी (२८६) 'डीडवाणा'। गोत्र—वैद मूहथा। माघ मे दीक्षा, बड़ी दीक्षा ४ मास से हुई।

---

१. स. १६०६ मे मुनिश्री स्वरूपचदजी का चातुर्मास लाड़नूं था। (स्वरूप नवरसा ढा. ७ गा. १२) और सरदारसती के सिंघाड़े की तीन साध्वियो का चातुर्मास भी लाडनू था। इससे एक चातुर्मास क्षेत्र कम होने से कुल चातुर्मास क्षेत्र ३७ (१४+२३) होते हैं।

८. साध्वी गुलाबाँजी (२८७) 'लाडनू' गोत्र—दूगड। जयाचार्य द्वारा दीक्षित। तीन महीने मे दिवंगत।

९. साध्वी चन्नूजी (२८८) 'रायपुर'। गोत्र—भलावत। साध्वी श्री मोतांजी द्वारा आपाढ़ मे दीक्षित।

दिवंगत साधु-साध्वियां—

१. मुनि श्री सतीदासजी (८४) 'गोगूंदा। स. १८७७ मे दीक्षित। मिगसर वदि ९ के दिन बीदासर दिवगत।

२. मुनि उत्तमचंदजी (९०) स्त्री और पुत्र को छोड़कर स. १८८१ मे दीक्षित वगड़ी मे दिवंगत

१. मुनि साध्वी श्री सरदाराजी (२५१) 'बीदासर'। गोत्र—वैगाणी। १९०६ मे दीक्षित।

२. मुनि जीवूजी (२४३) स. १९०५ रीणी मे दीक्षित। साध्वी जीऊजी के सिंघाडे मे पादू चातुर्मास मे दिवंगत।

३. साध्वी लिछमांजी (१५३) १८९३ से पति छोडकर दीक्षा। ससुराल—श्यामसुखो के यहाँ। रतनगढ़ मे दिवंगत।

४. साध्वी ऋद्धूजी (१३०) 'सुजानगढ़'। गोत्र—वाडीवाल। स. १८८८ मे दीक्षित। पाली मे दिवंगत।

५. साध्वा वगतूजी (१६६) जाति—श्रावणी। सं. १९०८ मे पुत्र कालूजी सहित दीक्षा। पुर मे ९ पहर के अनशन से दिवगत।

गरा-बाहर—

१. साध्वी चनणांजी 'काँकडोली' (११५)

२. साध्वी डाहीजी (२२३)

वर्ष के अन्त मे

स. १९०९ से अन्त मे साधु ६६ और साध्वियाँ १५४ कुल (२२०) विद्यमान रहे।

सर्व एक सौ चौपन अज्जा, छासठ मुनी महतो॥

[आ० द० ढा. १ गा. ३८]

संवत् १९१० के चातुर्मास आदि

ढाल २

श्री जयाचार्य साधु १२[1] नाथद्वारा

१. साध्वी सरदाराजी (१७१) ठाणा, नाथद्वारा साध्वी सरदारांजी के साथ मे कुल २६ साध्वियां थी। जिनमें सरदाराजी आदि ने नाथद्वारा, ७ साध्वियों ने थामला तथा ४ साध्वियों ने खेरवा वर्षावास किया।

२. साध्वी चन्नूजी 'बड़ा' (६५) ठाणा ८, वृद्धावस्था के कारण स्वय न आ सकी। साथ की कुछ साध्वियो ने गुरुदर्शन कर १५ दिन की सेवा की और वापस मारवाड़ आ गई।

३. साध्वी चन्नूजी 'छोटा' (७०) ठाणा ६, रुग्णतावश स्वयं गुरु दर्शनार्थ न पधार सकी और न साध्वियो को भेज सकी।

४. साध्वी रंभाजी (७२) ठाणा ४, वृद्धावस्था और कमजोरी के कारण मारवाड़ से मेवाड़ जाना अशक्य होने से वे गुरुदर्शन न कर सकी और न साध्वियों को भेज सकी।

५. साध्वी दीपांजी (९०) ठाणा ११, साथ की चार साध्वियों ने गुरुदर्शन कर ५ दिन की सेवा की।
साध्वी जेतांजी (१११) ६ हमीरगढ़।

१. साध्वी गेनांजी	(१२४)	तप-दिन	३१
२. साध्वी सुंदरजी	(२६४)	,,	१५
३. साध्वी जेतांजी (नाथांजी की माता)	(२७७)	,,	६१
४. साध्वी हस्तूजी	(२०९)	,,	३०
५. साध्वी रामूजी	(२२४)	,,	१५
६. साध्वी सेऊजी	(२१४)	,,	१०
७. साध्वी मूलाजी	(२१३)	,,	३०
८. साध्वी मलूकाजी	(११२)	,,	३०

---

१. जय सुजश के आधार से।

२. साध्वी श्री दीपांजी के सिंघाड़े मे १७ साध्विया थी। ११ साध्वियो के साथ उन्होने चित्तोड़ मे चातुर्मास किया। जेताजी आदि ६ साध्वियो का चातुर्मास हमीरगढ़ मे करवाया। निम्नोक्त तपस्या का विवरण उक्त दोनो चातुर्मासो का सम्मिलित है।

६. साध्वी नंदूजी 'वड़ा' (६२) ठाणा १०, भीलोड़ (भीलवाड़ा), गुरुदर्शन कर ५ दिन सेवा की।

१. साध्वी सरूपांजी	(२२८)	तप-दिन	१२
२. साध्वी सीताजी	(२२६)	,,	मास खमण
३. साध्वी दोलांजी	(२५६)	,,	मास खमण
४. साध्वी मेहूकांजी	(१४४)	,,	मास खमण
५. साध्वी मूलांजी	(२३१)	,,	मास खमण

७. साध्वी मगदूजी 'वड़ा' (६६) ठाणा ४, गुरु दर्शन कर एक मास सेवा की।

८. साध्वी मगदूजी 'छोटा' (१०२) ठाणा ७, कानोड़ गुरु दर्शन कर ५० दिन सेवा की।

१. साध्वी रोडांजी	(२६०)	तप-दिन	२१
२. साध्वी चंदणाजी 'वीठोडा'	(२६६)	,,	३०

६. साध्वी गयाजी (१०६) ठाणा ४, रीछेड़, गुरुदर्शन कर ५० दिन सेवा की।

१. साध्वी गंगाजी	(१६७)	तप-दिन १६ (पति छोड़कर दीक्षित)
२. साध्वी वीजाजी	(१६२)	,, १६

१०. साध्वी अमृतांजी (१०६) वीजाजी (८८) ठाणा ४, वृद्ध होते हुए भी गुरुदर्शन कर तीन मास सेवा की।

११. साध्वी कंकूजी (११३) ठाणा ४, देवगढ, गुरु दर्शन कर ४० दिन सेवा की।

१. साध्वी चंपाजी	(१०५)	तप-दिन ३१
२. साध्वी चंदणाजी 'वाजोली'	(१६४)	तप-दिन २१

१२. साध्वी चदणाजी (११६) ठाणा १०, डीडवाणा, डाभ। स्वय चक्षु व्यथा के कारण से न आ सकी, साथ वाली ३ साध्वियों ने गुरु दर्शन कर ८ दिन सेवा की।

१. साध्वी हस्तूजी (१५२) ठाणा २१ (पति छोड़कर दीक्षित)

१३. साध्वी जीऊजी (१२३) ठाणा ८, दो गांवो मे चातुर्मास[1]। साथ वाली तीन साध्वियों ने गुरु दर्शन कर ८ दिन सेवा की।

१४. साध्वी कुनणाजी (१३३) ठाणा ६, पुर, माघ मास मे गुरु दर्शन कर १ मास सेवा की।

---

१. आ. द. ढाल १ गा० ३६।

१. साध्वी फतूजी	(३७३)	तप-दिन	१४
२. ,, अनाजी	(२०५)	,,	१६
३. ,, लिछमांजी	(१४३)	,,	४०
४. ,, नाथाजी	(१९६)	,,	३६ तथा अठाई
५. ,, वगतावरजी	(२५९)	,,	११
६. ,, हुकमांजी	(२५८)	,,	१६

१५. मोतांजी (१३६) ठाणा ७, गंगापुर, गुरु दर्शन कर २।। मास सेवा की।

१. साध्वी मोतांजी	(१३६)	तप-दिन	११
२. ,, रूपकवरजी	(१७८)	,,	९
३. ,, सेतांजी (डीडवाणा)	(२८६)	,,	१५
४. ,, वरजूजी	(२७३)	,,	७

१६. साध्वी महताब कवरजी (१४५) ठाणा ४, किसनगढ़, गुरुदर्शन कर १ मास सेवा की।

१. साध्वी महतावकवरजी	(१४५)	तप-दिन ८
२. साध्वी कुनणांजी	(२१२)	तप-दिन १३

१७. साध्वी रगूजी (१५४) ठाणा ६, केलवा, गुरु दर्शन कर २ मास सेवा की।

१. साध्वी अमरूजी	(२११)	तप-दिन	१२
२. साध्वी कुनणाजी	(२३९)	,,	१२

१८. साध्वी नदूजी (छोटा)(१६७) ठाणा ५, बणेरा बनेड़ा गुरुदर्शन कर ५२ दिन सेवा की।

१. साध्वी रम्भाजी 'पदराडा' (२२०) तप दिन ६३

१९. साध्वी सेराजी (१९९) ठाणा ७, नवैनगरा गुरुदर्शन कर २ मास सेवा की।

१. साध्वी कुनणांजी	(२३४)	तप दिन	२९
२. साध्वी मनांजी	(२३५)	,,	१७
३. साध्वी भानांजी	(२६३)	,,	१०

२०. साध्वी नवलाजी 'पाली' (२४०) ठाणा ४, दोलतगढ़, गुरुदर्शन कर एक मास सेवा की।

१. साध्वी हस्तूजी	(२३२)	तप-दिन	८
२. साध्वी कुनणांजी	(२४२)	,,	१६
३. साध्वी सुरतांजी	(२३३)	,,	१०

४. ,, पंनांजी (१३४) तप-दिन १५
५. ,, दोलाजी (२४६) ,, ३०
६. ,, सीताजी (२२६) ,, ३०
७. ,, लच्छूजी (१०१) ,, ७
८. ,, सोनांजी (२०८) ,, ७

७. साध्वी मगदूजी 'वड़ा' (६६) ठाणा, गुरुदर्शन कर ८ दिन सेवा की।

८. साध्वी मगदूजी 'छोटा' (१०२) ठाणा, चाणोद गुरुदर्शन कर २८ दिन सेवा की।

१. साध्वी रोडाजी (२६०) तप-दिन मास खमण
२. साध्वी चदणाजी (२६६) ,, २०
३. साध्वी चपाजी (१५१) ,, ६

९. साध्वी मयाजी (१०६) गुरुदर्शन कर सात दिन सेवा की।

१. साध्वी वीजाजी (१६२) तप-दिन २०
२. साध्वी अमृताजी (२४५) ,, १५
३. साध्वी गगाजी (१६७) ,, मास खमण

१०. साध्वी अमृताजी (१०६) वीजाजी (८८) ठाणा ४, कानोड़, गुरुदर्शन कर ३ मास सेवा की।

१. साध्वी ऊमाजी (१७६) तप-दिन १७

११. साध्वी ककूजी (११३) ठाणा ४ गुरुदर्शन कर ८ दिन सेवा की।

१. साध्वी चम्पाजी (१०५) तप दिन १७
२. साध्वी चदणाजी (१६४) ,, १५
३. साध्वी ककूजी 'छोटा' (२८२) ,, १२

१२. साध्वी चदणाजी (११६) ठाणा १० दो गावों मे चातुर्मास[1] रुग्णावस्थावश गुरुदर्शन नही कर सकी। साध्वियो को भी नही भेज सकी।

१३. साध्वी जीऊजी (१२३) ठाणा ८ दो गावो मे चातुर्मास[2] रुग्णावस्थावश गुरु दर्शन नही कर सकी। साध्वियो को भी नही भेज सकी।

१४. साध्वी पनाजी (१२६) ठाणा ३, गुरु दर्शन कर १५ दिन सेवा की।

१५. साध्वी कुनणाजी (१३३) ठाणा ६, गुरु दर्शन कर १५ दिन सेवा की।

१. सा० अनाजी (२०५) तप-दिन ३४
२. ,, वगतावरजी (२५९) ,, १ मास
२. ,, लिछमाजी (१४३) ,, १ मास
४. ,, हुकमाजी (२५८) ,, १२

१६. साध्वी मोतांजी (१३६) ठाणा ६, गुरु दर्शन कर दो मास सेवा की।

---

१. आ. द. ढाल ३ गा० २५। २. आ. द. ढाल ३ गा० २५।

१. साध्वी रूपकवरजी (१७६) तप-दिन १४

२. ,, तीजाजी (२०३) ,, ८

३. ,, चन्नूजी (२८८) ,, ७

१७, साध्वी महतावकंवरजी (१४५) ठाणा ३, गुरुदर्शन कर ७ दिन सेवा की।

१८, साध्वी रंगूजी (१५४) ठाणा ६, गंगापुर, अस्वस्थतावश गुरु दर्शन नहीं कर सकी।

१. सा० रुकमाजी (२३६) तप-दिन ३१

२. ,, अमरूजी (२११) ,, १५

१६. साध्वी नंदूजी 'छोटा' (१६७) ठाणा, गुरुदर्शन कर १० दिन सेवा की।

१, सा० नंदूजी 'छोटा' (१६७) तप-दिन ८

२. ,, नोजाजी (२३६) ,, १२

३, ,, रभाजी (२२०) ,, १४२

२०. साध्वी सेराजी (१६६) ठाणा ५, थादला, गुरुदर्शन कर १२ दिन सेवा की।

१, ,. कुनणांजी (२३४) तप-दिन मास खमण

२, ,, भानाजी (२६३) ,, २५

२१, साध्वी नवलाजी (२४०) ठाणा ५, गुरु दर्शन कर ९ दिन सेवा की।

विशेष विवरण

वर्ष के प्रारंभ में—

स० १९११ के प्रारभ मे साधु ६२ तथा साध्वियां १५५ कुल २१७ विद्यमान थे।

ग्यारा वर्ष रा आदि मे, बासठ मुनि सुविसाल।
इकसो पचपन अज्जिका, सत सती गुणमाल ॥

[आ, द, ढा, ३ दो, १]

इस वर्ष साध्वियों के २१ सिंघाड़े थे। साध्वी चदणाजी एव जीऊजी के चातुर्मास दो-दो क्षेत्रो मे थे। इस तरह २३ (२१+२) चातुर्मास हुए। साध्वी सरदाराजी का चातुर्मास जयाचार्य के साथ होने से एक क्षेत्र घट गया। अतः २१ सिंघाड़ो के चातुर्मास क्षेत्र २२ हुए।

जयाचार्य सहित साधुओ के चातुर्मास १२ क्षेत्रो मे थे। इस तरह कुल चातुर्मास क्षेत्र ३४ (१२+२२) हुए।

द्वादश सता ना चौमास, तेवीस समणी ना सुखकार।
गणपति पासे एक उदार, आणा स्वामी नी जी सार ॥
चदणा जीऊ ना बे-बे सुधार, आख्या खेत्र चोतीस मझार ॥

[आ. द. ढा. ३ गा. २५]

दीक्षित साधु-साध्वियां—

१, मुनि रामरतनजी (१७०) भिवानी—जाति 'अग्रवाल'। चैत्र वदि १२ को दीक्षित।

२, मुनि शिवलालजी[1] (१७१) 'बड़ी पादु'।

१, साध्वी वृद्धाजी (२९३)। 'गूरवाल'। मुनि चिमनजी की भतीजी, कुमारी कन्या, रतलाम मे जयाचार्य द्वारा दीक्षित।

२. साध्वी हरखगसांजी (२९४) 'सूरवाल' चिमनजी स्वामी की पुत्री, कुमारी कन्या, रतलाम मे जयाचार्य द्वारा दीक्षित।

३, साध्वी वृद्धाजी (२९५)'आमेट'। ससुराल श्रीमाल परिवार मे पीहर। आमेट, चंडालियों के यहां। मिगसर सुदि १२ को दीक्षित।

४. साध्वी लालाजी (२९६) 'बागोर'। गोत्र—चपलोत, वैशाख मे दीक्षित।

५. साध्वी सूरांजी (सैरांजी, (२९७) देवगढ़। गोत्र-सेठिया, देवगढ मे माघ महीने मे दीक्षित।

दिवंगत साधु-साध्वियां—

१. मुनि रामोंजी (१००) 'गूंदोच'। बेले बेले का तप, अन्त मे चोविहार संथारा।

२. मुनि शिवजी (१७८) 'लावा'। स० १८७६ मे दीक्षित[2], विविध तप एवं दो बार छह मासी की[3]।

३. मनि रामदत्तजी (१६६) 'तुपाम'। स. १९०६ में दीक्षित।

१. साध्वी मरसाजी (२२२) 'लाडनूं'। गोत्र—बैद, सं. १९०२ मे दीक्षित।

२, साध्वी नोजाजी (२३६) 'कोसीथय'। गोत्र—कोठारी, सं. १९०४ मे दीक्षित।

३. साध्वी दोलाजी (९६) गोत्र—बैद मूंहथा, सं. १८७५ मे दीक्षित।

४. साध्वी जेतांजी (२०१) 'गूरवाल'। पति हीरालालजी के साथ स. १९०० में दीक्षित।

गण-बाहर—

१, मुनि शिवलालजी (१७१)।

वर्ष के अन्त में—

स. १९११ के अन्त मे संत ६० तथा सतियां १५६ कुल २१६ विद्यमान रहे।

...., वर्षा ते मुनि साठ इम।

(आर्या० ढाल ३. सो० ६)

इम इग्यारा रै अन्त रे, इकसौ छप्पन अज्जिका।

(आर्या० ढाल ३, सो० १५)

---

१. आ. द. ढाल ३ सो० ६।

२. ख्यात मे दीक्षा संवत् १८७५ है।

३, ख्यात आदि सभी ग्रन्थो मे एक वार ही छहमासी करने का उल्लेख है।

संवत् १९१२ के चातुर्मास आदि

ढाल ४

श्री जयाचार्य	संत १३[1]	उदयपुर

१. साध्वी सरदाराजी (१७१) ठाणा, साध्वियां ३१, उदयपुर।

१. साध्वी सिणगारांजी	(२१७)	तप-दिन	१०,५ (मुनि वीजराज जी की माता)
२. साध्वी फत्तूजी	(१७३)	,,	१५
३. साध्वी कुनणांजी	(२१२)	,,	१६

वेले, तेले, चोले आदि वहुत हुए।

२. साध्वी चत्रूजी 'वडा' (६५) ठाणा ८, काकडोली, गुरु दर्शन कर १५ दिन सेवा की।

१. साध्वी गुलावाजी	(१७२)	तप दिन	९
२. साध्वी ऊमांजी	(१७५)	,,	११
३. साध्वी सेरूजी	(१७७)	,	१५

३. साध्वी चत्रूजी 'छोटा' (७०) ठाणा ६, 'पाली'[2]। वृद्ध होने से स्वय न आ सकी। साथ की तीन सतियों ने गुरु दर्शन कर १३ दिन सेवा की।

१. सा० चंपाजी	(१५१)	तप-दिन	१६
२. ,, सिणगांराजी	(१७९)	,,	१०
३. ,, सिरदाराजी	(२४७)	,,	१२
४. ,, चादूजी	(२४१)	.,	६
५. ,, हस्तूजी	(१९१)	,,	१५

४. साध्वी रंभाजी (७२) ठाणा ४, 'कटालिया'[3] वृद्धावस्था तथा चक्षु व्यथा के कारण गुरु दर्शनार्थ नही आ सकी।

५. साध्वी दीपाजी (९०) ठाणा १६, पुर। गुरु दर्शन कर १४ दिन सेवा की।

---

१. जय सुजश के आधार से।

२. मूल कृति तथा इस वर्ष की चातुर्मास तालिका मे नाम नही है, पर अनुसधान से प्रमाणित होता है।

३. मूल कृति मे नाम नही है, इस वर्ष की चातुर्मास तालिका के अनुसार लिखा है।

१. सा० मूलकाजी (१२२) तप-दिन २१, ३०
२. ,, मगनांजी (१८१) ,, ३०
३. ,, जेतजी 'वड़ा' गोगुंदा (१११) ,, ३२
४. ,, चूनांजी (२१०) ,, १५,७,६
५. ,, झूमांजी (२७६) ,, १२५
६. ,, मुंदरजी (२६४) ,, ६०
७. ,, जेतांजी 'छोटा' (२७७) ,, १५२
(साध्वी श्री नाथाजी की माता)
८. ,, गेनांजी (१२४) ,, १७७
९. ,, रामूजा (२२४) ,, ४४
१०. ,, हस्तूजी (२०६) 'छहमासी'[1]

६. साध्वी नदूजी 'वड़ा' (९२) 'लावा'[2] गुरुदर्शन कर सवा मास सेवा की।

१. सा० लछूजी (१०१) तप-दिन ७
२, ,, पन्नाजी (१३४) ,, २२
३. ,, दोलाजी (२४६) ,, ३७
४. ,, सरूपाजी (२२८) ,, १७
५, ,, सोनाजी (२०८) ,, ६
६. ,, सीताजी (२२६) ,, ३५
७. ,, म्हेकांजी (१४४) ,, ३५
८. ,, मूलांजी (२३१) ,, ३५

७ साध्वी मगदूजी 'वड़ा' (६६) ठाणा ४, 'अगारिया'[3]। वृद्ध और अक्षम होने पर भी गुरुदर्शन कर १० दिन सेवा की।

१. सा० गंगाजी पन्नाजी (१४८) तप-दिन १३
२. ,, (२६२) ,, १३
३. ,, रोडांजी (२०७) ,, १४

८. साध्वी मगदूजी 'छोटा' (१०२) ठाणा, ७ वखतगढ। गुरुदर्शन कर १५ दिन सेवा की।

---

१. जय सुजश ढाल ४३ गा० २१ मे १८३ दिन का उल्लेख है।
२. मूल कृति मे नाम नही है, इस वर्ष की चातुर्मास तालिका के अनुसार लिखा है।
३. मूल कृति मे नाम नही है, इस वर्ष की चातुर्मास तालिका के अनुसार लिखा है।

१. सा० रोडांजी (२६०) तप-दिन २१

२. ,, चदनाजी (२६९) ,, ५

९. साध्वी मयाजी (१०६) ठाणा ५ लाछुड़ा गुरुदर्शन कर ८ दिन सेवा की।

१. सा० बीजाजी (१६२) तप-दिन १३

२. ,, अमृताजी (२४५) ,, ४५

३. ,, गगाजी (१९७) ,, ६०

१०. साध्वी अमृताजी (१०९) बीजाजी (८८)ठाणा ४ कोठारिया गुरुदर्शन कर तीन मास सेवा की।

१. सा० ऊमाजी (१७६) तप एक मास

२. ,, नवलांजी (२८५) तप-दिन एक पक्ष।

उसी पावस मे दिवगत हुई।

११. साध्वी ककूजी(११३) ठाणा ५, कोशीथल। गुरुदर्शन कर सवा मास सेवा की।

१ सा० कंकूजी (११३) तप दिन ५

२. ,, सूरतांजी (२३३) ,, ८

३. ,, कंकूजी 'छोटा' (२८२) ,, २०

४. ,, चंपाजी (१०५) ,, मास खमण

५. ,, चंदणाजी (१६४) ,, मास खमण

१२. साध्वी चदणाजी (११६) हस्तूजी (१५२) ठाणा १०, पादू,इडवा। साथ वाली सतियों ने गुरुदर्शन कर ११ दिन सेवा की।

१. सा० चदणाजी (११६) तप-दिन १०

२. ,, ऋद्धूजी (१५५) ,, ९

३. ,, ओटाजी (१८३) ,, १७

४. ,, हस्तूजी (१५२) ,, १२

१३. साध्वी जीऊजी (१२३) ठाणा ७ नवेनगर[1] गुरुदर्शन कर १ मास सेवा की।

१४. साध्वी पन्नाजी (१२६) ठाणा ३, भिलाडा[2] (भीलवाड़ा)। गुरुदर्शन कर ३२ दिन सेवा की।

१५. साध्वी कुनणाजी (१३३) ठाणा ८, मालवा (पेटलावद[3])। गुरु दर्शनार्थ नही आ सकी।

१. सा० नाथाजी (१९६) तप-दिन १०

२. ,, अनाजी (२०५) ,, १४

३. ,, लिछमाजी (१४३) ,, ३४

४. ,, हुक्मांजी (२५८) ,, २१

---

१. मूलकृति में नाम नही है। इस वर्ष की चातुर्मास तालिका के अनुसार लिखा है:

२. मूल कृति मे नाम नही है। इस वर्ष की चातुर्मास तालिका के अनुसार लिखा है।

३. मूल कृति मे नाम नही है। इस वर्ष की चातुर्मास सालिका के अनुसार लिखा है।

१६. साध्वी मोतांजी (१३६) ठाणा ६ केलवा गुरुदर्शन कर दो मास सेवा की।

१. सा० रूपकंवरजी	(१७८)	तपदिन	२६
२. ,, तीजाजी	(२०३)	,, ,,	२१
३. ,, सेरांजी	(२८६)	,, ,,	१७
४. ,, चतूजी	(२८८)	,, ,,	६

१७. साध्वी महतावकवरजी (१४५) ठाणा ३, रायपुर, गुरुदर्शन कर १० दिन सेवा की।

१. सा० महतावकवरजी	(१४५)	तप दिन	१२

१८. साध्वी रगूजी (१५४) ठाणा ६ गोगु दा गुरुदर्शन कर ४० दिन सेवा की।

१. ,, रुकमांजी	(२३६)	तप-दिन	३१
२. ,, अमरुजी	(२११)	,, ,,	२१

१६. साध्वी नदूजी 'छोटा' (१६७) ठाणा ४ पहुना गुरुदर्शन कर ५ दिन सेवा की।

१. ,, नदूजी	(१६७)	तप मास खमण
२. ,, रभाजी	(२२०)	,, छह मासी

२०. साध्वी सेराजी (१६६) ठाणा ५, चित्तोड़, गुरुदर्शन कर ५१ दिन सेवा की।

१. ,, कुनणांजी	(२३४)	तप मास खमण	
२. ,, मन्नाजी	(२३५)	,, मास खमण	
३. ,, भानाजी	(२६३)	,, दिन	२१

२१. साध्वी नवलाजी (२४०) ठाणा ५, गगापुर, गुरुदर्शन कर ४ दिन की सेवा की।

१. ,, हस्तूजी	(२३२)	तप दिन	१५
२. ,, रोडाजी	(११०)	,, ,,	६
३ ,, कुनणाजी	(२४२)	,, ,,	५

विशेष-विवरण

वर्ष के प्रारंभ मे—

सं० १६१२ के प्रारभ मे साधु ६० एव साध्विया १५६ कुल २१६ थे।

वर्ष वारा का आदि मे, साठ मुनी पहिछाण।
इक सौ छपन अज्जिका, शासण महा गुण खाण॥

[आर्या० ढा० ४ दो० १]

इस वर्ष साध्वियो के २१ सिघाडे थे। सदा की चदणा जी के सिघाडे की साध्वी हस्तूजी अलगहोने से २२का चातुर्मास चातुर्मास हुए। निम्न गाथा मे २४ साध्वियों के चौमासो का उल्लेख पाया जाता है।

वार चौवीस मुनि अज्जा ना, सखर चौमास जगीस रे।
इक गणी भेलो वे चदणा ना, सर्व क्षेत्र चौतीस रे॥

[आ० दा० ढा० ४ गा० ४२]

पर यहा 'चोवीस' के स्थान मे 'वावीस' होना चाहिए।

साध्वी श्री सरदाराजी का चातुर्मास जयाचार्य के साथ था, अतः एक चातुर्मास स्थान घट जाने से साध्वियो के २१ क्षेत्रो मे चातुर्मास हुए।

जयाचार्य सहित साधुओ के चातुर्मास बारह क्षेत्रो मे हुए थे। इस तरह कुल ३३ (१२+२१) क्षेत्रो मे चातुर्मास हुए। अतः उक्त 'सर्व क्षेत्र चौतीसं रे' के स्थान पर 'सर्व क्षेत्र तेतीस रे' होना चाहिए। स० १९१२ की चातुर्मासिक तालिका मे कुल ३४ (१२+२२) चातुर्मास एवं ३३ क्षेत्रो का उल्लेख है, जैसा कि ऊपर कहा गया है।

दीक्षित साधु-साध्वियां

१. मुनि श्री हसराजजी (१७२) 'पादू'। गोत्र—आंचलिया, पुत्र-पौत्र छोड़ दीक्षा।
२. ,, विहारीजी[1] (१७३)
१. साध्वी छोटाजी (२९८) 'सुरगढ'। गोत्र—वाफणा।
२. ,, साकरजी (२९९) 'चीवडा'। गोत्र-श्रीमाल।
३. ,, नोजाजी (३००) 'वरार'। गोत्र-दक।
४. ,, सगदूजी (३०१) 'पीपली'। गोत्र-दक।
५. ,, नानूजी (३०२) 'फलौदी'। गोत्र-निमाणी। असाढ सुदी १३ के दिन दीक्षित।

तीनो की दीक्षा एक दिन जेठ वदि ९ को गगापुर मे मुनि श्री जीवोजी द्वारा हुई।

दिवंगत साधु-साध्वियां

१. मुनि रूपचदजी (१३४) 'करेडा'। स० १९०१ मे दीक्षित।
२. ,, सतीदासजी (सतोजो (५९) 'सणदरी'। स० १८६६ मे दीक्षित।
१. साध्वी हस्तूजी (२०९) 'चीवडा'। गोत्र श्रीमाल, स० १९०१ मे दीक्षित। छहमासी तप किया।
२. ,, कुनणाजी (२३४) 'माधोपुर' जाति-पोरवाल। सं० १९०३ मे दीक्षित।
३. ,, कुनणाजी (२४२) 'पाली' गोत्र-सुराणा। स० १९०५ मे पति देवचदजी के साथ दीक्षित।
४. ,, जेताजी (१५६) श्रीजीदुवार मे ससुराल। पीहर गोगुंदा, स० १८९५ मे दीक्षित।
५. ,, नवलाजी (२८५) गोत्र-खीणसरा। स० १९०९ मे दीक्षित। मुनि श्री स्वरूपचन्दजी से अनशन ग्रहण।

गण बाहर—

१. मुनि श्री विहारीजी (१७३)

वर्ष के अन्त में—

सं० १९१२ के अत मे सत ५९ तथा सतिया १५६ कुल २१५ विद्यमान रहे।
'द्वादश अते तास रे, एव गुणसठ मुनि रह्या'॥ [आ० द० ढा० ४ सो०५]
'इम वारा नै अत रे, इक सो छप्पन अज्जिका'॥ [आ० द० ढा० ४ सो० १५]

---
१. आ० द० ढा० ४ सो० ५।

संवत् १९१३ के चातुर्मास आदि

जयाचार्य साधु १३ पाली

१. साध्वी सरदाराजी (१७१) ठाणा साध्वियां ३४ पाली

१. साध्वी	हस्तूजी 'बडा'	(१५२)	तप-दिन	१०
२. ,,	सरुपाजी	(२२८)	,,	७
३. ,,	चिमनांजी	(२६५)	,,	५
४. ,,	गोमाजी	(१६०)	,,	७
५. ,,	गगाजी	(१९७)	,,	१४
६. ,,	मोताजी	(२७६)	,,	११
७. ,,	रोडांजी	(२६०)	,,	१६
८. ,,	सिणगागाजी	(२१७)	,,	६
९. ,,	सिणगाराजी	(२८०)	,,	६
१०. ,,	मगनाजी	(२३८)	,,	६
११ ,,	सरदाराजी दूसरा	(२४६)	,,	७
१२. ,,	मघुजी	(२८१)	,,	१५

अनेक साध्वियों ने चोले किए।

२. साध्वी नवलाजी बडा फलोदी वाला (१८२) ठाणा ७ फलौदी

१. साध्वी	फत्तूजी	(१७३)	तप-दिन	११
२. ,,	जशोदाजी	(२८३)	,,	१०
३. ,,	कुनणाजी	(२१२)	,,	१२,४,५

३. साध्वी चत्रूजी 'बडा' (६५) ठाणा ८केलवा तीन सतियो ने गुरुदर्शन कर तीन दिन सेवा की।

१. साध्वी	गुलाबांजी	(१७२)	तप-दिन	१२
२. ,,	ऊमाजी	(१७५)	,,	९
३. ,,	सेरूजी	(१७७)	,,	१७

४. साध्वी चत्रूजी 'छोटा' (७०) ठाणा ५ ईडवा गुरुदर्शन कर १।। मास सेवा की।

१. साध्वी	चपाजी	(१५१)	तप-दिन	३०
२. ,,	सिणगाराजी	(१७९)	,,	११
३. ,,	हस्तूजी	(१९१)	,,	१६
४. ,,	सरदाराजी	(२४७)	,,	१५

---

१. जय सुजश के आधार से।

२ साध्वी सरदाराजी की नेश्राय मे ४१ साध्विया थी उनमे से नवलाजी आदि ७ साध्वियो का फलौदी चातुर्मास कराया।

५. साध्वी रभाजी (७२)ठाणा ४, मांडा वृद्ध होने पर भी गुरुदर्शन कर २३ दिन सेवा की।

१. साध्वी उमेदांजी	(१६३)	तप-दिन	३१
२. ,, लिछमाजी	(१८५)	,,	१७

६ साध्वी दीपाजी (६०) ठाणा १४ गगापुर[1] कुछ साध्वियो को भेजा जिन्होने गुरुदर्शन कर २५ दिन सेवा की।

१. साध्वी गेनांजी	(१२४)	तप-दिन	१५
२. ,, रामूजी	(२२४)	,,	१६
३. ,, वूनांजी	(२१०)	,,	८
४ ,, भूमांजी	(२७६)	,,	१५
५. ,, मलूकाजी	(१२२)	,,	१५
६. ,, सुन्दरजी	(२६४)	,,	१५
७. ,, जेताजी	(२७७)	,,	३२

७. साध्वी नदूजी 'वडा' (६२) ठाणा ६ देवगढ[1] गुरुदर्शन कर १ मास सेवा की।

१. साध्वी सोनाजी	(२०८)	तप-दिन	१५
२. ,, पन्नाजी	(१३४)	,,	१३
३. ,, म्हेकाजी	(१४४)	,,	मास खमण
४. ,, मूलांजी	(२३१)	,,	,,
५. ,, सीताजी	(२२६)	,,	,,
६. ,, दोलांजी	(२४६)	,,	,,

८. साध्वी मगदूजी 'वडा' (६६) ठाणा ४ राजनगर[1] वृद्धावस्था व शारीरिक अशक्ति के कारण गुरु दर्शनार्थ न आ सकी।

१. साध्वी पन्नाजी	(१४८)	तप-दिन	१५
२. ,, गंगाजी	(२६२)	,,	११

६. साध्वी मगदूजी 'छोटा' (१०२) ठाणा ६ खेरवा[1] गुरुदर्शन कर दो मास सेवा की।

१०. ,, मयाजी (१०६) ढाणा ४ वाजोली गुरुदर्शन कर ४० दिन सेवा की।

१. साध्वी अमृताजी	(२४५)	तप-दिन	२२
२. ,, वीजाजी	(१६२)	,,	६

११. साध्वी अमृतांजी, वीजाजी (१०६) (८८) ठाणा ३ रावलिया गुरुदर्शन कर १० दिन सेवा की।

१. साध्वी ऊमाजी	(१७६)	तप-दिन	१५

१२. साध्वी ककूजी (११३) ठाणा ४ शिरियारी गुरुदर्शन कर २५ दिन सेवा की।

१. साध्वी चपाजी	(१०५)	तप-दिन	११

१३. साध्वी चनणाजी (११६) ऋद्धूजी (१५५) ठाणा ६ (कालू, वलूदा) गुरुदर्शन कर १ मास सेवा की।

१४. साध्वी जीवूजी (१२३) ठाणा ६ 'वोरावड़'[1] गुरुदर्शन कर १६ दिन सेवा की।

१. मूल कृति मे चातुर्मास स्थान नही है, मुनि जीवोजी रचित ढाल से दिया गया है।

१. साध्वी छगनांजी (१३८) तप-दिन १३
२. ,, मूलांजी (२५५) ,, १६
३. ,, रत्नांजी (१८६) ,, मास खमण

१५. साध्वी पन्नांजी (१२६) ठाण। ३ 'भावी'[2] गुरुदर्शन कर १।। मास सेवा की।

१. साध्वी सूरांजी (२६७) तप-दिन १५

१६. साध्वी कुनणांजी (१३३) ठाणा ८ मालवा।(उज्जैन)[3] गुरुदर्शन कर ५ दिन सेवा की।

१. साध्वी सुजानकंवरजी (२००) तप-दिन १४
२. ,, लिछमांजी (१४३) ,, मास खमण
३. ,, अनांजी (२०५) ,, ,,
४. ,, वगतावरजी (२५६) ,, ,,
५. ,, हुकमांजी (२५८) ,, ,,

१७. साध्वी मोतांजी (१३६) ठाणा ६ कंटालिया गुरुदर्शन कर १।। मास सेवा की।

१. साध्वी तीजांजी (२०३) तप-दिन ११
२. ,, सेरांजी (२८६) ,, ८
३. ,, अमृतांजी (२९२) ,, १२

१८. साध्वी महताब कंवर जी (१४५) ठाणा ४ दुघोड़ गुरुदर्शन कर एक मास सेवा की।

१. साध्वी महताव कवरजी (१४५) तप-दिन १३
२. ,, नवलांजी (१९८) ,, ८ (महतावकंवरजी की छोटी बहन)

१९. साध्वी रंगूजी (१५४) ठाणा ६ नानसमा गुरुदर्शन कर ५ दिन सेवा की।

१. साध्वी अमरूजी (२११) तप-दिन ८

२०. साध्वी नदूजी 'छोटा' (१६७) ठाणा ४ पीपाड़ गुरुदर्शन कर २० दिन सेवा की।

१. साध्वी नंदूजी छोटा (१६७) तप दिने ६
२. ,, मघूजी (१९३) ,, ,, ८

२१. साध्वी सेरांजी (१९९) ठाणा ४ नवैशहर गुरुदर्शन कर २।। मास सेवा की।

२२. ,, नवलांजी 'छोटा' (२१०) ठाणा ४ आमेट गुरुदर्शन कर २२ दिन सेवा की।

१. साध्वी हस्तूजी (२३२) तप-दिन ६
२. ,, रोडांजी (११०) ६ दिन की तपस्या की अन्त मे संथारा किया।

---

१. मूल कृति मे चातुर्मास स्थान नही है, मुनि जीवोजी रचित ढाल से दिया गया है।
२. मूल कृति में चातुर्मास स्थान नही है' मुनि जीवोजी रचित ढाल से दिया गया है।
३. मूल कृति मे चातुर्मास स्थान नही है, मुनि जीवोजी रचित ढाल से दिया गया है।
४. मूल कृति में चातुर्मास स्थान नही है। मुनि जीवोजी रचित ढाल से दिया गया है।

विशेष विवरण

वर्ष के प्रारंभ में

सं० १९१३ के प्रारभ मे साधु ५९ तथा साध्विया १५६ कुल २१५ विद्यमान थे।

वर्ष तेरा ना आदि मे, गुणसठ मुनि सुविशाल।
इकसौ छप्पन अज्जिका, सत सती गुणमाल॥

(आ० द० ढ़ा० ५, दो० १)

इस वर्ष साध्वियो के सिंघाडे २२ थे। साध्वी श्री चदणाजी के सिंघाड़े का चातुर्मास दो क्षेत्रों मे था अतः एक चातुर्मास क्षेत्र वढ़ गया। साध्वी श्री सरदाराजी का चातुर्मास जयाचार्य के साथ था अतः एक क्षेत्र घट गया। घट-वढ़ सामान होने से साध्वियो के चातुर्मास क्षेत्र २२ होते है।

जयाचार्य सहित साधुओ के चातुर्मास १२ क्षेत्रो मे थे। इस तरह कुल चातुर्मास क्षेत्र ३४ (१२+२२) होते है।

अरे० वार वावीस मुनि अज्जा ना, वर चौमास अछै नही छांना।
गणपति आण रमै गुणखांना॥
हद गणपति रै पास हुलास, इक चौमास अज्जा गुणरासं।
चंदणा ना वे खेप्त्र विमास।
खेप्त्र चोतीस सर्व चोमासा। दे० ॥२९॥

(आ० द० ढ़ा० ५ गा० २९)

दीक्षित साधु-साध्वियां—

१. मुनि मोतीजी (१७४) 'लखासर' गोत्र—डागा, माता साध्वी भामाजी सहित दीक्षा।

१. साध्वी चूनाजी (३०३) 'फलौदी'। } पाली चातुर्मास मे जयाचार्य
२. ,, जड़ावाजी (३०४) 'फलौदी'। } द्वारा एक ही दिन दीक्षित।
३. ,, सरूपाजी (३०५) 'कटालिया'। गोत्र—खीवसरा, मृगसरा मे दीक्षित।
४. ,, सेराजी (३०६) 'नवानगर'। गोत्र—मुणोत, पति छोड़कर दीक्षित।
५. ,, भमाजी (३०७) 'लखासर'। मुनि मोतीजी की माता।
६. ,, राजाजी (३०८) 'रायपुर'। गोत्र—चीपड़, पति छोड़कर दीक्षित, रत्नजी की पुत्री।
७. ,, सूवटांजी (३०९) 'पचपदरा'। गोत्र—लूकड़ा।
८. ,, जीऊजी (३१०) 'आमेट'। गोत्र—चडालिया।
९. ,, लिछमाजी (३११) 'जैपुर'। गोत्र—पुगलिया, पीहर—वैदो के यहां।

दिवंगत साधु-साध्वियां—

१. मुनि शिवजी (८२) 'देवगढ़'। स० १८७६ मे दीक्षित। अंत मे चोविहार सथारा आया।

२ ,, पुंजलालजी (८८) 'उज्जैन'। गोत्र—बेंगाणी, स० १८८१ में उज्जैन मे दीक्षित।

१ साध्वी चन्नूजी, 'छोटा' (७०) 'तोसीणा'। गोत्र—नाहर, सं० १८६८ मे पति छोड़कर दीक्षित।

२ ,, गेड़ाजी (११०) 'श्रीजीदुवारा'। गोत्र—चोरड़िया, स० १८८४ मे दीक्षित, २७ प्रहर का चोविहार सथारा आया।

३. ,, चादूजी (२४१) 'सुजानगढ़'। गोत्र—चोरड़िया, साढे आठ वर्ष सजम पाल, दुधोड़ में सथारा।

गण बाहर साधु—

१. मुनि कपूरजी (१०६)

२. ,, जीषोजी (११३)

विशेष विवरण

वर्ष के अन्त में—

सं० १६१३ के अत में संत ५६ तथा सतियां १६२ कुल २१८ विद्यमान रहे।

इम तेरै नै अत रे, छप्पन सत रह्या सही।

(आ० द० ढा० ५, सो० ६)

एवं तेरै अत रे, इकसौ बासठ अज्जिका।

गणपति आण रमंत रे, जय जश संपति सुखसदा॥

(आ० द० ढा० ५, सो० १६)

३. ,,	गुलाबांजी	(१७२)	,,	१२
४. ,,	सेरुजी	(१७५)	,,	२०

पौप सूदी ४ को चत्रूजी (६५) ने सथारा कर पंडित मरण प्राप्त किया। बाद में बरजूजी आदि कई साध्वियो ने गुरु दर्शन कर एक मास सेवा की।

३ साध्वी रंभाजी (७२) ठाणा ४ वगडी नेत्रों की व्याधि के कारण गुरुदर्शनार्थ नही आ सकी।

४. साध्वी दीपांजी (९०) ठाणा १४ आमेट साथ की चार साध्वियों ने गुरुदर्शन कर एक पक्ष की सेवा की।

१. साध्वी	रामूजी	(२२४)	मास खमण किया	
२. ,,	मूलांजी	(२१३)	,, ,, ,,	
३. ,,	साकरजी	(२६७)	तप दिन	२१
४. ,,	चूनाजी	(२१७)	,,	१५
५. ,,	मलूकाजी	(१२२)	,,	षट्मासी
६. ,,	गेनाजी	(१२४)	,,	,,
७. ,,	जेताजी	(२७७)	,,	,,
८. ,,	सुन्दरजी	(२६४)	,,	,,
९. ,,	झूमांजी	(२७९)	,,	,,

इन पाच साध्वियों ने छह्-छह् मासी तप किया।

५. साध्वी नन्दूजी 'वडा' (९२) ठाणा १० पचपदरा माघ सुदी मे गुरुदर्शन कर साधिक ४ मास सेवा की।

१. साध्वी	पन्नाजी	(१३४)	तप-दिन	१३
२. ,,	मूलाजी	(२३१)	,,	२२
३. ,,	म्हेकाजी	(१४४)	,,	१६
४. ,,	सोनांजी	(२०८)	,,	१६
५. ,,	सीताजी	(२२९)	,,	२९
६. ,,	दोलांजी	(२४९)	,,	मास खमण
७. ,,	सुरतांजी	(२३३)	,,	११

६. साध्वी मगदूजी 'वडा' (९९) ठाणा ४ भिलोड़ा (भीलवाड़ा)। वृद्धावस्था के कारण गुरु दर्शन नही कर सकी।

७. साध्वी मगदूजी 'छोटा' (१०२) पन्नाजी (१२६) ठाणा १० चाणोद गुरु दर्शन कर १ मास सेवा की।

१. साध्वी	रोडांजी	(२६०)	तप-दिन	१७
२. ,,	सूरांजी	(२९७)	,,	९

८. साध्वी मयाजी (१०६) ठाणा १ लाटोती गुरु दर्शन कर ४ मास सेवा की।

१. साध्वी	अमृताजी	(२४५)	तप-दिन	१७
२. ,,	बीजाजी	(१६२)	,,	६, ७

९. साध्वी अमृतांजी (१०९) ठाणा ४ लाछूडा अस्वस्थता के कारण गुरुदर्शनार्थ नही आ सकी।

१. ,, ऊमांजी	(१७६)	तप-दिन	१४
४. ,, राजाजी	(२०८)	,,	१५

१०. साध्वी ककूजी (११३) ठाणा ४ खेरवा गुरुदर्शन कर सवा मास सेवा की।

१. साध्वी कंकूजी	(११३)	तप दिन	१५
२. ,, चन्दनाजी	(१६४)	,,	१५

११. साध्वी चदणाजी (११६) ठाणा ८ पीपाड़ साथ वाली कुछ सतियो ने गुरु दर्शन कर ११ दिन सेवा की।

१. ,, चनणाजी	(११६)	,,	९
२. ,, रूपांजी	(२५३)	,,	९
३. ,, नाथांजी	(१८७)	,,	१५

१२. साध्वी जीऊजी (१२३) ठाणा ६ बोरावड गुरु दर्शन कर २॥ मास सेवा की।

१. ,, रतनांजी	(१८९)		तप मास खमण
२. ,, मूलाजी	(२५५)	तप दिन	९
३. ,, नदूजी	(१८६)	,, दो मासी	

१३. साध्वी कुनणाजी (१३३) ठाणा ८ दौलतगढ साथ वाली कुछ साध्वियो ने गुरु दर्शन कर २७ सेवा की।

१. ,, कुनणांजी	(१३३)	तप दिन	२ चोले
२ ,, नाथाजी	(१९६)	,,	११
३. ,, हुकमाजी	(२५८)	,,	एक मास
४. ,, अनाजी	(२०५)	,,	३४

१४. साध्वी मोताजी (१३६) पाली गुरु दर्शन कर वहुत दिन सेवा की।

१५. साध्वी महतावकवरजी (१४५) ठाणा वालोतरा गुरु दर्शन कर वहुत दिन सेवा की।

१६. साध्वी रगूजी (१५४) ठाणा ५ गोगूदा अस्वस्थता वश दर्शनार्थ नही आ सकी।

१७. साध्वी नंदूजी 'छोटा' (१६७) ठाणा ४ वालोतरा गुरु दर्शन कर २॥ मास सेवा की।

१. साध्वी रभाजी	(२२०)	,,	९

१८. साध्वी सेरांजी (१९९) ठाणा ४ हरिगढ (किशनगढ) गुरु दर्शन कर साधिक ६ मास सेवा की।

१. साध्वी भानाजी	(२६३)	तप दिन	११
२. ,, मनाजी	(२३५)	,,	९

१९. साध्वी सिणगारणाजी (१७९) ठाणा ४ गुरु दर्शन ५ मास सेवा की।

१. साध्वी सिणगाराजी	(१७९)	,,	७
२. ,, चपाजी	(१५१)	,,	१३
३. ,, हस्तूजी	(१९१)	,,	८
४. ,, सरदाराजी	(२४७)	,,	५

२०. साध्वी नवलाजी (२४०) ठाणा ४ धाकडी पोष सुदी में गुरु दर्शन कर शेषकाल व चौमासे मे सेवा की ।

१. ,,	नवलांजी	(२४०)	तप दिन	४
२. ,,	हस्तूजी	(२३२)	,,	१५
३. ,,	जीऊजी	(३१०)	,,	७
४. ,,	लालाजी	(२६६)	,,	६

सं. १६१४ में सरदार सती के समर्पित होने वाली
साध्वियों के सिंघाडों की सूची —

१. ,,	नवलाजी	(२४०)	स० १६१४ वैसाख वदि ६	ठाणा	४
२. ,,	मगदूजी	(१०२)	,, ,, ,, ,, १४	,,	७
३. ,,	मयाजी	(१०६)	,, ,, ,, ,, ,,	,,	३
४. ,,	पन्नांजी	(१२६)	,, ,, ,, ,, ,,	,,	३
५. ,,	नदूजी 'वडा'	(६२)	,, ,, ,, सुदी ८	,,	८ (कुमारी कन्या)
६ ,,	सेरांजी	(१६६)	,, ,, ,, ,, ,,	,,	४
७. ,,	सिणगारांजी 'पिसांगण'	(१७६)	,, ,, ,, ,,	,,	४
८. ,,	जीवूजी	(१२३)	,, ,, ,, ,, ६	,,	६
९. ,,	नंदूजी 'छोटा'	(१६७)	,, ,, प्र० जेठ वदि ६	,,	५
१०. ,,	महतावकंवरजी	(१४५)	स० १६१५ पोष वदि १	,,	३
११ ,,	ककूजी	(११३)	,, ,, ,, ,, ३	,,	८
१२. ,,	मोतांजी	(१३६)	,, ,, ,, सुदी १	,,	७ (कुमारी कन्या)
१३. ,,	चंदणाजी	(११६)	,, ,, ,, ,, ,,	,,	८

चंदणाजी ने साथ की साध्वी ऋद्धूजी (१५५) को भेजकर अपना सिंघाड़ा समर्पित किया ।

आर्या दर्शन ढाल में तथा सरदार सुजश मे साध्वी चनणाजी (१६५) द्वारा सिंघाड़ा समर्पित करने का उल्लेख नही है । पर स० १६१४ के लेखपत्र मे उनके हस्ताक्षर समर्पण के हैं ।

विशेष विवरण

वर्ष के प्रारंभ में—

सं० १६१४ के प्रारंभ मे संत ५६ तथा सतियां १६२ कुल २१८ विद्यमान थे ।

चवद वर्ष रा आदि मे, छप्पन संत सुजाण ।
इक सौ बासठ अज्जिका, शिरे सुगुरु नी आण ।।

(आ० द० ढा० ६ दोहा १)

इस वर्ष साध्वियो के २० सिंघाड़े थे अतः २० चातुर्मास हुए । साध्वी प्रमुखा सरदारसती का चातुर्मास जयाचार्य के साथ बीदासर मे होने से एक स्थान घट गया । सा० मेहतावकुवरजी

(१४५) नंदूजी (१६९) का चातुर्मास वालोतरा होने से १ स्थान फिर घट गया। इस तरह २० सिंघाडों के स्थानों मे चातुर्मास हुए।

साधुओं के चातुर्मास कितने क्षेत्रो मे हुए, इसका उल्लेख कृति मे नही है अत. साधु साध्वियो के मिलाकर कुल कितने क्षेत्रों मे चातुर्मास हुए, यह नही कहा जा सकता। सं० १९१४ की चातुर्मासिक तालिका उपलब्ध नही है।

दीक्षित साधु—

१. मुनि छजमल जी (१७५) 'मांढा'। पत्नी, वहन तथा कुमारी पुत्री के साथ भाद्रवा सुदी १० के दिन दीक्षित वीदासर मे।

२. ,, गुलावजी (१७६) 'वाजोली' गोत्र वाफणा। मुनि गुलहजारीजी से दीक्षित।

सं. १९१३ में दो साधु अलग हुए वे सं. १९१४ में वापिस आये—

१. ,, कपूरीजी (१०९)।

३. ,, जीवोजी (११३)।

दीक्षित साध्वियां—

१. ,, कुनणाजी (३१२) 'माढा'। मुनि छजमलजी की वहन।

२. ,, उमेदाजी (३१३) ,, ,, ,, ,, पत्नी।

३. ,, केशरजी (३१४) ,, ,, ,, ,, कुमारी पुत्री।

४. ,, जेतांजी (३१५) वालोतरा गोत्र पुवाड, पीहर-चोपडो के यहा। मृगसर वदि ७ के दिन दीक्षा।

५. ,, मृगांजी (३१७) 'लाडणू'। जाति-सरावगी, गोत्र-पाडिया। मृगसर वदी १२ को दीक्षित।

६. ,, मानांजी (३१७) 'वीकानेर' गोत्र-वगसी। पीहर खटेडो के यहाँ। माघ वदी १ के दिन दीक्षित।

७. ,, कुनणांजी (३१८) 'वीकानेर'। गोत्र कोठारी। साध्वी सिरेकंवरजी की माता। जेठ मे दीक्षा।

८. ,, सिरेकुवरजी (३१९) साध्वी कुन्नणाजी की पुत्री। चेत मे दीक्षित।

दिवंगत सतियां—

१. ,, चन्नूजी 'वड़ा' (१५)। अन्त मे २ मूहूर्त का चौविहार संथारा।

वर्ष के अन्त में—

सं० १९१४ के अन्त मे संत ६० तथा सतिया १६९ कुल २२९ विद्यमान रहे।

एव चवदै अत रे, इक सौ गुणंतर अज्जा।
मुनिवर साठ महंत रे, जय जग सपति माहिवी ॥

(आ० द० ढा० ७ सो० १६)

संवत १६१५ के चातुर्मास आदि

जयाचार्य साधु १७ लाडनू
१. साध्वी श्री सरदाराजी (१७१) साध्विया ४५ लाडनूं

१. साध्वी	फत्तूजी	(१७३)	तप-दिन	मास खमण
२. ,,	वन्नांजी	(२७०)	,,	२१
३. ,,	मोतांजी	(२७६)	,,	१६
४. ,,	जशोदांजी	(२८३)	,,	१६
५. ,,	सिणगारांजी	(२१७)	,,	१४,११
६. ,,	कुनणाजी	(२१२)	,,	९
७. ,,	नोजांजी	(३००)	,,	७,५,४
८. ,,	छगनाजी	(२६०)	,,	७
९. ,,	चूनांजी	(३०३)	,,	७
१०. ,,	चिमनाजी	(२६५)	,,	६
११. ,,	सूरतांजी	(२३३)	,,	६
१२. ,,	चनणाजी	(१६५)	,,	चोला किया
१३. ,,	वगतूजी	(२३०)	,,	,,
१४. ,,	लछूजी	(२६१)	,,	,,
१५. ,,	चांदकंवरजी	(२७४)	,,	,,
१६. ,,	सिणगाराजी	(२८०)	,,	,,
१७. ,,	भामांजी	(३०७)	,,	,,
१८. ,,	मृगाजी	(३१६)	,,	,,

२. साध्वी रभाजी (७२) ठाणा ४ दूधोड अस्वस्थता के कारण गुरु दर्शनार्थ नही आ सकी।

३. साध्वी दीपांजी (६०) ठाणा १४ देवगढ अस्वस्थता के कारण गुरु दर्शनार्थ नही आ सकी और न साध्वियो को भेज सकी।

१. साध्वी	मलूकाजी	(१२२)	तप-दिन	११६
२. ,,	ज्ञानाजी	(१२४)	,,	छहमासी
३. ,,	सुदरजी	(२६४)	,,	,,
४. ,,	झूमाजी	(२७६)	,,	,,
५. ,,	जेताजी	(२७७)	,,	,,
६. ,,	मगनाजी	(१८१)	,,	१६
७. ,,	मूलाजी	(२१३)	,,	३१

४. साध्वी नंदूजी 'वडा' (९२) ठाणा ७ चुरू गुरुदर्शन कर ११६ दिन सेवा की।

१. साध्वी सीतांजी (२२९) तप-दिन ९

५. साध्वी मगदूजी 'वडा' (९९) ठाणा ४ दौलतगढ़ अस्वस्थता के कारण गुरु दर्शनार्थ नही आ सकी।

१. साध्वी पन्नांजी (१४८) तप-दिन १५
२. ,, गंगाजी (२६२) ,, ११

६. साध्वी मगदूजी 'छोटा' (१०२) ठाणा ९ सुजानगढ गुरुदर्शन कर अधिक समय तक सेवा की।

१. साध्वी मूलांजी (२३१) तप-दिन २५

७. साध्वी अमृतांजी (१०९) ठाणा ४ गंगापुर अस्वस्थता के कारण गुरु दर्शनार्थ नहीं आ सकी।

१. साध्वी ऊमांजी (१७६) तप-दिन १०
२. ,, राजाजी (३०८) ,, १८

८. साध्वी कंकूजी (११३) ठाणा ४ वाजोली गुरु दर्शन कर ४५ दिन सेवा की।

९. साध्वी चंदणाजी (११६) ठाणा ८ पीपाड़ साथ वाली साध्वियो ने गुरु दर्शन कर २५ दिन सेवा की।

१. साध्वी चदणाजी (११६) तप-दिन १३/१, ९/१, ५/५, ४/४१
२. ,, ऋद्धूजी (१५५) ,, ७ (अनुमानत: शेष
३. ,, नाथांजी (१८७) ,, १५ काल का तप
४. ,, रूपांजी (२५३) ,, १० सम्मिलित है।)

१०. साध्वी जीवूजी (१२३) ठाणा ६ वोरावड गुरुदर्शन कर १॥ मास सेवा की।

१. साध्वी नंदूजी (१८६) तप-दिन ६०
२. ,, रत्नांजी (१८९) ,, ३०
३. ,, मूलांजी (२५५) ,, ९

११. साध्वी पन्नाजी (१२९) ठाणा ५ राजलदेशर गुरुदर्शन कर ७ मास सेवा की।

१. साध्वी सूरांजी (२९७) तप-दिन ११
२. ,, अमरांजी 'छोटा' (२४४) ,, ११

१२. साध्वी कुनणांजी (१३३) ठाणा ८ पुर साथ की साध्वियो ने गुरु दर्शन कर २२ दिन सेवा की।

१. साध्वी नवलांजी (९३) तप-दिन ८
२. ,, लिछमांजी (१४३) ,, १७
३. ,, नाथांजी (१९६) ,, १४
४. ,, सुजाणकवरजी (२००) ,, ४
५. ,, अनांजी (२०५) ,, ३१
६. ,, हुकमांजी (२५८) ,, २३
७. ,, वखतावरजी (२५९) ,, १७

१३. साध्वी मोतांजी (१३६) ठाणा ७ रतनगढ़ गुरु दर्शन कर ३ मास सेवा की ।

१. साध्वी रूप कंवरजी	(१७८)	तप दिन	६
२. ,, सेरांजी	(२८६)	,,	१०
३. ,, नवलांजी	(१९८)	,,	१०
४. ,, अमृतांजी	(२९०)	,,	१०

१४. साध्वी वरजूजी (१३९) ठाणा ७ राजनगर साथ की साध्वियो ने गुरु दर्शन कर १ पक्ष सेवा की ।

१. साध्वी वरजूजी	(१३९)	तप दिन	४
२. ,, ऊमांजी	(१७५)	,,	६
३. ,, सेरांजी	(१७७)	,,	१३
४. ,, गुलाबांजी	(१७२)	,,	१३

१५. साध्वी महताव कंवरजी (१४५) ठाणा ३ नवैनगर गुरु दर्शन कर ११३ दिन सेवा की ।

१. साध्वी महताव कंवरजी	(१४५)	तप दिन	१५
२. ,, छोटाजी	(२९८)	,,	४

१६. साध्वी हस्तूजी (१५२) ठाणा ४ देशनोक गुरु दर्शन कर सेवा की ।

१. साध्वी सरुपांजी 'छोटा'	(३०५)	तप दिन	५
२. ,, सरुपांजी बड़ा	(२२८)	मास खमण	

१७. साध्वी रंगूजी 'गोगुदा' (१५४) ठाणा ५ गोगुंदा अस्वस्थता के कारण गुरु दर्शनार्थ नही आ सकी ।

१८. साध्वी नंदूजी 'छोटा' (१६७) ठाणा नागौर गुरु दर्शन कर ५० दिन सेवा की ।

१९. ,, सेरांजी (१९९) ठाणा ७ पाली गुरु दर्शन कर १०६ दिन सेवा की ।

१. साध्वी सेरांजी	(१९९)	तप दिन	४
२. ,, ओटांजी	(१८३)	,, मास खमण	
३. ,, मेनांजी (मनाजी)	(२३५)	,, दिन ४,	१८
४. ,, अमृतांजी	(२४५)		७,४
५. ,, भानूंजी	(२६३)	,,	११

२०. साध्वी सिणगारांजी (१७९) पीसागण वाला ठाणा ४ किसनगढ़ गुरु दर्शन कर १५२ दिन सेवा की ।

१. साध्वी सिणगारांजी	(१७९)	तप दिन	७
२. ,, चंपाजी	(१५१)	,,	८,४
३. ,, हस्तूजी	(१९१)	,,	८,४
४. ,, सिरदारांजी	(२४७)	,,	९,४

२१. साध्वी नवलांजी 'फलौदी' (१८२) ठाणा ९ बीकानेर गुरु दर्शन कर ७ मास सेवा की ।

१. साध्वी गगांजी	(१९७)	तप १ मास	
२. ,, मगनांजी	(२३८)	,, दिन	६

३. ,,	रोड़ाजी	(२६०)	,,	७
४. ,,	मघूजी	(२८१)	,,	८
५. ,,	साकरजी	(२९९)	,,	८
६. ,,	जड़ावांजी	(३०४)	,,	६
७. ,,	नानूजी	(३०२)	,,	९

विशेष-विवरण

वर्ष के प्रारंभ में —

सं० १९१५ के प्रारम्भ मे संत ६० तथा सतिया १६९ कुल २२९ विद्यमान थे।

पनर वर्ष री आदि मे, साठ सत सुखदाय।
इकसौ गुणंतर अज्जा, जय जश संपति पाय ॥

(आ०द०ढा० ८ दो० १)

इस वर्ष साध्वियो के २१ सिंघाड़े थे अत. २१ चातुर्मास हुए। साध्वी श्री सरदारांजी (१७१) का चातुर्मास जयाचार्य के साथ लाडनूं होने से एक स्थान घट गया। इस तरह २१ सिंघाड़ो के २० स्थानों मे चातुर्मास हुए।

साधुओ के चातुर्मास कितने क्षेत्रों मे हुए, इसका उल्लेख कृति मे नही है अतः साधु-साध्वियों के मिलाकर कुल कितने क्षेत्रो मे चातुर्मास हुए, यह नही कहा जा सकता। स० १९१५ की चातुर्मासिक तालिक भी प्राप्त नही है।

१. मुनी छोगजी (१७७) 'देशनोक'। गोत्र-सकलेचा, दीक्षा भादवा वदि १२, माता सेराजी भी दीक्षित।

दीक्षित साधु-साध्वियां—

१. साध्वी सेरांजी (३२०) दीक्षा कार्त्तिक सुदी ४, पुत्र छोग जी भी दीक्षित।
२. ,, चूनाजी (३२१) 'चरु' गोत्र कोठारी, दीक्षा कार्त्तिक सुदी ४।
३. ,, वखतावरजी (३२२) कुमारी कन्या, रामचन्दजी दूगड़ की पुत्री, दीक्षा मृगसर वदि ५।
४. साध्वी साकरजी (३२३) 'ताल'। ससुराल गोत्र-देराडया पीहर-करेड़ा, पति छोड़कर दीक्षा।

दिवंगत साधु-साध्वियां —

१. मुनि लालजी (११२) 'चन्देरा'। श्रीजीदुवारा मे अनशन।
२. ,, टीकमजी (७२) 'माधोपुर'। श्रीजीदुवारा मे अनशन।
१. साध्वी मगदूजी (१०२) 'आमेट'। ऋषभदासजी हीगड की पुत्री, चेत वदि मे अनशन।
२. ,, रभाजी (७२) 'कालू'। जाति-सरावगी, जेठ सुदी २ को स्वर्गवास।
३. ,, सरुपाजी (२२८) 'कटालिया' गोत्र-गोलेछा, माघ सुदी २ को स्वर्गवास।

वर्ष के अन्त मे—

स० २०१५ के अन्त मे सत ५९ तथा सतिया १७० कुल २१९ विद्यमान रहे।

एवं पनरै अंत रे, इक सौ सित्तर अज्जिका।
आख्या गुणसठ संत रे, जय जश सपति साहिवी ॥ १२ ॥

(आ०द०ढ़ा० ८ सो० १२)

संवत् १९१६ के चातुर्मास आदि

जयाचार्य साधु १९ सुजानगढ़

१. साध्वी सरदारांजी (१७१) ठाणा साध्वियां ४१ सुजानगढ़

१. साध्वी	फत्तूजी	(१७३)	तप-दिन ३७
२. ,,	वन्नांजी	(२७०)	,, ३१
३. ,,	जशोदांजी	(२८३)	,, १९
४. ,,	लिछमांजी	(२२१)	,, १६
५. ,,	भूनांजी	(३०३)	,, १६
६. ,,	सेरांजी	(३२०)	,, ११
७. ,,	सरूपांजी	(३०५)	,, १०
८. ,,	कुनणांजी	(२१२)	,, १०
९. ,,	कुनणांजी	(३१२)	,, ८
१०. ,,	चांदकवंरजी	(२७४)	,, ७
११. ,,	छगनांजी	(२९०)	,, ७
१२. ,,	नान्हूजी	(३०२)	,, ७
१३. ,,	वखतूजी	(२३०)	,, ६
१४. ,,	जडावांजी	(३०४)	,, ६
१५. ,,	चंदनाजी	(२६९)	,, ५
१६. ,,	लच्छूजी	(२६१)	,, ५
१७. ,,	नवलांजी 'पाली'	(२४०)	,, ५
१८. ,,	भामांजी	(३०७)	चार चोले, एक पंचोला
१९. ,,	हस्तूजी	(२३२)	एक चोला
२०. ,,	कस्तूजी	(१३१)	,,
२१. ,,	मगदूजी	(३०१)	,,
२२. ,,	हरखूजी	(२९४)	,,
२३. ,,	विरधुजी	(२९३)	,,
२४. ,,	लालांजी	(२९६)	,,
२५. ,,	जीऊजी	(३१०)	,,

२. ,, दीपांजी (९०) ठाणा १४ नाथद्वारा

१. सा०	मूलांजी	(२१३)	तप एक मास
२. ,,	चूनांजी	(२१०)	तप-दिन १४
३. ,,	ज्ञानांजी	(१२४)	,, ५

४. ,, साकरजी (१६७) ,, ५
५. ,, जेतांजी (२७७) ,, ५

सा० दीपांजी ने मगनांजी (१८१) को भेजकर अपना सिंघाड़ा सरदार सती को समर्पित करवाया।

मगनांजी ने २२ दिन गुरु सेवा की।

३. साध्वी नंदूजी 'बड़ा' (९२) ठाणा ७ पाली

१. सा० नंदूजी 'बड़ा' (९२) तप दिन ७
२. ,, म्हेकांजी (१४४) ,, ७
३. ,, सीताजी (२२६) ,, १३
४. ,, दोलांजी (२४६) ,, १२
५. ,, सुवटांजी (३०६) ,, ११

४. साध्वी मगदूजी (९९) ठाणा ४ लाछूडा

वृद्धावस्था के कारण गुरु दर्शन हेतु न आ सकी।

१. सा० पन्नाजी (१४८) तप दिन ३०
२. ,, रोड़ांजी (२०७) ,, ५
३. ,, गगाजी (२६२) ,, १४

५. ,, वींजाजी (८८) अमृतांजी (१०९) ठाणा ५ राजनगर गुरु दर्शन कर दो मास सेवा की।

१. सा० ऊमाजी (१७६) तप एक मास
२. ,, राजाजी (३०८) ,, दिन १५

६. साध्वी चंपाजी (१६१) रभाजी (७२) के स्वर्गवास होने से ठाणा ३ कालू गुरु दर्शन कर १०३ दिन सेवा की।

७. ,, कंकूजी (११३) ठाणा ४ नवैगर अस्वस्थता के कारण गुरु दर्शनार्थन नही आ सकी।

१. सा० चंपाजी (१०५) तप दिन ६
२. ,, चदणाजी (१६४) ,, १०
३. ,, कंकूजी (२८२) ,, १०

८. ,, चदणाजी (११६) ८ पीपाड़ साथ की साध्वियों ने गुरु दर्शन कर १९ दिन सेवा की।

१. सा० नाथांजी (१८७) तप दिन १३

९. जीवूजी (१२३) ठाणा ६ बोरावड़ गुरु दर्शन कर ७ दिन सेवा की

१. सा० मूलांजी (२५५) तप दिन २९
२. ,, रत्नाजी (१८९) ,, १०

१० ,, पन्नाजी (१२६) ठाणा ६ सिरदारगढ गुरु दर्शन कर ७ मास मेवा की। (सरदारशहर)

१. सा० सूराजी (२९७) तप एक मास
२. ,, अमरूजी 'छोटा' (२४४) ,, दिन १०
३. ,, चिमनाजी (२६५) ,, ८

११. ,, कुनणाजी (१३३) ठाणा ८ भीलवाड़ा साथ वाली साध्वियों ने गुरु दर्शन कर १६ दिन सेवा की।

१. सा०	लिछमांजी	(१४३)	तप दिन	६
२. ,,	सुजाणाजी	(२००)	,,	६
३. ,,	नवलांजी	(६३)	,,	४

१२. साध्वी मोतांजी (१३६) ठाणा ७ डीडवाणा गुरु दर्शन कर १॥ मास सेवा की।

१. सा०	मोतांजी	(१३६)	तप दिन	५
२. ,,	सेरांजी	(२८६)	,,	७
३. ,,	अमृतांजी	(२६२)	,,	१२
४. ,,	लिछमाजी	(३११)	,,	१४

१३. ,, वरजूजी (१३६) ठाणा ७ कांकड़ोली साथ की सतियों ने गुरु दर्शन कर १७ दिन सेवा की।

१४. ,, महताव कंवरजी (१४५) ठाणा ३ रीणी गुरु दर्शन कर ३ मास सेवा की।

१. सा०	मेहताव कंवरजी	(१४५)	तप-दिन	१३
२. ,,	छोटाजी	(२६८)	,,	८

१५. ,, हस्तूजी (१५२) ठाणा ६ लाडनूं गुरु दर्शन कर सात मास सेवा की।

१. सा०	मघूजी	(२५०)	तप दिन	४
२. ,,	मृगाजी	(३१६)	,,	६
३. ,,	मूलाजी	(२३१)	,,	६

१६. साध्वी रंगूजी (१५४) ठाणा ५ गोगुंदा अस्वस्थता के कारण गुरु दर्शनार्थ नहीं आ सकी।

१७ ,, गोमाजी (१६०) ठाणा ४ नागौर गुरु दर्शन कर अधिक दिन सेवा की।

१. सा०	कुनणांजी	(२५६)	तप दिन	४
२. ,,	मोतांजी	(२७६)	,,	५
३. ,,	सिणगाराजी	(२१७)	,,	५

१८. ,, चंदणाजी (१६५) ठाणा ६ देशनोक गुरु दर्शन कर सात्विक ७ मास सेवा की।

१. सा०	रोड़ाजी	(२६०)	तप दिन	५, ४
१. ,,	चदणाजी	(१६५)	,,	४

१६. ,, नदूजी (छोटा) (१६७) ठाणा ५ किसनगढ गुरु दर्शन कर एक मास सेवा की।

१. सा०	नंदूजी	(११७)	तप दिन	१०
२. ,,	रंभाजी	(२२०)	,,	एक मास
३. ,,	वृद्धांजी	(२६५)	,,	दिन ५
४. ,,	जेतांजी	(३१५)	,,	,, ८

२० ,, सेराजी (१६६) ठाणा ४ भिवानी गुरु दर्शन कर तीन मास सेवा की।

१ सा०	सेराजी	(१६६)	तप दिन	४
२. ,,	भानाजी	(२६३)	,,	१०

३. ,, सरदारांजी (२२६) ,, ६
४. ,, मीनांजी (२३५) ,, १

२१. साध्वी सिणगाराजी 'पीसांगण' (१७९) ठाणा ४ राजलदेशर गुरु दर्शन कर सवा चार महीने सेवा की।

१. सा० सिणागारांजी (१७९) तप दिन १४
२. ,, चंपाजी (१५१) ,, १५, ४
३. ,, हस्तूजी (१९१) ,, १२, ४
४. ,, सिरदारांजी (२४७) ,, ६, ५

२२. ,, नवलाजी (१८२) 'फलोधी' ठाणा ९ बीदासर गुरु दर्शन कर अधिक समय तक सेवा की।

१. सा० मयांजी (१०६) तप ६ चोले, सात १
२. ,, सिरदारांजी (२४६) ,, दिन ७
३. ,, बीजाजी (१६२) ,, ,, ४
४. ,, ओटांजी (१८३) ,, ,, १८
५. ,, गगाजी (१९७) ,, ,, १६
६. ,, मगनाजी (२३८) ,, ,, १३
७. ,, अमृताजी (२४५) ,, ,, १३

२३. ,, सिणगाराजी (२८०) ठाणा ४ कसूबी गुरु-दर्शन कर अधिक दिन तपस्या की।

१. सा० वरजूजी (२७३) ४ दिन
२. ,, सिणागाराजी (२८०) ,, ,,
३. ,, भूमाजो (१०३) ,, ,,
४. ,, साकरजी (२९९) ,, ,,

विशेष-विवरण

वर्ष क प्रारंग मे—

सं० १९१९ के प्रारभ मे सत ५९ तथा सतिया १७० कुल २२९ विद्यमान थे।

सोल वर्ष री आद रे, गुणसठ सत रह्या सही।
इक सय सितर साध रे, गणि आणा मे अज्जिका॥
(आ० द० ढा० ९ सो० १)

इस वर्ष साध्वियो के २३ और साधुओं के ११ क्षेत्रो मे कुल ३४ क्षेत्रो मे चातुर्मास हुए।

सैहर तेवीस मांह चोमासा, अज्जा नों अधिकार।
ग्यार सैहर माह मुनि ना, तप गुण ज्ञान भडार॥
[आ० द० ढ़ा० ९ गा० ३१]

सरदार सती का चातुर्मास जयाचार्य के साथ होने से एक स्थान घट गया जिससे कुल चातुर्मास क्षेत्र ३३ हुए।

दीक्षित साधु साध्वियां—

१. मुनि अमरचंदजी (१७८) 'बीकानेर'। गोत्र—बेगवानी, दीक्षा तिथि कार्तिक सुदी १३।

२. ,, दीपचंदजी (१७६) 'भिवानी'। जाति—अग्रवाल, दीक्षा तिथि मृगसर सुदि १२।

१. सा० तीजांजी (३२४) 'सुजानगढ़'। गोत्र नाहर, भाद्रवा सुदी १३ के दिन दीक्षित।

२. ,, रत्नकंवरजी (३२५) 'पीपाड़'। पीहर-पीपाड़ के चौधरी कुल मे। ससुराल गोत्र सिंघी। समरथमलजी की कुल वधू। फाल्गुन में दीक्षा।

३. ,, बखतावरांजी (३२६) 'गंगापुर' गोत्र-हीगड। पीहर-चोरड़ियों के यहां। आसाढ़ वदि ६ को दीक्षित।

४. ,, रत्नाजी (३२७) गोत्र-'चोरड़िया'। आसाढ़ सुदी १० के दिन दीक्षित। ईड़वा में ननिहाल।

५. सा० रायकंवरजी (३२८) 'चिंतामा'। साध्वी नाथांजी (२७८) की बहन। आसाढ़ सुदी १० की दीक्षा।

दिवंगत साधु साध्वियां—

१. मुनि जुवानजी 'छोटा' (१२५) 'ईड़वा'। गोत्र—चोरड़िया।

१. सा० सेराजी (३०६) 'नवानगर'। गजमलजी मुणोत की पत्नी। पति छोड़कर दीक्षा। पोष मे अनशन।

२. ,, रुखमांजी (२१८) मुनि छोगजी, चतुर्भुजजी की माता, गोत्र-बोरड़। संथारा पूर्वक माघ सुदी ५ के दिन स्वर्गवास।

३. ,, ऊमांजी (१७५) 'रतनगढ़'। गोत्र-डागा। आसाढ़ मास में दिवंगत।

४. ,, लच्छुजी (१०१) 'मेड़ता'। ऋषिराय की प्रथम शिष्या गोत्र-धाड़ीवाल। वृद्धावस्था मे पंडित मरण।

गण बाहर साधु—

१. ,, जुहारजी (१२३)।

वर्ष के अन्त में—

सं० १६१६ के अंत मे साधु ५६ तथा साध्विया १७१ कुल १३० विद्यमान थे।

एवं सोलै अंत रे, इक सय इकोत्तर अज्जा।
गुणसठ संत सोभतरे, स्वाम भिक्खू गण मे सही॥

(आ० द० ढ़ा० ६ सो० १७)